श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान

-: मंगल आशीर्वाद :-

समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य 108
श्री विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज
एवं
समाधिस्थ परम पूज्य सराकोद्धारक षष्टम पट्टाचार्य
108 श्री ज्ञान सागर जी मुनिराज

-: रचयित्री :-

परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,
गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी

सम्पादक :- ब्र. मनीष भैय्या 'ज्ञान'

संकलन :- ब्र. प्रियंका दीदी

-: प्रकाशक :-
श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि०)

कृति : श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान

कृतिकार : गणिनी आर्यिका श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी

तृतीय संस्करण : 2100 प्रतियाँ

प्रकाशन वर्ष : 2025

न्यौछावर राशि : 150.00 मात्र (साहित्य सृजन हेतु)

प्राप्ति स्थान :

1. **राकेश जैन, महामंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 9650946696
2. **उमेश जैन, मंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 7982630514
3. **श्री जैन साहित्य सदन, लाल मन्दिर, चाँदनी चौक, दिल्ली**
   दूरभाष : 09311168299, 011-23253638
4. **श्री सोनागिर सिद्ध तीर्थ क्षेत्र, दतिया (मध्य प्रदेश)**
   दूरभाष : 9425726867
5. **श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम**
   शाहपुरा रोड़, जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान
   दूरभाष : 8824620107

Website - www.munisuvratswastidham.com
Instagram - munisuvrat_swastidham
Facebook - munisuvratswastidham
Youtube - swastidhamjahazpur

मुद्रक : दिपिशा एंटरप्राइज (दिल्ली) मो. 9210488047

प्रशांत मूर्ति आचार्य शांतिसागर प्रथम 'छाणी' और उनकी आचार्य परम्परा

बाल ब्रह्मचारी, प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज प्रथम 'छाणी' (उत्तर)

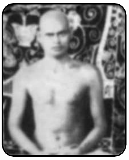

जन्म तिथि – कार्तिक वदी एकादशी, वि.सं. 1945 (सन् 1888)
जन्म स्थान – छाणी, जिला - उदयपुर (राजस्थान)
जन्म नाम – श्री केवलदास जैन
पिता का नाम – श्री भागचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती माणिक बाई
क्षुल्लक दीक्षा – सन् 1922 (वि.सं. 1979), बाँसवाड़ा (राजस्थान)
मुनि दीक्षा – सन् 1923 (वि.सं. 1980), डूंगरपुर (राजस्थान)
आचार्य पद – सन् 1926 (वि.सं. 1983), गिरिडीह (झारखंड)
समाधिमरण – 17 मई, 1944 (वि.सं. 2001), सागवाड़ा (राजस्थान)

परम पूज्य आचार्य 108 श्री सूर्यसागर जी महाराज (प्रथम पट्टाचार्य)

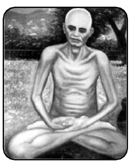

जन्म तिथि – कार्तिक शुक्ल नवमी, वि.सं.1940(8 नवम्बर सन् 1883)
जन्म स्थान – प्रेमसर, जिला - ग्वालियर (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री हजारीमल पारेवाल जैन
पिता का नाम – श्री हीरालाल जैन
माता का नाम – श्रीमती गेदा बाई
ऐलक दीक्षा – सन् 1924 (वि.सं. 1981), इन्दौर (मध्य प्रदेश)
मुनि दीक्षा – सन् 1924 (वि.सं. 1981), देवास (म.प्र.)
आचार्य पद – सन् 1928 (वि.सं. 1985), कोडरमा (झारखंड)
समाधिमरण – सन् 1952 (वि.सं. 2009), डालमिया नगर (झारखंड)

परम पूज्य आचार्य 108 श्री विजयसागर जी महाराज (द्वितीय पट्टाचार्य)

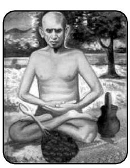

जन्म तिथि – माघ सुदी अष्टमी, वि.सं. 1938 (सन् 1881)
जन्म स्थान – सिरोली, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री चोखेलाल जैन
पिता का नाम – श्री मानिक चन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती लक्ष्मी बाई
क्षुल्लक दीक्षा – इटावा (उत्तर प्रदेश)
ऐलक दीक्षा – मथुरा (उत्तर प्रदेश)
मुनि दीक्षा – नागौर, राजस्थान (आचार्य श्री सूर्यसागर जी से)
आचार्य पद – लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.)
समाधिमरण – सन् 1962 (वि.सं. 2019), ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

पूरज पूज्य आचार्य 108 श्री विमलसागर जी महाराज 'भिण्ड' (तृतीय पट्टाचार्य)

जन्म तिथि – पौष शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 1948 (सन् 1892)
जन्म स्थान – मोहिना,जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री किशोरीलाल जैन
पिता का नाम – श्री भीकमचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती मथुरा देवी
क्षुल्लक दीक्षा – सन् 1941 (वि.सं. 1998), झालरापाटन (राजस्थान)
मुनि दीक्षा – सन् 1943 (वि.सं. 2000), कोटा (राजस्थान)
आचार्य पद – सन् 1973 (वि.सं. 2030), हाड़ोती (राजस्थान)
समाधिमरण – सन् 1973 (वि.सं. 2030), सांगोद (राजस्थान)

मासोपवासी, समाधि सम्राट परम पूज्य आचार्य 108 श्री सुमतिसागर जी महाराज (चतुर्थ पट्टाचार्य)

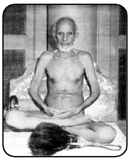

जन्म तिथि	—	आसोज शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 1974 (22 अक्टूबर, 1917)
जन्म स्थान	—	श्यामपुर, जिला - मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम	—	श्री नत्थीलाल जैन
पिता का नाम	—	श्री छिद्दूमल जैन
माता का नाम	—	श्रीमती चिरौंजी देवी
ऐलक दीक्षा	—	सन् 1968 (वि.सं. 2025), रेवाड़ी (हरियाणा)
ऐलक दीक्ष गुरू	—	आचार्य विमलसागर जी महाराज
ऐलक नाम	—	श्री वीरसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा	—	सन् 1968 (वि.सं. 2025), गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
आचार्य पद	—	सन् 1973 (वि.सं. 2030), मुरैना (म.प्र.) (आचार्य श्री विमलसागर जी 'भिंड' महाराज से)
समाधिमरण	—	सन् 1994 (वि.सं. 2051), सोनागिरि सिद्धक्षेत्र (म.प्र.)

परम पूज्य आचार्य 108 श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर जी महाराज (पंचम पट्टाचार्य)

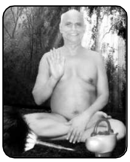

जन्म तिथि	—	अगहन वदी पंचमी, वि.सं. 2006 (10 नवम्बर 1949)
जन्म स्थान	—	बरवाई, जिला - मुरैना (म.प्र.)
जन्म नाम	—	श्री सुरेश चन्द जैन
पिता का नाम	—	श्रीमंत सेठ श्री बाबूलाल जैन
माता का नाम	—	श्रीमती सरोज देवी
क्षुल्लक दीक्षा	—	सन् 1972 (वि.सं. 2029)
मुनि दीक्षा	—	सन् 1988 (वि.सं. 2045), सोनागिरी सिद्धक्षेत्र
मुनि दीक्षोपरान्त नाम	—	मुनि श्री 108 सन्मतिसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू	—	आचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज
आचार्य पद	—	सन् 1989 (वि.सं. 2046), नरवर नगर (म.प्र.)
समाधिमरण	—	सन् 2013 (वि.सं. 2070), दिल्ली

सराकोद्धारक परम पूज्य आचार्य 108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज (षष्टम पट्टाचार्य)

जन्म तिथि	—	वैशाख शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 2014 (1 मई, 1957)
जन्म स्थान	—	मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम	—	श्री उमेश कुमार जैन
पिता का नाम	—	श्री शांतिलाल जैन
माता का नाम	—	श्रीमती अशर्फी देवी
ब्रह्मचर्य व्रत	—	सन् 1974 (वि.सं. 2031)
क्षुल्लक दीक्षा	—	सन् 1976 (वि.सं. 2033), सोनागिरि स्द्धिक्षेत्र
क्षु. दीक्षा गुरू	—	आचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज
क्षु. दीक्षोपरान्त नाम	—	क्षुल्लक 105 श्री गुणसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा	—	सन् 1988 (वि.सं. 2045), सोनागिरि सिद्धक्षेत्र
मुनि दीक्षोपरान्त नाम	—	मुनि श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू	—	आचार्य श्रीसुमतिसागर जी महाराज
उपाध्याय पद	—	सन् 1989 (वि.सं. 2046), सरधना (मेरठ)
आचार्य पद	—	सन् 2013 (वि.सं. 2070), बड़ागाँव (बागपत)

परम पूज्य गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्तिभूषण माता जी

जन्म तिथि	—	1-11-1969
जन्म स्थान	—	छिंदवाडा (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम	—	संगीता (गुड़िया)
पिता का नाम	—	श्री मोती लाल जैन वर्तमान में (क्षु. श्री 105 परिणामसागर जी महाराज)
माता का नाम	—	श्रीमती पुष्पा रानी जैन वर्तमान में (क्षु. श्री 105 अर्हत मती माताजी)
लौकिक शिक्षा	—	एम. ए. (संस्कृत)
दीक्षा गुरू	—	आ. श्री 108 विद्याभूषण सन्मतिसागर जी महाराज
दीक्षा तिथि व स्थान	—	24 जनवरी 1996 (इटावा)
दीक्षा नाम	—	आर्यिका 105 स्वस्ति भूषण

विषय सूची

1. श्री सिद्धचक्र विधान मांडना 6
2. मेरी भावना–*आर्यिका स्वस्ति भूषण माता जी* 7
3. तेजोमयि व्यक्तित्व की धनी आर्यिकारत्न श्री स्वस्तिभूषण माताजी–*डॉ. श्रेयांस कुमार जैन* 9
4. सिद्धचक्र विधानों की परम्परा–*ब्र. मनीष जैन 'ज्ञान'* 11
5. आवश्यक सामग्री 16
6. श्री देव शास्त्र गुरु पूजन 17
7. महासमुच्चय जिन पूजा 20
8. श्री सिद्धचक्र महात्म्य 25
9. प्रशस्ति 26
10. आरती 27
11. मंगलाचरण 28
12. अर्घ्यावली 31
13. प्रथम पूजा 33
14. द्वितीय पूजा 38
15. तृतीय पूजा 45
16. चतुर्थ पूजा 55
17. पंचम् पूजा 68
18. षष्ठम् पूजा 87
19. सप्तम् पूजा 121
20. अष्टम् पूजा 184

卐 श्री आदिनाथाय नमः 卐

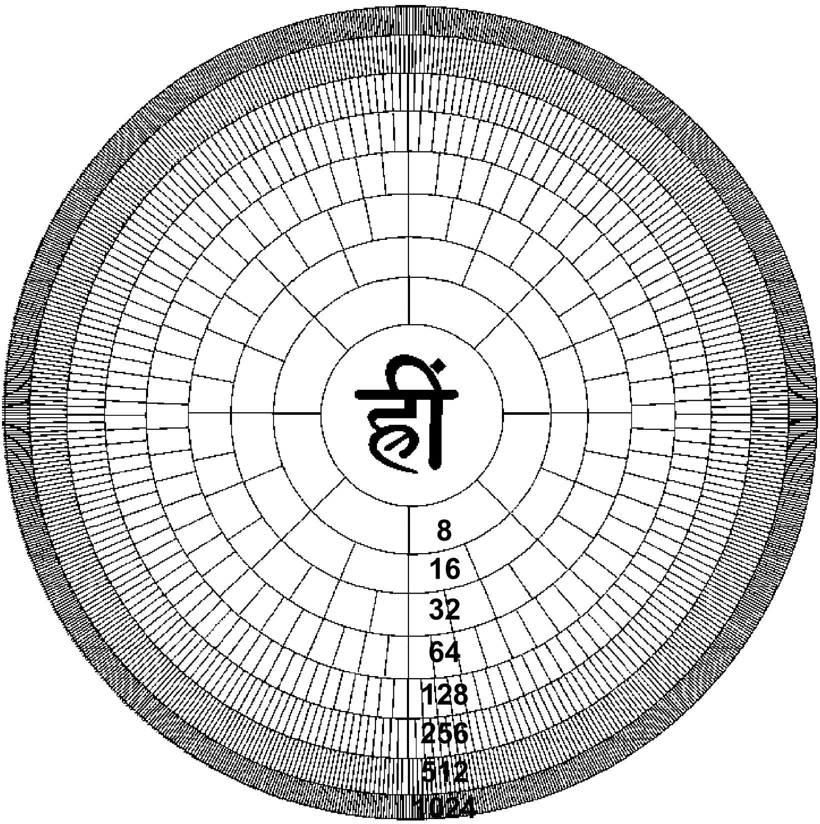

श्री सिद्धचक्र विधान मांडना

मेरी भावना

परम पूज्य आर्यिका श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी

श्रृंगार प्रेमी मानव, आभूषण प्राप्त कर प्रसन्न होता है। आभूषण मानव को सुंदर और आकर्षक बनाते हैं। सुंदरता के प्रति मानव स्वयं आकर्षित हो जाता है। सुंदर रुप प्राप्ति के लिये मनुष्य कुछ भी करने के लिये तैयार हो जाता है। दर्पण को बार-बार देखना भी इसी बात का प्रतीक है। चाहे पुरुष हो या स्त्री, बूढ़ा हो जवान, यहाँ तक की छोटा बच्चा भी रुप के प्रति आकर्षित रहता है।

ठीक इसी प्रकार किसी भी काव्य को जब तक रस और अलंकारों से सुसज्जित ना किया जाये, तब तक उस साहित्य को पढ़ने में भी आनंद नहीं आता है। रस और अलंकारों से सहित काव्य हो तो ऐसा लगता है कि जब तक काव्य रचना पूरी न पढ़ी जाए, तब तक पढ़ते ही रहो। इस बात को मैंने स्वयं अनुभव किया है। इसमें भगवान की भक्ति ही क्यों ना हो। जब तक भोजन में स्वाद और रस न हो, तो रसहीन भोजन कोई नहीं खाना चाहेगा। इसप्रकार शब्दों में भी रस की आवश्यकता होती ही है। भक्ति रस से बड़ा रस सारे संसार में कोई दूसरा नहीं हो सकता। जिसने इस भक्ति रस का स्वाद ले लिया, वह बार-बार उसका उपभोग करना चाहेगा। ''भक्ति का रस आत्मा में आनंद, मन में प्रसन्नता और शरीर में शक्ति प्रदान करता है।'' शक्ति और सुख का भंडार देता है। भक्ति जीवन की अमूल्य निधि है। अशुभ से बचने का भक्ति से श्रेष्ठ और कोई दूसरा उपाय नहीं है।

सिद्धों के समूह की आराधना, साधन से साध्य की प्राप्ति है। सिद्धचक्र का विधान करके सिद्धों के गुणों की भक्ति करना है तथा क्रम सिद्ध पद प्राप्ति की भावना है।

विधान मूल उद्देश्य

लोक के अग्रभाग में विराजमान सिद्धों के चरणों में बारंबार प्रणाम। जिन्होंने अपनी आत्मा को शुद्ध कर लिया है। कर्म रूपी बादलों को हटा के प्रचंड तेजस्वी सूर्य रूपी आत्मा को प्रकट किया है। परम सिद्धि को प्राप्त करने वाले, विषय कषाय रूपी शत्रुओं को आपने जड़ मूल से उखाड़ कर फेंक दिया है। संसार की माया और छाया से बहुत दूर हो चुके हैं।

द्रव्य कर्म, भाव कर्म और नौ कर्म से रहित सिद्धों की पूजा सिद्धत्व की आराधना हमें आत्म सिद्धि में आश्रय देती है। उन भावनाओं और परिणामों को जन्म देती है जो हमें मुक्ति में कारण बनें। उनकी शुभ भावनाओं का लालन पालन कर उस पथ पर चलने में सहायता करती है। राग द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ, हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह के भावों का उन्मूलन करती है। आत्मा की अनंत शक्ति को प्रगट करती है। अनंतदर्शी, अनंतज्ञानी, अनंतशक्ति और अनंत सुख का पुंज आत्मा के दर्शन के लिये दर्पण के समान होता है।

'मैं आपने भाग्य का खाती हूँ।' मैंना के इन शब्दों से राजा पुहुपाल के अभिमान को घनी चोट लगी और बिटिया का ब्याह एक कुष्ठरोगी के साथ कर दिया। मैंना इसे भाग्य जान पति के साथ चली गई। जंगल में मुनिराज से पूछा कि मेरे कितने कर्म और बाकी हैं तथा मैं इस कष्ट को किस प्रकार दूर करुं। तब मुनिराज ने सिद्धचक्र के विधान का उपदेश दिया। इससे श्रीपाल तथा अन्य साथियों का कुष्ठ दूर हो गया। सिद्धचक्र का पाठ करने से रोग, शोक, राग-द्वेष, संकट, विपत्ति, भूत प्रेत की बाधाएं दूर हो सर्व कार्यो की सिद्धि होती है। मंगलमय मंगलकारी सिद्धचक्र विधान को तीन अठाइयों में से एक अठाई में हर वर्ष एक बार अवश्य करना चाहिये। वर्ष में एक बार यह विधान करना अत्यन्त शुभ होता है। सिद्धों की आराधना से तपस्या करने की भी शक्ति प्राप्त होती है।

रुड़की नगर के प्रवास से ता. 19-11-2004 से प्रारंभ करके 12-12-2004 तक इस विधान का रचना काल रहा। आवश्यक क्रिया और समाज से समय निकाल कर पूर्ण समय लेखन के लिये समर्पित था। दिन में करीब 9-10 घंटे लेखन करने पर ही यह प्रतिफल प्राप्त हुआ है। लेखन पश्चात् रुड़की निवासी भूषण जैन जी एवं उनकी धर्मपत्नी भी विशेष आशीष के पात्र हैं जो स्वयं निवेदन करने आये कि इसे हम बनवाना चाहते हैं एवं श्री मनोज कुमार एवं श्रीमती मीनाक्षी जी तथा अकलंक जैन एवं दिव्या जैन आई कि माता जी हमें भी अवसर प्रदान करें। इसमें सहयोग के लिये इन्हें समस्त परिवार को विशेष आशीर्वाद है। इस विधान के लेखन कार्य में जे.सी.जैन जी श्रीमती सुनीता एवं यू. सी. जैन की सुपुत्री कुमारी रीमा जैन, बृजेन्द्र हर्ष, हरिद्वार श्री रणछोर जी रुड़की, श्री स्वराज जी रुड़की का सहयोग रहा, उनको भी मेरा आशीर्वाद है।

तेजोमयि व्यक्तित्व की धनी आर्यिकारत्न श्री स्वस्तिभूषण माताजी

-डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत
(अध्यक्ष-अ.भा. शास्त्री परिषद्)

यों तो आर्यिकाओं और साध्वियों का बहुत बड़ा समुदाय भारत वसुंधरा पर जिनधर्म की प्रभावना कर रहा है। उनमें विलक्षण प्रज्ञा और प्रतिभा को धारण करने वाली आर्यिका माताओं का विशिष्ट स्थान है। उन्हीं प्रज्ञा और प्रतिभाशीला आर्यिकाओं में गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माताजी का व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण और आकर्षक है। इनके जीवन में सरलता, विद्वत्ता, श्रद्धा और विवेक का अनूठा संयोग है। वह मधुर भाषिणी, शांतचेता और सदा प्रसन्न रहने वाली आर्यिका हैं। सदा स्वाध्याय, ध्यान, चिंतन, मनन अध्ययन - अध्यापन में लीन रहती हैं। मैत्री, करुणा, प्रमोद, माध्यस्थ भाव आपके जीवन के कण - कण में समाए हुए हैं। यही कारण है कि आपके जीवन में कटुता और क्रोध कषाय आदि का अभाव है। आप प्रत्येक व्यक्ति में गुण अवलोकन करती हैं और नीरस जीवन में भी सरसता के सम दर्शन करती हैं। आपके पीयूषवर्णी प्रवचनों ने लोगों में आस्था के दीप प्रज्वलित किए हैं। समाज के व्यक्तियों में अंधविश्वास, अंधपरम्परा, रूढ़िवाद, जातिवाद, स्वार्थ, अंधता, ऊंच-नीच विषयक विषमता आदि दुर्गुणों को हटाने में आपकी अहम भूमिका है। नैतिक उत्थान के लिए आप अहर्निश प्रयत्न करती रहती हैं।

आपने दीक्षा धारण करने के बाद भी शिक्षा निरंतर ग्रहण की है, क्योंकि दीक्षा के साथ शिक्षा भी आवश्यक है। बिना शिक्षा के दीक्षा में कोई चमत्कृति पैदा नहीं होती है। ज्ञानाराधना से साधक जीवन में निखार आता है, जो आपश्री के जीवन में आया। ज्ञानाराधन करते हुए आपने शताधिक ग्रंथों का लेखन किया है। भक्ति साहित्य में तो नई चेतना ही लाई है। बहुत विधान और पूजाओं का लेखन कर लाखों लाखों व्यक्तियों को जिनेन्द्र भक्ति में जोड़ा है। समवशरण विधान, सर्वतोभद्र विधान, सिद्धचक्रविधान, कल्पद्रुम विधान आदि महाविधानों के माध्यम से समाज को भक्ति आयोजन करने-कराने की प्रेरणा दी है। वहीं एक दिवसीय

विधानों के माध्यम से भक्ति सरोवर में अवगाहन कराया है। आपकी लेखनी लोकप्रिय है। आप निरंतर सरल, सरस, सुबोध लेखन करती हैं। काव्य क्षेत्र में 'बड़ा ही महत्व है' इस काव्य के माध्यम से तो जन-जन को लुभाने का कार्य किया है। सभी लोगों में माताजी द्वारा बोला और लिखा जाने वाला 'बड़ा ही महत्व है' बड़ा ही प्रिय है। लेखन शैली जितनी प्रभावक है, उतनी ही प्रभावक आपकी प्रवचन शैली है। प्रवचन करते हुए जब आपकी वाणी रूपी सरिता कल-कल छल-छल कर प्रवाहित होती है तो श्रोता गण आनंद से झूम उठते हैं। आपके प्रवचनों में अंत: करण से निकले हुए उद्गार बहुत ही स्फूर्त सहज और स्वाभाविक होते हैं।

आपके जीवन की अनेक विशेषताएं हैं। अलौकिक शिक्षा में विशेष सम्मान प्राप्त कर धार्मिक शिक्षा की गहराइयों में पहुंची, आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुमान को प्राप्त किया। अपने गुरु सिंहरथ प्रवर्तक आचार्य श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर महाराज की अनुकृति बनकर उन जैसे ही शताधिक रचनाएं कर गौरव बढ़ाया और लोकोत्तर रचना त्रिलोक तीर्थ के समान देवाधिदेव श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर की मनोहर चमत्कारी प्रतिमा को विराजित कर जहाजपुर में जहाजाकृति जैन मंदिर का निर्माण कराया जहाजपुर अतिशय क्षेत्र को त्रिलोक तीर्थ जैसी प्रसिद्धि प्राप्त कराने वाली आर्यिकाश्री स्वस्तिभूषण अपने आप में महान तेजोमयी व्यक्तित्व हैं। आपने अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा में चौबीसी निर्माण, सिद्ध क्षेत्र सोनागिरि में सहस्रकूट जिनालय, झालरापाटन पाटन का जीर्णोद्धार, मुरैना में गुरुकुल, डोला जी अतिशय क्षेत्र का जीर्णोद्धार आपके निर्देशन में सम्पन्न हो रहा है एवं केशवराय पाटन प्राचीन तीर्थ का संपूर्ण नवीनीकरण भी आपके निर्देशन में हो रहा हैं।

इनके जीवन में सूर्य की तेजस्विता, चंद्रमा की शीतलता, सागर की गंभीरता, पृथ्वी की सहिष्णुता, कमल की निर्लिप्तता आकाश की शुभता है। जीवन में सद्गुणों का साम्राज्य है। आपकी आकृति में नम्रता है, प्रकृति में सहजता है और सेवा में नि:स्वार्थता है। ज्ञान की गरिमा और आचार की मधुरिमा से आपका व्यक्तित्व जगमगा रहा है।

हमें गौरव है कि विद्वानों को सतत वात्सल्य प्रदान कर अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन शास्त्री परिषद् को अधिवेशन, अनेक संगोष्ठियों की प्रेरणादात्री विभूति संयम साधना के क्षेत्र में अभिनंदनीय व्यक्तित्व की धनी स्वस्ति भूषण माता जी के चरणों में बारंबार वंदामि।

सिद्धचक्र विधानों की परम्परा

-**ब्र. मनीष जैन 'ज्ञान'**, जहाजपुर

सिद्धचक्र विधान सभी विधानों में सबसे ज्यादा प्रसिद्ध विधान है। जैन समाज का ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा जो सिद्धचक्र विधान से परिचित न हो। वैसे इस विधान को श्रीपाल मैना सुन्दरी के कुष्ठरोग निवारक कथानक से जोड़ा जाता है, पर यह विधान उससे पहले भी था। विधानों का उद्देश्य भक्ति के मध्यम से समता की साधना करते हुए स्वाध्याय, ध्यान संयम की साधना करना/ कराना है।

सिद्धचक्र का अर्थ है सिद्धों का समूह। जो संसार एवं कर्मचक्र को तोड़कर सिद्धालय में अनन्त काल तक सदा विराजमान रहेंगे उन्हें सिद्धचक्र कहते हैं। आत्मा से परमात्मा बनाने वाले संविधान को विधान कहते हैं। एक अनुशासन के माध्यम से भक्ति करना, इसका उद्देश्य है।

ज्ञात तत्थों के आधार पर, सिद्धचक्र विधान की सर्वप्रथम रचना भट्टारक शुभचंद्र जी ने संस्कृत भाषा में की थी। भट्टारक श्री ललितकीर्ति जी ने भी संस्कृत में सिद्धचक्र विधान की रचना की थी।

सिद्धचक्र विधान में आठ पूजाएं होती हैं। संस्कृत विधान में अष्ट द्रव्यों को समर्पित करने हेतु अष्टक और जयमाला छन्दबद्ध है, पर 8-16-64 आदि द्विगुणित अर्घ्यावली में केवल मंत्र हैं, छन्द नहीं है।

भट्टारक शुभचंद नाम से आठ आचार्यों का उल्लेख आता है, प्रसिद्ध नाम ज्ञानार्णव के रचयिता भृतहरि के भाई 1060-1125 के मध्य हुए। एक तत्वानुशासन के कर्त्ता आदर्शकीर्ति के शिष्य 1156-1135 के मध्य हुए। सिद्धचक्र विधान के कर्त्ता शुभचंद जो नंदी संघ बलात्कारगण की गुरुवाबली में विजयकीर्ति के शिष्य और लक्ष्मीचंद के गुरु थे, इनका समय डां. नेमीचंद जैन ज्योतिषाचार्य ने 1516-1556 निर्धारित किया है। भट्टारक शुभचंद जी ने 37 ग्रंथों की रचना की है जिसमें स्वतंत्र रचनाओं के अलावा टीकायें एवं पूजन विधान की रचना की है, जिसमें पूजाओं की रचनाएं ज्यादा है।

संस्कृत सिद्धचक्र विधान ललितकीर्ति भट्टारक द्वारा भी लिखा गया है, वे कष्ठासंघ माथुरगच्छ पुष्करगण के भट्टारक जगत्कीर्ति के शिष्य

थे, भट्टारक ललित कीर्ति के द्वारा प्रतिष्ठित यंत्र वि.सं. 1861 का प्राप्त हुआ है। पभौषा मंदिर का निर्माण वि. सं. 1881 में हुआ था। इसी स्थान पर महापुराण की टीका वि.सं. 1885 में पूर्ण की थी, इसके अलावा इन्होंने 23 कथायें भी लिखीं थीं। (ती. महा. अचार्य परंपरा से)

आचार्य शुभचंद भट्टारक एवं ललितकीर्ति के द्वारा लिखित सिद्धचक्र विधानों के आधार पर नकुड (सहारनपुर) निवासी कवि संतलाल जी ने हिन्दी भाषा में सिद्धचक्र महामंडल विधान की रचना की। श्री संतलाल जी का जन्म वि.सं. 1834 को हुआ था। संस्कृत विधानों में जो संस्कृत के छन्द थे, उनके स्थान पर संतलाल जी हिन्दी में छन्द रचना की पर मंत्र पूर्व के संस्कृत विधानों वाले यथावत रखे हैं।, चूकि पूजा के आठ अष्टक ही संस्कृत छन्दवद्ध थे, संतलाल जी 8-16-32-64-120-256-512-1024 मंत्रों के भी छन्द लिखकर जैन समाज का उपकार किया है। इनकी कृपा से तुलसीदास की रामचरित मानस के समान सिद्धचक्र विधान जैन समाज में जन जन प्रिय और प्रचलित हो गया।

संतलाल जी बडे कवि और आगम ज्ञानी थे, उनकी शिक्षा उर्दु भाषा में हुई पर उन्होंने विधान में शुद्ध हिन्दी का प्रयोग किया। इस विधान में संत लाल जी ने धर्म, सिद्धांत, अध्यात्म, भक्ति रूप आगम का सार भर दिया। संत लाल जी की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए गणिनी आर्यिका रत्न श्री स्वस्तिभूषण माता जी ने सिद्धचक्र विधान की रचना करके जिनवाणी के भंडार का वृद्धिगत कर दिया। उन्होंने देखा कि, समय के साथ लोगों की अभिरूचि बदल जाती है, भाषा भी बदल जाती है। ऐसे ही लेखन में भी समयोनुकूल परिवर्तन आवश्यक है वर्तमान पीढ़ी पुरानी हिन्दी के शब्दों को अच्छे से पारायाण नहीं कर पाती, याने छन्दों के अर्थो बोध नहीं कर पाती, कि छन्द में क्या लिखा है। माता जी ने इस कमी का देख/समझकर नये तरह से सिद्धचक्र विधान के छन्दों की रचना की है। इस विधान में आचार सिद्धांत अध्यात्म के गूढ़ रहस्यों को छन्दों में पिरोया है, विविध अलंकारों से छन्दों को सजाया है। उक्त विधान को पढ़कर पाठकों को छन्द के भावों का सहज में भाषा हो जाता है, इससे उन्हें बड़ा आनन्द रस प्राप्त होता है।

अपने मन के भावों को छन्द में पिरोना बहुत बड़ा कार्य होता है। मात्राओं, गणों, हृस्व, दीर्घ वर्णो एवं तुकांतो को ध्यान रखना बड़ा कठिन

कार्य होता है। पर माता जी ने इस विधान को इतने कम समय में लिखा दिया कोई चमत्कार से कम नहीं है, माता जी लिखतीं जातीं हैं कलम रूकती नहीं है। काट छांट नहीं करना पड़ती न संशोधन करना पड़ता है। माता जी का शब्दकोश विशाल है। माता जी ने उक्त रचना में जीवन विकाश के नैतिक मूल्यों को छन्दों में पिरोया है। इनकी काव्य कला देख कर कवि समूह भी चकित रह जाता है, विधान को पढ़कर अतीव मानसिक शांति प्राप्त होती है। जिस तरह सरिता को उसका प्रवाह स्वच्छ और ताजा बनाता है, शीतलता प्रदान करके जीवनोपयोगी बनाता है। उसी प्रकार काव्य का प्रवाह मानसिक स्वच्छता शीतलता प्रदान करके जीवन को तरो-ताजा बनाता है। सिद्धचक्र विधान में माता जी ने दोहा, चौपाई, सोरठा, चाल, भुजंगप्रयात, पद्धरि, सोलहकारण, अडिल्ल, शंभू, गीता, शेर आदि सरल छन्दों का प्रयोग किया है, जिससे साधारण व्यक्ति भी लय पूर्वक गा सकता है।

अन्य विधानों में कुछ ऐसे छन्द आ जाते हैं जिनको साधारण लोग नहीं गा पाते, तो उनकी रूचि समाप्त हो जाती है।

जैसा सभी जानते हैं कि सिद्धचक्र विधान में अनेक विधान समाहित हैं, जैसे 32 अर्घ्यावली में लघुशांति विधान है,

चतुर्थ पूजा में 64 ऋद्धि विधान है, चौसठ ऋद्धि का वर्णन केवल जैन ग्रंथों में पाया जाता है, ऋद्धि का अर्थ हिन्दू धर्म के अनुसार सफलता, भाग्य, श्रेष्ठता, अच्छी किस्मत, धन, अलौकिक शक्ति भी है। सामान्य अर्थ बुद्धि होता है। गणेश की दो पत्नियां ऋद्धि और सिद्धि हैं दो पुत्र शुभ और लाभ हैं। ऋद्धि मां को मां लक्ष्मी का अवतार माना जाता है।

जैन धर्म के अनुसार तप के प्रभाव से योगीजनों को विशेष अलौकिक शक्तियां ऋद्धि के रूप में प्राप्त हो जातीं हैं, आठ तरह की हैं, बुद्धिऋद्धि, विक्रियाऋद्धि, क्रियाऋद्धि, तपऋद्धि, बलऋद्धि, औषधऋद्धि, रसऋद्धि, क्षेत्रऋद्धि। इनके उत्तर भेद 64 होते हैं।

पंचम पूजा में 128 अर्घ्य हैं जो पापनाशक विधान है।

षष्ठ पूजा में 256 अर्घ्य हैं जो कर्मदहन विधान है।

सप्तम् पूजा में 512 अर्घ्य हैं जो पंचपरमेष्ठी विधान है।

अंतिम अष्टम् पूजा में 1024 अर्घ्य हैं जो सहस्रनाम विधान है।

सहस्रनाम एक संस्कृत काव्य है, जिसमें भगवान के एक हजार नामों से स्तुति की गई है। आचार्य जिनसेन स्वामी ने सन्-770 ई. में जिनसहस्रनाम

स्तोत्र की रचना की। इसमें भगवान के एक हजार नामों से स्तुति की है, प्रत्येक नाम एक विशेष अर्थ का वाची है।

पंडित आशाधर जी ने 13 वीं शताब्दी में 'सहस्रनामस्वोपज्ञ विवृत्ति' नाम से सहस्रनाम की रचना की थी, जहाजपुर के पास माडलगढ़ में उनका जन्म हुआ था, शहाबुद्दीन गौरी के आक्रमणों से त्रस्त होकर मालवा चले गये। पंडित बनारसी दास ने भी सहस्रनाम की रचना की है इनका जन्म 1586 में जौनपुर में हुआ, बाद में व्यापार हेतु आगरा आ गये वे महान् अध्यात्मिक कवि थे। इस तरह दिगम्बर जैन साहित्य में तीन सहस्रनाम प्राप्त हैं। कवि संतलाल जी ने आशाधर जी द्वारा रचित सहस्रनाम का उपयोग इस विधान में किया है। एक-एक नाम का एक छन्द है जिसमें उस नाम का अर्थ समाहित किया है।

आचार्य शुभचंद भट्टारक ने मिला जुलाकर दोनों सहस्रनामों को लिया है याने आशाधर जी एवं जिनसेनाचार्य के सहस्रनाम को।

आर्यिका स्वस्तिभूषण माता जी ने संतलाल जी के ही मंत्रों को लिया है, और छन्दों रचना स्वयं की है।

भारत में सहस्रनामों की परम्परा प्राचीन है, हिन्दु, सिक्ख, बौद्ध, जैन धर्म में सहस्रनाम बहुप्रचलित हैं। हिन्दू धर्म में 22 से अधिक सहस्रनाम हैं ऐसा ज्ञात हुआ है, और अधिक भी हो सकते हैं, जिसमें महाभारत के अनुशासन पर्व में, पद्मपुराण, गरुडपुराण, स्कंधपुराण में विष्णु सहस्रनाम आया है। इसके अलावा गणेश, हनुमान, भवानी, ललित, काली, दुर्गा, शिव आदि प्रमुख सहस्रनाम हैं।

सिक्ख धर्म के अर्जनगुरु ने सुखमणि सहस्रनाम की रचना की। जो राग गौरी में है।

बौद्धधर्म में भद्रकल्पिका सूत्र सहस्रनाम है।

श्वेताम्बर जैनों में आचार्य हेमचंद द्वारा रचित अर्हन्नाम सहस्रसमुच्चय के नाम से है।

तीर्थंकरों के जन्म कल्याणक के अवसर पर सौधर्म इन्द्र सहस्रनामों से तीर्थंकर बालक की स्तुति करता है।

गणेश प्रसाद वर्णी जी ने मेरी जीवन गथा में एक संस्मरण लिखा है। ''कि मैं प्रतिदिन सहस्रनाम का पाठ करता था। समाजिक कार्यों की

व्यस्तता के कारण पढ़ाई नहीं कर पाया और आचार्य की परीक्षा आ गई रात को सहस्रनाम का पाठ करके जो विषय देखा वही परीक्षा में आ गया। मैं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो गया।'' इस तरह सहस्रनाम की अकल्पनीय महिमा है। गुणों के प्रति अनुराग भक्ति है, प्रभु के प्रति समर्पित हो जाना अपने अहं को मार कर प्रभु में रम जाना भक्ति है।

कई लोग इस विधान को 4 या 5 दिन में सम्पन्न कर लेते हैं, ये प्रभु भक्ति है किसी भी रूप में की जा सकती है। कई लोग सहस्रनाम के अर्घ्य दो दिनों में चढ़ते हैं, वह भी ठीक है। जैसा समय हो वैसी भक्ति कर लेना चाहिए पर जल्दीबाजी नहीं करना चाहिए, अक्सर सहस्रनाम पूजा में बहुत जल्दबाजी होती है याने बहुत शीघ्रता से पढ़ते हैं। मन यदि एकाग्र हो तो ठीक है। नहीं तो केवल संगीत की अधिकता में असली महत्व दब जाता है।

कई लोग कहते यह विधान केवल अष्टान्हिका (अठाईयों) में करना चाहिए। पर भक्ति कभी भी की जा सकती है। सिद्धचक्र विधान में ऐसा कहीं उल्लेख नहीं आया कि इसे अन्य समय नहीं कर सकते।

यह विधान कभी भी करो कितने दिनों का करो प्रधानता भावों की होना चाहिए। कर्मों की निर्जरा का उद्देश्य होना चाहिए।

यहां एक बात विचारणीय है कि इस कार्य में कहीं किसी प्रकार से हिंसा न हो इसका का विशेष ध्यान रखना चहिए। ऐसे समय में जब जीवों उत्पत्ति अधिक हो उस समय लाइट का प्रयोग न करें, अधिक दीपक आदि में यदि जीव मर रहे हों तो रात्रि में न जलायें तो अच्छा होगा। जीवों की उत्पत्ती ज्यादा हो तो आरती दिन में करें। सजावट करना है जरी प्लाटिक के फूलों, कागज, कपड़ों आदि से कर लें, लाइट का उपयोग कम हो तो आपका उद्देश्य पूरा होगा। सांस्कृतिक कार्यक्रम धार्मिक होना चाहिए। ये धर्म प्रभावना के साधन हैं, दिखावे के लिए फिजुलखर्ची न करके कुछ ऐसा उपक्रम करें जिससे जैन धर्म की जय हो, ऐसा न करें कि लोग जैनों से ईर्ष्या करने लगें।

आर्यिका स्वस्ति भूषणमाता जी द्वारा लिखित विधान भक्तिभाव पूर्वक करें, अवश्य ही जीवन धन्य होगा। ऐसे कार्य में लगाया समय और धन पूर्वकृत पापों को गलाने में कारण बनेगा।

आवश्यक सामग्री

50 व्यक्तियों की

1.	श्रीफल (नारियल) अथवा बादाम आदि	3000
2.	चावल	50 कि.ग्रा.
3.	लवंग (लौंग)	5 कि.ग्रा.
4.	इलायची	3 कि.ग्रा.
5.	गोल सुपाड़ी	5 कि.ग्रा.
6.	बादाम	25 कि.ग्रा.
7.	गरी गोला	15 कि.ग्रा.
8.	केशर	50 ग्राम
9.	जनेऊ	5 बंडल
10.	कलावा	20 गोला
11.	हल्दीगांठ	2 कि.ग्रा.
12.	कपूर	2 कि.ग्रा.
13.	दशांगी धूप	10 कि.ग्रा.
14.	पीली सरसों	1 कि.ग्रा.
15.	समिधा (आम की लकड़ी)	10 कि.ग्रा.
16.	देशी घी	10 कि.ग्रा.
17.	चंदोवा	3
18.	छत्र	5
19.	सिंहासन	5
20.	चंवर	10
21.	बड़े कलश	4
22.	मंगल कलश	1
23.	दीपक	1
24.	सिद्धचक्र मंडल विधान की किताबें	100 प्रतियां
25.	मांडला हेतु रंग वगैरह	

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना

रवि केवल ज्ञान का चमक रहा, जिनके अंतर हृदय स्थल में।
तत्त्वों का ज्ञान करा करके, पहुँचा देती जो शिवपुर में॥
दुर्गम संयम पथ पर चलकर, निज आत्म ध्यान में लीन रहे।
श्री देव शास्त्र गुरु के चरणों में, हरपल मेरा ध्यान रहे॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं

जग के कीचड़ में फँस करके, जीवन को वृथा गंवा डाला।
स्याद्वाद रूप वाणी को न पा, मिथ्या को मैंने पाला॥
अमृत जल लेकर आया हूँ, यह जन्म मरण तुम दूर करो।
हे करुणाधारी देवागम गुरु, शुभाशीष मम शीश धरो॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग की चिंता ने हे प्रभुवर, जीवन को चिता बना डाला।
हर पल हर क्षण में जलता हूँ, हृदय में उठती है ज्वाला॥
शीतल चंदन लेकर आया, यह भवाताप तुम दूर करो।
हे करुणाधारी देवागम गुरु, शुभाशीष मम शीश धरो॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु घटती रहती पल पल, फिर श्वांसों की टूटी माला।
स्थिरता निज में न पाई, समता को मैंने था टाला॥
अक्षयपुर का मैं वासी बनूं, भव व्याधि नाथ तुम दूर करो।
हे करुणाधारी देवागम गुरु, शुभाशीष मम शीश धरो॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मन की निर्मलता नष्ट हुई, और काम भाव में उलझ गया।
कभी आतम ध्यान भी नहीं किया, संसार चक्र में झुलस गया॥
मैं स्वर्ण पुष्प लेकर आया, तुम सब मुझमे वह शक्ति भरो।
हे करुणाधारी देवागम गुरु, शुभाशीष मम शीश धरो॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन में भोजन बहुत किया, पर भूख न मेरी शान्त हुई।
जिव्ह्या लोलुपता में फँसा रहा, जिंदगी मेरी अशांत भई।।
तेरे चरणों में आया हूँ, मेरा भवाताप तुम दूर करो।
हे करुणाधारी देवागम गुरु, शुभाशीष मम शीश धरो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह ज्ञान दीप हो गया मद्धिम, अज्ञान अंधेरा छाया है।
तेरा मेरा करता रहता, पर हाथ नहीं कुछ आया है।।
प्रभु ज्ञान दीप की ज्योति से, मम अंधकार तुम दूर करो।
हे करुणाधारी देवागम गुरु, शुभाशीष मम शीश धरो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये कर्म बहुत दुःख देते हैं, ये बात मैं सोचा करता था।
पर खोटे कर्मों के द्वारा, पापों की गठरी भरता था।।
ये धूप समर्पित करता हूँ, मम कर्मों को तुम ध्वंस करो।
हे करुणाधारी देवागम गुरु, शुभाशीष मम शीश धरो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं पुण्य पाप का फल पाता, और राग द्वेष में पड़ा रहा।
सुख दुःख को साथी बना लिया, संसार चक्र में अड़ा रहा।।
मैं चतुर्गति में भटक रहा, फल मोक्ष गति तुम शीघ्र करो।
हे करुणाधारी देवागम गुरु, शुभाशीष मम शीश धरो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह फलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के घोर अंधेरे से, घबरा कर चरणों में आया।
अज्ञान मिटा दो हे प्रभुवर, नहीं और कहीं तुम-सा पाया।।
भूले-भटके भ्रमते जग के, आलोक दिखा तुम दूर करो।
हे करुणाधारी देवागम गुरु, शुभाशीष मम शीश धरो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

देव शास्त्र गुरुगुणन को, धरूँ हृदय में धार।
श्रद्धा भक्ति भाव से, नमन करूँ शतबार।।

पद्धरि छंद

अरिहंत देव हैं महादेव, इनके चरणन की करें सेव।
चहुँ कर्म घातिया किये चूर, सुख दर्श ज्ञान से हुए पूर॥
छ्यालिस मूलगुण धारी हो, भव्यों के तुम उपकारी हो।
चरणों तल सुर पंकज रचाये, जय-जय की ध्वनि से नभ गुंजाये॥
नर देव पशु चरणों में आये, तुम वाणी सुनकर शीश नाये।
सब बैर व्याधि क्षण में नशाये, यह चमत्कार चरणों में पाये॥
शीतल वायु और पुष्प वृष्टि, शुभ-शुभ होता जहाँ आप दृष्टि।
बतलाते हैं तत्त्वों का सार, भव्यों की नैया करे पार॥
जग में तुम महिमा है महान, हम करते हैं शत्-शत् प्रणाम।
मेरा भी पुण्योदय आया, तुम पूजन कर मन हर्षाया॥
प्रभु के मुख से हुई ओंकार, वह द्वादशांग का बना सार।
कहलायी वह माँ जिनवाणी, भव्यो की होती कल्याणी॥
निर्ग्रन्थ वेश के धारे हैं, वे गुरुवर हमको प्यारे हैं।
वे पंच महाव्रत धारी हैं, भय क्रोध कुटिलता हारी हैं॥
करे मोक्षपुरी की तैयारी, उन्हें मुक्ति सुन्दरी है प्यारी।
रहे ज्ञान ध्यान में लीन सदा, नहीं अशुभ कर्म करते कदां॥
ऐसे मुनिवर के दर्श पाये, चरणों में शत्-शत् शीश नाये।
'स्वस्ति' जिनवर की करे भक्ति, शीघ्राति शीघ्र मिल जाये मुक्ति॥

दोहा

वर्णन की नहीं शक्ति है, गुण हैं अपरंपार।
श्रद्धा भक्ति भाव से, हो जाये भव पार॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जिनशासन जिनदेव औ, जिन गुरु शीश नवाय।
वीतराग का पद मिले, मुक्ति सुन्दरी पाय॥

महासमुच्चय जिन पूजा

स्थापना (चौपाई)

अरिहंत सिद्धाचार्य नमनकर, पाठक साधु को शीश झुकाकर।
णमोकार को मन से जपता, सारे पाप शमन मैं करता।।
सामायिक नित आत्म को ध्याकर, पूजा का शुभ भाव बनाकर।
अष्टद्रव्य मैं लेकर आया, तेरी पूजन कर हर्षाया।।
सहस्त्रनाम को पढ़ हर्षाऊँ, नित आगम को ध्यान में ध्याऊँ।
ऐसी शक्ति हृदय में देना, अपने चरणों में रख लेना।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु सरस्वती देवी, सोलहकारण भावना, दस धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिन चैत्यालय, पंचमेरू, नन्दीश्वर दीप, कैलाश, गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुरी आदि निर्वाण क्षेत्र अतिशय क्षेत्र चतुर्विंशति तीर्थंकर गणधर मुनीश्वरेभ्यो अवतर-अवतर संवोषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निाधिकरणं

चाल छन्द (तुम सम्मेद शिखर को जइयो)

शुभ भावों का जल लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म-मरण का नाशा, हो देवशास्त्र गुरुवासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर, बीसों जिन शीश झुकाकर।
कृत्रिमा कृत्रिम को ध्याऊँ, पंचमेरु दर्शन जाऊँ।।
सब सिद्धों को नित ध्याऊँ, गणधर ऋषि दर्शन जाऊँ।
दर्शन नन्दीश्वर जाऊँ, सोलह कारण को भाऊँ।।
दस धर्म रत्नत्रय पाऊँ, नवदेवों को शुभ ध्याऊँ।
नमूँ ढाई द्वीप चौबीसी, अतिशय निर्वाण सभी की।।

ॐ ह्रीं अरिहंत, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय, सर्वसाधु...जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन वंदन को लाऊँ, पांचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म-मरण का नाशा, हो देवशास्त्र गुरुवासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर, बीसों जिन शीश झुकाकर।
कृत्रिमा कृत्रिम को ध्याऊँ, गणधर ऋषि दर्शन पाऊँ।।
सब सिद्धों को नित ध्याऊँ, गणधर ऋषि दर्शन जाऊँ।

दर्शन नन्दीश्वर जाऊँ, सोलह कारण को भाऊँ।।
दस धर्म रत्नत्रय पाऊँ, नवदेवों को शुभ ध्याऊँ।
नमूँ ढाई द्वीप चौबीसी, अतिशय निर्वाण सभी की।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय, सर्वसाध्वादि...चंदनं नि. स्वाहा।

शुभ अक्षत धोकर लाऊँ, पांचो परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म-मरण का नाशा, हो देवशास्त्र गुरुवासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर, बीसों जिन शीश झुकाकर।
कृत्रिमा कृत्रिम को ध्याऊँ, पंचमेरु दर्शन जाऊँ।।
सब सिद्धों को नित ध्याऊँ, गणधर ऋषि दर्शन जाऊँ।
दर्शन नन्दीश्वर जाऊँ, सोलह कारण को भाऊँ।।
दस धर्म रत्नत्रय पाऊँ, नवदेवों को शुभ ध्याऊँ।
नमूँ ढाई द्वीप चौबीसी, अतिशय निर्वाण सभी की।।

ॐ ह्रीं अरिहंत, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय, सर्वसाध्वादि...अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों का हार सजाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म-मरण का नाशा, हो देवशास्त्र गुरुवासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर, बीसों जिन शीश झुकाकर।
कृत्रिमा कृत्रिम को ध्याऊँ, पंचमेरु दर्शन जाऊँ।।
सब सिद्धों को नित ध्याऊँ, गणधर ऋषि दर्शन जाऊँ।
दर्शन नन्दीश्वर जाऊँ, सोलह कारण को भाऊँ।।
दस धर्म रत्नत्रय पाऊँ, नवदेवों को शुभ ध्याऊँ।
नमूँ ढाई द्वीप चौबीसी, अतिशय निर्वाण सभी की।।

ॐ ह्रीं अरिहंत, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय, सर्वसाध्वादि...पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन का थाल मैं लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म-मरण का नाशा, हो देवशास्त्र गुरुवासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर, बीसों जिन शीश झुकाकर।
कृत्रिमा कृत्रिम को ध्याऊँ, पंचमेरु दर्शन जाऊँ।।
सब सिद्धों को नित ध्याऊँ, गणधर ऋषि दर्शन जाऊँ।
दर्शन नन्दीश्वर जाऊँ, सोलह कारण को भाऊँ।।
दस धर्म रत्नत्रय पाऊँ, नवदेवों को शुभ ध्याऊँ।
नमूँ ढाई द्वीप चौबीसी, अतिशय निर्वाण सभी की।।

ॐ ह्रीं अरिहंत, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय, सर्वसाध्वादि...नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ दीपक लेकर आऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म-मरण का नाशा, हो देवशास्त्र गुरुवासा॥
तीसों चौबीसी ध्याकर, बीसों जिन शीश झुकाकर।
कृत्रिमा कृत्रिम को ध्याऊँ, पंचमेरु दर्शन जाऊँ॥
सब सिद्धों को नित ध्याऊँ, गणधर ऋषि दर्शन जाऊँ।
दर्शन नन्दीश्वर जाऊँ, सोलह कारण को भाऊँ॥
दस धर्म रत्नत्रय पाऊँ, नवदेवों को शुभ ध्याऊँ।
नमूँ ढाई द्वीप चौबीसी, अतिशय निर्वाण सभी की॥

ॐ ह्रीं अरिहंत, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय, सर्वसाध्वादि...दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वन्हि में धूप जराऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म-मरण का नाशा, हो देवशास्त्र गुरुवासा॥
तीसों चौबीसी ध्याकर, बीसों जिन शीश झुकाकर।
कृत्रिमा कृत्रिम को ध्याऊँ, पंचमेरु दर्शन जाऊँ॥
सब सिद्धों को नित ध्याऊँ, गणधर ऋषि दर्शन जाऊँ।
दर्शन नन्दीश्वर जाऊँ, सोलह कारण को भाऊँ॥
दस धर्म रत्नत्रय पाऊँ, नवदेवों को शुभ ध्याऊँ।
नमूँ ढाई द्वीप चौबीसी, अतिशय निर्वाण सभी की॥

ॐ ह्रीं अरिहंत, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय, सर्वसाध्वादि...धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं सरस सभी फल लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म-मरण का नाशा, हो देवशास्त्र गुरुवासा॥
तीसों चौबीसी ध्याकर, बीसों जिन शीश झुकाकर।
कृत्रिमा कृत्रिम को ध्याऊँ, पंचमेरु दर्शन जाऊँ॥
सब सिद्धों को नित ध्याऊँ, गणधर ऋषि दर्शन जाऊँ।
दर्शन नन्दीश्वर जाऊँ, सोलह कारण को भाऊँ॥
दस धर्म रत्नत्रय पाऊँ, नवदेवों को शुभ ध्याऊँ।
नमूँ ढाई द्वीप चौबीसी, अतिशय निर्वाण सभी की॥

ॐ ह्रीं अरिहंत, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय, सर्वसाध्वादि...फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यों की माला लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म-मरण का नाशा, हो देवशास्त्र गुरुवासा॥

तीसों चौबीसी ध्याकर, बीसों जिन शीश झुकाकर।
कृत्रिमा कृत्रिम को ध्याऊँ, पंचमेरु दर्शन जाऊँ॥
सब सिद्धों को नित ध्याऊँ, गणधर ऋषि दर्शन जाऊँ।
दर्शन नन्दीश्वर जाऊँ, सोलह कारण को भाऊँ॥
दस धर्म रत्नत्रय पाऊँ, नवदेवों को शुभ ध्याऊँ।
नमूँ ढाई द्वीप चौबीसी, अतिशय निर्वाण सभी की॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय, सर्वसाधु सरस्वती देवी, सोलहकारण भावना, दस धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिन चैत्यालय, पंचमेरू, नन्दीश्वर दीप, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुरी आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र चतुर्विंशति तीर्थंकर गणधर मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

त्रिभंगी छन्द

प्रभु ध्यान लगाके, भावना भाके, मंगलमय जीवन करता।
हो चरण में वंदन, जीवन चंदन, भक्ति से मैं भव तरता॥
अरिहंत सिद्ध आचार्य गुरु को, हम नित वंदन करते हैं।
उपाध्याय और सर्व साधु का, ध्यान हृदय में धरते हैं॥
देव हो सच्चा शास्त्र हो सच्चा, सच्चे गुरु को ध्याऊँगा।
भरतेरावत ढाई द्वीप की, सब चौबीसीं ध्याऊँगा॥
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, दर्शन की आशा करता।
होगा जब प्रत्यक्ष दर्श तो, हिय भी हर्ष तभी धरता॥
तीर्थंकर की वाणी ही, जिनवाणी जन कल्याण करे।
भव से पार करा दे उसको, जो इस पर श्रद्धान करे॥
कृत्रिमा-कृत्रिम तीन लोक के, जिन गृह को वंदन करता।
सिद्धालय के सिद्धों को ध्या, उन सम बनूं आशा करता॥
पाँचों मेरु के जिन बिम्बों को, करूँ मैं शत्-शत् बार नमन्।
नंदीश्वर के बावन जिन ध्या, पाप कर्म का करूँ शमन॥
सोलह कारण भाव हैं सुन्दर, पद तीर्थंकर को देते।
दशलक्षण को धारण करके, मुक्ति सुंदरी वर लेते॥
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित का, आराधन हम करते हैं।
हो जाये यदि एक वार तो, चतुर्गति को हरते हैं॥

ऋषभ आदि श्री वीर जिनंदा, भावों से पूजन करता।
सच्ची श्रद्धा सच्ची भक्ति, से ही मानव सुख वरता।।
गौतम गणधर सप्त ऋषि, आदि का ध्यान लगाऊँगा।
विघ्नों का होगा विनाश, औ ऋद्धि-सिद्धि को पाऊँगा।।
राम हनु भरतेश बाहुबलि, के पुरुषारथ याद करूँ।
पंच बालयति तीर्थंकर ध्या, मुक्तिपुरी को शीघ्र वरूँ।।
समवशरण में मानस्तम्भ है, सहस्त्र कूट जिन को वंदूं।
गर्भ जनम तप ज्ञान मोक्ष पा, कल्याणक से अभिनंदू।।
जिस भूमि को तीर्थंकर ने, लेकर जन्म पवित्र किया।
तीर्थ अयोध्या श्रावस्ती, आदि को हमने नमन किया।।
रानीला में प्रगट हुये, श्री आदिनाथ वंदन करता।
चाँद खेड़ी के ऋषभ नाथ का, ध्यान हृदय में नित रता।।
देहरा के चंदा, महावीर जी, सबकी विपदायें हरते।
श्री सम्मेद शिखर चंपापुर, सोनागिर हृदय धरते।।
नेमिनाथ जी मोक्ष गये, गिरनार गिरि को वंदन है।
आदिनाथ कैलाश गिरि की, मिट्टी बन गई चंदन है।।
जितने मुनिवर सिद्ध हुए, निर्वाण भूमि को नमन करूँ।
कर्मनाश कर जग का दुख हर, मैं भी मुक्ति स्वयं करूँ।।
शुभ भावों से की गई पूजा, शुभ फल को ही देती है।
भक्ति अर्चना पूजा वंदना, संकट सब हर लेती है।।
मोह क्रोध तज पाप छोड़कर, निज का रूप निहारूँगा।
'स्वस्ति' जिन पूजन करके ही, प्रभु सम रूप सम्हारूँगा।।

दोहा

पूजन से प्रभु आपकी, रोम-रोम हर्षाये।
जिन पूजन का फल मिले, स्वर्ग मोक्ष को पाये।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु सरस्वती देवी, सोलहकारण भावना, दस धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिन चैत्यालय, पंचमेरू, नन्दीश्वर दीप, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुरी आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र चतुर्विंशति तीर्थंकर गणधर मुनीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जिन शासन जिन देव औ, जिन गुरु शीश नवाय।
वीतराग का पद मिले, मुक्ति सुंदरी पाय।।

इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षेपत्

श्री सिद्धचक्र महात्म्य

श्री सिद्धचक्र वरदान, मुक्ति का दान।
करेगा भाई, करमों को देत नशाई।।
फैला जीवन में अंधियारा, श्री सिद्धचक्र से उजियाला।
निज आतम ज्योति जगाये, मन हर्षाई।।
करमों को देत नशाई...
तृष्णा विषयों में उलझाती, भक्ति विषयों से सुलझाती।
परमेश्वर पूजा करो, शांति आ जाई।।
करमों को देत नशाई...
संसार जगत ये नश्वर है, श्री सिद्ध प्रभु अविनश्वर है।
गुरुओं ने ही यह बात, हमें बतलाई।।
करमों को देत नशाई...
सम्यग्दर्शन धारी मैंना, वह नहि माने कोई कहना।
गुरु वचनों पर ही, वह तो श्रद्धा लाई।।
करमों को देत नशाई...
श्री सिद्धचक्र का पाठ करे, कोढ़ी काया का कोढ़ हरे।
गंधोंदक छींटा तन में, देय हर्षाई।।
करमों को देत नशाई...
भंगुर प्राणों का मोह तजा, श्रीपाल ने आतमराम भजा।
दीक्षा लेकर श्री मुक्ति सुंदरी पाई।।
करमों को देत नशाई...
मैंना ने दीक्षा को धारा, सारा जग मैंना से हारा।
अगले भव में मैंना भी मुक्ति जाई।।
करमों को देत नशाई...

जब पर्व अठाई आता है, जो भी यह पाठ कराता है।
आधि व्याधि सब संकट, होंय पलाई॥
करमों को देत नशाई...
यदि सिद्ध परम पदपाना है, श्री सिद्धचक्र करवाना है।
'स्वस्ति' मन वांछित फल को ही पा जाई॥
करमों को देत नशाई...

प्रशस्ति

चौपाई

सिद्धों की महिमा है न्यारी, सिद्धचक्र की है तैयारी।
अष्ट कर्म को नष्ट किया है, दुष्ट कर्म को छोड़ दिया है॥
नश्वर है संसार की माया, तुमने इससे पिण्ड छुड़ाया।
तुमको यह संसार न भाया, त्याग तपस्या कर दिखलाया॥
जब तक जग में राग रहेगा, तब तक मन में आग जगेगा।
कर्म जीव को नित्य नचाता, धर्म जीव को नित्य बचाता॥
मत्यु जीव की आ जाती है, अन्य गति में ले जाती है।
मानुष तन सबसे प्यारा है, त्याग तपस्या में न्यारा है॥
मुक्ति इसही तन से पाये, देव नरक निर्यंच ना जाये।
अतः समय ना व्यर्थ गंवाना, तप संयम में इसे लगाना॥
सच्चा सुख इससे ही पायें, सिद्धों सम हम भी हो जायें।
शांति धारा का गंधोदक, भक्तों को बनता है औषध॥
भक्ति की शक्ति बढ़ जाये, रोगों से मुक्ति मिल जाये।
सिद्धचक्र का पाठ कराना, सिद्धों की पूजा को गाना॥
गुरु वचन मैना अपनाये, सिद्धचक्र का पाठ कराये।
स्वयं कर्म की निन्दा करती, रो-रो पश्चाताप भी करती॥
गुरु का भी आशीष था पाया, भक्ति से अतिशय दिखलाया।
वर्ष अठाई जब भी आये, सिद्धचक्र का पाठ रचाये॥
सबसे उत्तम फल को पायें, नरभव को ही सफल बनायें।
गंधोदक के छींटे डाले, कटे कर्म के सब जंजाले॥
मैना ने यह पाठ कराया, पति धर्म को आप निभाया।

संग साथ में पूजा करती, श्रीपाल के कुष्ट को हरती॥
संग सप्त शत सुख को पाया, कुष्टी तन कंचन करवाया।
राज्य भोग फिर दीक्षा धारी, मुक्ति की कर ली तैयारी॥
आर्यिका बन मैंना तर करती, कर्मों की बेड़ी सब झड़ती।
अगले भव में मुक्ति जाये, सिद्धचक्र के फल को पाये॥
रुड़की नगर है धर्म प्रधाना, शुभ भावो से लिखा विधाना।
उमड़े भाव सिद्ध भक्ति के, सिद्धचक्र की अभिव्यक्ति के॥
कार्तिक शुक्ला पर्व अठाई, लिखने की दशमी तिथि आई।
माघ दोज शुक्ला को पूरा, सिद्ध गुणों को लिख भरपूरा॥
दो हजार सन् और चार था, चौमासे का यह बिहार था।
रुड़की के सब बंधु भाई, सुनकर सबका दिल हर्षाई॥
हरिद्वार वासी भी आये, हो विधान कब भावना भाये।
सिद्धों की महिमा को लिखकर, अपने आतम को भी लखकर॥
स्वयं सिद्ध की भावना भाये, सिद्धों की पदवी को पाये।
'स्वस्ति' के कर्मों के हरना, 'स्वस्ति' के अज्ञान को हरना॥
हर अठाई में पाठ कराये, पाप कर्म को शीघ्र नशाये।
स्वर्ग मोक्ष तो इसका फल है, हर मुश्किल का यह ही हल है॥
और नहीं कुछ भावना भाऊँ, त्याग तपस्या मुक्ति जाऊँ।
यदि गलती हो शोध को पढ़ना, शुभ भावों से गुण का वरना॥

आरती

(तर्ज-वीरा महावीर स्वामी)

मुक्ति के हो तुम स्वामी, भक्तों के अंतर्यामी।
हम सब उतारें तेरी आरती। ओ बाबा......

कर्म जीव को नित्य सताये, कर्म को आप सताये।
नाश दिया है उनको भगवन, मुक्ति पथ दिखलाये॥
महिमा को तेरी गाये, गरिमा को नित्य बढ़ाये।
हम सब उतारें तेरी आरती। ओ बाबा......

सिद्धों का आराधन करना, कष्ट दूर हो जाये।
आत्म बाग के माली बनकर, आनंद फूल खिलाये।।
ज्ञानी नित दीप जलाये, सागर के मोती पाये।
हम सब उतारें तेरी आरती। ओ बाबा......

हो आदर्श हमारे जिनवर, भक्ति हम नित करते।
है सौभाग्य हमारा प्रभुवर, भक्त कर्म को हरते।।
आशीष हम तेरा पाये, सिद्धों का पाठ रचाये।
हम सब उतारें तेरी आरती। ओ बाबा......

ॐ नमः सिद्धेभ्यः
श्री आदिनाथाय नमः

श्री सिद्धचक्र विधान

मंगलाचरण

दोहा

सिद्ध प्रभु भगवान की, महिमा अपरम्पार।
सिद्धचक्र वर्णन करूं, होवे भव से पार।।

चौपाई

सिद्ध प्रभु की महिमा गायें, चरणों में हम शीश झुकायें।
सिद्ध प्रभु सिद्धालय वासी, हृदय कमल के बनो निवासी।।
भक्ति से शक्ति है आई, भावों की ज्योति प्रगटाई।
भाव बना हम पाठ रचायें, सिद्धों के गुण को हम गायें।।
सिद्ध प्रभु के गुण हैं प्यारे, तारण तरण हैं आप हमारे।
सर्वश्रेष्ठ है जग में जिनवर, गुण गायें मिल कर नारी नर।।
भक्त चरण जब भी हैं आये, सुख शांति समृद्धि पाये।
सिद्धचक्र का पाठ है न्यारा, सब को लगता प्यारा-प्यारा।।

पर्व अठाई जब भी आये, सिद्धचक्र का पाठ रचाये।
भावों से तुम इसको करना, पुण्य बढ़ा पापों को हरना॥
मैना ने भक्ति से कीना, मन वांछित फल उसने लीना।
श्री पाल की कोढ़ी काया, कंचन सम था उसे बनाया॥
संग सात सौ कुष्ठी सारे, गंधोदक से बने सितारे।
चहुँ ओर उत्सव है छाया, सिद्ध प्रभू जी आपकी माया॥
भक्त की भक्ति मान दिलाये, सब का ही सम्मान बढ़ाये।
नगर-नगर में पाठ हुआ था, जन-जन में जिन धर्म बढ़ा था॥
जिसने भी भावों से ध्याया, कामधेनु सम फल को पाया।
कार्तिक फागुन जब भी आयें, सिद्धचक्र का पाठ करायें॥
और आषाढ़ में प्रभु को ध्याना, भावों से जिनवर को पाना।
सारे आडम्बर को छोड़ो, पाप कर्म से नाता तोड़ो॥
पर्व मुक्ति का ऐसा आया, सिद्ध प्रभु दर्शन करवाया।
भाग्यशाली ही पूजा करते, पूजा से कर्मों को हरते॥
शुभ भावों से इसको करना, सिद्धों के रंग में है रंगना।
कष्टों से यह मुक्ति दिलाये, "स्वस्ति" दुख सब दूर भगाये॥

दोहा

मन वच काया योग से, जो भी पाठ रचाये।
धन संपत्ति की बात क्या, मोक्ष लक्ष्मी पाये॥

यंत्र स्थापना

दोहा

अर्हं शब्द की शक्ति तो, जग में अपरम्पार।
अकारादि स्वर साथ में, देय धरम का सार॥
अष्ट द्रव्य का थाल ही, भाव से पूज रचाये।
पूरब दिश पूजा करूं, शत-शत शीश नवाये॥

ॐ ह्रीं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये नमः पूर्वदिशि अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण 'क' वर्ग को ध्यावते, भक्ति भाव से आज।
आग्नेय दिश पूजा करो, सुधरें बिगड़े काज॥

ॐ ह्रीं अर्हं क ख ग घ ङ अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये आग्नेयदिशि अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण 'च' वर्ग को ध्यावते, शक्तिमान यह बीज।
नाथ सुनो मेरी अरज, तुम्हें झुकाऊँ शीश॥

ॐ ह्रीं अर्हं च छ ज झ ञ अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये दक्षिणदिशि अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण 'ट' वर्ग को ध्यावते, नैऋत्य दिश का राज।
संगत जिन वाणी मिले, सफल होंय जब काज॥

ॐ ह्रीं अर्हं ट ठ ड ढ ण अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये नैऋत्यदिशि अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण 'त' वर्ग को ध्यावते, पश्चिम दिश सम्मान।
सुख पाऊँ सब दुख हरे, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अर्हं त थ द ध न अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये पश्चिमदिशि अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण 'प' वर्ग को ध्यावते, वायव्य दिश शुभ सार।
जय-जय प्रभु कहते चलो, मिले धर्म का प्यार॥

ॐ ह्रीं अर्हं प फ ब भ म अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये वायव्यदिशि अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण 'य' वर्ग को ध्यावते, उत्तम उत्तम होय।
इन्द्र देव गण नमत हैं, बीज मुक्ति का बोय॥

ॐ ह्रीं अर्हं य र ल व अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये उत्तरदिशि अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

शेष वर्ण चतु और है, दिशा हुई ईशान।
कर्म नाश शिवपुर बसे, नहिं होय परेशान॥

ॐ ह्रीं अर्हं श ष स ह अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये ईशानदिशि अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यावली

जल चंदन अक्षत पुष्प साथ, नैवद्य समर्पित करते हैं।
यह दीप धूप फल अर्घ्य लेय, पूजा हम तेरी करते हैं॥
हैं राग रहित, हैं द्वेष रहित, सिद्धों की महिमा न्यारी है।
हैं क्रोध रहित हैं मान रहित, मुक्ति की अब तैयारी है॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्वादि अष्टगुणसंयुक्त श्री सिद्धपरिमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर जीवन की घडियां, घडियां न खाली रह जायें।
हर श्वांस जपूं भगवन तुमको, बचपन यौवन ना बह जाये॥
अर्घ्यों की थाली ले आया, चरणों में नाथ चढ़ाने को।
भक्ति मेरी स्वीकार करो, आया हूँ शीश नवाने को॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षोडशगुणसंयुक्ताय श्री सिद्धपरिमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौभाग्य है मेरा प्रभु पूजा करी तेरी।
संभावना है टूटेगी हर कर्म की फेरी॥
सिद्धांत में सिद्धों का जो भी ज्ञान सिखाया।
श्रद्धा की भावना से आके शीश झुकाया॥

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्ताय श्री सिद्धपरिमेष्ठिने सर्वसुख प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूल्यांकन करके देखूं तो, जग में ना सार्थक कार्य किया।
परिवेश सुगंधित करने को चरणों में आकर अर्घ्य दिया॥
मन्तव्य हमारा है जिनवर, अवरुद्ध कार्य सब हो जाये।
यह जन्म चुनौती है जग में, इसमें ना फंसकर रह जायें॥
अनुभूत सत्य पर आधारित, शास्त्रों से तुमको जाना है।
निज की अनुभूति पाऊँ मैं, चरणों में अर्घ्य चढ़ाता है॥

ॐ ह्रीं चतुषष्ठिगुणसंयुक्ताय श्री सिद्धपरिमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकुलता छूटे, चिंता टूटे, चिंतन रस में खो जाऊँ।
अर्घ्यों से वंदन, ध्यान का चंदन, मुक्ति में जा बस जाऊं।।
सिद्धों की छाया, पा हर्षाया, निज आतम में लीन रहें।
शुभ ज्ञान की किरणें, भव से तरने, स्वयं सिद्ध स्वाधीन रहे।।

ॐ ह्रीं अष्टविंशत्यधिकशत्गुणसंयुक्ताय श्री सिद्धपरिमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपत्ति स्वर्ग में है लेकिन, पर कर्म मार से ना बचता।
आतम संवार लो संयम से, यह धर्म ही प्राणी को जंचता।।
यह अर्घ्य निमित्त करके भगवन, आतम शुद्धि को आया हूँ।
सिद्धों की खुशबू पाने को, मैं भी जिनवर ललचाया हूँ।।

ॐ ह्रीं षट्पचाशदधिकद्विशत्गुणसंयुक्ताय श्री सिद्धपरिमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधन बनया शक्ति को है, साध्य आतम का भला।
यह द्रव्य तो है मन की वस्तु, भाव शुद्ध आतम कला।।
संसार सागर पारकर हम, मुक्तिपुर को जायेंगे।
फिर सिद्धों के संग बैठकर के, आत्म सुख को पायेंगे।।
हम अष्ट द्रव्यों को मिला, यह अर्घ्य लेकर आये हैं।
सिद्धों की भक्ति मैं करूं, पूजा रचाने आये हैं।।

ॐ ह्रीं द्वादशधिकपंचशत्गुणसंयुक्ताय श्री सिद्धपरिमेष्ठिने सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झूठी काया झूठी माया, झूठा है जग का ये मेला।
पल-पल में पल यह बीतेगा, अंतिम पल में दुख झेला।।
तज राग द्वेष मद मोह सभी, ये अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।
हे सिद्ध प्रभु हम सिद्ध बने, वरदान की आश लगाये हैं।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशत्यधिकैकसहस्रगुणसंयुक्ताय श्री सिद्धपरिमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

"प्रथम पूजा"

स्थापना

शंभू छंद

हो विमल-विमल निर्मल जिनवर, सिद्धालय आप विराजे हैं।
अविनाशी संपत्ति को पाकर, आतम में आप ही साजे हैं।।
जग में प्रसिद्ध हैं सिद्ध प्रभु, महिमा गाने हम आये हैं।
अत्रो-अत्रो तिष्ठो-तिष्ठो, हम हृदय बिठाने आये हैं।।

ॐ ह्रीं णमों सिद्धाणं अष्टगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्रतिष्ठतिष्ठ ठःठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

शंभू छंद

अंतर है कर्मों से मैला, इसको धोने मैं आया हूँ।
जग में आकर के हे प्रभुवर, भौतिकता में भरमाया हूँ।।
हैं राग रहित, हैं द्वेष रहित, सिद्धों की महिमा न्यारी है।
हैं क्रोध रहित, हैं मान रहित, मुक्ति की अब तैयारी है।।1।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसणवीरज सुहमत्तहेव अवगहणं अगुरुलघुमव्वावाहं अष्टगुणसंयुक्ताय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में चिंता का ताप प्रभो, अग्नि सम नित्य जलाता है।
चंदन सम शीतलता पाये, चंदन तब चरण चढ़ाता है।।
हैं राग रहित, हैं द्वेष रहित, सिद्धों की महिमा न्यारी है।
हैं क्रोध रहित, हैं मान रहित, मुक्ति की अब तैयारी है।।2।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः श्रीसम्यक्त्वादि अष्टगुण- संयुक्ताय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद की अभिलाषा ले, चरणों में हम भी आये हैं।
मोती सम अक्षत लेकर के, चरणों में आन चढ़ाये हैं।।
हैं राग रहित, हैं द्वेष रहित, सिद्धों की महिमा न्यारी है।
हैं क्रोध रहित, हैं मान रहित, मुक्ति की अब तैयारी है।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः श्रीसम्यक्त्वादि अष्टगुण- संयुक्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की गंध को पाने को, भौंरे उस पर आ जाते हैं।
शुभ आतम गंध को पाने को, चरणों में पुष्प चढ़ाते हैं॥
हैं राग रहित, हैं द्वेष रहित, सिद्धों की महिमा न्यारी है।
हैं क्रोध रहित, हैं मान रहित, मुक्ति की अब तैयारी है॥4॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः श्रीसम्यक्त्वादि अष्टगुण- संयुक्ताय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन के बल पर जीते हैं, पर आतम सौख्य नहीं पाता।
नैवेद्य चढ़ाने आये हैं, भोजन से मिल जाये साता॥
हैं राग रहित, हैं द्वेष रहित, सिद्धों की महिमा न्यारी है।
हैं क्रोध रहित, हैं मान रहित, मुक्ति की अब तैयारी है॥5॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः श्रीसम्यक्त्वादि अष्टगुण- संयुक्ताय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञानी को अंधियारे में शुभ सत्य नजर ना आया है।
शुभ ज्ञान दीप की ज्योति जगे, इससे यह दीप चढ़ाया है॥
हैं राग रहित, हैं द्वेष रहित, सिद्धों की महिमा न्यारी है।
हैं क्रोध रहित, हैं मान रहित, मुक्ति की अब तैयारी है॥6॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः श्रीसम्यक्त्वादि अष्टगुण- संयुक्ताय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की शक्ति के आगे, हारा हूँ भगवन मैं हरदम।
कर्मों का धुआँ उड़ाने को, यह धूप चढ़ाया है चरणन॥
हैं राग रहित, हैं द्वेष रहित, सिद्धों की महिमा न्यारी है।
हैं क्रोध रहित, हैं मान रहित, मुक्ति की अब तैयारी है॥7॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः श्रीसम्यक्त्वादि अष्टगुण- संयुक्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल पाने जी ललचाता है, फल की ही चाहत रहती है।
फल पाने फल को लाये हैं, करूणा की धारा बहती है॥
हैं राग रहित, हैं द्वेष रहित, सिद्धों की महिमा न्यारी है।
हैं क्रोध रहित, हैं मान रहित, मुक्ति की अब तैयारी है॥8॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः श्रीसम्यक्त्वादि अष्टगुण- संयुक्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प साथ, नैवेद्य समर्पित करते हैं।
यह दीप धूप फल अर्घ्य लेय, पूजा हम तेरी करते हैं।। है राग रहित.।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः श्रीसम्यक्त्वादि अष्टगुण-संयुक्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दोहा

सिद्ध प्रभु की भक्ति से, तन-मन-जन हर्षाय।
सिद्धचक्र शुभ पाठ है, शत-शत शीश नवाय।।

(इति मंडलोस्परि पुष्पांजलि)

अष्ट गुण अर्घ्य

चौपाई

मोह मोक्ष में बाधा डाले, मोह के मोही हैं रखवाले।
मोह हंसाये मोह रुलाये, मोह जगत में है भरमाये।।
मोह कर्म को आप नशाया, समकित गुण को आपने पाया।
सिद्ध प्रभु को शीश झुकाऊँ, भक्ति से निज आतम।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में द्रव्य है जितने, युगपत जाने प्रभु जी उतने।
ज्ञान अनंता धार लिया है, ज्ञान से आतम दर्श किया है।।
ज्ञानावरणी आप नशाया, ज्ञानानंद सरस रस पाया।
सिद्ध प्रभु को शीश झुकाऊँ, भक्ति से निज आतम ध्याऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं अनंतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु अचक्षु अवधि के नाशी, प्रभुवर आप हुए अविनाशी।
आत्म दर्श केवल को पाया, मैं भी दर्शन करने आया।।
आत्म चक्षु से जग अवलोका, पाऊँ दर्शन मैं सिद्धों का।
सिद्ध प्रभु को शीश झुकाऊँ, भक्ति से निज आतम ध्याऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व कार्यों में विघ्न को डाले, पुण्य कार्य को है यह टाले।
अंतराय को नाशा स्वामी, शक्ति अनंत के हुये हो नामी।।

भक्ति से कुछ शक्ति पाऊँ, शक्ति से यह कर्म भगाऊँ।
सिद्ध प्रभु को शीश झुकाऊँ, भक्ति से निज आतम ध्याऊँ॥4॥

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन-मन से तुम मुक्त हुये हो, सूक्ष्मतत्व गुण युक्त हुये हो।
अविकारी अमूरत होगये, सिद्धालय वासी के वासी हो गये॥
नाम कर्म की है यह माया, आपने इसकी छोड़ी छाया।
सिद्ध प्रभु को शीश झुकाऊँ, भक्ति से निज आतम ध्याऊँ॥5॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गतियों का बंधन है टूटा, आयु कर्म से नाता छूटा।
अवगाहन गुण के भंडारी, करते मुक्ति की तैयारी॥
पूजा के हम भाव बनायें, अष्ट द्रव्य लेकर के आये।
सिद्ध प्रभु को शीश झुकाऊँ, भक्ति से निज आतम ध्याऊँ॥6॥

ॐ ह्रीं अवगाहनत्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के पद हैं ऊँचे नीचे, बैठे हो तुम आंखें मीचे।
गोत्र शत्रु को तुमने नाशा, अगुरू लघु में करते वासा॥
जग के पद को ना मैं चाहूँ, दो पद केवल आपके पाऊँ।
सिद्ध प्रभु को शीश झुकाऊँ, भक्ति से निज आतम ध्याऊँ॥7॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वात्मकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई बाधा अब न आवें, सुख ही सुख चहुं दिश में छावें।
वेदनीय का किया है चूरा, अव्याबाध का सुख भरपूरा॥
कर्माधीन का सुख है छूटा, वेदनीय से नाता टूटा।
सिद्ध प्रभु को शीश झुकाऊँ, भक्ति से निज आतम ध्याऊँ॥8॥

ॐ ह्रीं अव्याबाधत्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ जयमाला ॥

दोहा

मलिन आत्म को स्वच्छ कर, पाया दिव्य प्रकाश।
चेतनता इतनी जगी, करी न पर की आश॥

शंभू छंद

सिद्धों की प्रसिद्धि है जग में, गुणवान हो तुम भगवान हो तुम।
भक्तों को सिद्धि पाने को, आराध्य हो तुम आराधक तुम॥
जग में जो जीव अनंतो है, वे सब निगोद के वासी रहे।
पीड़ा सहकर दुख को पाकर, कुछ पुण्य भोग बाहर आये॥
गतियों-गतियों में जा-जाकर, भटकाया था इन कर्मों ने।
मानुष पर्याय मिली मुझको, समझाया था फिर गुरुओं ने॥
दीक्षा शिक्षा को पा करके, संयम को धारण कर लीना।
तेरह चरित्र का पालन कर, अंतर में धर्म सजा लीना॥
शुभ पंच महाव्रत मुक्तित्रय, बारह भावों को भाया था।
आतम ने आतम ध्यान किया, शांति का सावन छाया था॥
गर्मी में गिरी पर जा करके, चिंतन में चित्त लगाया था।
सर्दी में सरिता के तट पर, कर्मों को शीघ्र भगाया था॥
वर्षा में ज्ञान की वर्षा कर, चतु माह में एकासन ठाड़े।
बस ध्यान ध्यान बस ध्यान-ध्यान, वर्षा गर्मी हो या जाड़े॥
शुद्धोपयोग में रह रहकर, आतम की शुद्धि करते थे।
कर्मों के पर्वत रह रहकर, झरने से निर्झर झरते थे॥
शुभ धर्म ध्यान से आगे बढ़, तुम शुक्ल ध्यान में रहते थे।
निर्ग्रंथ कठिन मारग को पा, उपसर्ग परीषह सहते थे॥
जड़-जड़ होता चेतन-चेतन, यह बात समझ में आई है।
जड़ को तज आतम रक्षा में, निज आत्म शक्ति प्रगटाई है॥
अंदर संयम बाहर संयम, हिंसा आदि से दूर रहें।
पांचों समिति पालन करके, जिन देव वंदना नित्य करें॥
कर्मों ने जोर लगाया पर, आतम की शक्ति ज्यादा थी।
इससे ज्यादा तप करते पर, तन की कुछ तो मर्यादा थी॥
यह दुष्ट मोह जब भागा तो, तब चार घातिया भाग गये।
क्षायिक श्रेणी पर चढ़कर के, सम्पूर्ण ज्ञान को पाये गये॥
कर्मों का वश नहीं चलता था, तप की शक्ति से हारे थे।
कर्मों के बादल दूर हटे, सब दूर हुये अंधियारे थे॥
शुभ समवशरण रचना करके, उपदेश सभा तैयार हुई।

भव्यों ने अमृत पान किया, जिन की वाणी जिनवाणी हुई॥
पुण्योदय जिस धरती का था, उस जगह प्रभु जी जाते थे।
शुभ दिव्य ध्वनि का अमृत वे, सब भक्तों पर बरसाते थे॥
जब आयु कर्म का अंत हुआ, तब समुद्घात अपनाया था।
बाकी कर्मों के शत्रु को, क्षण भर में आप भगाया था॥
शाश्वत स्वाश्रित सुख पाने को, मुक्ति में जाकर वास किया।
फिर सिद्ध शिला के वासी बन, सिद्धों सम सुख को पाये लिया॥
आतम का अंतिम लक्ष्य है जो, वह तो मुक्ति को जाना है।
बाकी जग तो सब झूठा है, सच तो मुक्ति को पाना है॥

दोहा

अंतिम इच्छा ''स्वस्ति'' की, मुक्ति नगर में जाये।
सिद्ध प्रभु के चरण में, शत-शत शीश झुकाये॥1॥

ॐ ह्रीं सम्मत्तणाणादि अट्ठगुणसंजुत्तसिद्धेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वच काय योग तज, बन जाऊँ निष्काम।
सिद्ध प्रभु आशीष दो, बारम्बार प्रणाम॥

परिपुष्पांजलि

जाप्य मंत्र : (यहाँ 108 बार 'ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा नमः' मंत्र का जाप करें)

द्वितीय पूजा

त्रिभंगी छंद

स्थापना

शुभ ज्ञान का दीपक, लेकर के हम, आत्म जगाने आये हैं।
मन में प्रभु आओ, दर्श दिखाओ, नाम लेत हर्षाये हैं॥
तन मन का साथी, दिया औ बाती, ऐसे तुमको ध्याऊँगा।
मम हृदय पधारो, काज संवारो, मन में तुम्हें बिठाऊँगा॥

ॐ ह्रीं णमों सिद्धाणं षोडशगुणसंयुक्तश्रीसिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शंभू छंद

जल

जल प्यास बुझाता है तन की, मन तो प्यासा ही रह जाता।
जल मैल धोय है इस तन का, मन तो मैला ही रह जाता॥
संबंध आत्मा से जोड़ूं, इससे जल लेकर आये हैं।
हे सिद्ध प्रभु भगवान तुम्हें, अर्पण करने जल लाये हैं॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षोडशगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन

यह सिद्ध स्वाभावी आतम है, शीतल है चंदा किरणों सम।
पर क्रोध अग्नि में जलता हूँ, जलता है मेरा अंतर्मन॥
शीतलता की इच्छा लेकर, शीतल चंदन को ले आया।
हे सिद्ध प्रभु तुम सम बनने, भक्ति भावों में भर लाया॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षोडशगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

विचलित करती है बाधायें, बाधाओं ने पथ मोड़ दिया।
अपने स्वरूप की प्राप्ति हेतु, मैंने अब यह जग छोड़ दिया॥
क्षय वत पद को तज कर के प्रभु, अक्षय पद को ही पाना है।
संसार जाल से निकल पड़ूं, बस पास तुम्हारे आना है॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षोडशगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

प्रतिक्षण प्रतिफल यह इंद्रिय सुख, पाने को जी ललचाता है।
इंद्रिय का दास बना रहता, पूरी करने भरमाता है॥
पुष्पों सम सुंदर आतम है, आतम का रूप सलौना है।
शुद्धातम को प्रभु पहचाने, आतम ना कोई खिलौना है॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षोडशगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

जीवन चलता है भोजन से, ऐसा मैं माना करता था।
पर नरकों में ना भोजन है, फिर भी यह जीवन चलता था।।
आतम की क्षुधा ये नश जावे, नैवेद्य भावना लाया हूँ।
भक्तों के हृदय भरी भक्ति, यह पुंज चढ़ाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षोडशगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

सूरज का उजियारा जग में, रात्रि के तम को हर लेता।
पर ज्ञान सूर्य जब प्रगट होय, अंतर में उजियाला करता।।
हो दूर अंधेरा इस मन का, यह दीप चढ़ाने आया हूँ।
मैं सिद्ध प्रभु के चरणों में, यह शीश नवाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षोडशगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

कर्मों से रिश्तेदारी कर, कर्मों में उलझा रहता हूँ।
निष्कर्म भावना दूर हटी, कर्मों से जग में रहता हूँ।।
हो कर्म दूर निष्कर्म बनूं, मैं कर्म भगाने आया हूँ।
यह धूप चढ़ाकर हे भगवन, तुम सम बनने को आया हूँ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षोडशगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

जग को मैं अपना-अपना कह, जीवन जग में ही उलझाया।
कर्मों का फल जब पाते हैं, कोई भी पास नहीं आया।।
आकुल-व्याकुल इस जीवन में, फल शांति का ही मिल जावे।
भक्ति की वाणी में भगवन, शुभ ध्यान कमल ही खिल जावे।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षोडशगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

क्षण भंगुर जीवन की घड़ियाँ, घड़ियाँ न खाली रह जायें।
हर श्वांस जपूं भगवन तुमको, बचपन यौवन ना बह जाये।।
अर्घ्यों की थाली ले आया, चरणों में नाथ चढ़ाने को।
भक्ति मेरी स्वीकार करो, आया हूँ शीश नवाने को।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षोडशगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ सोलह गुण सहित अर्घ्य ॥

दोहा

सोलह गुण के अर्घ्य में, सिद्ध प्रभु गुणगान
सिद्धों का वर्णन करूँ, बारंबार प्रणाम

मंडलोस्परि परिपुष्पांजलि

चाल छंद (तर्ज- जीवन के किसी भी.....)

दर्शन अनंत को पाया, चरणों में शीश झुकाया।
अवलोकन लोक का करते, फिर भी आतम में रहते॥
कर्मों को सिद्ध ने नाशा, करते मुक्ति में वासा।
सिद्धों की पूजा गाये, सब पाप कर्म नश जाये॥1॥

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान का मेघ हटाये, शुभ ज्ञान सूर्य प्रगटाये।
चहुँ दिश में हो उजियाला, पहने मुक्ति की माला॥
कर्मों को सिद्ध ...॥2॥

ॐ ह्रीं अनंतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ति के हो भंडारा, दिन रैन करे तप सारा।
तप से तप शक्ति बढ़ायें, फिर शक्तिमान बन जायें॥
कर्मों को सिद्ध ...॥3॥

ॐ ह्रीं अतुलवीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर आश्रित सुख को छोड़ा, आतम से नाता जोड़ा।
अपने आनंद में रहते, अभिलाषा ना वे करते॥
कर्मों को सिद्ध ...॥4॥

ॐ ह्रीं अनन्तसुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्त्व है आत्म प्रकाशी, निज भेदज्ञान के वासी।
जब ज्ञान शुद्ध हो जाये, आतम का रूप सुहाये॥
कर्मों को सिद्ध ...॥5॥

ॐ ह्रीं अनन्तसम्यक्त्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत सम अचल हैं रहते, ना गमन कहीं वे करते।
आना-जाना सब छोड़ा, स्थिर हो ध्यान में जोड़ा।।
कर्मों को सिद्ध ने नाशा, करते मुक्ति में वासा।
सिद्धों की पूजा गाये, सब पाप कर्म नश जाये।।6।।

ॐ ह्रीं अचलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति सूक्ष्म हो गये स्वामी, हो गये हो अंतर्यामी।
ज्ञानी भी जान ना पाये, वाणी भी ना कह पाये।।
कर्मों को सिद्ध ...।।7।।

ॐ ह्रीं अनन्तसूक्ष्मत्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो जन्म मरण की बाधा, सिद्धों ने इसको साधा।
सब रोग शोक मिट जाये, औ अव्याबाध सुख पाये।।
कर्मों को सिद्ध ...।।8।।

ॐ ह्रीं अव्याबाधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक साथ अनेक भी रहते, बाधा को नाहीं लहते।
पर बहुत भिन्न है ज्ञाना, औ नित्य निरंजन ध्याना।।
कर्मों को सिद्ध ...।।9।।

ॐ ह्रीं अवगाहनगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुखमय है होय बुढ़ापा, ना रहती इसमें साता।
तुम अजर-अमर अविनाशी, निज आतम ज्योति प्रकाशी।।
कर्मों को सिद्ध ...।।10।।

ॐ ह्रीं अजराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यमराज काल सम आवे, जीवों को आ ले जावे।
तुम अमर हुये जिन देवा, मैं करूँ चरण की सेवा।।
कर्मों को सिद्ध ...।।11।।

ॐ ह्रीं अमराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब पावन गुण आ जावे, सिद्धों में आन समावे।
चक्षु से ना दिख पाये, चरणों में शीश झुकाये।।
कर्मों को सिद्ध ...।।12।।

ॐ ह्रीं अप्रमेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रिय संबंध अनोखा, मांगे हर सुख का मौका।
पर आप अतीन्द्रिय स्वामी, दुख मेटो अंतर्यामी।।
कर्मों को सिद्ध ...।।13।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियज्ञानधारकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये वेद जगत भरमावे, जीवों का चित्त लुभावे।
आकुल-व्याकुल जग सारा, तुमने निज आतम धारा।।
कर्मों को सिद्ध ...।।14।।

ॐ ह्रीं अवेदाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़-जीव भेद पहिचानो, लकड़ी में अग्नि मानो।
शुभ भेद ज्ञान अपनाया, इससे ही आतम पाया।।
कर्मों को सिद्ध ...।।15।।

ॐ ह्रीं अभेदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज रसानन्द को चखते, आशा न किसी से करते।
स्वाधीन सरस सन्यासी, तुम हो शिवपुर के वासी।।
कर्मों को सिद्ध ...।।6।।

ॐ ह्रीं निजाधीनजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

पावन तन मन कर लिया, पावन कीना ज्ञान।
पावन अमृत रस चखा, बारंबार प्रणाम।।

पद्धरि

श्री सिद्ध चरण में है प्रणाम, मुक्ति में इनका बना धाम।
सिद्धों से सिद्धि पाई है, आत्म की ज्योति जगाई है।।
शुभ-अशुभ सभी को छोड़ा है, सारे बंधन को तोड़ा है।
तन का बंधन ना बांध सका, मोही का मोह न रोक सका।।

रागों को कांटो सम जाना, आतम को फूलों सम माना।
फूलों की खुशबू लेते हो, भंवरे सम उसमें रहते हो॥
क्षणभर को ध्यान ना हटता है, आतम आनंद ना घटता है।
विपरीत कार्य न करते हो, निज ध्यानी निज में रहते हो॥
यमराज से न तुम डरते हो, काले कर्मों को हरते हो।
जो आश्रित है वह दुःख हरे, मुक्ति पथ जा हर कार्य सरे॥
अविनाशी शिव सुख वासी हो, अनुपम विज्ञान विकासी हो।
पर आश्रय तज स्वः आश्रित हो, होते ना आप निराश्रित हो॥
भव सागर स्वयं ही पार किया, औरों को भी तो तार दिया।
तुम तारण तरण विश्वासी हो, हृदय के कमल विकासी हो॥
तप बल का कोई पार नहीं, इस जग से होती हार नहीं।
प्रभु शुद्ध सनातन हो जग में, भव्यों को फूल बिछा मग में॥
निर्भय हो भय कुछ नाहि रहा, पुरुषारथ से भय भाग गया।
शाश्वत पद के प्रभु धारी हैं, मुक्ति के आप बिहारी हैं॥
शरणागत को शरणा देते, भक्तों को अपने सम करते।
पूजा भावों को शुद्ध करें, शुद्धि से सारे कर्म भगे॥
''स्वस्ति'' की नैया पार करो, कर्मों को सारे शीघ्र हरो।
हमको मुक्ति में आना है, केवल तुमको ही पाना है॥

दोहा

ध्येय ध्यान से पा लिया, जग से लिया विराम।
सिद्धालय में बस गये, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने अनन्त दर्शन ज्ञानादि षोडश गुण संयुक्त सिद्धेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति।

सिद्ध देव परमात्मा, सिद्ध पद का दो दान।
सिद्धचक्र पूजा करें, बारम्बार प्रणाम॥

परिपुष्पांजलि

जाप्य मंत्र : (यहाँ 108 बार 'ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा नमः' मंत्र का जाप करें)

तृतीय पूजा

शंभू छंद

स्थापना

हे सिद्ध प्रभो, हे सिद्ध प्रभो, सिद्धालय के तुम वासी हो।
मन मंदिर में मेरे आओ, तुम हृदय कमल विश्वासी हो।।

भावों से तुमको बुला रहा, भावों में आकर बस जाओ।
मन शुद्ध करो आकर मेरा, कर्मों को आन भगा जाओ।।

जग तो स्वारथ का मेला है, किससे नाता कैसा नाता।
बस एक तुम्हीं सच्चे भगवन, चरणों में मिलती है साता।।

पूजा तेरी मेरे प्रभुवर, भवसागर पार करायेगी।
क्षण भंगुर मय इस जीवन में, कुछ तो शांति आ जायेगी।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत्गुणसहितविराजमान श्रीसिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ट तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)

दोहा

अष्ट गुणों को पायके, पाया मुक्ति वास।
पूर्ण उपद्रव शांत हों, हो शांति का वास।।

इति यंत्रस्थापनार्थं पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

परिपुष्पांजलिं

शेर चाल (तर्ज-हे दीन बधुश्री पति............)

जल

कर्मों ने आत्मा को प्रभु खूब घुमाया।
निज कर्म को धोने प्रभु जल लेके मैं आया।।
सिद्धांत में सिद्धों का जो भी ज्ञान सिखाया।
श्रद्धा की भावना से आके शीश झुकाया।।1।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिन् जन्मजरा रोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन

मैं क्रोध में चिंता में सदा जलता ही रहा।
औरों ने दिया दुःख तो दुखों को भी सहा।।
सिद्धांत में सिद्धों का जो भी ज्ञान सिखाया।
श्रद्धा की भावना से आके शीश झुकाया।।2।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

पद-पद में पद की चाह रही पद ने भरमाया।
अक्षय पदों की चाह लिये पुंज ले आया।।
सिद्धांत में सिद्धों का जो भी ज्ञान सिखाया।
श्रद्धा की भावना से आके शीश झुकाया।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

तिर्यंच देव नारकी मानव जहाँ बना।
बस वासना के चक्करों में मैं वहाँ सना।।
सिद्धांत में सिद्धों का जो भी ज्ञान सिखाया।
श्रद्धा की भावना से आके शीश झुकाया।।4।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

भोजन किया पर पेट ने तृष्णा है जगाई।
हर बार मैं भोजन करूं पर शांति ना आई।।

सिद्धांत में सिद्धों का जो भी ज्ञान सिखाया।
श्रद्धा की भावना से आके शीश झुकाया।।5।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत्‌गुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

अज्ञान अंधेरा है मुझे धर्म न भाये।
अंतर में रहे रोशनी ये दीप ले आये।।
सिद्धांत में सिद्धों का जो भी ज्ञान सिखाया।
श्रद्धा की भावना से आके शीश झुकाया।।6।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत्‌गुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकार-विनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

दुश्मन बना है मोह कर्म और बुलाता।
मोही ना करे धर्म मोह भाव जगाता।।
सिद्धांत में सिद्धों का जो भी ज्ञान सिखाया।
श्रद्धा की भावना से आके शीश झुकाया।।7।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत्‌गुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

कल्याणकारी देव तुम्हें पूजने आया।
मुक्ति की मुझे आश है फल आज चढ़ाया।।
सिद्धांत में सिद्धों का जो भी ज्ञान सिखाया।
श्रद्धा की भावना से आके शीश झुकाया।।8।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत्‌गुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

सौभाग्य है मेरा प्रभु पूजा करी तेरी।
संभावना है टूटेगी हर कर्म की फेरी।।
सिद्धांत में सिद्धों का जो भी ज्ञान सिखाया।
श्रद्धा की भावना से आके शीश झुकाया।।9।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत्‌गुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ बत्तीस गुण सहित अर्घ्य॥

दोहा

सर्वोत्तम पद के धनी, सर्वोत्तम भगवान।
सर्वोत्तम पुष्पांजलि, बारंबार प्रणाम॥

मंडलोस्परि परिपुष्पांजलि

चौपाई

सब विभाव परिणति को नाशा, शुद्ध निरंजन हो अविनाशा।
क्षायिक सम्यक् दर्शनधारी, शुद्ध चेतना हो अविकारी॥
भव-भव में मैं घूम चुका हूँ, सुख-दुख सारे भोग चुका हूँ।
जग को तज अब शरण में आया, सिद्ध प्रभु जी दे दो छाया॥1॥

ॐ ह्रीं शुद्ध चेतनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार ज्ञान तज एक को पाया, परम विशुद्धि ने अपनाया।
ज्ञान मयी है आतम प्यारी, सब द्रव्यों में सबसे न्यारी॥
भव-भव में....॥2॥

ॐ ह्रीं शुद्धज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन निज में व्याप्त रहे हैं, चेतन आनंद धार बहे हैं।
निज में रहें न पर में जाते, शुद्ध सिद्ध को शीश झुकाते॥
भव-भव में....॥3॥

ॐ ह्रीं शुद्धचिद्रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का छूटा जाला है, कर्मों का फल ना पाला है।
जाति-पांति सब छूट गई है, निज परिणति में शांति लही है॥
भव-भव में....॥4॥

ॐ ह्रीं शुद्धस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकुल-व्याकुल न होते हैं, राग द्वेष भी ना करते हैं।
परम शुद्ध हो सिद्ध के ध्यानी, भगवन तुम ही तो हो ज्ञानी॥
भव-भव में....॥5॥

ॐ ह्रीं शुद्धस्वरूपभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाधायें कितनी आ जायें, डिगते ना माया छा जाये।
इससे बनते शिव नायक हो, पूजा करने के लायक हो॥
भव-भव में....॥6॥

ॐ ह्रीं शुद्धदृढ़ाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैसे सागर में लहर रहे, वैसे आतम में आप बसे।
सागर से भगवन गहरे हैं, औ आतम में ही ठहरे हैं॥
भव-भव में....॥7॥

ॐ ह्रीं शुद्धआवर्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खुद ही पुरूषार्थ जगा करके, पाया है आतम तप करके।
निर्मल-निर्मल है ज्ञान विमल, आतम सरवर से खिला कमल॥
भव-भव में....॥8॥

ॐ ह्रीं शुद्धस्वयंभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों को आपने नाशा है, औ अनन्त चतुष्टय वासा है।
संयोग-वियोग से दूर हुए, तुम शुद्ध योग को पाय लिये॥
भव-भव में....॥9॥

ॐ ह्रीं शुद्धयोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो नाम प्रकृति है बलिहारी, रचना करती सबसे न्यारी।
एकेन्द्रिय जाति को नाशा, पंचेन्द्रिय में ना है वासा॥
भव-भव में....॥10॥

ॐ ह्रीं शुद्धजाताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप ने तप त्याग बढ़ाया था, तप से ही आतम पाया था।
हो महा तेज हो महाधनी, हम दर्श पाये जिन ज्ञान गुणी॥
भव-भव में....॥11॥

ॐ ह्रीं शुद्धतपसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रंग और रूप से रहित हुए हो, संस्थानों से मुक्त हुए हो।
आप अमूर्तिक तेज पुंज हो, ज्ञानी ध्यानी तुम निकुंज हो॥
भव-भव में....॥12॥

ॐ ह्रीं शुद्धमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाहर सुख की आश न रखते, ममता मोह का नाटक तजते।
आतम सुख का स्वाद जो पाया, बाहर का सुख उन्हे न भाया॥

भव-भव में मैं घूम चुका हूँ, सुख-दुख सारे भोग चुका हूँ।
जग को तज अब शरण में आया, सिद्ध प्रभु जी दे दो छाया।।13।।

ॐ ह्रीं शुद्धसुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म अर्थ अरु काम को तजते, मोक्ष स्वरूपी आतम भजते।
अंतिम पुरुषारथ को कीना, उठे न मन में भाव नवीना।।
भव-भव में....।।14।।

ॐ ह्रीं शुद्धपौरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुद्गल के परमाणु छूटे, नाम कर्म से नाता टूटे।
पुरुषाकार करो जिन देवा, चेतन से चेतन की सेवा।।
भव-भव में....।।15।।

ॐ ह्रीं शुद्धशरीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल-केवल ज्ञान को जानो, और ज्ञान की ना तुम मानो।
तप-बल से केवल को पाया, केवल ने जग को दर्शाया।।
भव-भव में....।।16।।

ॐ ह्रीं शुद्धप्रमेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन ज्ञान के धारी, इसमें चेतन शुद्ध बिहारी।
परम विशुद्धि ज्ञान को पाया, शुद्धातम में ध्यान लगाया।।
भव-भव में....।।17।।

ॐ ह्रीं शुद्धपयोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगोपभोग को छोड़ दिया है, आतम आंनद पान किया है।
हर क्षण आप इसे पीते हो, आतम में ही प्रभु जीते हो।।
भव-भव में....।।18।।

ॐ ह्रीं शुद्धभोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवलोकन लोकों का करते, पर ना राग द्वेष को धरते।
शुद्धि से आतम को जाना, सर्वांग चेतन परमाना।।
भव-भव में....।।19।।

ॐ ह्रीं शुद्धवालोकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ शुक्ल ध्यान की अग्नि है, नहिं कर्मों की दावाग्नि है।
कर्मों का होम किया प्रभू ने, अंधेरा दूर किया जग में।।
भव-भव में....।।20।।

ॐ ह्रीं प्रज्ज्वलितशुक्लध्यानाग्निजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

कर्मों के बंधन तजे, आत्म शुद्ध हो जाये।
परम पुरुष परमात्मा, चरण शरण को पाये।।
अघ नाशन के कारणे, सिद्ध शरण में आये।
सिद्धों की भक्ति करे, सिद्ध रूप हो जाये।।21।।

ॐ ह्रीं शुद्धनिपाताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य गर्भ को त्याग कर, शुद्ध गर्भ को पाये।
शुद्ध हुए सूक्षम हुए, शत-शत शीश नवाये।।
अघ नाशन के....।।22।।

ॐ ह्रीं शुद्धगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धशिला में राजते, सर्व शुद्ध स्थान।
वहां बसे परमात्मा, बारंबार प्रणाम।।
अघ नाशन के....।।23।।

ॐ ह्रीं शुद्धवासाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति विशुद्ध जिन धर्म है, परिविशुद्ध स्थान।
निज आतम स्थिर रहो, रहो हृदय स्थान।।
अघ नाशन के....।।24।।

ॐ ह्रीं विशुद्धपरमवासाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंदर-बाहर शुद्ध कर, अविचल हो अविकार।
कर्म चोर भागे सभी, कर्म हुये निरधार।।
अघ नाशन के....।।25।।

ॐ ह्रीं शुद्धपरमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्य देश को तज दिया, अंतर देश महान।
शुद्धातम में नित रमे, बारंबार प्रणाम।।
अघ नाशन के....।।26।।

ॐ ह्रीं शुद्धअनन्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति के परमाणु जो, जितने रहे अशेष।
आप समाहित कर लिया, पाई शांति विशेष।।
अघ नाशन के....।।27।।

ॐ ह्रीं शुद्धशांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान अनंता प्राप्तकर, पंडित हुए हैं आप।
ज्ञान सम्पदा दो प्रभु, हे जिनवर जिन राज॥
अघ नाशन के कारणे, सिद्ध शरण में आये।
सिद्धों की भक्ति करे, सिद्ध रूप हो जाये॥28॥

ॐ ह्रीं शुद्धविदंताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप कषायों को तजा, तजा क्रोध और मान।
शुद्ध ज्योति परमात्मा, बारंबार प्रणाम॥
अघ नाशन के....॥29॥

ॐ ह्रीं शुद्धज्योतिजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतिम जन्म को पाय कर, करी तपस्या घोर।
मृत्यु को निर्वाह कर, पाया मुक्ति छोर॥
अघ नाशन के....॥30॥

ॐ ह्रीं शुद्धनिर्वाणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंत किया है जन्म का, किया अंत निर्वाण।
मुक्ति में जनमे प्रभु, बारंबार प्रणाम॥
अघ नाशन के....॥31॥

ॐ ह्रीं शुद्धसंदर्भगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति जो नित ही करे, करे पाप को शांत।
मंगल मूरति ध्यान की, होवे मम कल्याण॥
अघ नाशन के....॥32॥

ॐ ह्रीं शुद्धशांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बत्तीस गुण से पूजकर, मिला आत्म आनंद।
महार्घ्य चरणों चढ़ा, मिट जाये सब द्वंद॥

ॐ ह्रीं बत्तीस गुण सहिताय सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

परम तत्व परमात्मा, परम सिद्ध भगवान।
परम ज्ञानमय हम बनें, शत-शत बार प्रणाम॥

शंभू छंद

हे परमेश्वर हे परमधाम, हे परमपिता तुमको प्रणाम।
हे जगत पति हे जगत देव, जय-जय होते जग में महान॥
वे द्रव्य कर्म और भाव कर्म, कर्मों से नाता तोड़ा है।
कर्मों से रहित जिनेश्वर हो, ये जग जीवन को छोड़ा॥
आतम उपलब्धि करके जिन, गुण गण के हैं भंडार भरे।
विभाव अभाव किया तुमने, जो आये शरण भव पार करे॥
जैसे पत्थर में सोना हो, वैसे ही तन में चेतन है।
जब तप की संगति पायी तो, सार्थक होगा तब नरतन है॥
जग में अब वास न करते हो, आतम-आतम में रहते हो।
सब को शिक्षा देकर के प्रभु, स्वयमेव सुधा रस पीते हो॥
हे शुद्ध रूप सार्थक जिनवर, निज जीवन सार्थक कर लीना।
हम आये हैं चरणों में प्रभु, भक्तिमय भावों को कीना॥
सिद्धों का ध्यान लगाया तो, बुद्धि कि शुद्धि हो जाये।
तन, चेतन का तब ज्ञान होय, भौतिक विज्ञानी खो जाये॥
काले कर्मों को दूर करूँ, कर्मों को तप में तपना है।
जीवन का लक्ष्य बनाया है, मुक्ति में जाकर बसना है॥
अंधेरे में अभ्यस्त रहे, अब ज्ञान किरण दिखलाई है।
जिनवर वाणी को सुन सुनकर, तन-मन में शुद्धि पाई है॥
क्या दोष है मेरे जिनवर जी, कुछ तो मुझको बतला देना।
लाखों को तुमने तार दिया, प्रभु मुझको ना ठुकरा देना॥
यह सच है कि पुरुषार्थ करें, तब ही मंजिल को पायेंगे।
सम्यकदर्शन शुभज्ञान बिना, कैसे मुक्ति में जायेंगे॥

संयम पालूँ तप त्याग करूँ, इससे कर्म को दूर करूँ।
दशधर्म रत्नत्रय धारण कर, आठों कर्मों को शीघ्र हरूँ॥
मैं नय प्रमाण को जानूँगा, गहराई ज्ञान की पाने को।
शुभ ज्ञान बिना न ध्यान होय, आवश्यक मुक्ति जाने को॥
शुभ ज्ञान का फल चारित्र होय, चारित्र को धारण करना है।
तप-त्याग संग मुक्ति पथ को, पालन करके ही वरना है॥
उद्देश्य हमारा पूर्ण होय, आशीष आपका हो जिनवर।
शक्ति देना भक्ति देना, छवि मूरत आपकी है मनहर॥
अब कोटि कोटि वंदन करते, स्वीकार करो मेरे भगवन।
"स्वस्ति" सिद्धि को प्राप्त करे, आया हूँ भगवन मैं चरणन॥
दायित्व हमारा पूरा हो, इक दिन जिन दीक्षा पाऊँगा।
सच्चे सुख की हम आश लिये, मुक्ति में इक दिन जाऊँगा॥

त्रिभंगी छन्द

मुक्ति पथ चलते, दीप हैं जलते, रोशन जीवन को करना।
सिद्धों की भक्ति, देती मुक्ति, निज आतम को ही वरना॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये नमः द्वात्रिंशत्‌गुणसंयुक्तसिद्धेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

अनुपालन हम नित करें, सिद्ध प्रभु भगवान।
निज चैतन्य को ध्यायकर, पाऊँ निज का ज्ञान॥

परिपुष्पांजलि

जाप्य मंत्र

(यहाँ 108 बार 'ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा नमः' मंत्र का जाप करें)

चतुर्थ पूजा

त्रिभंगी छंद

स्थापना

प्रभु मंगलकारी, सब दुखहारी, आत्म तत्व के ज्ञाता हैं।
कर्मों के नाशक, शिव सुख वासक, निज आतम के ध्याता हैं।।
मुक्ति के गामी, हम अनुगामी, निज कल्याण को आये हैं।
मम हृदय पधारो, मुझको तारो, हम तरने को आये हैं।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं चतु:षष्ठिगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दोहा

हृदय कमल के मध्य में, आओ देव महान।
सिद्ध शुद्ध स्थापना, शत-शत बार प्रणाम।।

(इति यंत्रस्थापनार्थं पुष्पांजलि क्षिपेत्।)

शंभू छंद

जल

सिद्धों का ध्यान लगाने से, आतम का रूप सुहाता है।
जल से मल तो धुलता लेकिन, आतम निज ध्यान दिखाता है।।
मुक्ति में रहने वाले जिन, मुक्ति के हम भी गामी हैं।
जब से पूजा है प्रभु तुमको, मुक्ति के हम विश्रामी हैं।।1।।

ॐ ह्रीं चतुषष्ठिगुणसहित श्रीसिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरारोगविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चंदन

मानव जीवन यह कर्म भूमि, दुष्कर है जीवन का जीना।
संतप्त हृदय हर क्षण रहता, चंदन से तृप्ति कर लीना।।
मुक्ति में रहने वाले जिन, मुक्ति के हम भी गामी हैं।
जब से पूजा है प्रभु तुमको, मुक्ति के हम विश्रामी हैं।।2।।

ॐ ह्रीं चतुषष्ठिगुणसहित श्रीसिद्धपरमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत

उज्जवल को हम काला करते, शुभ कार्य में बुद्धि खो जाती।
अक्षयपुर की आशा लेकर, अक्षत लाया है विश्वासी।।
मुक्ति में रहने वाले जिन, मुक्ति के हम भी गामी हैं।
जब से पूजा है प्रभु तुमको, मुक्ति के हम विश्रामी हैं।।3।।

ॐ ह्रीं चतुषष्ठिगुणसहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

फूलों में कोमलता होती, औ उसकी गंध लुभाती है।
विषयों के चक्कर में मानव, निज धर्म कथा ना भाती है।।
मुक्ति में रहने वाले जिन, मुक्ति के हम भी गामी हैं।
जब से पूजा है प्रभु तुमको, मुक्ति के हम विश्रामी हैं।।4।।

ॐ ह्रीं चतुषष्ठिगुणसहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य

रसना पथ से भटका करके, व्रत नियम में बाधायें डाले।
नैवेद्य समर्पित है जिनवर, शक्ति दो तप संयम पाले।।
मुक्ति में रहने वाले जिन, मुक्ति के हम भी गामी हैं।
जब से पूजा है प्रभु तुमको, मुक्ति के हम विश्रामी हैं।।5।।

ॐ ह्रीं चतुषष्ठिगुणसहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीप

भौतिकता ने अंधा करके, निज आत्म ज्ञान से दूर किया।
अध्यात्मिक उजियाला फैले, यह दीप ज्ञान का बल दिया।।
मुक्ति में रहने वाले जिन, मुक्ति के हम भी गामी हैं।
जब से पूजा है प्रभु तुमको, मुक्ति के हम विश्रामी हैं।।6।।

ॐ ह्रीं चतुषष्ठिगुणसहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप

सुन्दर विचार ही साधक के, सुंदरता को दर्शाते हैं।
खोटे कर्मों के जो विचार, नाशन को धूप चढ़ाते हैं।।
मुक्ति में रहने वाले जिन, मुक्ति के हम भी गामी हैं।
जब से पूजा है प्रभु तुमको, मुक्ति के हम विश्रामी हैं।।7।।

ॐ ह्रीं चतुषष्ठिगुणसहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल

संकल्प विकल्प है दुख का फल, दुख ही चिन्ता को लाता है।
चिन्ता से चिन्तन दूर रहे, मुक्ति फल हमको भाता है।।
मुक्ति में रहने वाले जिन, मुक्ति के हम भी गामी हैं।
जब से जाना है प्रभु तुमको, मुक्ति के हम विश्रामी हैं।।8।।

ॐ ह्रीं चतुषष्ठिगुणसहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

अर्घ्य

मूल्यांकन करके देखूं तो, जग में ना सार्थक कार्य किया।
परिवेश सुगंधित करने को, चरणों में आकर अर्घ्यं दिया।।
मन्तव्य हमारा है जिनवर, अवरुद्ध कार्य सब हो जायें।
यह जन्म चुनौती है जग में, इसमें ना फंसकर रह जायें।।
अनुभूत सत्य पर आधारित, शास्त्रों से तुमको जाना है।
निज की अनुभूति पाँऊ मैं, चरणों में अर्घ्यं चढ़ाना है।।
मुक्ति में रहने वाले जिन, मुक्ति के हम भी गामी हैं
जब से पूजा है प्रभु तुमको, मुक्ति के हम विश्रामी हैं।।9।।

ॐ ह्रीं चतुषष्ठिगुणसहित श्री सिद्धपरमेष्ठिने सर्वसुख प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

।। अथ चौंसठ गुण अर्घ्यं ।।

दोहा

तप ऋद्धि का मार्ग है, तप कर इसको पायें।
पुष्पांजलि कर पूजते, शत-शत शीश झुकायें।।

परिपुष्पांजलि

पद्धरि छंद

जब चार घातिया नष्ट किये, ऋद्धि केवल को पाय लिये।
केवल में लोका लोक दिखे, दर्पण वत ज्ञान में भाव लिखे।।
कैवल्य भावना से भगवन, यह अर्घ्य समर्पित है चरणन।
जब ज्ञान सूर्य प्रगटायेंगे, तब पूर्णानंद को पायेंगे।।1।।

ॐ ह्रीं अरहंत-जिनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसके मन में जैसा विचार, वैसा ही होगा वह प्रचार।
टेढ़े सीधे हों भाव कोई, छिप सकता नाहीं प्रगट होई॥
मनः पर्यय मन को जानेगा, ना बात किसी की मानेगा।
है ऋजुमति है विपुलमति, पाकर के पाये मोक्षगति॥2॥

ॐ ह्रीं अवधिजिनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब मुनिवर तप को तपते हैं, जब मुनिवर आतम जपते हैं।
तब ऋद्धि उनको होती है, अवधि के मिलते मोती है॥
बैठे-बैठे सब लिया जान, उनको होता है अवधिज्ञान।
ऐसे सिद्धों के दर्श पाय, चरणों में नित मस्तक झुकाय॥3॥

ॐ ह्रीं परमावधिजिनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब तप की शक्ति बढ़ाई है, परमावधि ज्ञान उपाई है।
वह केवल ज्ञान को प्राप्त करे, अंतिम जाकर के आप्त बने॥
चरित्र ने जीवन धन्य किया, चारित्र ने तप उत्पन्न किया।
ऐसे सिद्धों के दर्श पाय, चरणों में नित मस्तक झुकाय॥4॥

ॐ ह्रीं सर्वावधिजिनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब अतिविशुद्ध परिणाम किये, जब आतम में विश्राम किये।
सब अवधि स्वामी को धारा है, संयम पथ का उजियारा है॥
हम अष्ट कर्म को नाश करें, मुक्ति जाने अभ्यास करे।
ऐसे सिद्धों के दर्श पाय, चरणों में नित मस्तक झुकाय॥5॥

ॐ ह्रीं अनन्तावधिजिनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञान श्रेष्ठ उपजाया है, औ कोष्ठ बुद्धि को पाया है।
मिलकर जाने सब एक साथ, पर सब विषयों के अलग पाथ॥
तप की महिमा तो न्यारी है, ऋद्धि सिद्धि उपहारी है।
ऐसे सिद्धों के दर्श पाय, चरणों में नित मस्तक झुकाय॥6॥

ॐ ह्रीं कोष्ठबुद्धिऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वे बीज सदा श्रुत पाया है, उसका ही वृक्ष बनाया है।
फल ज्ञान बहुत सा पाये हैं, उनके जैसे बन जाये हैं॥
तप त्याग के फूल खिलाये हैं, ऋद्धि-सिद्धि प्रगटाये हैं।
ऐसे सिद्धों के दर्श पाय, चरणों में नित मस्तक झुकाय॥7॥

ॐ ह्रीं बीजबुद्धि ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शास्त्रों में पद संख्या अनेक, वे ज्ञान करे पद सिर्फ एक।
उससे सारा ही शास्त्र ज्ञान, बिन पढ़ते ही बनते महान॥
तपसी की संगत जो करता, उसका भी तप नित ही बढ़ता।
ऐसे सिद्धों के दर्श पाय, चरणों में नित मस्तक झुकाय॥8॥

ॐ ह्रीं पादानुसारिणिऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सारी बातों को सुनते हैं, पर अलग-अलग ही गुनते हैं।
पशु नर प्राणी की भाषा को, सुन पूरी करते आशा को॥
नौ योजन सुनने का अतिशय, ना डरते हैं न होता भय।
ऐसे सिद्धों के दर्श पाय, चरणों में नित मस्तक झुकाय॥9॥

ॐ ह्रीं संभिन्नसंश्रोतृऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मति श्रुत अवधि को पाया है, इसमें ना गुरू बनाया है।
बने स्वयं बुद्ध व ज्ञानी हैं, तप तपकर आतम ज्ञानी हैं॥
सिद्धों सम सुख को पाना है, चरणों में उनके जाना है।
ऐसे सिद्धों के दर्श पाय, चरणों में नित मस्तक झुकाय॥10॥

ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर से ना वे उपदेश पाय, प्रत्येक बुद्ध को खुद जगाय।
जड़ चेतन का विज्ञान किया, तब ही तो जाकर ध्यान किया॥
अनुपम अविकारी सिद्ध बने, सुख के झरने बह जायें घने।
ऐसे सिद्धों के दर्श पाय, चरणों में नित मस्तक झुकाय॥11॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकबुद्ध-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपदेश सुना सम्यक्त्व लिया, आतम से नाता जोड़ लिया।
प्रभु की वाणी से धर्म पाय, पाकर के मुक्ति पाथ जाये॥
बोधित बुद्धि अतिशयकारी, कर्मों की शक्ति थी हारी।
ऐसे सिद्धों के दर्श पाय, चरणों में नित मस्तक झुकाय॥12॥

ॐ ह्रीं बोधितबुद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन को कीना हैं सरल-सरल, तज दीना सारा गरल-गरल।
ऋजु मति ने मन को समझाया, हर तत्व सार को बतलाया॥
दूजे की मन की जाने हैं, वे आप भेद पहिचाने हैं।
ऐसे सिद्धों के दर्श पाय, चरणों में नित मस्तक झुकाय॥13॥

ॐ ह्रीं ऋजुमति-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है नाम विपुल ही जाना है, आतम स्वरूप विज्ञाना है।
शिवपुर तक लेकर जाता है, नहिं बीच कहीं भी रूकता है।।
इसका मुक्ति से नाता है, मिलती बस साता-साता है।
ऐसे सिद्धों के दर्श पाय, चरणों में नित मस्तक झुकाय।।14।।

ॐ ह्रीं विपुलमति-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्या की कोई नहि चाह, फिर भी आती तप त्याग राह।
देवों द्वारा दी जाती है, पर इनको ना मन भाती है।।
श्रुत चिंतन है श्रुत के द्वारा, कर्मों का राजा भी हारा।
ऐसे सिद्धों के दर्श पाय, चरणों में नित मस्तक झुकाय।।15।।

ॐ ह्रीं दशपूर्वऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह अंगों का ज्ञान धरे, स्वाध्याय करे नित ध्यान करे।
चौदह पूरब का ज्ञान पाय, आतम को होता सु:ख दाय।।
ऋद्धि से सिद्धि शीघ्र होय, शुभ-शुभ कर्मों के बीज बोय।
ऐसे सिद्धों के दर्श पाय, चरणों में नित मस्तक झुकाय।।16।।

ॐ ह्रीं चौदहपूर्व-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टांग निमित ज्योतिष जाने, लख करके ही वह फल माने।
स्वर व्यंजन आदि लक्षण है, कर्मों को करे विलक्षण है।।
यह बात अन्यथा ना करते, सब कार्यों को पूरा करते।
ऐसे सिद्धों के दर्श पाय, चरणों में नित मस्तक झुकाय।।17।।

ॐ ह्रीं अष्टांगनिमित्त-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुजंग प्रयात छंद

(तर्ज : नरेन्द्रं फणीन्द्रं....)

ऋद्धि अणिमा गरिमा भी होते,
करे वो तपस्या करम की भी खोते।
स्वयं सिद्ध स्वाधीन जिनवर जी होते,
औ भक्ति में भर हम शरण तेरी आते।।18।।

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चले भूमि जल में भी मुनिराज चलते,
नही बाधा जीवों को, नाहि वो मरते।
स्वयं सिद्ध... ॥19॥

ॐ ह्रीं विज्जाहरण-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरे जंघा पर कर, औ आकाश चलते,
महा ऋद्धि धारी वे चारण कहाते।
स्वयं सिद्ध... ॥20॥

ॐ ह्रीं चारण-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन में गमन कर वे दर्शन को जाते,
रहे शुद्ध आतम निजातम को ध्याते।
स्वयं सिद्ध... ॥21॥

ॐ ह्रीं आकाशगामिनि-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे ही प्रश्नों के उत्तर को देते,
विपक्षी सदा ही स्वयं हार लेते।
स्वयं सिद्ध... ॥22॥

ॐ ह्रीं परामर्श-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन में विष आदि चाहे मिलाओ,
बने वो ही निर्विष भले तुम खिलाओ।
स्वयं सिद्ध... ॥23॥

ॐ ह्रीं आर्शीविष-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गलती यदि कोई आकर करेगा,
दृष्टि का विष पाके निश्चित मरेगा।
किन्तु मुनिराज ऐसा न करते,
वे अन्दर हृदय में दया भाव धरते॥24॥

ॐ ह्रीं दृष्टिविष-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह तपों को निरंतर वे तपते,
चाहे मरण काल किन्तु ना तजते।
हम ऋद्धि के धारी मुनिवर को ध्यावें,
करेंगे तपस्या हम ऋद्धि को पावें॥25॥

ॐ ह्रीं उग्रतप-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपस्या ने चेहरे की कांति बढ़ाई,
नहीं बाधा तप में कभी कोई आई।
हम ऋद्धि के धारी मुनिवर को ध्यावें,
करेंगे तपस्या हम ऋद्धि को पावें॥26॥

ॐ ह्रीं दीप्ततप-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपस्या करे तो तपस्या है बढ़ती,
तपस्या से शक्ति कभी नाही घटती।
हम ऋद्धि के... ॥27॥

ॐ ह्रीं तपोवृद्धि-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंह निष्क्रीडित के व्रत सारे करते,
तपस्या करे पर नहीं खेद धरते।
हम ऋद्धि के... ॥28॥

ॐ ह्रीं महातपो-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्मी में गिरि पर, कभी तट पे ठाड़े,
परिषह को सह-सह करम को निवारे॥
हम ऋद्धि के... ॥29॥

ॐ ह्रीं घोरतपो-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भयंकर वनों में हैं सिंहादि रहते,
परन्तु न डरकर कहीं दूर जाते।
हम ऋद्धि के... ॥30॥

ॐ ह्रीं घोरगुण-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणों रत्नराशि को संचित है कीना,
वे करते पराक्रम नहिं खेद लीना।
हम ऋद्धि के... ॥31॥

ॐ ह्रीं घोरगुणपरिक्रम-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बने ब्रह्मचारी अतुल शक्तिधारी,
मन को किया शांत है निर्विकारी।
हम ऋद्धि के... ॥32॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करेंगे तपस्या मन औषध बनेगा,
सभी रोगों का ही सफाया करेगा।
हम ऋद्धि के... ॥33॥

ॐ ह्रीं आमर्षौषध-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मलों से भी प्राणी सदा रोग खोते,
सभी आधिव्याधि को क्षण में भगाते।
हम ऋद्धि के... ॥34॥

ॐ ह्रीं मलौषध-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तनु स्वेद तन के सभी रोग नाशे,
तपस्या की शक्ति से आतम प्रकाशे।
हम ऋद्धि के... ॥35॥

ॐ ह्रीं जल्लौषध ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि तन से स्पर्श वायु जो करती,
बने सर्व औषध सभी रोग हरती।
हम ऋद्धि के... ॥36॥

ॐ ह्रीं सर्वौषध ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बढ़े मन की शक्ति ना चिन्तायें होतीं,
अंतर सदा श्रुत की धारा ही बहती।
हम ऋद्धि के... ॥37॥

ॐ ह्रीं मनोबली-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों में शक्ति तपस्या से आये,
जो वाणी से बोले वही पूर्ण पाये।
हम ऋद्धि के... ॥38॥

ॐ ह्रीं वचनबली-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया को तप से है इतना तपाया,
करें वे तपस्या ना उसने सताया।
हम ऋद्धि के... ॥39॥

ॐ ह्रीं कायबली-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिना रस का भोजन लगे क्षीर जैसा,
वो तृप्ति भी पाये, सुखों का भरोसा।

हम ऋद्धि के धारी मुनिवर को ध्यावें,
करेंगे तपस्या हम ऋद्धि को पावें।।40।।

ॐ ह्रीं क्षीरस्रावी-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करे रूखा भोजन जो घृत सम सुहावे,
सुंदर वचन भी सभी मन को भावे।
हम ऋद्धि के... ।।41।।

ॐ ह्रीं सर्पिस्रावी-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मधुर रस नहीं पर सदा स्वाद लेते,
मधुस्रावी ऋद्धि से कर्मों को खोते।
हम ऋद्धि के... ।।42।।

ॐ ह्रीं मधुस्रावी-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृत पिया है अमरता को पावे,
वचन रूपी अमृत से मुक्ति दिलावे।
हम ऋद्धि के... ।।43।।

ॐ ह्रीं अमियरस-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षीण धारी जहाँ जीम लेते,
कटक चक्रवर्ति सभी पेट भरते।
हम ऋद्धि के... ।।44।।

ॐ ह्रीं अक्षीणरस-ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छन्द

सब सिद्ध राशि सुखदायी, नित गुण में वृद्धि कराई।
वे वर्द्धमान ही होते, सब अशुभ कर्म को खोते।।45।।

ॐ ह्रीं वड्ढमाण ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरि को तुमने है नाशा, मुक्ति में करने वासा।
अंतर के दीप जलाये, हम नमस्कार को आये।।46।।

ॐ ह्रीं अरहन्त सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जितने भी हो अरिहंता, बन जाते है भगवंता।
भावों से सिद्ध को ध्याऊँ, सिद्धि पाने को आऊँ।।47।।

ॐ ह्रीं णमो लोए सर्व ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत्रु न कोई जग में, बाधा डाले ना पग में।
बन जाये वे महावीरा, पाया है मुक्ति वीरा।।48।।

ॐ ह्रीं भगवते महावीरवड्ढमाणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वच काया को साधा, आयी न कोई बाधा।
निश्चय से श्रेणी चढ़ते, मुक्ति में आगे बढ़ते।।49।।

ॐ ह्रीं णमो योगसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं सिद्ध ध्येय को ध्याऊँ, औ वीतरागता पाऊँ।
कर्मों के बंधन को तोड़ूँ, सारे जग से मुख मोड़ू।।50।।

ॐ ह्रीं णमो ध्येयसिद्धाणं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब सिद्ध अनंतानंत, मुक्ति का देते पंथ।
मुक्ति में करे बसेरा, सब हुआ है दूर अंधेरा।।51।।

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धाणं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मय जीवन कीना, स्वस्ति आतम में लीना।
'स्वस्ति' स्वस्ति को पाये, निज आतम ज्योति जगाये।।52।।

ॐ ह्रीं णमो स्वस्तिसिद्धाणं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम तीन लोक में पूजित, भक्तों के स्वर में गूंजित।
तुम सम ना जग में दूजा, मैं करूं आपकी पूजा।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धाणं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पूज्य हुये हो जग में, भक्ति करते हैं मग में।
पूजक ने तुमको पूजा, औ काम नहीं कोई दूजा।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसिद्धाणं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम ने आतम ध्याया, परमातम पद को पाया।
परमातम को जो ध्यावे, निश्चय से मुक्ति जावे।।55।।

ॐ ह्रीं परमात्मसिद्धाणं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

मन से वच काया से ध्याऊँ, निज आतम का अर्घ्य बनाऊँ।
साधत-साधत सधता मन है, मुक्ति पुर का मिले भवन है।।56।।

ॐ ह्रीं परमसिद्धाणं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमागम में पूज्य बताया, परमागम सिद्धों को भाया।
परमागम का पालन कीना, पाई सिद्धि सिद्ध नवीना।।57।।

ॐ ह्रीं परमागमसिद्धाणं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भौतिक विद्युत से भी ज्यादा, है प्रकाश में वो मर्यादा।
कोई करेंट न तार लगा है, सुख ही सुख भंडार भरा है।।58।।

ॐ ह्रीं प्रकाशमानसिद्धाणं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं-स्वयं ही दीक्षा धारी, स्वयं बने स्वयं अधिकारी।
नाम स्वयंभू पाया तुमने, सबको दे दी छाया तुमने।।59।।

ॐ ह्रीं णमो स्वयंभूसिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रिय सुख से दूर रहे थे, पर इंद्रिय से काम लिये थे।
ज्ञान ध्यान ब्रह्मा प्रगटाया, इसीलिये मैं शरणा आया।।60।।

ॐ ह्रीं णमो ब्रह्मसिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत है ना है अंता, सबसे ईश्वर हो भगवंता।
तृष्णा पाप कषाय को नाशा, मुक्ति पुर में करते वासा।।61।।

ॐ ह्रीं णमो अनन्तगुणसिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वद्रव्य सब गुण को पाया, परमानन्द सहज हो ध्याया।
भव अनंत का अंत किया है, सिद्धों के संग वास किया है।।62।।

ॐ ह्रीं णमो परमानन्दसिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक में सबसे आगे रहते, ना दुख चिंता ना कुछ कहते।
तन-मन-धन से मुक्ति पाई, लोकाग्र में जा बस जाई।।63।।

ॐ ह्रीं लोकाग्रवासिसिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि ना है अंता, शाश्वत समय रहे भगवंता।
वापस ना फिर कभी भी आओ, सिद्धालय में दर्श को पाओ।।64।।

ॐ ह्रीं णमो अनादिसिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

वंदनीय जिनदेव को, वंदन है शतबार।
गुणरूपी जयमाल है, हमें प्रभु से प्यार।।

शेरचाल (तर्जः- हे दीनबंधु......)

प्रभु लोक के शिखर पे बसे तुम्हें नमस्कार।
प्रभु तन रहित है मन नहीं है तुम्हें नमस्कार।।

प्रभु राग रहित द्वेष रहित तुम्हें नमस्कार।
प्रभु क्रोध रहित लोभ रहित तुम्हें नमस्कार।।1।।
भव ताप को संताप प्रभु दूर है किया।
पाई है शांति तोड़ करम सौख्य ले लिया।।
हे सिद्ध प्रभु आपका गुणगान हम करें।
पर तुम नहीं हो जग में कहीं ध्यान क्या धरें।।2।।
शास्त्रों ने बताया है हमें तुम महान हो।
गुरुवर ने बताया है प्रभु ज्ञानवान हो।।
प्रत्येक अक्षरों पे भी श्रद्धान है किया।
श्रद्धा को हृदय में बसा गुणगान है किया।।3।।।
संसार चक्करों में प्रभु आप ना आये।
ना चक्करों में आके कर्म बंध कराये।।
प्रभु मोह ने मोहा नहीं तुम कैसे दूर हो।
इससे बने हो आप जगत के ही नूर हो।।4।।
आचार न प्रचार और ना विचार है।
ना अस्त्र है ना शस्त्र है नाही बिहार है।।
ना जन्म है न मृत्यु आश्चर्य भी नहीं।
ना आयु है न वायु है उपसर्ग भी नहीं।।5।।
न क्षेत्र है ना नेत्र है, हैं इंद्रियाँ नहीं।
ना कल्प है विकल्प ना ही, वस्त्र भी नहीं।।
सोना है खरा हो गया अब खोट न मिले।
तप अग्नि में तपकर खरा अब चोट न मिले।।6।।
जितने जरूरी कार्य थे पूरण सभी किये।
मंजिल को पा के आपने सब कर्म हर लिये।।
संसार है ये सारा ही कर्मों का झमेला।
है शुभ अशुभ जो कर्म है फल पाये अकेला।।7।।
शरणागता हूँ सिद्ध प्रभु ध्यान दीजिये।
भक्तों की भक्तियों पे भी विश्वास कीजिये।।
संसार में कष्टों का ही भंडार है भरा।
संसार के दुःखों से बचूं चरण में खड़ा।।8।।
जब भक्ति करी आपकी सुख शांति मिली है।
शुभ भावनाओं की हृदय में ज्योति जली है।।

आधि औ व्याधियों से प्रभु दूर कीजिये।
अक्षय नगर में आके बसूं शरण लीजिये।।9।।

दोहा

शरणागत के सुहित हो, देना प्रभुवर ध्यान।
निश्चय से भक्ति करी, होवे मम कल्याण।।

ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं चतु:षष्ठिदलोपरिस्थितसिद्धेभ्यो नम: महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभंगी छंद

हे जगत के बंधु, गुण के सिंधु, दया के तुम ही स्वामी हो।
प्रभु मेरे हितकर, सभी सुहितकर, बारंबार नमामी हो।।

परिपुष्पांजलि

जाप्य मंत्र

(यहाँ 108 बार 'ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा नम:' मंत्र का जाप करें)

पंचम् पूजा

शंभू छंद

स्थापना

अभिव्यक्ति आतम की करके, सुंदर सुगंध बिखरायी है।
आत्मा का अवलंबन पाकर, सबकी आतम हर्षायी है।।

सुविधा दुविधा से दूर हुये, दुष्कर कार्यों को कर डाला।
आह्वान करें हम प्रभुजी का, पहनूं मुक्ती की यह माला।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टविंशत्यधिकशत – गुणसहित विराजमान श्री सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दोहा

प्रस्तुत है भक्ति प्रभु, अर्पित है श्रद्धान।
जिनवर का सान्निध्य है, बारंबार प्रणाम॥

इति यंत्र स्थापनार्थं पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

त्रिभंगी छंद

जल

अंतर है मैला, कष्ट है फैला, अंतर मल धोने आया।
जल तन को धोता, मन ना धोता, मन निर्मल करने आया॥
सिद्धों की छाया, पा हर्षाया, निज आतम में लीन रहे।
शुभ ज्ञान की किरणें, भव से तरने, स्वयं सिद्ध स्वाधीन रहे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरारोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन

चंदन शीतल है, ज्ञान विमल है, शीतल हो जावे आतम।
दुर्गति न पाऊँ, चित्त सजाऊँ, तृप्ति आतम में आ जावे॥
सिद्धों की छाया, पा हर्षाया, निज आतम में लीन रहे।
शुभ ज्ञान की किरणें, भव से तरने, स्वयं सिद्ध स्वाधीन रहे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

गतियों से मुक्ति, सत्पथ युक्ति, उज्ज्वलता जग में पाऊँ।
अक्षत है अर्पण, सर्व समर्पण, पद पाने चरणों आऊँ॥
सिद्धों की छाया, पा हर्षाया, निज आतम में लीन रहे।
शुभ ज्ञान की किरणें, भव से तरने, स्वयं सिद्ध स्वाधीन रहे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टविंशत्यधिकशतगुणसहिताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

माया की छाया, जग भरमाया, आकर के जग में भटके।

पुष्पों की क्यारी, मिटे विकारी, अब हम जग में ना अटके॥
सिद्धों की छाया, पा हर्षाया, निज आतम में लीन रहे।
शुभ ज्ञान की किरणें, भव से तरने, स्वयं सिद्ध स्वाधीन रहे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

भोजन नित करता, पेट ना भरता, फिर दिन रात रहे खाली।
नैवेद्य चढ़ाऊँ, भूख भगाऊँ, पूजा ने आफत टाली॥
सिद्धों की छाया, पा हर्षाया, निज आतम में लीन रहे।
शुभ ज्ञान की किरणें, भव से तरने, स्वयं सिद्ध स्वाधीन रहे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टविंशत्यधिकशतगुणसहिताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

पथ में अंधियारा, दीप ना प्यारा, जग जंगल में घूम रहे।
तब दर्श सबेरा, चरण बसेरा, तुम चरणों में आन रहे॥
सिद्धों की छाया, पा हर्षाया, निज आतम में लीन रहे।
शुभ ज्ञान की किरणें, भव से तरने, स्वयं सिद्ध स्वाधीन रहे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

संसार अवस्था, करें व्यवस्था, कर्म जोर कम पड़ जावे।
अंतर में कल-कल, पाप है पल-पल, धूप चढ़ा अघ नश जावे॥
सिद्धों की छाया, पा हर्षाया, निज आतम में लीन रहे।
शुभ ज्ञान की किरणें, भव से तरने, स्वयं सिद्ध स्वाधीन रहे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

स्वाधीन सरस हो, आनंद रस हो, और नहीं कुछ फल चाहूँ।
हो धर्म में प्रगति, आतम उन्नति, फल अर्पण फल को पाऊँ॥

सिद्धों की छाया, पा हर्षाया, निज आतम में लीन रहे।
शुभ ज्ञान की किरणें, भव से तरने, स्वयं सिद्ध स्वाधीन रहे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

आकुलता छूटे, चिंता टूटे, चिंतन रस में खो जाऊँ।
अर्घ्यों से वंदन, ध्यान का चंदन, मुक्ति में जा बस जाऊँ॥
सिद्धों की छाया, पा हर्षाया, निज आतम में लीन रहे।
शुभ ज्ञान की किरणें, भव से तरने, स्वयं सिद्ध स्वाधीन रहे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टविंशत्यधिकशतगुणयुक्तसिद्धेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

॥ एक सौ अट्ठाईस गुण सहित अर्घ्य ॥

दोहा

भक्त भक्ति को आये है, आप निभाना नाथ।
पूजन भक्ति भाव से, हमें दिखाओ पाथ॥

इति मंडलोस्परि परिपुष्पांजलि

चाल छंद

सम्यग्दर्शन की महिमा, गा सकते नहीं है गरिमा।
क्षायिक सिद्धों ने पाया, संपूर्ण लोक दर्शाया॥
दुःखों से मुझे निकालो, आकर के प्रभु सम्भालो।
मैं डूब कहीं ना जाऊँ, सम्यग्दर्शन को पाऊँ॥1॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो होवे सम्यग्ज्ञानी, निर्मोह स्वपर विज्ञानी।
आगम का ज्ञान सिखाया, चरणों में शीश झुकाया।दुखों..॥2।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक पथ कदम बढ़ाया, चल करके भी दिखलाया।
संग भव्य साथ में चाले, चारित के हैं रखवाले॥
दु:खों से मुझे निकालो, आकर के प्रभु सम्भालो।
मैं डूब कहीं ना जाऊँ, सम्यग्दर्शन को पाऊँ॥3॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्पाद विनाश ना होता, आगम तो यह भी कहता।
तुम अस्ति धर्म बताया, चरणों में शीश झुकाया॥दुखों..॥4॥

ॐ ह्रीं अस्तित्वधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तुत्व धर्म सुखकारी, व्याख्या करना हितकारी।
तुम वस्तु धर्म बतलाया, चरणों में शीश झुकाया॥दुखों..॥5॥

ॐ ह्रीं वस्तुत्वधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण ने आकर अपनाया, तुमसा कोई और ना पाया।
अप्रमेय गुणों के धारी, गुण गण के हैं भंडारी॥दुखों..॥6॥

ॐ ह्रीं अप्रमेयधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वो अपना रूप ना छोड़ें, पर से नाता ना जोड़ें।
अगुरु लघु गुण के धारी, पूजा प्रभु करे तिहारी॥दुखों..॥7॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघुधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में है श्रेष्ठ ये चेतन, पुदगल लेता है वेतन।
यह है परिणाम स्वरूपी, सिद्धों सम होय अरूपी॥दुखों..॥8॥

ॐ ह्रीं चेतनत्वधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूरत आकार नहीं है, संग अंग उपांग नहीं है।
हो रंग हीन अरूपी, चेतन परमार्थ स्वरूपी॥दुखों..॥9॥

ॐ ह्रीं अमूर्तित्वधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपना स्वरूप ना छोड़े, मिथ्या नाता ना जोड़ें।
समकित है सुख भंडारा, जग से करता है पारा॥दुखों..॥10॥

ॐ ह्रीं समकितधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन यह ज्ञान मयी है, परिणामी ज्ञानमयी है।
बिन ज्ञान जगत से यूँ ना, बिन ज्ञान यहां बहकूँ ना॥दुखों..॥11॥

ॐ ह्रीं ज्ञानधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह शक्तिमान है जीवा, नहिं कोई द्रव्य सजीवा।

चिन्मूरति धर्म का धारी, पूजा प्रभु करे तिहारी।दुखों..॥12॥

ॐ ह्रीं जीवधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन कोई जान सके ना, वाणी से कह सकता ना।

अति सूक्ष्म हुये जिनदेवा, मैं करूं तुम्हारी सेवा।दुखों..॥13॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा पर घात नहीं है, धर्मों की बात सही है।

अवगाह धर्म बतलाया, मन भाव ना पूजा पाया।दुखों..॥14॥

ॐ ह्रीं अवगाहधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाधा सुख में ना आये, अविनाशी सुख को पाये।

सिद्धालय के हो वासी, आतम है पूर्ण प्रकाशी।दुखों..॥15॥

ॐ ह्रीं अव्याबाधधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व अनुभूति रस पाया, निज अमृत आनंद भाया।

आतम प्रतीति उर पाई, कर्मों की फौज भगाई।दुखों..॥16॥

ॐ ह्रीं स्वसंवेदनज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम उद्योत हुआ है, त्रिलोक प्रकाश किया है।

तप करके ताप नशाऊँ, मैं नित-नित पूज रचाऊँ।दुखों..॥17॥

ॐ ह्रीं स्वरूपतापतपसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन सुख ज्ञान अनंता, वीरज धारी अरिहंता।

प्रभु आप मोक्ष में जायें, भक्तों को संग ले जायें।दुखों..॥18॥

ॐ ह्रीं अनन्तचतुष्टयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों को नाशा, आतम गुण में है वासा।

उत्तम हम भाव बनाये, उत्तम पूजा को गाये।दुखों..॥19॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वादिगुणात्मकसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पंचाचार को पाले, टूटे कर्मों के ताले।

पथ चले शिष्य भी चाले, वे अवगुण हरने वाले।दुखों..॥20॥

ॐ ह्रीं पंचाचाराचार्येभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय पथ दिखलाता, तम में प्रकाश बतलाता।

निश्चय से मुक्ति जायें, हम आकर शीश झुकाये।दुखों..॥21॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रयप्रकाशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वे ज्ञान ध्यान तप तपते, आतम को हर क्षण जपते।
साधु ही मोक्ष को जावे, मुक्ति बिन कुछ ना भावे।।
दु:खों से मुझे निकालो, आकर के प्रभु सम्भालो।
मैं डूब कहीं ना जाऊँ, सम्यग्दर्शन को पाऊँ।।22।।

ॐ ह्रीं स्वस्वरूपसाधकसर्वसाधुभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोयोग से क्रोध भरे हैं, आतम को दुखी करे हैं
सब क्रोध तजा भगवाना, औ सिद्ध हुये जिन ज्ञाना।।दुखों..।।23।।

ॐ ह्रीं अकृतमनः क्रोधसंरम्भमनोगुप्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधी अधर्ममय होवे, कर पाप पुण्य को खोवे।
तुम निर्विकल्प हो ध्यानी, हे सिद्ध प्रभु जिन ज्ञानी।।दुखों..।।24।।

ॐ ह्रीं अकारितमन:क्रोधसंरम्भनिर्विकल्पधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन से अनुमोदन करता, क्रोधी की भाषा कहता।
''आनंद धर्म'' तुम पाया, यह क्रोध तुम्हें ना भाया।।दुखों..।।25।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनः क्रोधसंरम्भसानन्दधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभू छंद

आतम का ध्यान करेगा जो, कर्मों के बंध छुड़ाएगा।
उज्ज्वल आतम को पाकर के, वह तो मुक्ति में जायेगा।।26।।

ॐ ह्रीं अकृतमनः क्रोधसमारम्भपरमानन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धालय है प्रभु मेरा घर, जग तो कर्मों की भटकन है।
मन रमता है दूजे घर में, ये राह तो मुक्ति अटकन है।।27।।

ॐ ह्रीं अकारितमनः क्रोधसमारम्भपरमानन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंदर में मेरे परमानंद, सागर की लहरें लहराती।
जब तक ना ध्यान लगाऊँगा, तब तक तो व्यर्थ बही जाती।।28।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनः क्रोधितसमारम्भ परमानन्दसंतुष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधी मन चैन न पाता है, यह जीव को ही भटकाता है।
हो आप क्रोध से रहित प्रभो, यह भक्त चरण में आता है।।29।।

ॐ ह्रीं अकृतमन:क्रोधारम्भ स्वसंस्थानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो बाग लगाया मेहनत से, वह क्रोधाग्नि ने जला दिया।
हर दम पछताता रहता हूँ, पर धर्म का अमृत नहीं पिया।।30।।

ॐ ह्रीं अकारितमन: क्रोधारम्भबन्धसंस्थानाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि संग पानी गर्म होय, उसमें छवि तो ना दिख पाती।
वैसे ही क्रोध करे जो भी, आतम दर्शन ना कर पाती।।31।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमन: क्रोधारम्भसंस्थापनाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधी के सब रिश्ते टूटे, आनंद ना जीवन में आता।
मैं सत्य धर्म की राह चलूं, हे भगवन अब कुछ ना भाता।।32।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोमानारम्भसाधर्माय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानी तो मान में जीता है, खुद को ही श्रेष्ठ बताता है।
तुम मान पान को छोड़ा है, तुमको ना मान सताता है।।33।।

ॐ ह्रीं अकारितमनोमानसंरम्भअनन्यशरणाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बातें तो करता बड़ी-बड़ी, पर सुनना कोई ना चाहे।
छूटे यह मान मेरा भगवन, मिल जाये मुक्ति की राहें।।34।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानसंरम्भसुगतभावाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंदर सुख के हैं फूल घने, पर खुशबू ना ले पाते हैं।
बाहर में उलझे रहते हैं, अब शरण आपकी आते हैं।।35।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोमानसमारम्भसुखात्मगुणाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते हैं और कराते हैं, बल काम नहीं कुछ पास मेरे।
सद्‌बुद्धि दो आकर भगवन, हृदय में बस जाओ मेरे।।36।।

ॐ ह्रीं अकारितमनोमानसमारम्भ-अनन्यगताय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी-मानी भी नहीं रहे, रावण को कौरव को देखो।
जब धरम मानने आयेगा, तब आतम दर्शन को लेखो।।37।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानसमारम्भ-अनन्तवीर्याय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के बंधन की डोरी, मन के हाथों में होती है।
मन वश कर सुख पाने भगवन, लाया मैं सच्चे मोती है।।38।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोयोगमानारम्भ-अनन्तसुखाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपवास करे और ध्यान करे, उसका भी मान किया हमने।
जाति कुल ज्ञान मान करते, इन सब को छोड़ा प्रभु तुमने।।39।।

ॐ ह्रीं अकारितमनोमानारम्भ-अनन्तज्ञानाय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो आप अनंता गुणधारी, सुख के सागर में लीन रहो।
मुझको भी अपना लो भगवन, मैं जाऊँ कहाँ अब तुम ही कहो।।40।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानारम्भ-अनंतगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया ने छाया यूं डाली, मन वच काया को भिन्न किया।
इस ''ब्रह्म ज्ञान'' की शक्ति को, उसने अंदर से ढांक दिया।।41।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोमायासंरम्भब्रह्मस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन से कुछ वच से कुछ कहता, और काया से कुछ कार्य करे।
एकाग्र चित्त ''चेतन'' ना हो, माया अवगुण का कोष भरे।।42।।

ॐ ह्रीं अकारितमनोमायासंरम्भचेतनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ठग कर दूजे को खुश होता, ना सोचा खुद से धोखा है।
अब भी ना संभले तो चेतन, दोबारा ना कोई मौका है।।43।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमायासंरम्भ अनन्यस्वभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया तज मन सीधा होता, सीधा मन धर्म को पाता है।
सीधे-सीधे सब कार्य करे, सीधे मुक्ति को जाता है।।44।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोमायासमारम्भस्वानुभूतिरताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वक्र कभी ना सुख देता, सुख सरल भाव में आता है।
माया मन में हलचल रहती, स्थिरता सरल ही पाता है।।45।।

ॐ ह्रीं अकारितमनोमाया-समारंभसाम्यधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छिपता हूँ और छिपाता हूँ, सारे जग को भरमाता हूँ।
पर नहीं ज्ञान, मेरी हानि, इसीलिए चरण में आता हूँ।।46।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमायासमारंभगुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब करता पश्चाताप प्रभो, माया ना संग लगाऊँगा।
यदि गलती मुझसे हो जाये, हे ''परम शांत'' बतलाऊँगा।।47।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोमायाऽऽरम्भपरमशांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चेहरा तो दिखता एक प्रभो, पर रंग अनेकों रहते हैं।
क्षण-क्षण में परिवर्तित होता, तुम शरण ''निराकुल'' रहते हैं।।48।।

ॐ ह्रीं अकारित मनोमायाऽरंभनिराकुलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्कपट औ निश्छल जो रहता, वह आर्जव धर्म का धारी है।
मन सरल क्यों नहीं है भगवन, अब आज तो मेरी बारी है।।49।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमायाऽरंभ-अनंतसुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घर आंगन जैसे स्वच्छ रहे, तो यह मन खिल-खिल जाता है।
वैसे ही आतम स्वच्छ रहे, परमातम आनंद पाता है।।50।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभसंरम्भ-अनन्तदृगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभी मन पाप कराता है, शुचिता मन को निष्पाप करे।
प्रभु कामधेनु है कल्पवृक्ष, जीवों में आनंद भाव भरे।।51।।

ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभसंरम्भदृगानंदभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह लोभ इकट्ठा करवाये, सब छोड़ यहीं पर जाना है।
इन बातों को भूला बैठा, शुभ सिद्ध भाव को पाना है।।52।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभसंरम्भसिद्धभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम चिंतन का समय नहीं, बस पाप में उलझे रहते हैं।
देवालय जाता हूँ प्रभु पर, निज को तो भूले रहते हैं।।53।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभसमारम्भचिद्देवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बालकपन और जवानी में, मदहोश रहा कुछ ना कीना।
फिर शुष्क बुढ़ापा आया तो, ''मैं अनाकार'' मन ना लीना।।54।।

ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभसमारंभ-अनाकाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरिहंत देव ''साकार'' हुये, सौभाग्य नहीं दर्शन पाऊँ।
कल्याणक देव विराजे हैं, दर्शन करने निशदिन जाऊँ।।55।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनो लोभसमारम्भसाकाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस लोभ को पाप का बाप कहा, हिंसा चोरी और क्रोध करे।
पापों की जड़ यह है भगवन, तुम ''चिदानंद'' सब कर्म हरे।।56।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभारंभचिदानन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभी मनवा ना दान करे, जो देता है उसको रोके।
''चिन्मय स्वरूप'' धारी भगवन, अब मिले मुझे भक्ति मौके।।57।।

ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभारम्भचिन्मयस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन क्रोधी है मन लोभी है, मन पापी है मन मायावी।
इस मन को संयम से रखना, तो मनः मित्र पुण्यो भागी।।58।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभारंभस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों की महिमा कौन कहे, खट्ठे मीठे कड़वे तीखे।
तुमने गुप्ती से ''गुप्त'' किये, इसलिये हुये इकदम नीके।।59।।

ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधसंरम्भवाग्गुप्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों से कार्य बहुत होते, कोई क्रोध करे कोई भजन गाये।
कोई लोभ करे कोई निन्दा तो, आतम स्वरूप कोई बतलाये॥60॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधसंरम्भस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''लब्धि'' हो वचनों से निशदिन, पुण्यों से झोली भरवाये।
वचनों से प्रभु भक्ति करलो, जो मुक्ती पथ को बतलाये॥61॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधसंरम्भस्वानुभवलब्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो क्रोध सहित वाणी होती, सुख धर्म ना अनुभव होता है।
अनुभूति हो निज तत्वों की, पापों को अपने खोता है॥62॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधसमारम्भस्वानुभूतिरमणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो नाश ही क्रोधी वाणी का, अद्‌भुत कार्यों को करता है।
''साधारण धर्म'' को धारण कर, सिद्धों की संगत करता है॥63॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधसमारंभसाधारणधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जल अग्नि शांत करे, शीतल वच क्रोध का ताप हरे।
हो ''परम शांत'' मुद्रा धारी, संसारी का संताप हरे॥64॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधसमारंभपरमशांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों से झगड़ा होता है, फिर बने बैर तो भटकाता।
''परमामृत'' पीता है जो भी, वह परमध्यान मुक्ति पाता॥65॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधारम्भपरमामृततुष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधी पहले खुद दुख पाता, फिर दूजे को दुख देता है।
अच्छा है ''समरस'' भाव धरे, तो परमानंद सुख लेता है॥66॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधारम्भसमरसाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधी को प्रीति नहीं मिलती, फटकार मिले दुत्कार मिले।
जिनवर से ''परम प्रीति'' कर लो, अंतर तम का यह फूल खिले॥67॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधारम्भपरमप्रीतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिमानी वचन जो कहता है, पत्थर के सम सबको लगते।
दुख भोग रहे हैं इस गति में, ''अविनश्वर'' की पूजा करते॥68॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनमानसंरम्भ-अविनश्वरधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानी ने मान बढ़ाया तो, संगी साथी सब छोड़ गये।
''अत्यंत स्वरूपी'' हे जिनवर, तुम कर्मों से मुख मोड़ गये॥69॥

ॐ ह्रीं अकारित वचनमानसंरम्भ अव्यक्तस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यदि ज्ञान जरा सा होता है, तो मन अभिमानी हो जाये।
तेजस्वी और तपस्वी हो, मन क्षितिज में आन समा जाये।।70।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमानसंरम्भदुर्लभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्मान यदि मिल जाये तो, अपमान सभी का करता है।
हो ''निराकार'' आकार रहित, तब ध्यान पाप को हरता है।।71।।

ॐ ह्रीं अकृवचनमानसमारंभपरमगम्यनिराकाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊँचे कुल का अभिमान हुआ, खुद से कुछ भी न कमा पाया।
हो ''परम स्वभावी'' आप प्रभो, अपने अवगुण अब बतलाया।।72।।

ॐ ह्रीं अकारितवचनमानसमारंभपरमस्वभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाति मद करता है मानुष, दूजे से पहचाना जाता।
''एकत्व गता'' गुणधारी जिन, तुमसे हमने जोड़ा नाता।।73।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनसमारम्भ-एकत्वगताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बलवान हुये बल मद होता, सबको कमजोर बताता है।
हे धर्मराज हे धर्म पति, तुमसे ही मिलती साता है।।74।।

ॐ ह्रीं अकृतवचनमानारंभ परमात्मधर्मराजधर्मस्वभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि-सिद्धि तप से आई, अज्ञान में यह मद कर बैठा।
''शाश्वत आनंद मिला नाहीं, चाहे कितना कुछ कर लेता।।75।।

ॐ ह्रीं अकारितवचनमानारम्भशाश्वतानन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुजंग प्रयात

करेंगे व्रतों को अभिमान आता।
करेंगे तपस्या औ फल ना ही पाता।।
सिद्धों की पूजा मैं भावों से करता।
बनूं सिद्ध मैं भी, ये संकल्प करता।।76।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमानारम्भ-अमृतपूरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिला रूप सुंदर तो अभिमान आया।
करेंगे तपस्या तो अमृत को पाया।।77।। सिद्धों......

ॐ ह्रीं अकृतवचनमायासंरम्भ-अनन्तधर्मैकरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुटिल भाव खोटे, ना सच्चाई जाने।
मिला ज्ञान अमृत, सुहाने-सुहाने।।78।। सिद्धों......

ॐ ह्रीं अकारितवचनमायासंरम्भ अमृतचन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया करें बात, कोई ना माने
''मूरत अनेकों'', ना तुम सम प्रमाने॥
सिद्धों की पूजा मैं भावों से करता।
बनूं सिद्ध मैं भी, ये संकल्प करता॥79॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायासंरम्भ-अनेकमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यायें छल से, सभी दूर जायें।
निरंजन स्वभावी, तुम्हें सिर नवायें॥80॥सिद्धों......

ॐ ह्रीं अकृतवचनमायासमारंभनित्यनिरंजनस्वभावाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निश्छल स्वभावी, सभी प्रेम करते।
''आतम धरम'' को भी, संग में वरते॥81॥सिद्धों.....

ॐ ह्रीं अकारितवचनमायासमारंभआत्मैकधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्काम सेवा, तो आतम सुधारे।
आतम धरम पाके, निज को निहारे॥82॥ सिद्धों......

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायासमारंभ-आत्मैकधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छुपावट बनावट, दिखावट कहाये।
हे अवकाश धारी, तेरी शर्ण आये॥83॥ सिद्धों......

ॐ ह्रीं अकृतवचनमायारंभ-अनन्तावकाशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपटी ने आतम को, काला किया है।
''अमल'' रूप जिनदेव, शरणा लिया है॥84॥ सिद्धो...

ॐ ह्रीं अकारितवचनमायारंभ-अमलगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनासक्त हो करके, आवाज देता।
तुम्ही वीतरागी, मैं शरणा को लेता॥85॥ सिद्धों......

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायारंभनिरवधिसुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरल भाव जिसके, वो ज्यादा सुखी है।
कुटिल भाव वाले तो ज्यादा दुखी हैं॥86॥ सिद्धों....

ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभसंरम्भव्यापकधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना दूजे के कारण, कभी लोभ करता।
हो ''व्यापक गुणी'', आज भक्ति मैं करता॥87॥ सिद्धों...

ॐ ह्रीं अकारितवचनलोभसंरम्भव्यापकगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं तो करे नाहीं, सबको करावे।

''अचल'' धर्मधारी, शरण तेरी आवे॥88॥ सिद्धों.....

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनलोभसंरम्भ-अचलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अलंकृत गुणों से, तुम्ही आत्म कीना।
बने लोभी हम तो, नहीं ध्यान दीना॥89॥ सिद्धों......

ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभसमारम्भनिरालँवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निराश्रय को आश्रय सदा आप देते।
इसी से तुम्हारी, शरण भक्त लेते॥90॥ सिद्धों......

ॐ ह्रीं अकारितवचनलोभसमारम्भनिराश्रयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिष्ठित करूं मैं, हृदय वेदिका में।
करूं आत्म उन्नति, तुम्हारी तरह मैं॥91॥ सिद्धों......

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनलोभसमारम्भ-अखण्डाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कभी लोभ का, नाहीं उपदेश देते।
दिखाते हो सन्मार्ग, मुक्ति को देते॥92॥ सिद्धों......

ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभारंभपरीतावस्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान मिथ्यात्व, जड़ से हटाया।
हमारे हरो कर्म, चरणों में आया॥93॥ सिद्धों......

ॐ ह्रीं अकारितवचनलोभारम्भसमयसाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति के भावों से, आवाज देता।
सुनो मेरे जिनवर, हे धर्मी विजेता॥94॥ सिद्धों......

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनलोभारम्भनिरंतराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधी भयंकर समस्या बढ़ावे।
शरण तेरी आये, समस्या हटायें॥95॥ सिद्धों......

ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधसंरम्भकायगुप्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किसी की भी वाणी, सुने क्रोध आवे।
परंतु ये जिनवर, सदा शांति पावे॥96॥ सिद्धों......

ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधसंरम्भ शुद्धकायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किसी ने किया क्रोध, हंस के दिखावे।
''अकाया'' ना क्रोधी, सदा शांति पावे॥97॥ सिद्धों.....

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायक्रोधसंरम्भ-अकायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगति की गति को, ये क्रोधी घटावे।
जो करते तपस्या, वे सिद्धि को पावे॥
सिद्धों की पूजा मैं भावों से करता।
बनूं सिद्ध मैं भी, ये संकल्प करता॥98॥

ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधसमारम्भस्वान्वयगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है विज्ञानियों ने, जगत को भ्रमाया।
''परम भाव'' प्रेमी ने, सबको लुभाया॥99॥ सिद्धों....

ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधसमारम्भभावतरये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों के गुण तो, नहि नाश होते।
जो परदा उठे तो, प्रगट सारे होते॥100॥ सिद्धों......

ॐ ह्रीं नानुमोदितकाय क्रोधसमारम्भस्वान्वयधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर चाल (दे दी हमें....)

यह क्रोध है विभाव, जीव जगत भ्रमाया।
जिन ''शुद्ध द्रव्य'' पायें, के ही प्रेम बढ़ाया॥
अंतर्मुखी हो दृष्टि मेरी, ज्ञान दीजिये।
हम सिद्ध बने कर्म काट ध्यान दीजिये॥101॥

ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधारम्भशुद्धद्रव्यरताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये रंच से प्रपंच ही, तो मंच बिगाड़े।
संसार का छेदन हो, प्रभु शर्ण तिहारे॥102॥अंतर्मुखी...

ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधारम्भसंसार-छेदकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना हंसते हो ना रोते हो, ना प्रेम ही करो।
जिन धर्म को धारण किया बस ध्यान ही करो॥103॥अंतर्मुखी...

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायक्रोधारम्भजैनधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो आत्म शुद्धियाँ, प्रभो पूजा तेरी करे।
हो कल्पवृक्ष आप ही, सब सिद्धियां वरे॥104॥अंतर्मुखी...

ॐ ह्रीं अकृतकायमानसंरम्भस्वरूपगुप्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्पाप हो निष्काम हो, स्वरूप प्राप्त हो।
निज की कृति जो धारते, निश्चय से आप्त हो॥105॥अंतर्मुखी...

ॐ ह्रीं अकारितकायमानसंरम्भनिजकृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं साधना करूं तो, तुम्हें ''साध्य'' बनाऊँ।
आराधना करूं मैं, तेरा ध्यान लगाऊँ।।106।।अंतर्मुखी...

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमानसंरम्भ-ध्येयभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आराधना औ वंदना के योग्य आप हैं।
पूजा करें भक्ति करें, औ करते जाप हैं।।107।।अंतर्मुखी...

ॐ ह्रीं अकृतकायमानसमारम्भ-परमाराधनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौभाग्य का संदेश आज तुमको सुनाये।
ये भक्त तेरी भक्ति मैं, नित ध्यान लगाये।।108।।अंतर्मुखी...

ॐ ह्रीं अकारितकायमानसमारम्भानंदगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घटती है उम्र किन्तु पाप हमने बढ़ाये।
''स्वानंद'' नंदपाने को हम पूज रचाये।।109।।अंतर्मुखी...

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमानसमारम्भस्वानंदानन्दिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृष्णायें जिंदगानी में, भटकाती हैं मुझको।
''संतोष'' जो भी धारता है सौख्य दे उसको।।110।।अंतर्मुखी...

ॐ ह्रीं अकृतमायामानारम्भसंतोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सामर्थ्य प्राप्त हो गया, पर ज्ञान ना आया।
है ''रूपरता'' ज्ञान पाने शर्ण में आया।।111।।अंतर्मुखी...

ॐ ह्रीं अकारितकायमानारम्भस्वरूपरताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन शुद्ध नहीं है, किया कालुष का खजाना।
अमृत लिया है गर्भ है, शुभ ज्ञान तराना।।112।।अंतर्मुखी...

ॐ ह्रीं अकृतकायमायासंरम्भ-अमृतगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छल से कपट से पाप से धन रोज कमाते।
'चैतन्य' आत्मा वे रोज कर्म चढ़ाते।।113।।अंतर्मुखी..

ॐ ह्रीं अकारितकायमायासंरम्भचैतन्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन की पवित्रता के, हेतु अर्घ्य चढ़ाये।
आतम पवित्रता के, हेतु भाव बनाये।।114।।अंतर्मुखी..

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायासंरम्भ-समरसीभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घन घोर घटा कर्म, की आतम पे छाई है।
हो 'बंध छेद' आपने, उसको हटाई है।।115।।अंतर्मुखी..

ॐ ह्रीं अकृतकायमायासमारम्भबंधच्छेदकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निश्चय ही देह आत्मा से अलग रुप है।
हों 'ध्येय भाव' मेरे भी सुन्दर स्वरूप है॥
अंतर्मुखी हो दृष्टि मेरी, ज्ञान दीजिये।
हम सिद्ध बने कर्म काट ध्यान दीजिये॥116॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमानसंरम्भ-ध्येयभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लावण्य आपका प्रभु इन्द्रों को लुभाये।
हो धर्म के समूह आप जगत को भाये॥117॥अंतर्मुखी..

ॐ ह्रीं नानुमोदित कायमायासमारम्भधर्मसमूहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया की तजी छाया तो भगवान मिल गये।
'परमात्म सौख्य' पा लिया भगवान हो गये॥118॥अंतर्मुखी.

ॐ ह्रीं अकृतकायमायारम्भपरमात्मसुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया की शिक्षा देते नहीं, आप प्रभु जी।
अद्‌भुत प्रकाश पा लिया, वरदान प्रभु जी॥119॥अंतर्मुखी.

ॐ ह्रीं अकारितकायमायारम्भनिष्ठात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया से रहित भावना हो, ज्ञान दीजिए।
बन जाऊँ मैं भी सिद्ध ये वरदान दीजिए॥120॥अंतर्मुखी.

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायारम्भचेतनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्याकुल है चित्त माया से उद्धार कीजिए।
'स्वसमय' में ही रमूं मैं वरदान दीजिए॥121॥अंतर्मुखी..

ॐ ह्रीं अकारितकायलोभसंरम्भ-स्वसमयरताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिव्यक्त भावना को प्रभु, आज मैं करूँ।
तुम नाम 'व्यक्त' हो प्रभु श्रद्धान मैं धरूँ॥122॥अंतर्मुखी...

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभसंरम्भ-व्यक्तधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बस सुख मिले, बस सुख मिले, सब जीव चाहते।
ना धर्म करे ध्यान धरे, पुण्य चाहते॥123॥अंतर्मुखी...

ॐ ह्रीं अकृतकायलोभसमारम्भ-नित्यसुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं रत्नत्रय की भावना को ले के आया हूँ।
संग आपके रहूँ मैं आश ले के आया हूँ॥124॥अंतर्मुखी...

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभसमारम्भ-अकषायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये आत्मा तो स्वच्छ है, कर्मों से हो मैली।
शुभ शौच धर्म शुद्ध है, है अंतः की केली॥125॥अंतर्मुखी...

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभसमारम्भशौचगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिकूल पीड़ा जीव को जग में है सताये।
पीड़ा से मुक्त होने प्रभु चरण में आये।।126।।अंतर्मुखी...

ॐ ह्रीं अकृतकायलोभारम्भचिदात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गति में कर्म मार खूब पड़ी है।
अब पुण्य का उदय है भक्ति फूल झड़ी है।।127।।अंतर्मुखी...

ॐ ह्रीं अकारितकायलोभारम्भ-निराबंबाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्साह मेरा धर्म में कभी भी कम न हो।
इस आत्मा आनन्द को मेरा नमन अहो।।128।।अंतर्मुखी...

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभरम्भात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

हे सिद्ध भगवन, शुद्ध भगवन, ध्यान मुझपर दीजिये।
मैं भाव से पूजा को आया स्वीकार भक्ति कीजिए।।
मैं चिर प्रतिक्षित हूँ खड़ा, मुखरित हो कुछ तो बोलिये।
यह भक्त औ भगवान रिश्ता आत्मा का तौलिये।।
अब जाऊँगा मैं ना प्रभो, जब तक मुझे ना ज्ञान हो।
अध्यात्म रस पीता रहूं, आतम का होवे भान हो।।
जल और चंदन अक्षतो संग, पुष्प चरू दीपक धरूँ।
यह धूप फल शुभ अर्घ्य लेकर, मोक्ष लक्ष्मी को वरूँ।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणयुक्तसिद्धेभ्यो नमः पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मन निर्मल होवे मेरा, गंगा जल सम शुद्ध।
आत्म मुक्ति में जाय के, बन जायेंगे बुद्ध।।
सिद्धचक्र के चरण में, नमन करूं शत् बार।
कर्म कालिमा धोयेंगे, होवे भव से पार।।

परिपुष्पांजलि

जयमाला

दोहा

जिन शासन जिन देव जी, संयम पथ दिखलाय।
संयम से सिद्धि मिले, शत्-शत् शीश नवाय।।

शम्भू छन्द

हे महाधैर्य तुम चरणों में, पूजन करने को आये हैं।
कुछ द्रव्य नहीं कोई अर्घ नहीं, भावों को संग में लाये हैं॥
अम्बर तेरा गुणगान करे, सागर चरणों को धोता है।
ये फूल सुगन्धि अर्पण कर, पुण्यों से झोली भरता है॥
पूजन तेरी जो करता है, स्वर्णिम प्रभात हो जायेगा।
आधी व्याधी सब दूर होय, सम्मान ज्ञान का पायेगा॥
चारों कषाय नागिन बनकर, हर पल मुझको डसती रहती।
निश्चिंत होय सोता हूँ मैं, आतम को दुख देती रहती॥
तेरी वाणी का ही प्रसाद, शांति का अमृत देता है।
तब चरण-वरण जो कर लेता, पावनता को भर लेता है॥
तुम शुद्ध अहिंसा मय वाणी, सम्यग्दर्शन को देवे है।
हो महावृक्ष जिन देव तुम्हीं, सब पर छाया कर देते हैं॥
जिस पर तेरी किरपा होती, वह तो निहाल हो जाता है।
चरणों से दूर रहेगा जो, संसार भ्रमण को पाता है॥
गंगा सम निर्मल वाणी में, आतम स्नान कराना है।
पापों का मैल धुले मेरा, मुझको भी मुक्ति जाना है॥
प्यासे हैं नयन मेरे भगवन, इन आंखों में भक्ति भर दो।
तेरी भक्ति मैं नित्य करूँ, ऐसी मुझमें शक्ति भर दो॥
अब तक क्रोधी मैं बनता था, अब क्रोध करूँ मैं क्यों भगवन?
जब तेरी शरणा पाई है, आनंद मिले मुझको हर क्षण॥
मैं क्रोध करूँ मैं मान करूँ, मैं लोभ करूँ औ माया भी।
शक्ति दो मुझको हे भगवन, छोड़ूँ मैं जग की छाया भी॥
वैराग्य बिना ये राग प्रभो, सब अपना-अपना लगता है।
वैराग्य भाव जब उदय होय, जीवन यह सपना लगता है॥
पहचान लिया मैंने भगवन, तेरी वैरागी छवि लखकर।
हमने अपनों को जान लिया, अब जाऊँ कहां तुमको तजकर॥
मुझको कष्टों से मुक्त करो, सीता मैना को तारा है।
तुम ही नहि नाथ सहारा दो, तो तुम बिन कौन हमारा है॥
अब कहीं नहीं मैं भटकूंगा, तेरे पथ का हूँ अनुगामी।
तन मन यह आज समर्पित है, तुमही तो हो सच्चे स्वामी॥
जिन्दगानी साथ नहीं देती, जाने कब मृत्यु आ जाये।

तन पिंजरे से आतम को वह, लेकर के कहां चली जाये।।
वह समय आये उससे पहले, मैं सावधान हो जाऊँगा।
'स्वस्ति' की नैया पार करो, मैं मुक्ति पुर को जाऊंगा।।
भाव बहुत पर परिधि में, बंधा हुआ है पाठ।
अल्प शब्द में हे प्रभो, समझो मेरी बात।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशत्यधिकशतदलोपरिस्थितसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

ज्ञान दीप की ज्योति से, दूर करो अज्ञान।
सिद्धचक्र शुभ पाठ से, चेतन हो धनवान।।
अंत समय में हे प्रभो, रहना मेरे पास।
और नहीं कुछ मांगता, यही हमारी आश।।

परिपुष्पांजलि

जाप्य मंत्र : (यहाँ 108 बार 'ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा नमः' मंत्र का जाप करें)

षष्ठम् पूजा

शंभू छंद

स्थापना

यह लोभ मोह पीड़ा देते, औ अशुभ बंध ही करवाते।
आदर्श सभी उद्देश्य सभी, वे पूर्ण कभी ना हो पाते।।
पर गर्व हमें है सिद्ध प्रभु, तेरी छाया को पाया है।
मम हृदय पधारों हे भगवन, पूजा को तेरी आया है।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः, षट्पंचाशदधिकद्विशतगुण सयुंक्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दोहा

सिद्धचक्र मंगल करे, मंगलमय भगवान।
पाठ-ठाठ जग में करे, बारंबार प्रणाम॥
(पुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

जल

तन ना निर्मल मन ना निर्मल, निर्मल ना मेरी काया है।
कोशिश करते मन स्वच्छ रहे, कर्मों की काली छाया है॥
जल को निमित्त करके भगवन, आतम शुद्धि को आया हूँ।
सिद्धों की खुशबू पाने को, मैं भी जिनवर ललचाया हूँ॥1॥

ॐ ह्रीं षट्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन

बचपन में चिन्ता शिक्षा की, जब युवा हुआ तो मन भटका।
गृहस्थी में अस्थी निकल गई, अब बैठा पांव चिता लटका॥
चंदन निमित्त करके भगवन, आतम शुद्धि को आया हूँ।
सिद्धों की खुशबू पाने को, मैं भी जिनवर ललचाया हूँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने षट्पंचाशदधिकद्विशतगुण सहिताय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

आक्रोश उपेक्षित करता है, पद ने है क्रोधी कर दीना।
अब अक्षय पद की चाह मुझे, पद से निष्पद मुझको कीना॥
अक्षत निमित्त करके भगवन, आतम शुद्धि को आया हूँ।
सिद्धों की खुशबू पाने को, मैं भी जिनवर ललचाया हूँ॥3॥

ॐ ह्रीं षट्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

सौंदर्य लुभाता जीवों को, मन दिशाहीन हो जाता है।
कुंठायें मिली भटकाव मिला, मन चिंता में खो जाता है॥
ये पुष्प निमित्त करके भगवन, आतम शुद्धि को आया हूँ।
सिद्धों की खुशबू पाने को, मैं भी जिनवर ललचाया हूँ॥4॥

ॐ ह्रीं षट्पंचाशदधिकद्विशतगुणसहिताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने कामवाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

जिव्हा लोलुपता भोजन में, शुद्धि का ध्यान न रखती है।
रसना की पूर्ति हो जावे, बस स्वाद रसों के चखती है॥
नैवेद्य निमित्त करके भगवन, आतम शुद्धि को आया हूँ।
सिद्धों की खुशबू पाने को, मैं भी जिनवर ललचाया हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं षट्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने क्षुधा रोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

अंदर बाहर अंधियारा है, पर ज्ञान दीप ना प्रजलाया।
बाहर में बल्व लगा करके, बाहर में निज को भरमाया॥
ये दीप निमित्त करके भगवन, आतम शुद्धि को आया हूँ।
सिद्धों की खुशबू पाने को, मैं भी जिनवर ललचाया हूँ॥6॥

ॐ ह्रीं षट्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

ना शासन है अनुशासन है, ना जीवन में संयम कोई।
अपराध डगर में बढ़ते हैं, इसलिए शांति अपनी खोई॥
यह धूप निमित्त करके भगवन, आतम शुद्धि को आया हूँ।
सिद्धों की खुशबू पाने को, मैं भी जिनवर ललचाया हूँ॥7॥

ॐ ह्रीं षट्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

व्यवहारिक फल जब तृप्त करे, मुक्ति का फल कैसा होगा।
जो सिद्धि तुमने पाई है, बस उसके ही जैसा होगा॥
यह फल निमित्त करके भगवन, आतम शुद्धि को आया हूँ।
सिद्धों की खुशबू पाने को, मैं भी जिनवर ललचाया हूँ॥8॥

ॐ ह्रीं षट्पंचाशदधिकद्विशतगुणसहिताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलं प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

संपत्ति स्वर्ग में है लेकिन, पर कर्म मार से ना बचता।
आतम संवार लो संयम से, यह धर्म ही प्राणी को जंचता।।
यह अर्घ्य निमित्त करके भगवन, आतम शुद्धि को आया हूँ।
सिद्धों की खुशबू पाने को, मैं भी जिनवर ललचाया हूँ।।9।।

ॐ ह्रीं षट्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्ताय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। दो सौ छप्पन गुण सहित अर्घ्य।।

चौपाई

समकित का जब दीप जलाया, मिथ्यातम को आप भगाया।
चिरन्तर संसार का कारण, किया आपने उसे निवारण।।1।।

ॐ ह्रीं चिरन्तरसंसारकारण-ज्ञाननिर्द्धूतोद्भूतकेवलज्ञानातिशयसंपन्नाय सिद्धाधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनिबोध मतिज्ञान का भेदा, मन इंद्रिय ध्या किया अभेदा।
सर्व कर्म को आप विनाशा, केवल ज्ञानी दीप प्रकाशा।।2।।

ॐ ह्रीं अभिनिबोधवारकविनाशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग श्रुत ज्ञान को पाया, दिशा बोध आतम में आया।
सर्व कर्म को आप विनाशा, केवल ज्ञानी दीप प्रकाशा।।3।।

ॐ ह्रीं द्वादशांगश्रुतावरणीकर्मविमुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधि पा सत्पथ बतलाते, जीवों को शुभ ज्ञान कराते।
सर्व कर्म को आप विनाशा, केवल ज्ञानी दीप प्रकाशा।।4।।

ॐ ह्रीं असंख्यभेदलोक-अवधिज्ञानावरणविमुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन पर्यय मन ज्ञान कराये, आतम की शुद्धी करवाये।
सर्व कर्म को आप विनाशा, केवल ज्ञानी दीप प्रकाशा।।5।।

ॐ ह्रीं असंख्यप्रकारमनः पर्ययज्ञानावरणकर्मविमुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य में गुण पर्याय बताई, केवल ने प्रत्यक्ष दिखाई।
सर्व कर्म को आप विनाशा, केवल ज्ञानी दीप प्रकाशा।।6।।

ॐ ह्रीं निखिलरूप-गुणपर्याय-बोधककेवलज्ञानावरणविमुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दर्शन की जब मन में आवे, पर दर्शन करने ना पावे।
कर्म दर्शनावरण विनाशा, पा अनंत दर्शन सुख भाषा।।7।।

ॐ ह्रीं सकलदर्शनावरणकर्मविनाशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्र ही सारा जग दिखलाता, चक्षु दर्श न देवे साता।
दर्शन में बाधायें डाले, प्रभु ने कर्म के तोड़े ताले।।8।।

ॐ ह्रीं चक्षुदर्शनावरणकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्य इंद्रिय से जग को जाने, नेत्र नहीं पर अनुभव पाये।
कर्म दर्शनावरण विनाशा, पा अनंत दर्शन सुख भाषा।।9।।

ॐ ह्रीं अचक्षुदर्शनावरणरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेत्र काल की बात बताई, अवधि ज्ञानी मुनिवर भाई।
अवधि दर्शना वरण विनाशा, पा अनंत दर्शन सुख भाषा।।10।।

ॐ ह्रीं अवधिदर्शनावरणरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोका लोक दिखे दर्पण में, भाव हमारे है चरणन में।
करम दर्शना वरण विनाशा, पा अनंत दर्शन सुख भाषा।।11।।

ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरणरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बैठे सोवे ठाड़ा सोवे, वह स्थान ना देखने पावे।
निद्रा दर्शनावरण विनाशा, पा अनंत दर्शन सुख भाषा।।12।।

ॐ ह्रीं निद्राकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नींद पे नींद उसे आ जावे, चाहे कितना कोई जगावे।
निद्रा-निद्रा कर्म विनाशा, पा अनंत दर्शन सुख भाषा।।13।।

ॐ ह्रीं निद्रानिद्राकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोये मगर शीघ्रहि जग जावे, सोते में ना धोखा खावे।
प्रचला दर्शनावरण विनाशा, पा अनंत दर्शन सुख भाषा।।14।।

ॐ ह्रीं प्रचलाकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोये मुख से लार बहायी, हाथ पांव हिलते हैं भाई।
प्रचला-प्रचला कर्म विनाशा, पा अनंत दर्शन सुख भाषा।।15।।

ॐ ह्रीं प्रचलाप्रचलाकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोते-सोते कार्य करेगा, पर ना उसके होश रहेगा।
यह स्त्यानगृद्धि को नाशा, पा अनंत दर्शन सुख भाषा।।16।।

ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धिकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई द्रव्य ना सुख-दुख देवे, कर्म हो जैसा फल को लेवे।
वेदनीय को प्रभु ने छोड़ा, आतम से है नाता जोड़ा॥17॥

ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साता का जब उदय है आवे, सभी भोग सुखकर बन जावे।
साता से नाता को तोड़ा, आतम से नाता है जोड़ा॥18॥

ॐ ह्रीं सातावेदनीयकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म असात उदय जब आवे, रोग शोक बीमारी छावे।
कर्म असाता दूर किया है, आतम धन को पाय लिया है॥19॥

ॐ ह्रीं असातावेदनीयकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मद पीकर मतवाले होते, त्यों मोही भी जग में रहते।
मोह तजा था मोक्ष को पाया, संसारी पथ तुम्हें न भाया॥20॥

ॐ ह्रीं मोहकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य रूप विपरीत बताये, सत्य समझ में उसे न आये।
पंच भेद में इसे बताया, चरणों में आ शीश झुकाया॥21॥

ॐ ह्रीं मिथ्यात्वकर्मविनाशनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या टूटे सम्यक होवे, मिथ्या सम्यक संग में रहवे।
सम्यक् मिथ्या तजा है ज्ञानी, बारंबार करूं प्रणमामि॥22॥

ॐ ह्रीं सम्यक्मिथ्यात्वकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक में कुछ मिथ्या पाई, सम्यक प्रकृति नाम निभाई।
सम्यक् प्रकृति तजा है ज्ञानी, सौख्य मिले करता प्रणमामि॥23॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वप्रकृतिमिथ्यात्वरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध किया और बैर है बांधा, अब अनंत है काल प्रधाना।
यह अनंत अनुबंध करायें, हम चरणों में शीश झुकायें॥24॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धीक्रोधकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव शास्त्र गुरू का अपमान, मिथ्या ज्ञान करे अभिमान।
यह अनंत अनुबंध करायें, हम चरणों में शीश झुकायें॥25॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धीमानकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया करके धोखा देवे, कर्मों के फल को न देखे।
आप तजा हो गये अविकारी, प्रणमूं सिद्ध हुए सुखकारी॥26॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धीमायाकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वह निर्माल्य की द्रव्य भी खावे, इतना लोभ अधिक बढ़ जावे।
तज कार्यों को मुक्ति पाये, सौख्य बढ़े हम शीश झुकाये।।27।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धीलोभकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल

क्रोध करे अणुव्रत ना पावे, चारित्र मोह की प्रकृति सतावे।
अप्रत्याख्यान क्रोध को नाशा, करूं नमन सुख की है आशा।।28।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणक्रोधकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान किया अणुव्रत न आया, अभिमान झुकने ना पाया।
अप्रत्याख्यान मान का नाशा, करूं नमन सुख की है आशा।।29।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमानकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया ने माया फैलाई, अणुव्रत आया है ना भाई।
अप्रत्याख्यान माया को नाशा, करूं नमन सुख की है आशा।।30।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमायाविमुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लालच ने जब डाका डाला, देश व्रतों को नाही पाला।
अप्रत्याख्यान लोभ को नाशा, करूं नमन सुख की है आशा।।31।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणलोभविमुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल

क्रोध करे पर देश व्रतों को धारता।
सकल व्रती बन दीक्षा नाहीं पावता।।
चारित्र मोह को नाशा प्रभु जी आपने।
नमूं सिद्ध सुखकार हुआ तब जाप में।।32।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणक्रोधविमुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान मान अणुव्रत पालता, महाव्रतों की दीक्षा नहीं धारता।
चारित्र मोह को नाशा प्रभु जी आपने, नमूं सिद्ध सुखकार हुआ तब जाप में।।33।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमानरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि दीक्षा में माया बाधा डालती, श्रावक के व्रत में ही संयम पालती।
चारित्र मोह को नाशा प्रभु जी आपने, नमूं सिद्ध सुखकार हुआ तब जाप में।।34।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमायारहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभी श्रावक बनता वांछा को धरे, इसीलिए संयम भी पूरण ना करे।
चारित्र मोह को नाशा प्रभु जी आपने, नमूं सिद्ध सुखकार हुआ तब जाप में।।35।।
ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणलोभरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूक्ष्म क्रोध जो बचा दीक्षा को ले लिया, यथाख्यात चारित्र ने दर्शन ना दिया।
क्रोध संज्वलन दूर किया है आपने, नमूं सिद्ध सुखकार हुआ तब जाप में।।36।।
ॐ ह्रीं संज्वलनक्रोधरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
भावों की शुद्धि ना पूरण होवती, मुनिराज बन गये ध्यान मय शोभती।
मान मोह को नाशा प्रभु जी आपने, नमूं सिद्ध सुखकार हुआ तब जाप में।।37।।
ॐ ह्रीं संज्वलनमानरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
किया उजाला महाव्रतों को धारके, सूक्षम माया बची ना पूरण वारते।
माया मोह को नाशा प्रभु जी आपने, नमूं सिद्ध सुखकार हुआ तब जापमें।।38।।
ॐ ह्रीं संज्वलनमायारहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अति मंद है लोभ जरा ना दीखता, यथा ख्यात चारित्र वहां ना पावता।
लोभ संज्वलन को नाशा प्रभु आपने, नमूं सिद्ध सुखकार हुआ तब जाप में।।39।।
ॐ ह्रीं संज्वलनलोभरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल (जीवन के किसी....)

जब हास्य कर्म आ जाये, हंस-हंस कर जी खिल जाये।
प्रभु हास्य कर्म को नाशा, नमूं सुख का होवे वासा।।40।।
ॐ ह्रीं हास्यकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जब रति उदय में आवे, सबसे वह प्रीति बढ़ावे।
प्रभु रति कर्म को नाशा, नमूं सुख का होवे वासा।।41।।
ॐ ह्रीं रतिकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जब मन प्रसन्न ना होवे, तब अरति उदय में आवे।
प्रभु अरति कर्म को नाशा, नमूं सुख का होवे वासा।।42।।
ॐ ह्रीं अरतिकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
होगा जब इष्ट वियोगा, यह शोक कर्म संयोगा।
प्रभु शोक कर्म को नाशा, नमूं सुख का होवे वासा।।43।।
ॐ ह्रीं शोककर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
भय ने भयभीत किया है, डरकर ना धर्म किया है।
प्रभु भय कर्म को नाशा, नमूं सुख का होवे वासा।।44।।

ॐ ह्रीं भयकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर के अवगुण बतलावे, अपने गुण सबमें गावे।
यह कर्म जुगुप्सा नाशा, नमूं सुख का होवे वासा।।45।।

ॐ ह्रीं जुगुप्साकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर नारी मन को भावे, दोनों से प्रीति बढ़ावे।
नपुंसक वेद को नाशा, नमूं सुख का होवे वासा।।46।।

ॐ ह्रीं नपुंसकवेदरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्री में मन रम जावे, स्त्री से प्रीति बढ़ावे।
प्रभु पुरुष वेद को नाशा, नमूं सुख का होवे वासा।।47।।

ॐ ह्रीं पुरुषवेदरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर में ही मन रम जावे, नर से वह प्रीति बढ़ावे।
प्रभु स्त्री वेद को नाशा, नंमू सुख का होवे वासा।।48।।

ॐ ह्रीं स्त्रीवेदरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामिनि मोहन छंद

आयु कर्म बंधनों में जीव को है बांधता।
कर्म के अनुसार ही गतियों को है वह पावता।।
आयु कर्म नाश करके सौख्य को है पा लिया।
नमस्कार हम करें तो धर्म धन भी आ लिया।।49।।

ॐ ह्रीं आयुकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सागरों की आयु में भी कष्ट हमने पाया है।
आयु नर्क पाय के दुखों को ही उठाया है।।
नर्क आयु नाश कर सौख्य को है पा लिया।
नमस्कार हम करे तो धर्म धन भी आ लिया।।50।।

ॐ ह्रीं नरकायुरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव और देवी पूर्ण आयु को ही भोगती।
धार सम्यक्त्व को भक्ति में ही शोभती।।
स्वर्ग आयु नाश कर सौख्य को है पा लिया।
नमस्कार हम करे तो धर्म धन भी आ लिया।।51।।

ॐ ह्रीं देवायुरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकुल मिले जगत में जीव को ही भाग्य से।
पाय के मनुज गति कार्य हो सौभाग्य से।।
मनुज आयु नाश कर सौख्य को है पा लिया।
नमस्कार हम करे तो धर्म धन भी आ लिया।।52।।

ॐ ह्रीं मनुष्यायुरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम तिर्यंच जब बने, तो भूख प्यास को सहा।
हंटरो के मान खाके, आंसु का सागर बहा।।
तिर्यंच आयु नाश कर सौख्य को है पा लिया।
नमस्कार हम करे तो धर्म धन भी आ लिया।।53।।

ॐ ह्रीं तिर्यंचायुरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्धरि छंद

यह नाम कर्म की बलिहारी, ज्यों चित्रों की बनती क्यारी।
प्रभु नाम का नाम हटाया है, सुख पाने शीश झुकाया है।।54।।

ॐ ह्रीं नामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस कर्म उदय तिर्यंच बने, बन ज्ञान हीन सब कष्ट घने।
प्रभु नाम का नाम हटाया है, सुख पाने शीश झुकाया है।।55।।

ॐ ह्रीं तिर्यंचगतिरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेजा कर्मों ने नर्कों में, बीता था जीवन कष्टों में।
प्रभु नाम का नाम हटाया है, सुख पाने शीश झुकाया है।।56।।

ॐ ह्रीं नरकगतिरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्गों में सुख की छाया थी, जग की ये सारी माया थी।
प्रभु नाम का नाम हटाया है, सुख पाने शीश झुकाया है।।57।।

ॐ ह्रीं देवगतिकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनुष्य बने सौभाग्य हुआ, पर आत्म धर्म को नही किया।
प्रभु नाम का नाम हटाया है, सुख पाने शीश झुकाया है।।58।।

ॐ ह्रीं मनुष्यगतिरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकेन्द्रिय का तन पाया था, पुरुषार्थ नहीं कुछ आया था।
प्रभु नाम का नाम हटाया है, सुख पाने शीश झुकाया है।।59।।

ॐ ह्रीं एकेन्द्रिय-जातिरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श रसन जब पाय लिया, धरती पर चलना सीख लिया।
प्रभु नाम का नाम हटाया है, सुख पाने शीश झुकाया है।।60।।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय-जातिरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेन्द्रिय में फिर नाक आई, औ गंध सुगंध पा लिया भाई।
प्रभु नाम का नाम हटाया है, सुख पाने शीश झुकाया है।।61।।

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रिय-जातिरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श रसन और घ्राण साथ, चक्षु को पाकर चले पाथ।
प्रभु नाम का नाम हटाया है, सुख पाने शीश झुकाया है।।62।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजातिरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचेंद्रिय पद को पाया है पाकर के हर्ष मनाया है।
प्रभु नाम का नाम हटाया है, सुख पाने शीश झुकाया है।।63।।

ॐ ह्रीं पंचेंद्रियजातिरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल

(तर्ज: मिठो...... सोच...........)

औदारिक तन स्थूल हुआ है कर्म जी।
कर्मों के वश पाये बने निष्कर्म जी।।
बने अमूरत ज्ञान रूप शुभ राशि सम।
ज्योति पुंज हो सिद्ध नमूं सुख राशि नम।।64।।

ॐ ह्रीं औदारिकशरीरविमुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैसा चाहे रूप बनाये नित्य ही।
करे विक्रिया तन से मन से युक्त ही।।
बने अमूरत ज्ञान....।।65।।

ॐ ह्रीं वैक्रियिकशरीरविमुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में हुआ संशय, किसी भी योगी को।
पुतला आहारक निकला संयोगी को।।
बने अमूरत ज्ञान....।।66।।

ॐ ह्रीं आहारकशरीररहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तैजस पुतला शुभ अशुभ दो रूप हैं।
तेज पुंज हैं सुंदर है चिद्रूप हैं।।
बने अमूरत ज्ञान....।।67।।

ॐ ह्रीं तैजसशरीररहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नये शरीर में जाने को तैयार है।
कर्म रूपी तन करता नित्य बिहार॥
बने अमूरत ज्ञान रूप शुभ राशि सम।
ज्योति पुंज हो सिद्ध नमूं सुख राशि नम॥68॥

ॐ ह्रीं कार्माणशरीररहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्र वज्रा

(तर्जः नरेंद्र फणीन्द्रं.........)

कर्मों से तन का है निर्माण होता, मिलकर बना है नहीं छिद्र होता।
संघात कर्म भी संग में है रहते, सिद्धों को ध्याये नहीं कष्ट पाते॥69॥

ॐ ह्रीं औदारिकसंघातरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहार तन को है जिसने मिलाया, संघात से कर्म उसको बुलाया।
संघात कर्म भी संग में है रहते, सिद्धों को ध्याये नहीं कष्ट पाते॥70॥

ॐ ह्रीं आहारकसंघातरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तनीविक्रिया में नहीं जोड़ होते, किन्तु करम को सदा ही संजोते।
संघात कर्म भी संग में है रहते, सिद्धों को ध्याये नहीं कष्ट पाते॥71॥

ॐ ह्रीं वैक्रियकसंघातरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग उपांगों के संग साथ देता, कर्मों का रेला है तन को संजोता।
संघात कर्म भी संग में है रहते, सिद्धों को ध्याये नहीं कष्ट पाते॥72॥

ॐ ह्रीं तैजससंघातरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करम आठ मिलकर है तन को बनाते, संघात सहयोग करने बुलाते।
संघात कर्म भी संग में है रहते, सिद्धों को ध्याये नहीं कष्ट पाते॥73॥

ॐ ह्रीं कार्माणसंघातरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

कर्म वर्गणा को परिणाये, बंधन रूप उसे करवाये।
औदारिक बंधन को बांधा, बंध रहित है आतम साधा॥74॥

ॐ ह्रीं औदारिकबन्धनरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विक्रिया के परमाणु आये, उसी रूप ही ना करवाये।
विक्रिया के बंधन को बांधा, बंध रहित है आतम साधा॥75॥

ॐ ह्रीं वैक्रियिकबन्धनच्छेदकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि तन से आहारक निकले, कर्म ही इसकी रचना करते।
आहारक बंधन को बांधा, बंध रहित है आतम साधा।।76।।

ॐ ह्रीं आहारकबन्धनच्छेदकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तैजस तेज प्रगट जब होता, पुतला बन कार्यों को करता।
तैजस बंधन को है बांधा, बंध रहित है आतम साधा।।77।।

ॐ ह्रीं तैजसबन्धनरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य कर्म और भाव कर्म है, तन बन जाये लगे नर्म है।
कार्माण बंधन को बांधा, बंध रहित है आतम साधा।।78।।

ॐ ह्रीं कार्माणबन्धनरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छंद

समचतुरस्त्र संस्थान रूप सुंदर कहा।
देखते हैं सब मन को भाव ही लहा।।
हो संस्थान रहित जिनवर जिन देव जी।
पावें मोक्ष निधान करूं मैं सेव जी।।79।।

ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थानविमुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊपर से तो मोटा नीचे न्यून हो।
परिमंडल है नाम नहीं परिपूर्ण हो।।
हो संस्थान रहित....।।80।।

ॐ ह्रीं न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थानरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नीचे मोटा देख ऊपर पतला कहा।
बामीक है संस्थान किंतु शुभ न रहा।।
हो संस्थान रहित....।।81।।

ॐ ह्रीं वामीकसंस्थानरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कूबड़ तन में हुआ उसे भावे नहीं।
कुब्ज है संस्थान किंतु जावे नहीं।।
हो संस्थान रहित....।।82।।

ॐ ह्रीं कुब्जकनामसंस्थानरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छोटा ही रह जाये जहां में सब हंसे।
वामन है संस्थान जमीं पर वे बसे।।
हो संस्थान रहित....।।83।।

ॐ ह्रीं वामनसंस्थानरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

टेढ़ा मेढ़ा तन पाकर के है दुखी।
हुड़क है संस्थान नाम न है सुखी।।
हो संस्थान रहित जिनवर जिन देव जी।
पावें मोक्ष निधान करूं मैं सेव जी।।84।।

ॐ ह्रीं हुँडकसंस्थानरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभू छंद

अंग और उपांगों को पाकर, तन पूरणता को पाता है।
औदारिक तन को पाकर के, निज का पुरुषार्थ जगाता है।।
तन रहित हुये गुण सहित हुये, मैं सिद्ध प्रभु चरणों आया।
तुम सम मैं भी बन जाऊँ प्रभु, यह भाव साथ में मैं लाया।।85।।

ॐ ह्रीं औदारिकांगोपांगरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों के तन में मांस रक्त, संग हड्डी भी ना होती है।
मुक्ति का है पुरुषार्थ नहीं, ना त्याग तपस्या होती है।।
तन रहित हुये गुण सहित हुये, मैं सिद्ध प्रभु चरणों आया।
तुम सम मैं भी बन जाऊँ प्रभु, यह भाव साथ में मैं लाया।।86।।

ॐ ह्रीं वैक्रियिकांगोपांगरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर के मन में संशय हो, आहारक पुतला जाता है।
सब अंगोपांग सहित होकर, प्रश्नों के उत्तर लाता है।।
तन रहित हुये गुण सहित हुये, मैं सिद्ध प्रभु चरणों आया।
तुम सम मैं भी बन जाऊँ प्रभु, यह भाव साथ में मैं लाया।।87।।

ॐ ह्रीं आहारकांगोपांगरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्कृष्ट शक्ति तन में पाकर, उत्कृष्ट कार्य को सिद्ध करे।
यह वज्रवृषभ नाराच शक्ति, तप करके सारे कर्म हरे।।
तन की शक्ति पा तप करके, मुक्ति में किया बसेरा है।
हे सिद्ध प्रभु प्रणमूं तुमको, जीवन में हुआ सबेरा है।।88।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहननरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है वज्र की कीली ठुकी हुई, संधी में जाकर रहती है।
तप करते हैं पर मुक्ति नहीं, शुभ शुद्ध सरिता बहती है।।
तन की शक्ति पा तप करके, मुक्ति में किया बसेरा है।
हे सिद्ध प्रभु प्रणमूं तुमको, जीवन में हुआ सबेरा है।।89।।

ॐ ह्रीं वज्रनाराचसंहननरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जोड़ों में कील लगी रहती, नाराच शक्ति को पाया है।
सामान्य शक्ति को पा करके, कुछ अशुभ और शुभ आया है॥
तन की शक्ति पा तप करके, मुक्ति में किया बसेरा है।
हे सिद्ध प्रभु प्रणमूं तुमको, जीवन में हुआ सबेरा है॥90॥

ॐ ह्रीं नाराचसंहननरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ति को पा जब तप करते, शक्ति से शक्ति मिलती हैं।
तिर्यंच मनुष्य इसको पाते, नरकों स्वर्गों में ना होती हैं॥
तन की शक्ति पा तप करके, मुक्ति में किया बसेरा है।
हे सिद्ध प्रभु प्रणमूं तुमको, जीवन में हुआ सबेरा है॥91॥

ॐ ह्रीं अर्द्धनाराचसंहननरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आपस में हड्डी मिल रहती, कीली न इसमें होती हैं।
शक्ति बिन कुछ ना होता है, शक्ति से मिलते मोती हैं॥
तन की शक्ति पा तप करके, मुक्ति में किया बसेरा है।
हे सिद्ध प्रभु प्रणमूं तुमको, जीवन में हुआ सबेरा है॥92॥

ॐ ह्रीं कीलकसंहननरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ति सबसे कम पाई है, कुछ छिद्र साथ में होते है।
कुछ त्याग तपस्या कर ना सके, जीवन बीता बस रोते हैं॥
तन की शक्ति पा तप करके, मुक्ति में किया बसेरा है।
हे सिद्ध प्रभु प्रणमूं तुमको, जीवन में हुआ सबेरा है॥93॥

ॐ ह्रीं असंप्राप्तासृपाटिकासंहननरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

श्वेत रंग के जंग में, नाम कर्म आधार।
तेज पुंज है रंग रहित, प्रणमूं बारंबार॥94॥

ॐ ह्रीं श्वेतनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीत रंग को धो दिया, नाम कर्म को टार।
तेज पुंज है रंग रहित, प्रणमूं बारंबार॥95॥

ॐ ह्रीं पीतनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाल लाल का ना रहा, नाम कर्म आधार।
तेज पुंज है रंग रहित, प्रणमूं बारंबार।।96।।

ॐ ह्रीं रक्तनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरे रंग को तज दिया, तजा नाम आधार।
तेज पुंज है रंग रहित, प्रणमूं बारंबार।।97।।

ॐ ह्रीं हरितनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्ण छोड़कर स्वच्छ हो, तजा नाम आधार।
तेज पुंज है रंग रहित, प्रणमूं बारंबार।।98।।

ॐ ह्रीं कृष्णनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध शुभम ना लेत हो, नहीं घ्राण का काम।
आतम निर्मल कर लिया, करते हो विश्राम।।99।।

ॐ ह्रीं सुगन्धनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ् गंध को तज दिया, तजा नाम आधार।
तेज पुंज है रंग रहित, प्रणमूं बारंबार।।100।।

ॐ ह्रीं दुर्गन्धनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिक्त रसों से दूर हो, दूर है रसना स्वाद।
तिक्त स्वाद से रहित हो, देते आशीर्वाद।।101।।

ॐ ह्रीं तिक्तरसरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिव्हा रसना चाखती, चखते आतम स्वाद।
कटुक स्वाद से रहित है, देते आशीर्वाद।।102।।

ॐ ह्रीं कटुकरसरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन मीठा कर लिया, छोड़ा खट्टा स्वाद।
आम्ल रसों से रहित हो, देते आशीर्वाद।।103।।

ॐ ह्रीं आम्लरसरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मधुर-मधुर मुस्कान है, मधुर हुआ शुभ ज्ञान।
मधुर रसों को छोड़कर, बने प्रभु भगवान।।104।।

ॐ ह्रीं मधुररसरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध कषायें त्याग दी, त्यागा स्वाद कषाय।
सर्वश्रेष्ठ त्यागी प्रभु, शत्-शत् शीश नवाय।।105।।

ॐ ह्रीं कषायरसरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृदु स्पर्श को छोड़ते, नाम कर्म आधार।
सिद्ध प्रसिद्धि पावते, करें सभी से प्यार।।106।।

ॐ ह्रीं मृदुत्वस्पर्शरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श कठिन को छोड़ते, नाम कर्म आधार।
सिद्ध प्रसिद्धि पावते, करें सभी से प्यार।।107।।

ॐ ह्रीं कठिनस्पर्शरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु स्पर्श को छोड़ते, नाम कर्म आधार।
सिद्ध प्रसिद्धि पावते, करें सभी से प्यार।।108।।

ॐ ह्रीं गुरुस्पर्शरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लघु स्पर्श को छोड़ते, नाम कर्म आधार।
सिद्ध प्रसिद्धि पावते, करें सभी से प्यार।।109।।

ॐ ह्रीं लघुस्पर्शरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीत स्पर्श को छोड़ते, नाम कर्म आधार।
सिद्ध प्रसिद्धि पावते, करें सभी से प्यार।।110।।

ॐ ह्रीं शीतस्पर्शरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उष्ण स्पर्श को छोड़ते, नाम कर्म आधार।
सिद्ध प्रसिद्धि पावते, करें सभी से प्यार।।111।।

ॐ ह्रीं उष्णस्पर्शरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिकण स्पर्श को छोड़ते, नाम कर्म आधार।
सिद्ध प्रसिद्धि पावते, करें सभी से प्यार।।112।।

ॐ ह्रीं स्निग्धस्पर्शरहितसाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूक्ष स्पर्श को छोड़ते, नाम कर्म आधार।
सिद्ध प्रसिद्धि पावते, करें सभी से प्यार।।113।।

ॐ ह्रीं रूक्षस्पर्शरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

मृत्यु के पश्चात जब, विग्रह गति में जावते।
तन पूर्व का आकार धर, कर दूसरा तन पावते।।

गणधर बताते हैं यही, यह आनुपूर्वी सार है।
वंदन करे सब सिद्ध को, वे ही करें भवपार है॥114॥

ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्वीछेदकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिर्यंच योनि पाने जब भी, जीव गति में जावते।
विग्रह गति की चाल चलकर, आनुपूर्वी पावते॥
गणधर बताते हैं....॥115॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचगत्यानुपूर्वीविमुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्त्व पा या बाल तप से देवगति में जावते।
तन पूर्व का आकार धर, विग्रह गति को पावते॥
गणधर बताते हैं....॥116॥

ॐ ह्रीं देवगत्यानुपूर्वीविमुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व कुछ शुभ भाव कुछ, धर मनुज गति को पावते।
तन पूर्व का आकार धर, विग्रह गति में आवते॥
गणधर बताते हैं....॥117॥

ॐ ह्रीं मनुष्यगत्यानुपूर्वीविमुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छंद

तन स्वयं चोट को खावे, अपघात कर्म कहलावे।
सिद्धों से सिद्धि पाये, सुख पाने शीश नवाये॥118॥

ॐ ह्रीं अपघातकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विष आदि जो देकर मारे, परघात कर्म से हारे।
सिद्धों से सिद्धि पाये, सुख पाने शीश नवाये॥119॥

ॐ ह्रीं परघातनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरज सम कांति पाई, आतप की हुई भलाई।
सिद्धों से सिद्धि पाये, सुख पाने शीश नवाये॥120॥

ॐ ह्रीं अतितेजमयी आतप-नामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदा सम शीतल होवे, उद्योत उदय में आवे।
सिद्धों से सिद्धि पाये, सुख पाने शीश नवाये॥121॥

ॐ ह्रीं उद्योतनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन श्वांसोच्छास को लेवे, यह नाम कर्म ही देवे।
सिद्धों से सिद्धि पाये, सुख पाने शीश नवाये॥122॥

ॐ ह्रीं श्वांसोच्छवासकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकाश में जिससे चाले, गति में विहाय के जाले।
सिद्धों से सिद्धि पाये, सुख पाने शीश नवाये॥123॥

ॐ ह्रीं विहायोगतिनाम-कर्मविमुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वी से पंचेन्द्रिय पाई, शक्ति विशेष बढ़ जाई।
सिद्धों से सिद्धि पाये, सुख पाने शीश नवाये॥124॥

ॐ ह्रीं त्रसनामकर्मविमुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकेन्द्रिय तन को पाया, स्थावर नाम उपाया।
सिद्धों से सिद्धि पाये, सुख पाने शीश नवाये॥125॥

ॐ ह्रीं स्थावरनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो रुकते और रुकाते, वे अणु बादर कहलाते।
सिद्धों से सिद्धि पाये, सुख पाने शीश नवाये॥126॥

ॐ ह्रीं बादरनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो वज्र को पार करे है, वे अणु सूक्ष्म होते हैं।
सिद्धों से सिद्धि पाये, सुख पाने शीश नवाये॥127॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिपूरण शक्ति पाई, पर्याप्त कर्म है भाई।
सिद्धों से सिद्धि पाये, सुख पाने शीश नवाये॥128॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरणता नाहीं होवे, साधारण जीव कहावे।
अपर्याप्त कर्म से छूटे, सिद्धों के दर्श को पावे॥129॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत से भारी होवे, रुई सा हल्का हो जावे।
अगुरु लघु है भाई, है सिद्ध प्रभु सुखदाई॥130॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघुनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक देह में इक रहते हैं, प्रत्येक इसे कहते हैं।
सिद्ध मंगल को ही ध्याऊँ, सुखकारी मुक्ति पाऊँ॥131॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक देह अनेक रहे हैं, संग मरते और जीते हैं।

सिद्ध मंगल को ही ध्याऊँ, सुखकारी मुक्ति पाऊँ।।132।।

ॐ ह्रीं साधारणनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

धातु में स्थिरता आई, स्थिर नाम कर्म है भाई।
समय शुद्ध सिद्धों ने कीना, हर क्षण आया भाव नवीना।।133।।

ॐ ह्रीं स्थिरनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गौण धातु अस्थिर होती, कर्म बीज को नित ही बोती।
समय शुद्ध सिद्धों ने कीना, हर क्षण आया भाव नवीना।।134।।

ॐ ह्रीं अस्थिरनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ सुंदर तन को है पाया, मुख आदि सभी को है भाया।
समय शुद्ध सिद्धों ने कीना, हर क्षण आया भाव नवीना।।135।।

ॐ ह्रीं शुभनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन जिसने सुन्दर ना पाया, नाम अशुभ उसी का आया।
समय शुद्ध सिद्धों ने कीना, हर क्षण आया भाव नवीना।।136।।

ॐ ह्रीं अशुभनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबका प्रेम मिलेगा भारी, सुभग कर्म की है बलिहारी।
समय शुद्ध सिद्धों ने कीना, हर क्षण आया भाव नवीना।।137।।

ॐ ह्रीं सुभगनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनेक भंडार भरे हैं, फिर भी सब जन द्वेष करे हैं।
दुर्भग कर्म देय दुःख भारी, सिद्ध प्रभु जी है सुखकारी।।138।।

ॐ ह्रीं दुर्भगनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोयल सी बोली को बोले, सुनकर सब ही आकर डोले।
सुस्वर कर्म प्रसिद्धि भारी, सिद्ध प्रभु जी है सुखकारी।।139।।

ॐ ह्रीं सुस्वरनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्दभ जैसे स्वर को पाया, कोई ना सुनने को आया।
दुस्वर कर्म देय दुखकारी, रहित सिद्ध जी हैं सुखकारी।।140।।

ॐ ह्रीं दुस्वरनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदर कांति सब मन मोहे, जहाँ जाये सुंदरता सोहे।
नाम कर्म आदेय बताया, सिद्ध प्रभु शरणा में आया।।141।।

ॐ ह्रीं आदेयनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूखा-सूखा मुख दिखता है, कोई ना उसको लखता है।
अनादेय यह कर्म बताया, सिद्ध प्रभु शरणा में आया।।142।।

ॐ ह्रीं अनादेयनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण कम है पर यश पाया है, यश प्रकृति की ही छाया है।
जगन्नाथ तुमको हम ध्यावें, सुखकारी सिद्धों को पावें।।143।।

ॐ ह्रीं यशःकीर्ति नामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो गुण वान ना कोई माने, कोई भी सम्मान न देवे।
अयश कर्म की है बलिहारी, सिद्ध प्रभु जी है सुखकारी।।144।।

ॐ ह्रीं अपयशः नामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथा जगह इंद्रिय हैं पाईं, ज्यों कारीगर से बनवाई।
है निर्माण नाम बलिहारी, सिद्ध प्रभु जी है सुखकारी।।145।।

ॐ ह्रीं निर्माणनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्याणक सुर पंच मनाये, सबका ही सौभाग्य जगाये।
तीर्थंकर प्रकृति के धारी, आत्मध्यान वैभव है भारी।।146।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरत्वनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंभकार ज्यों चित्र बनाता, नाम कर्म यह कार्य कराता।
गोत्र कर्म की है बलिहारी, सिद्ध प्रभु जी है सुखकारी।।147।।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में वह प्रधान कहाये, औ सबसे सम्मान भी पाये।
उच्च गोत्र की है बलिहारी, सिद्ध प्रभु जी है सुखकारी।।148।।

ॐ ह्रीं उच्चगोत्रकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म नीच वह नित ही करते, जग वाले अपमान भी करते।
नीच गोत्र यह कष्ट दिलाये, सिद्ध प्रभु को शीश झुकायें।।149।।

ॐ ह्रीं नीचगोत्रकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्यों भंडारी देन ना देवे, बीच में ही रोड़ा अटकावे।
अंतराय त्यों बाधा डाले, सिद्ध प्रभु सबको ही टाले।।150।।

ॐ ह्रीं अन्तरायकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देने के वह भाव बनावे, अंतराय संग में आ जावे।
दान बीच में ही रुक जावे, सिद्ध प्रभु सम मोक्ष को जावें।।151।।

ॐ ह्रीं दानांतरायकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लेने का वह भाव बनावे, लाभ बीच में है रह जावे।
सिद्धों ने इसको है नाशा, कर्म नाश कर दो है आशा।।152।।

ॐ ह्रीं लाभांतरायकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिय आदिक की करते आशा, किन्तु वही रह जाये प्यासा।
अंतराय सिद्धों ने नाशा, कर्म नाश कर दो है आशा।।153।।

ॐ ह्रीं भोगांतरायकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपत्ति वैभव है सारा, पर न भोग करे वह प्यारा।
अंतराय सिद्धों ने नाशा, कर्म नाश कर दो है आशा।।154।।

ॐ ह्रीं उपभोगांतरायकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम बल नाही प्रगटावे, नाहीं अपनी शक्ति बढ़ावे।
वीर्यान्तराय सिद्ध ने नाशा, कर्म नाश कर दो हैं आशा।।155।।

ॐ ह्रीं वीर्यान्तरायकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व कर्म से मुक्त हुए हो, सर्व गुणों से युक्त हुये हो।
पाया पद प्रभु ने अविनाशी, हमें करो सिद्धालय वासी।।156।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूलोत्तर दोनों को नाशा, पाया सिद्धों के संग वासा।
सिद्ध प्रभु जी सिद्धि देना, अपने जैसा ही कर लेना।।157।।

ॐ ह्रीं शताष्टचत्वारिशंत् कर्मप्रकृतिरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिणामों की संख्या करते, केवल ज्ञानी इसको कहते।
सिद्ध प्रभु जी सिद्धि देना, अपने जैसा ही कर लेना।।158।।

ॐ ह्रीं संख्यातकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के हैं भेद अपारा, असंख्यात जग में है सारा।
सिद्ध प्रभु जी सिद्धि देना, अपने जैसा ही कर देना।।159।।

ॐ ह्रीं असंख्यातकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविभाग प्रतिछेद बखाना, इन सबका भी नाश कराना।
कर्म रूप पर्याय अनंता, इसको जाने श्री भगवन्ता।।160।।

ॐ ह्रीं अनन्तकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म कर्म है भाग अनंता, भाव सूक्ष्म कहते भगवंता।

सब कर्मों को है विनशाया, अर्घ्य चढ़ाने मैं हूँ आया॥161॥

ॐ ह्रीं अनन्तानन्तकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुजंग प्रयात

तुम्हें सौख्य देने नहीं कोई आया,
निजानंद रस में सदा लीन पाया।
तुम्हारे चरण की मैं सेवा को पाऊँ,
बने भाग्य मेरा मैं मस्तक झुकाऊँ॥162॥

ॐ ह्रीं आनन्दस्वभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पराश्रित नहीं सौख्य स्वयमेव पाते,
निजानंद धर्मी तुम्ही को बताते।
तुम्हारे चरण की....॥163॥

ॐ ह्रीं आनन्दधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा भोग तजकर परम योग पाया,
परम धाम आनंद तुमको बताया।
तुम्हारे चरण की....॥164॥

ॐ ह्रीं परमानन्दधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं द्वेष करते ना हर्षित भी होते,
धरे साम्य भाव वे समता में रहते।
तुम्हारे चरण की....॥165॥

ॐ ह्रीं साम्यस्वभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना आकुल ही होते ना व्याकुल ही होते,
धरे साम्य रूपम् सदा सौख्य लेते॥
तुम्हारे चरण की....॥166॥

ॐ ह्रीं साम्यस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंता गुणों से है श्रृंगार कीना,
अनंता गुणों से है आतम नवीना।
तुम्हारे चरण की....॥167॥

ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाहर से कोई भी गुण नाहीं आये,
गुण मय स्वरूपी स्वयं में उपाये।
तुम्हारे चरण की मैं सेवा को पाऊँ,
बने भाग्य मेरा मैं मस्तक झुकाऊँ॥168॥

ॐ ह्रीं अनन्तगुणस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरम एक होता अनेका भी होता,
विरोधी मलों को सदा धो के देता।
तुम्हारे चरण की....॥169॥

ॐ ह्रीं अनन्तधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम के अंदर में, गुण का सरोवर,
जो अंदर में झांके तो, आतम गुणाकर॥
तुम्हारे चरण की....॥170॥

ॐ ह्रीं अनन्तधर्मस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

सदा एक सा सुख रहे, बढ़े-घटे कभी नाहिं।
समस्वभाव मय देव है, बसे हृदय के माहि॥171॥

ॐ ह्रीं समस्वभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संतुष्टि निज ध्यान से, घनानंद बरसाय।
सुखकारी सुख धाम है, शत-शत शीश नवाय॥172॥

ॐ ह्रीं संतुष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृत मय निज पान से, किया आत्म संतोष।
इच्छा है ना चाह अब, ना है कहीं अवशेष॥173॥

ॐ ह्रीं समसंतोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म उदय में जीव के, व्याकुल हो परिणाम।
समता रसके तुम धनी, बारंबार प्रणाम॥174॥

ॐ ह्रीं साम्यगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान से ना हटते कभी, हटे न निजपद रूप।
चिदानंद चिद्रूप तुम, दिव्य ज्ञान के भूप॥175॥

ॐ ह्रीं साम्यस्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वश्रेष्ठ निज कार्य से, कृत्याकृत्य बनाय।

कार्य हमारे पूर्ण हों, शत-शत शीश नवाय॥176॥

ॐ ह्रीं साम्यकृत्याकृत्यगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरणागत को शरण में, लेते हैं भगवान।
स्वयं शरण चाहे नहीं, बारंबार प्रणाम॥177॥

ॐ ह्रीं अनन्यशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् द्रव्यों के बीच में, आप रहे निज लीन।
स्वगुण सहज को पावते, स्वयं सिद्ध स्वाधीन॥178॥

ॐ ह्रीं अनन्यगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर पदार्थ पर मानकर, तज देते हैं आप।
अनन्य धर्म को धारकर, करें तुम्हारी जाप॥179॥

ॐ ह्रीं अनन्यधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य रूप परिणाम को, तज दीना है आप।
शुद्ध द्रव्य अपनाय के, मेटा है संताप॥180॥

ॐ ह्रीं परिमाणविमुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्म ज्ञान को धारकर, ब्रह्म स्वरूपी काय।
आलोकित आतम किया, शत-शत शीश झुकाय॥181॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्दों से नहिं ध्यावते, आतम ब्रह्म स्वरूप।
ब्रह्म गुणों को आपने, ध्याया है चिद्रूप॥182॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन तज चेतन ब्रह्म को, प्रगटाया जिनदेव।
ब्रह्म रूप पाने प्रभु, करूँ तुम्हारी सेव॥183॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचेतनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध स्वभावी आत्मा, तजा विभाव का भाव।
भाव रूप परिणति नहीं, पार लगाओ नाव॥184॥

ॐ ह्रीं शुद्धस्वभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

सत्य असत्य को जान लिया था, शुद्धाशुद्ध पहचान लिया था।
निश्चय से फिर शुद्धि पाई, मुक्ति तुमको लेने आई॥185॥

ॐ ह्रीं शुद्धपरिणामिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज का रूप सदा पहिचानों, तत्व द्रव्य नय ज्ञान प्रमानो।
शुद्ध लखा शुद्धी को पाया, सुख पाने को शीश झुकाया।।186।।

ॐ ह्रीं अशुद्धरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पाप दोनों को छोड़ा, निज आतम से नाता जोड़ा।
शुद्धाशुद्ध को दूर किया है, सुख पाने को नमन किया है।।187।।

ॐ ह्रीं शुद्धाशुद्धरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु का अवलोकन त्यागा, क्षायिक से था नाता लागा।
एक साथ त्रिलोक को देखा, क्षायिक सम्यक् दर्शन पेखा।।188।।

ॐ ह्रीं अनन्तदृगस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लखकर के आनंद बढ़ाते, बिना चक्षु लख आनंद पाते।
अतिशय अनुभूति को पाया, सुख पाने को शीश झुकाया।।189।।

ॐ ह्रीं अनन्तदृगानन्दस्वभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाश सु पूर्वक हो उतपादा, सत लक्षण परिणति मरजादा।
क्षय उपशम तन क्षायक पेखा, ध्यावत हूँ मन हर्ष विशेषा।।190।।

ॐ ह्रीं अनन्तदृगुत्पादकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म नाश आनंद बढ़ाया, कर्मों का था किया सफाया।
आप अनंत चक्षु से देखे, और नहीं कुछ कारण लेखे।।191।।

ॐ ह्रीं अनन्तध्रुवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अव्यय हो व्यय भी ना होता, कर्म बीज को अब ना बोता।
द्रव्य भाव गुण को अपनाया, सुख पाने को शीश झुकाया।।192।।

ॐ ह्रीं अव्ययभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध ज्ञान का बना निलय है, कर्म रूप का हुआ विलय है।
काल अनंता निलय में रहना, धर्म रूप सरिता में बहना।।193।।

ॐ ह्रीं अनन्तनिलयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्धरि

पुद्गल का तन ना होता है, आकार आत्मा पाता है।
अनंताकार विज्ञानी है, ये लोका लोक के ज्ञानी हैं।।194।।

ॐ ह्रीं अनन्ताकाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्कश कठोर मृदु होवे है, सब ही स्वभाव तज देवे है।
प्रभु आप अनंत स्वभावी हैं, परमाणु तजे विभावी है।।195।।

ॐ ह्रीं अनन्तस्वभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अद्‌भुत आतम ये न्यारा है, चिन्मय स्वरूप से प्यारा है।
मैं नमूं सिद्ध को भक्ति से, हो कर्म नाश अभिव्यक्ति से।।196।।

ॐ ह्रीं चिन्मयस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन में लीन ही रहते हैं, पर में नाही वे बहते हैं।
चिद्रूप सिद्ध अविनाशी हैं, अरू आत्म धर्म विश्वासी हैं।।197।।

ॐ ह्रीं चिद्रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिद्रूपी धर्म को पाया है, जग में नाहीं कुछ भाया है।
मन्तव्य तुम्हारा पाये हम, सुख पाने शरण में आये हम।।198।।

ॐ ह्रीं चिद्रूपधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर में ना अब प्रभु रमते हैं, निज सहजरूप में जमते हैं।
स्व अनुभव से उपजाया है, सुख पाने शीश झुकाया है।।199।।

ॐ ह्रीं स्वानुभवोपलब्धिरमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपने आनंद की बंधी डोर, पर को न दिया है कभी छोर।
स्व अनुभूति रस पाया है, सुख पाने शीश झुकाया है।।200।।

ॐ ह्रीं स्वानुभूतिरताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

कारीगर सम तन रचे, नाम कर्म संसार।
सिद्ध नाम से रहित है, मिले चरण में प्यार।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः द्वि सहस नामावलिभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छंद

(तर्ज-सम्मेदशिखर को जइयो........)

अध्यात्मिक रस को पीते, इंद्रिय सुख से हैं रीते।
विषयों का सुख भी छोड़ा, परमामृत पा मुख छोड़ा।।201।।

ॐ ह्रीं परमामृतरताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय रस प्रभु ना भाये, अमृत से तुष्टि पायें।
प्रभु निजानंद रस चाखा, चरणों में आया दासा।।202।।

ॐ ह्रीं परमामृततुष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना द्वेष किसी से करते, भारी प्रीति को धरते।
निर्मल जल धार बहाये, भक्ति से भक्त नहाये।।203।।

ॐ ह्रीं परमप्रीतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्तों के वल्लभ बनते, उनके कर्मों को हनते।
दुर्लभ को सज्जन करते, सिद्धालय सिद्धि वरते।।204।।
ॐ ह्रीं परमवल्लभयोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श गंध न लेते, वे कर्म सभी के हरते।
अव्यक्त रहो तुम ध्यानी, चिद्रूप ध्यान निज ज्ञानी।।205।।
ॐ ह्रीं अव्यक्तभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर द्रव्य से भिन्न ही रहते, एकत्व भाव को रखते।
अंदर बाहर परकाशी, पाया है पद अविनाशी।।206।।
ॐ ह्रीं एकत्वस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम आधार बनाकर, आतम को किया गुणाकर।
एकत्व भावना भाई, सुख पाने ज्योति जगाई।।207।।
ॐ ह्रीं एकत्वगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर सब विभाग छुटकारा, निज का ही रूप सारा।
एकत्व भाव अपनाया, सुख पाने शीश झुकाया।।208।।
ॐ ह्रीं एकत्वभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयोग भाव को त्यागा, सब संवादों को त्यागा।
सब द्वैत भाव तज दीना, पाया है ध्यान नवीना।।209।।
ॐ ह्रीं द्वैतभावविनाशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्पाद औ व्यय नहीं होता, शाश्वत सत्ता को पाता।
अक्षय अविनाशी आतम, भक्तों का दूर करो गम।।210।।
ॐ ह्रीं शाश्वताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिद्रूप अचल पद पाया, शाश्वत प्रकाश में आया।
अक्षय अविनाशी आतम, भक्तों का दूर करो गम।।211।।
ॐ ह्रीं शाश्वतप्रकाशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटि हो दिव्य दिवाकर, फैला है ज्ञान प्रभाकर।
'शाश्वत' उद्योत कराया, शाश्वत पद पाने आया।।212।।
ॐ ह्रीं शाश्वतोद्योताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत चंद्र से शीतल ज्यादा, शीतल आतम का वादा।
शाश्वत अमृत चंद्राय, सुख पाने शीश नवाय।।213।।
ॐ ह्रीं शाश्वतमृतचन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुद्‌गल परमाणु मूरत, तज उसको पाई सूरत।

शाश्वत मूरत के धारी, सारी दुनिया से न्यारी॥214॥

ॐ ह्रीं शाश्वतामूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्धरि

इंद्रिय से भी ना है दिख पाये, मन पूरा सोच नहीं पाये।
मन पर्यय के गम्य नहीं होता, है परम सूक्ष्म दर्शन पाता॥215॥

ॐ ह्रीं परमसूक्ष्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है जीव अनंता साथ रहे, पर कष्ट न कोई पास रहे।
सूक्ष्म अवकाशी हो जिनवर, हो ज्ञान पुंज के ही सरवर॥216॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मावकाशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अध्यात्मिक गुण अति सूक्ष्म है, शुभ केवल ज्ञान ही सक्षम है।
तप कर सोना से खरे बने, भक्ति में भक्त भी आये सने॥217॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम में कहीं भेद न दिखता है, हो परम रूप ही गुप्ता है।
तपकर सोना से खरे बने, भक्ति में भक्त भी आये सने॥218॥

ॐ ह्रीं परमरूपगुप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जितना भी सुख संसारी है, सिद्धों के सम न भारी है।
दोनों को तौल नहीं सकते, महसूस कर्म न कर सकते॥219॥

ॐ ह्रीं निरवधिसुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन बल ऊँचा तन बल ऊँचा, आतम बल सबसे है ऊँचा।
तन बल से ही बढ़ जाते हैं, जग को तज मुक्ति पाते हैं॥220॥

ॐ ह्रीं निरवधिगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिपल पर्याय बदलती है, कर्मों से आतम चलती है।
है सिद्ध स्वरूपी परमात्मा, स्थिर हो बनते शुद्धातमा॥221॥

ॐ ह्रीं निरवधिस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधि मन पर्यय छूट गया, जब ज्ञान का झरना फूट गया।
सीमा से ज्यादा ज्ञान वान, निज ज्ञान से जाना है जहान॥222॥

ॐ ह्रीं अतुलज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धों का सुख न कह पाये, सुख के बिन हम ना रह पाये।
सिद्धों सम सुख को पाना है, उनके सम ही बन जाना है॥223॥

ॐ ह्रीं अतुलसुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भावों की शुद्धि सिद्धि है, भावों में होती वृद्धि है।

संत्संग मिलेगा सिद्धों का, शुभ ज्ञान बढ़ेगा वृद्धों का॥224॥

ॐ ह्रीं अतुलभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान तुम्हीं गुणवान तुम्हीं, गुणकार तुम्हीं गुणधार तुम्हीं।
सामीप्य गुणों का पाऊँगा, गुणधर मैं भी बन जाऊँगा॥225॥

ॐ ह्रीं अतुलगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिंभगी छंद

यह दिव्य दिवाकर, सूर्य प्रभाकर, जग आलोकित करता है।
है अतुल प्रकाशी, मुक्ति वासी, मन आलोकित करता है॥226॥

ॐ ह्रीं अतुलप्रकाशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन वचन तुम्हारे, काज संवारे, स्थिरता को देते हैं।
गंभीर है वाणी, मां जिनवाणी, कर्मो को हर लेते हैं॥227॥

ॐ ह्रीं अचलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन वाणी द्वारा, जीवन सारा, हमने प्रभु को जान लिया।
हो अचल गुणाकर, आप उजागर, हमने प्रभु को नमन किया॥228॥

ॐ ह्रीं अचलगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन मैल को धोया, धर्म संजोया, आत्म शुद्धि धन पाय लिया।
हो अचल स्वभावी, आप प्रभावी, पूजा का सुख पाय लिया॥229॥

ॐ ह्रीं अचलस्वभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन सहज बनाया, सरल कराया, स्थिर मन में ध्यान किया।
हो अचल स्वरूपी, आप अरूपी, पूजा का सुख पाय लिया॥230॥

ॐ ह्रीं अचलस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो आप निराश्रित, नहीं हो आश्रित, रिश्तों का नहि काम लिया।
ना है अवलंबन, मन है चंदन, आत्म शुद्धि मन थाम लिया॥231॥

ॐ ह्रीं निरालम्बाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सान्निध्य तुम्हारा, करे बिहारा, सत्पथ मारग ले जाते।
प्रभु बंधु रहित है, ज्ञान सहित है, मुक्ति मंजिल को पाते॥232॥

ॐ ह्रीं आलम्बरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो आप निराकुल, ना हैं व्याकुल, सहयोगी भव्यों के हैं।
हूँ मैं आभारी, धर्म प्रभारी, सहधर्मी भव्यों के हैं॥233॥

ॐ ह्रीं निर्लेपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु क्रोध रहित हैं, धर्म सहित, अरु कर्म कषायों को छोड़ा।
सौभाग्य बढ़ाया, ज्ञान को पाया, सारे बंधन को तोड़ा।।234।।

ॐ ह्रीं निष्कषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु है वैरागी, राग के त्यागी, आत्मिक शांति पायी है।
वात्सल्य बढ़ाया, धर्म सिखाया, ज्ञान ज्योति प्रजलायी है।।235।।

ॐ ह्रीं आत्मरतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रढ़ त्याग प्रतिज्ञा, ज्ञान की विज्ञा, तन मन को आकृष्ट करे।
हो गुप्त स्वरूपा, रूप अरूपा, आतम को उत्कृष्ट करे।।236।।

ॐ ह्रीं स्वरूपगुप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अशुभ को त्यागा, कर्म है भागा, शुद्ध द्रव्य अपनाय लिया।
मम हृदय संभारो, दीप प्रजारो, चरण शरण को पाय लिया।।237।।

ॐ ह्रीं शुद्धद्रव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव की बाधा, कर्म को साधा, जग संसार नशाय दिया।
चरणों को बंदूं, नित अभिनंदूं, बार-बार हर्षाय जिया।।238।।

ॐ ह्रीं असंसाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनंद प्रदाता, मुक्ति दाता, आनंद को बरसाते हैं।
हम जग दुखियारे, तुम्हीं सहारे, सुख पाने को आते हैं।।239।।

ॐ ह्रीं स्वानन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो विभाव अभावा, तजा विभावा, अंदर में आतम का सुख।
मन पुलकित होवे, खिल-खिल जावे, आतम में है तम का दुख।।240।।

ॐ ह्रीं स्वानन्दभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिणाम सुधारा, भाव है न्यारा, भावों में आनंद आया।
स्वानन्द स्वरूपी, निज गुण रूपी, तुमको तो जग था भाया।।241।।

ॐ ह्रीं स्वानन्दस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सौम्य सु सुंदर, रूप समुंदर, अनुगामी हम बन जायें।
स्वानंद गुणाया, धर्म बढ़ाया, सिद्ध शिला में बस जायें।।242।।

ॐ ह्रीं स्वानन्दगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चाह न रखते, राह ना थकते, आत्म तोष सुख पाया है।
परवाह न करते, धर्म ही धरते, सुख पाने को आया है।।243।।

ॐ ह्रीं स्वानन्दसंतोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोही ये जग में, मुक्ति पथ में, बाधायें निश दिन डाले।
आतम पर्याय, मिटी कषाये, कर्मों के टूटे जाले।।244।।
ॐ ह्रीं शुद्धभावपर्यायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
है धर्म निरास्त्रव, राग है आस्त्रव, बंधन में जग को बांधे।
जिनवर भगवत्ता, धर्म की सत्ता, आतम को सुख में साधे।।245।।
ॐ ह्रीं स्वतंत्रधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ज्ञानी का आतम, है परमातम, आत्म स्वभावी शुद्ध कहा।
सिद्धि का जीवन, तन मन पावन, आत्म भाव ही बुद्ध कहा।।246।।
ॐ ह्रीं आत्मस्वभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
निर्मल परिणामी, शिवपथ गामी, सम्यक् दर्शन धारी है।
चिद्रूप अनूपा, ज्ञान स्वरूपा, पार करो अवतारी है।।247।।
ॐ ह्रीं परमचितपरिणामाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शास्त्रों का चिंतन, ग्रंथ का मंथन, अध्यातम ज्योति जागे।
चिद्रूप स्वरूपी, कर्म विरूपी, दुष्ट कर्म सारे भागे।248।।
ॐ ह्रीं चिद्रूपधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जब तन तप जाये, कर्म भगाये, तभी आत्म दर्शन होगा।
सब ग्रहण हटाये, धर्म को पाये, जब श्रद्धान अटल होगा।।249।।
ॐ ह्रीं चिद्रूपगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बन लौकिक ज्ञानी, है अज्ञानी, भेद ज्ञान न जाना है।
प्रभु है स्नातक, धर्म के जातक, तब मुक्ति को पाना है।।250।।
ॐ ह्रीं परमस्नातकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छंद

रागादिक दूर भगाऊँ, अपना वैराग्य बढ़ाऊँ।
शिव सुन्दर सुख को पाऊँ, सिद्धों को शीश झुकाऊँ।।251।
ॐ ह्रीं स्नातकधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हो लोकालोक प्रकाशी, शिवपुर पहुँचे सन्यासी।
हम अल्पज्ञानी जिन देवा, मैं करूँ आपकी सेवा।।252।।
ॐ ह्रीं सर्वावलोकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हो लोक में सबसे आगे, हम करने दर्शन भागे।

पर पार न तेरा पाऊँ, सुख पाने शीश झुकाऊँ।।253।।

ॐ ह्रीं लोकाग्रस्थिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब ज्ञान ज्योति जलती है, त्रिलोक में आ पलती है।
व्यापक हो सारे जग में, बाधा ना आये मग में।।254।।

ॐ ह्रीं लोकालोकव्यापकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब आपका दर्शन होता, आनंद का झरना बहता।
सब हृदय कमल खिल जावे, सौभाग्य मुझे मिल जावे।।255।।

ॐ ह्रीं आनन्दविधानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर पल ही सुख मय होता, ना लेशमात्र दुख बोता।
यह सत्य धर्म बलिहारी, भव्यों के प्रभु अवतारी।।256।।

ॐ ह्रीं आनन्दपूर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

हिम्मत को आगे बढ़ा, किया, प्रभु गुणगान।
भक्ति है शक्ति नहीं, बारंबार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं अर्हं षट्पंचाशदधिकद्विशतदलोपरिस्थितसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म ज्ञान शिक्षा मिले, तब हो सफल समाज।
'स्वस्ति' को शक्ति मिले, पूर्ण करूं सब काज।।

परिपुष्पांजलिं

जयमाला

पद्धरि छंद

सिद्धों की महिमा न्यारी है, कर्मों की नाही क्यारी है।
सिद्धालय में जा राज रहे, आनंद ज्ञान में साज रहे।।
इच्छा चिन्ता से दूर हुये, संतोष सुखी भरपूर हुये।
उन्हें भूख कभी ना लगती है, उन्हें नींद कभी ना आती है।।
वे क्रोध कभी न करते हैं, वे मान भाव ना रखते हैं।
बीमारी भी ना होती है, औषध के नाही मोती है।।

आने जाने का काम नहीं, कर्मों को है विश्राम नहीं।
श्रृंगार नहीं वे करते हैं, वे ना ही कभी संवरते हैं॥
क्रांति-भ्रांति सब टूटी है, तृष्णा भी सारी छूटी है।
है राग नहीं मद मोह नहीं, सोने का भी व्यामोह नहीं॥
चिंता फिकरों का फांका है, दुख ने ना आकर झांका है।
रिश्तों का बंधन कोई नहीं, झगड़े का क्रंदन कोई नहीं॥
फूलों की खुशबू ना लेते, आतम खुशबू को पा लेते।
सिद्धों सम सुख जग ना पाये, सिद्धि पाने पर मिल जाये॥
निज आत्म ध्यान में लीन रहे, आनंद के झरने आप बहे।
सिद्धों के अन्दर सिद्ध बसे, पर कोई दुख ना उन्हें कसे॥
अपना-अपना ही सुख पाये, बाधा ना कोई ला पाये।
शुद्धातम को प्रगटाय लिया, निज आतम सुख ही पाय जिया॥
आतम पर शासन करते हैं, निरद्वंद राज्य में रहते हैं।
पाया अखंड पद अविनाशी, सिद्धालय के वे हैं वासी॥
मिट्टी का खिलौना तोड़ा है, आतम से नाता जोड़ा है।
पत्थर में सोना ज्यों पाये, ज्यों दूध में मक्खन है आये॥
ऐसे ही तन में चेतन है, कर्मों का पाया वेतन है।
तप करके सोना खरा बने, मथ करके दूर में सार सने॥
ऐसे ही तन तप जायेगा, यह आत्म शुद्ध हो जायेगा।
उपवास ध्यान तप त्याग करो, आत्मा से आतम राम भजो॥
संयम धर्मों का पालन कर, बारह भावन का लालन कर।
तत्वों का नित श्रद्धान करो, द्रव्यों का भी नित ज्ञान करो॥
भावों से इतने कार्य करो, आत्मा से आतम ध्यान करो।
धीरे-धीरे यह कर्म भगे, धीरे-धीरे यह आत्म जगे॥
जब कर्म घातिया नाशोगे, केवल की ज्योति पा लोगे।
आठों कर्मों को नष्ट करो, सिद्धों की पदवी शीघ्र वरो॥
सच्चा आनंद तब आयेगा, जो मुक्ति पुरी को जायेगा।
'स्वस्ति' ने कुछ पुरूषार्थ किया, भक्ति में आ प्रभु नाम लिया॥

दोहा

सच्चे मन से ध्यान कर, सिद्ध प्रभु का रोज।
आत्म दर्श का मार्ग यह, पाओ आतम ओज॥

ॐ ह्रीं अर्हं षट्पंचाशदधिकद्विशतदलोपरिस्थितसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम हित पूजा करी, किया प्रभु का ध्यान।
'स्वस्ति' भक्ति नित्त करे, बारंबार प्रणाम॥

परिपुष्पांजलि

जाप्य मंत्र

(यहाँ 108 बार 'ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा नमः' मंत्र का जाप करें)

सप्तम् पूजा

गीता छंद

स्थापना

सीधा सरल है मुक्ति जाना, कठिन यह संसार है।
निज धर्म तो है सरल, किन्तु कठिन मायाचार है॥
कमजोरी त्रुटियां दोष तजकर, आप सिद्धालय बसे।
हम भक्ति अर्पित हैं करें, आओ प्रभो मन आ बसे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणंद्वादशाधिकपंचशतगुणसंयुक्तविराजमान श्रीसिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतरसंवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। पुष्पांजलि क्षिपेत्।

इति यंत्रस्थापनार्थं पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

दोहा

उर्ध्व दिशा में जायकर, उर्ध्व लोक में वास।
मध्य लोक में पूजते, उर्ध्व बने आवास॥

गीता छंद

जल

प्रभु हम बदलते दूसरे को, पर स्वयं बदले नहीं।
समझाते हैं सारे जगत को, पर स्वयं समझे नहीं।।
इससे ही अंतर है ये मैला, जल चढ़ा पावन करो।
हे सिद्ध भगवन दोष हर, इस जन्म को सार्थक करो।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकपंचशत गुणसहिताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरारमृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन

आलोचना निंदा करे, ईर्ष्या करे विद्वेष भी।
मंजिल मिले या चित्त चिंता, औ बढ़ेगा द्वेष भी।।
आलोचना अपनी करे, और चंदनादि लाये हैं।
हे सिद्ध भगवन शुद्ध कर दो तव चरण में आये हैं।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकपंचशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

आदर्श मर्यादा तजी, पद पाने का इच्छुक रहा।
आपत्तियाँ आयें घनी, पर मान रख भिक्षुक रहा।।
उज्जवल अखंडित आत्म पाने, हम शरण में आये हैं।
प्रभु रूप मम मुझको दिखा दो, अक्षतों को लाये हैं।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकपंचशत गुण सहिताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अक्षय-पदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

मन अशुद्धि से भरा है, भावना कलुषित हुई।
दिन रात भोगी बन रहा, ना आत्मा हर्षित हुई।।
यह पुष्प गुण सम खुशबू मन में, फैल कर पावन करें।
मन शांत कर दो सिद्ध भगवन, कर्म सारे परिहरें।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकपंचशतगुणसहिताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने कामवाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

भोजन भरे यह पेट को, इच्छायें पूरी ना हुईं।

चारों गति में भूख लगती, शांत नाहिं ये हुईं।।
यह तन मिला है तप करन को, इंद्रियाँ बेकार हैं।
हे सिद्ध जी आशीष दो, मेरी हुई अब हार है।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकपंचशतगुणसहिताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

संसार ये कैसे चले, इस कार्य में होशियार हैं।
पर धर्म करने हे प्रभु, हम ना हुये तैयार हैं।।
मन का अंधेरा दूर हो, ये दीप चरणों लाये हैं।
हे सिद्ध प्रभु शुचि आत्म धन, अविचल अटल बन आये हैं।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकपंचशतगुणसहिताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

संवेदना सहयोग भौतिक, ज्ञान से ही दूर है।
चिंतन तजा चिंता करें, हम दुःख से भरपूर है।।
यह राज्य मुक्ति का मिले, हम धूप लेकर आये हैं।
हे सिद्ध भगवन शुद्ध कर दो, भक्त भक्ति लाये हैं।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकपंचशतगुणसहिताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

आलस्य जीवन में भरा है, कार्य सद् होते नहीं।
ना आत्म चिंतन है मनन, बस पाप में आगे सही।।
उपलब्ध अवसर पाय कर, हम व्यर्थ कार्य को ना करें।
हमें मुक्ति फल की आश है, हम शीश चरणन में धरें।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकपंचशतगुणसहिताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

साधन बनाया शक्ति को है, साध्य आतम का भला।
यह द्रव्य तो है मन की वस्तु, भाव शुद्ध आतम कला।।
संसार सागर पारकर धन, मुक्तिपुर को जायेंगे।
फिर सिद्धों के संग बैठकर के, आत्म सुख को पायेंगे।।

हम अष्ट द्रव्यों को मिला, यह अर्घ्य लेकर आये हैं।
सिद्धों की भक्ति मैं करूं, पूजा रचाने आये हैं।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकपंचशतगुणसहिताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

भूल बैठे है हम प्रभु, आतम शुद्ध प्रकाश।
दिव्य ज्ञान सिंचित करो, यही हमारी आश।।
इति मंडलोस्परि पुष्पांजलि

।। पांच सौ बारह गुण अर्घ्य ।।

चाल छंद

केवल प्रकाश फैलाया, भव्यों को पंथ दिखाया।
शिक्षा से ज्ञान सिखाये, मुक्ति में संग लें जाये।।1।।

ॐ ह्रीं अरहंताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कालानुसार ना बदले, अरिहंत देव को पा लें।
कल्याणक पंच मनाये, सुख पाने शीश झुकायें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हज्जाताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या तम आप हटाया, उजियाला जग फैलाया।
केवल किरणों का अतिशय, निष्काम लोक मंगलमय।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हच्चिद्रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर मुनि जन शीश झुकाये, शिष्यत्व हेतु हम आये।
ज्यों गगन बीच है चंदा, नित शीश झुकावे बंदा।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हच्चिद्रूपगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के बादल हटते, रवि सम ही आकर प्रगटे।
केवलज्ञानी चिद्रूपा, जग में हो आप अनूपा।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हज्ज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूल्यांकन आत्मा का करते, संतोष दर्श से वरते।
दर्पण सम जग यह झलके, झपके नाहिं है पलकें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हद्दर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल आतम सा ना कोई, बलवान आत्मा होई।

अर्हंत बली कहलाये, दर्शन से सौख्य को पाये॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु अनेक ना होवे, पर एक साथ जग देखे।
गुण वादी आत्मा लाये, दर्शन से सौख्य को पाये॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हद्दर्शनगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम प्रतिभाषित होता, आतम प्रकाश तम खोता।
अरिहंत देव जिन ज्ञानी, हम पढ़ते हैं जिनवाणी॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हज्ज्ञानगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आलस तज ध्यान लिया है, अनशन उपवास किया है।
फिर भी शक्ति बढ़ जाये, शक्ति पाने को आये॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्यगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सप्त तत्व को जानों, षट् द्रव्य को भी प्रमानो।
सम्यक्त्व प्रभावी पाया, पाने को मैं भी आया॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सम्यक्त्वगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ध्यान सलिल को पाया, आतम को शुद्ध बनाया।
अरिहंत शौच गुणधारी, प्रभु की पूजा अघहारी॥12॥

ॐ ह्रीं अरहंतशौचगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश जिनवाणी अंग, श्रुतज्ञान रूप है संग।
पर तुम प्रत्यक्ष ही जानो, केवल द्वारा परमानो॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हदद्वादशांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय का ज्ञान अधूरा, आतम का ज्ञान है पूरा।
अरिहंत ज्ञान के धाम, मैं शत-शत करूं प्रणाम॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हद्भिन्नबोधकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल का भाग अनंता, श्रुत अवधि कहा भगवंता।
गणधर जी हमें बतायें, सुख पाने शीश झुकायें॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हत्श्रुतावधिगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वाधिक दर्श कराये, वृद्धि कुछ ज्ञान में पायें।
इसको तज केवल पाया, मैं चरण शरण में आया॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हदवधिगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ विपुल ज्ञान हर्षाये, सिद्धि जग को करवाये।

मन शुद्धि ध्यान से होती, भक्ति का बीज मैं बोती॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हच्छुद्धमन:पर्ययभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोही को मोह सतावे, नाशे तो केवल पावे।
सब कर्म घातिया घाते, केवल पाके हर्षाते॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हत्केवलगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोत्तम ज्ञान है केवल, मिल जाता है आतम बल।
केवल स्वरूप अपनाया, पाने को मन ललचाया॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हत्केवलस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम को खूब तपाया, केवल दर्शन को पाया।
सौभाग्य हमें मिल जाये, भावों से शीश झुकाये॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हत्केवलदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवरणों को तुम तोड़ा, शुभ ज्ञान से नाता जोड़ा।
शिवगामी है यह देवा, सुख पाने करते सेवा॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हत्केवलज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ति जब तन में आवे, तब तप में उसे लगावे।
तप से तप ही बढ़ जाये, शक्ति का पुंज भी पाये॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हत्केवलवीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमय है जिन देवा, आतम की करते सेवा।
सब कार्य पूर्व तुम ध्याना, कार्यों को सफल बनाना॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रातः यदि दर्शन होता, मंगलमय मोती पाता।
अर्हंत दर्श सुखकारी, प्रभु पूजा करें तिहारी॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी जब ज्ञान करे हैं, कर्मों को शीघ्र हरे हैं।
वे प्रथम ही मंगल करते, तब ही वे आगे बढ़ते॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभू छंद

मंगलमय शक्ति पा करके, मंगलमय आतम कर लीना।

मंगल शक्ती भक्तों को दो, भक्तों ने आन शरण लीना॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलवीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब ज्ञान दीप जल जाता है, अज्ञान अंधेरा दूर रहे।
नय स्याद्वाद आगम वाणी, वरदान देय, अज्ञान घटे॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलद्वादशांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीमा न ज्ञान की होती है, पर कार्यों से प्रतिबाधित है।
प्रत्यक्ष पूर्ण न दिख पाये, शुभ थोड़ा ही आराधित है॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगल-अभिनिबोधकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पर्यायी की कल्लोले, सागर में प्रतिपल उठती हैं।
केवलज्ञानी मेरे जिनवर, सब ज्ञान में हर क्षण दिखती हैं॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलश्रुतात्मकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधि से मंगल कार्य करे, मुक्ति पथ भी दर्शाता है।
भक्तों के संकट दूर करे, भक्तों का मन हर्षाता है॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलावधिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धीरे-धीरे पग बढ़ करके, मन पर्यय ज्ञान को पाते हैं।
निज आत्म विशुद्धि को करके, भक्तों को ज्ञान सिखाते हैं॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलमन:पर्ययज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब मोह से युद्ध किया तुमने, तुम शक्ति आगे हार गया।
केवल का सूर्य उगाया था, अंदर का सब संसार गया॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुरुपी गतियों को तजकर, आतम स्वरूप को पाया है।
केवल स्वरूप का रूप बना, अर्हंत रूप प्रगटाया है॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु के दर्शन की बाधा, अर्हंत देव जी विनशाये।
केवल दर्शन जब पाया तो, इंद्रों ने पुष्प भी बरसाये॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्काम साधना योग धरा, परिवेश सुगंधित कर दीना।
हर दिशा ज्ञान का उजियाला, भक्तों को ज्ञानी कर दीना॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युग निर्माता तप करते हैं, मंगलमय वसुधा हो जाती।
कण-कण से पावनता झरती, चहुं दिश में शांति छा जाती॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में मंगल बस एक ही है, अपना आतम परमातम है।
अपने आतम का दर्शन ही, नशता सारे जग के गम है॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिव देव शिवालय में बैठे, निज धर्म स्वरूप को पाया है।
शिव देव शिवालय पाने को, यह भक्त शरण में आया है॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलधर्मस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग की वस्तु उत्तम मानें, उत्तम तो हैं अर्हंत देव।
अपने विवेक की आंख खोल, चरणों की करते भक्त सेव॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलोत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस लोक में हैं पर हैं भी नहीं, अपने आतम में लीन रहे।
लोकोत्तम लोक शिखर धारी, भक्तों के सारे कर्म दहे॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के गुण कर्म बुलाते हैं, आत्मिक गुण को ही पाया है।
लोकोत्तम आप गुणाकर हो, अब मेरी समझ में आया है॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या ने जग को भटकाया, सम्यक् पथ सम्यक् बतलाये।
अज्ञान हमारा शीघ्र हरो, मुक्ति पाने प्रभु हम आये॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पट खुलते ही ज्यों दर्शन हो, प्रतिमा शुभ रूप लुभाती है।
त्यों लोकोत्तम दर्शन धारी, सोते को नित्य जगाती है॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बलवान बहुत है जग में पर, तप त्याग नहीं वे करते हैं।
शक्ति के धारक हैं जिनवर, तप कर कर्मों को हरते हैं॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमवीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवनायक शिवमय सिद्ध बने, इंद्रिय तज आतम सा क हैं।
प्रत्यक्ष दर्श आतम पावन, इंद्रिय न बनती बाधक हैं॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लेकोत्तमाभिनिबोधकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधि की अवधि निश्चित है, पर केवल ज्ञान अनंत रहे।
शुभ अवधि कर्म नशाये तो, शुभ केवल ज्ञान की धार बहे।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमावधिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस लोक में उत्तम मन होता, यह पुण्य पाप भी करवाता।
मन पर्यय ज्ञानी सब जाने, ज्ञानी कर्मों को हरवाता।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तममनःपर्ययज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार असार लगा जिसको, तज दीक्षा ले कल्याण किया।
बस केवल ज्ञान है सार रूप, भक्तों को शिव पथ दिखा दिया।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलज्ञानस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत का बल्ब प्रकाश करे, पर उसकी भी तो सीमा है।
तीनों लोकों में उजियाला, उस केवल ज्ञान ने कीना है।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधारण केवल ज्ञान नहीं, यह तो उत्तम जग में सारे।
द्रव्यों की सब पर्याय सहित, देखे जग को जग से न्यारे।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलपर्यायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुजंग प्रयात

द्रव्यों को जाना है निज को सम्हारे, है उत्तम प्रभुजी, मिलेंगे सहारे।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलद्रव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत में अशुद्धि करम की सताये, प्रभु शुद्ध रूपी, शरण तेरी आये।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विविध रूप छोड़ा, निजातम को पाया, स्वयं सिद्ध रूपी, निजातम जगाया।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा भाव खोटे, करम ही कराते, सदा शुद्ध भावी, धरम ही बनाते।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमध्रुवभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं उत्तम सदा भाव, जग में बनाये, तभी मुक्ति कांता भी, लेने को आये।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हैं थिर भाव रहते, अस्थिर नहीं है, करूं भक्ति तेरी, यही तो सही है।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते।।56।।
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमस्थिरभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नहीं और शरणा, किसी की मैं जाऊँ, हे अरिहंत देवा, शरण तेरी आऊँ।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते।।57।।
ॐ ह्रीं अर्हच्छरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु मोक्ष पथ को, हमें भी दिखाओ, हो शरणा स्वरूपी, नहीं अब भगाओ।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते।।58।।
ॐ ह्रीं अर्हच्छरणस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
स्वभावों से गुण बस, तुम्हें चाहते हैं, शरण जो भी आवे, करम त्यागते हैं।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते।।59।।
ॐ ह्रीं अर्हद्‌गुणशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम्ही ज्ञान तरु हो, तुम्ही ज्ञान सेतु, करो ज्ञानी हमको, तुम्ही मुक्ति हेतु।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते।।60।।
ॐ ह्रीं अर्हज्ज्ञानशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु दर्श हेतु, सुभावों को लाये, हो आत्मस्थ जिनवर, करम ना सताये।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते।।61।।
ॐ ह्रीं अर्हद्दर्शनशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मिली शक्ति तुमको, तो तप त्याग कीना, मिले शक्ति हमको, शरण तेरी लीना।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते।।62।।
ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्यशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कुमति सारी भागी, सुमति को बसाया, है द्वादश के श्रुत को, स्वयं में लगाया।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते।।63।।
ॐ ह्रीं अर्हद्द्वादशांगाश्रुतशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो अनुमान करते, वही सच भी होता, हो कल्याणकारी, धरम बीज बोता।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते।।64।।
ॐ ह्रीं अर्हदभिनिबोधकाय शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कहेंगे जो जिनवर, वो जिनवाणी बनती, सदा भव्य जीवों को, सत्पथ दिखाती।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते।।65।।
ॐ ह्रीं अर्हत्‌श्रुतशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रश्नों के उत्तर, सदा आप देते, अवधि ज्ञानधारी, सभी देख लेते।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते॥66॥
ॐ ह्रीं अर्हदवधिबोधशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आतम क्रिया में, वे संलग्न रहते, रखे शुद्ध भावों को, और मग्न रहते।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते॥67॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मनःपर्ययशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नहीं आवरण है, ये प्रत्यक्ष देखे, ये केवल के द्वारा, ही दर्पण सा लेखे।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते॥68॥
ॐ ह्रीं अर्हत्केवलशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सदा सिद्ध की साधना हम करेंगे, है केवल स्वरूपी करम को कहेंगे।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते॥69॥
ॐ ह्रीं अर्हत्केवलशरणस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सदा सौख्य दायक, हो मुक्ति प्रदायक, सदा धर्म धारी, जगत के हो नायक।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते॥70॥
ॐ ह्रीं अर्हत्केवलधर्मशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दिशा हीन होकर, गुणों को न पाया, तुम्हारी शरण आ, गुणों को कमाया।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते॥71॥
ॐ ह्रीं अर्हत्केवलगुणशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
विघ्नों के हरने को, मंगल हैं करते, गुणाधारी भगवन, सभी पाप हरते।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते॥72॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलगुण शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सभी मंगलो में है, शुभ ज्ञान मंगल, सदा शिव स्वरूपी, हरेंगे अमंगल।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते॥73॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलज्ञानशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु दर्श करने, समस्या है आती, प्रभो दर्श मंगल है, मुक्ति को पाती।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते॥74॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलदर्शनशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
उदासीन होकर, निजातम को ध्याया, तभी ज्ञान आनंद, झरना बहाया।
ये जीवन सुगंधित है दुर्गंध हरते, करें भक्ति प्रभु की, करम सारे झरते॥75॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलबोधशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

ज्ञानानंदी देव हमारे, भक्त करें नित दर्श तुम्हारे।
उपादेय है केवल ज्ञानी, हम तो जिनवर के हैं ध्यानी।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक में जिनवर है सर्वोत्तम, इनसे ना है कोई उत्तम।
मन वच तन से प्रभु को ध्यावे, कर्म हटा मुक्ति को पावे।।77।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्तों को नित शरण बुलाओ, सतपथ मारग को दर्शाओ।
मन वच तन से प्रभु को ध्यावे, कर्म हटा मुक्ति को पावे।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमगुणशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तारण तरण है प्रभु हमारे, शक्ति पुंज भक्तों को तारे।
मन वच तन से प्रभु को ध्यावे, कर्म हटा मुक्ति को पावे।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमवीर्यशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूर करो संसार जाल को, भव्यों के प्रभु तुम दयाल हो।
मन वच तन से प्रभु को ध्यावे, कर्म हटा मुक्ति को पावे।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमवीर्यगुणशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धिहीन हमें कुछ ना आता, तीनों लोक के आप हो ज्ञाता।
मन वच तन से प्रभु को ध्यावे, कर्म हटा मुक्ति को पावे।।81।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमद्वादशांगशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या मत का खंडन करते, ज्ञान से धर्म का मंडन करते।
मन वच तन से प्रभु को ध्यावे, कर्म हटा मुक्ति को पावे।।82।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमाभिनिबोधकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञान से नाता जोड़ा, मिथ्यातम से नाता तोड़ा।
मन वच तन से प्रभु को ध्यावे, कर्म हटा मुक्ति को पावे।।83।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमावधिशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन पर्यय मंगलकारी है, मन के रोगों का हारी है।
मन वच तन से प्रभु को ध्यावे, कर्म हटा मुक्ति को पावे।।84।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तममनःपर्ययशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता से क्षमता बढ़ जाती, केवल ज्ञान की ज्योति जगाती।
मन वच तन से प्रभु को ध्यावे, कर्म हटा मुक्ति को पावे।।85।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलज्ञानशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रों ने वैभव बरसाया, जिनवर से अंतर धन पाया।

मन वच तन से प्रभु को ध्यावे, कर्म हटा मुक्ति को पावे।।86।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमविभूतिप्रधानशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय धनवान बनाये, सच्चा धर्म जिसे मिल जाये।
मन वच तन से प्रभु को ध्यावे, कर्म हटा मुक्ति को पावे।।87।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमविभूतिधर्मशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान वीर्य सुख धर्म अनंता, कर्म नाश पाये भगवंता।
मन वच तन से प्रभु को ध्यावे, कर्म हटा मुक्ति को पावे।।88।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमअनन्तचतुष्टयशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत चतुष्टय आकर्षक है, भव्यों का मन शुभ हर्षक है।
मन वच तन से प्रभु को ध्यावे, कर्म हटा मुक्ति को पावे।।89।।

ॐ ह्रीं अर्हदनन्तगुणचतुष्टयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिज्ञासा आतम की जागी, बने स्वयंभू बने हो त्यागी।
मन वच तन से प्रभु को ध्यावे, कर्म हटा मुक्ति को पावे।।90।।

ॐ ह्रीं अर्हन्निजज्ञानस्वयंभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म समय अतिशय हो प्यारा, जन्म प्रभु का सबसे न्यारा।
मन वच तन से प्रभु को ध्यावे, कर्म हटा मुक्ति को पावे।।91।।

ॐ ह्रीं अर्हद्दशातिशयस्वयंभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाति कर्म जब आप नशाये, सुर आकर अतिशय बरसाये।
मन वच तन से प्रभु को ध्यावे, कर्म हटा मुक्ति को पावे।।92।।

ॐ ह्रीं अर्हद्दशातिशयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञान का फूल खिलाया, सुर चौदह अतिशय को धाया।
मन वच तन से प्रभु को ध्यावे, कर्म हटा मुक्ति को पावे।।93।।

ॐ ह्रीं अर्हच्चतुर्दशातिशयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मानुशासन निज पर कीना, चौबीस अतिशय किया नवीना।
मन वच तन से प्रभु को ध्यावे, कर्म हटा मुक्ति को पावे।।94।।

ॐ ह्रीं अर्हच्चतुस्त्रिंशत–अतिशयविराजमानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर क्षण हर पल जाग्रत रहते, ज्ञान से सब परमाणु देखे।
मन वच तन से प्रभु को ध्यावे, कर्म हटा मुक्ति को पावे।।95।।

ॐ ह्रीं अर्हज्ज्ञानानन्तगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज चैतन्य भाव प्रगटाया, गुण अनंत को पार लगाया।
ध्येय तुम्हीं ध्याता भी तुम हो, ज्ञान तुम्हीं ज्ञाता भी तुम हो।।96।।

ॐ ह्रीं अर्हद्ध्यानानन्तध्येयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहर्निशी सामायिक करते, गुण अनंत को धारण करते।
ध्येय तुम्हीं ध्याता भी तुम हो, ज्ञान तुम्हीं ज्ञाता भी तुम हो॥97॥

ॐ ह्रीं अर्हद् अनंतगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिद चैतन्य ज्योति जग जाती, होती है ज्यों दिये में बाती।
ध्येय तुम्हीं ध्याता भी तुम हो, ज्ञान तुम्हीं ज्ञाता भी तुम हो॥98॥

ॐ ह्रीं अर्हत्तप-अनन्तगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग त्याग तज तुमहि पुंज हो, हे परमातम तुम निकुंज हो।
ध्येय तुम्हीं ध्याता भी तुम हो, ज्ञान तुम्हीं ज्ञाता भी तुम हो॥99॥

ॐ ह्रीं अर्हत्परमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जितना पाया ना दिख पाये, गणधर भी जिन ना कह पाये।
ध्येय तुम्हीं ध्याता भी तुम हो, ज्ञान तुम्हीं ज्ञाता भी तुम हो॥100॥

ॐ ह्रीं अर्हत्स्वरूपगुप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

ज्ञान किरण हमको मिले, मिले दिव्य भगवान।
स्वयं स्वरूपी देव को, शत्-शत् बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः सहस्र नामावलिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अडिल्ल छंद

जो बने साधु औ तप में रहते लीन हैं,
वे बसे सिद्ध औ आतम में लवलीन हैं।
लिया परम पद वास बने परमेश्वरा,
नमूं सिद्ध भक्तों को तुम्हारा आसरा॥101॥

ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाया सिद्ध स्वरूप स्वरूपी आत्म के,
स्वातम रस में लीन हुये परमात्म के।
लिया परम पद....॥102॥

ॐ ह्रीं सिद्धस्वरूपेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटी निज की शक्ति आप पराश्रित ना रहे,
लोक शिरोमणि आप निराश्रित ना रहे।
लिया परम पद....॥103॥

ॐ ह्रीं सिद्धगुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकुल व्याकुल नाहि, शुद्ध परिणाम है,
ज्ञान रूप शिवधाम किया विश्राम है।
लिया परम पद....॥104॥

ॐ ह्रीं सिद्धज्ञानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद ज्ञान में निपुण, शुद्ध दर्शन करें,
शुद्धि से जिनदेव कर्म को परिहरें।
लिया परम पद....॥105॥

ॐ ह्रीं सिद्धदर्शनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन किया मुक्ति इससे लही,
है अस्तित्व शुद्ध मुक्ति में है सही।
लिया परम पद....॥106॥

ॐ ह्रीं सिद्धशुद्धसम्यक्त्वेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन सारे छोड़ निरंजन जिन हुये,
नहीं कर्म परिवेश सिद्ध ही तुम हुये।
लिया परम पद....॥107॥

ॐ ह्रीं सिद्धनिरंजनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गति के चक्कर नाश हुये स्थिर तुम्हीं,
सिद्धाचल को पायें हुये ज्ञानी तुम्ही।
लिया परम पद....॥108॥

ॐ ह्रीं सिद्धाचलपदप्राप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संख्या तीते सिद्ध हुये परमेश्वरा,
भाव सहित वंदन करते हम ईश्वरा।
लिया परम पद....॥109॥

ॐ ह्रीं संख्यातीतसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुकरण था किया जीव सिद्धि गये,
असंख्यात है सिद्ध महा ऋद्धि लहे।
लिया परम पद....॥110॥

ॐ ह्रीं असंख्यातसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध अनादि हुये और भी होयेंगे
अंत नहीं अनंत हुये सुख पायेंगे।

लिया परम पद वास बने परमेश्वरा,
नमूं सिद्ध भक्तों को तुम्हारा आसरा॥111॥

ॐ ह्रीं अनन्तसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल में रह मुक्ति को जिनने पाया है,
भक्ति भावमय शीश झुकाने आया है।
लिया परम पद....॥112॥

ॐ ह्रीं जलसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत नगर गुफा आदि से सिद्ध है,
सिद्ध क्षेत्र स्थान आदि प्रसिद्ध है।
लिया परम पद....॥113॥

ॐ ह्रीं स्थलसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन बीच में पाया केवल ज्ञान जी,
आयु पूर्ण कर गये आप सिद्धाम जी।
लिया परम पद....॥114॥

ॐ ह्रीं गगनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु कर्म सम किया करम को नासने,
समुद्घात कर सिद्ध हरा है ताप ने।
लिया परम पद....॥115॥

ॐ ह्रीं समुद्घात-सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयुकर्म जब पूर्ण किया जिन नाथ ने,
पाया मुक्ति धाम, लिया शिव पाथ में।
लिया परम पद....॥116॥

ॐ ह्रीं असमुद्घातसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय नाहीं बरसे और मुक्ति गये,
आत्म ज्ञान परिपूर्ण, आत्म हर्षित हुये।
लिया परम पद....॥117॥

ॐ ह्रीं साधारणसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर विशेष गुण आप और सिद्धि गये,
साधारण है वे नाहि मुक्ति में बस गये।

लिया परम पद....॥118॥

ॐ ह्रीं असाधारणसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्याणक सुर पंच मनाये हर्ष से,
प्रकृति तीर्थंकर पाई आतम शुद्धि से।
लिया परम पद....॥119॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकरसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धा अनंता हुये और भी होयेंगे,
तीर्थंकर के अंतर केवली जायेंगे।
लिया परम पद....॥120॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकर-अन्तरसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पा उत्कृष्ट कार्य सफल नर भव किया,
सुंदरता की खान मुक्ति पद पा लिया।
लिया परम पद....॥121॥

ॐ ह्रीं उत्कृष्टावगाहनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया मध्यम पाय, तपस्या हितकारी,
अभिरामी पद पायें, कर्म बेड़ी हरी॥
लिया परम पद....॥122॥

ॐ ह्रीं मध्यमावगाहनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन हाथ की काय, कार्य उत्कृष्ट है।
ऊँचे हैं परिणाम, भक्त आकृष्ट हैं॥
लिया परम पद....॥123॥

ॐ ह्रीं जघन्यावगाहनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन जगत को जान, त्रिजग केवली हुये।
बार-बार परणाम, आत्म शुद्धि किये॥
लिया परम पद....॥124॥

ॐ ह्रीं त्रिजगलोकसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट कालों की अपेक्षा ही तो नाम है,
वरना चतुर्थ काल ही सिद्धि धाम है।
लिया परम पद....॥125॥

ॐ ह्रीं षड्विधकालसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

अंत समय उपसर्ग हो, प्रगटे केवल ज्ञान।
उसी समय सिद्धि भयी, बारंबार प्रणाम॥126॥

ॐ ह्रीं उपसर्गसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं कर्म ही छोड़ते, किया घोर तप ध्यान।
मुक्ति पाई इसी से, बारंबार प्रणाम॥127॥

ॐ ह्रीं निरूपसर्गसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतर द्वीप में सुर बसे, मुक्ति गये कुछ जीव।
भक्ति भाव युत पूजते, सम्यग्दर्शन नीव॥128॥

ॐ ह्रीं अन्तर द्वीपसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सागर में सुर जावते, मुनि लेकर के संग।
भक्ति भाव युत पूजते, छिन हो अनंत अनंग॥129॥

ॐ ह्रीं उदधिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आसन योगी हो तुम्हीं, योगासन आचार्य।
आसन सिद्ध से सिद्धि को, पाया है प्राचार्य॥130॥

ॐ ह्रीं स्वस्थित्यासनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मार पलौथी आपने, किया शुक्लमय ध्यान।
नाश किया था कर्म का, पाया मुक्ति धाम॥131॥

ॐ ह्रीं पर्यंकासनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य मान सब पुरुष हैं, वेद सुसुन्दर जान।
निजानंद राजा तुम्हीं, करूं चरण विश्राम॥132॥

ॐ ह्रीं पुरूषवेदसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मो का क्षय करके, श्रेणी चढ़ते हो।
धीरे-धीरे हे नाथ, आगे बढ़ते हो॥133॥

ॐ ह्रीं क्षपकश्रेणीसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक समय साथ और, मुक्ति जाते हैं।
अध्यात्म ज्ञान की धार, नित्य बहाते हैं॥134॥

ॐ ह्रीं एकसमयसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरे योग आसन प्रभु, कटे कर्म का जाल।
द्विसमय में मोक्ष पा, छोड़ा जग जंजाल॥135॥

ॐ ह्रीं द्विसमयसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकम् द्वौ और तीन में, पायें मोक्ष अनंत।
संभव सारे कार्य कर, मिला मुक्ति का पंथ।।136।।

ॐ ह्रीं त्रिसमयसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम त्रिकाल पूजा करें, हो त्रिकाल में सिद्ध।
गगन बीच वासा किया, जग में हुये प्रसिद्ध।।137।।

ॐ ह्रीं त्रिकाल सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर से नाता तोड़कर, निजानंद सुख धाम।
तीन काल के सिद्ध को, बारंबार प्रणाम।।138।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप रूप को क्षय करे, करे अमंगल दूर।
मंगलकारी सिद्ध जी, सुख देखें भरपूर।।139।।

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध शुद्ध सबको करे, करे निरामय रूप।
भक्ति भाव युत अर्घ्य जी, पूजे सिद्ध स्वरूप।।140।।

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलस्वरूपेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञानी जग में फंसे, डूबे जग संसार।
तीन लोक नायक तुम्हीं, मुक्ति को तैयार।।141।।

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलज्ञानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन सिद्धों का मिले, सिद्ध बने जब जीव।
सिद्ध शिला में जावते, पावे सौख्य अतीव।।142।।

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलदर्शनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म शक्ति से आपने, आतम दर्शन पाये।
अन्तराय को नाश के, आत्म दर्श प्रगटाये।।143।।

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलवीर्येभ्योः नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन रत्न का, है प्रकाश घन घोर।
भेद ज्ञान विधि को लखा, चले कर्म ना जोर।।144।।

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलसम्यक्त्वेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप अमूरत ज्ञानमय, अवगाहन प्रत्यक्ष।
मुक्ति मंजिल पायकर, बने धर्म के रक्ष।।145।।

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलावगाहनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म आप इतने हुये, चक्षु लखा ना जाये।
अलख चेतना जग गयी, मुक्ति मंजिल पाये॥146॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलसूक्ष्मत्वेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

निज स्वानुभूति रस लेते, उसमें ही प्रभु डूबे रहते।
हीनाधिक भी होना छोड़ा, दृष्टि को जग से है मोड़ा॥147॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगल-अगुरुलघुभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोंकृत बाधा होती है, कर्म जाये जब रह जाती है।
व्याधि औ विपदा भी टारी, मेरे कर्म हरें ये भारी॥148॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगला-व्याबाधितेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारितमय हो ज्ञान औ दर्शन, वीर्यत्व सूक्ष्म का आकर्षण।
अवगाहन कर गुरु लघु पायें, बाधायें ना कोई आयें॥149॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलाष्टगुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भावों की शुद्धि कर पाई, ये ही अष्ट प्रकार बताई।
सम्यग्ज्ञानी हो जिन देवा, चरणों की हमें दे दो सेवा॥150॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगल-अष्टरूपेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल-चौबीसी पूजन

यह अष्ट प्रकार प्रकाश, शिव सुख भासक है।
सत्पथ मिल जाये नाथ, जिनवर शासक है॥151॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगल-अष्टप्रकाशकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन धर्म भव्य के साथ, कर्म निवारक है।
सुखकारी धर्म उपाय, पुण्य प्रभावक है॥152॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलधर्मेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम गुण धारी नाथ, उत्तम बुद्धि दो।
लोकोत्तम बनू महाराज, मन की शुद्धि हो॥153॥

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमगुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में हो आप प्रसिद्ध, मंगलकारी हो।
सुर नर से पूजित नाथ, संकटहारी हो॥154॥

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर कर्म कालिका चूर, आतम स्वच्छ किया।
सुर नर से पूजित नाथ, आनंद खूब लिया।।155।।
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बिन आत्म दर्श को छोड़, जग चक्कर खाते।
पाने को निज का दर्श, चरणों में आते।।156।।
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चैतन्य आत्मा रूप, शक्ति पुंज कहा।
जिन आत्म वीर्य ये जीव, धर्म निकुंज रहा।।157।।
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जग में उलझन उलझाये, सुलझाने आया।
शरणागत वत्सल नाथ, सुख पाने आया।।158।।
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमवीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चैतन्य केंद्र पर आये, ध्यान तभी बनता।
गुण गण भंडारी नाथ, सिद्ध शरण धरता।।159।।
ॐ ह्रीं लोकोत्तमशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अध्यात्म ज्ञान का सार, आतम दर्शन है।
हम सिद्ध शरण में आये, प्रभु आकर्षण है।।160।।
ॐ ह्रीं सिद्धस्वरूपशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अंतस चक्षु खुल जाये, ज्ञान नयन खोलो।
है सिद्ध ज्ञान शरणाय, कुछ तो अब बोलो।।161।।
ॐ ह्रीं सिद्धदर्शनशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शक्ति का राज बताओ, हम भी पायेंगे।
स्पष्ट करो जिनराज, तुमको ध्यायेंगे।।162।।
ॐ ह्रीं सिद्धज्ञानशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
क्षण-क्षण में तुमको ध्याये, शिवसुख पाया है।
हे सिद्ध वीर्य शरणाय, जग भरमाया है।।163।।
ॐ ह्रीं सिद्धवीर्यशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हो आदि अन्त से दूर, अनुभव की वाणी।
धारा प्रवाह जिन ज्ञान, वाणी कल्याणी।।164।।
ॐ ह्रीं सिद्धसम्यक्त्वशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो अनंत सुखधाम, शब्द ना माप सके।

हम शरणा आये नाथ, आपकी जाप जपे।।165।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-अन्तानन्तशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है भूतानागत वर्त, तीनों काल कहा।

शरणागत ले लो नाथ, जाये ना दुःख सहा।।166।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-अन्तानन्तशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में घूम, शरणा आये हैं।

त्रैलोक्य शरण है नाथ, विनती लाये हैं।।167।।

ॐ ह्रीं सिद्धत्रिकालशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जनम मरण से मुक्त, बंधन ना बांधे।

संख्यात सिद्ध भगवान, कर्मों को साधे।।168।।

ॐ ह्रीं सिद्धत्रिलोकशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य आत्मा ध्रौव्य, व्यय ना होता है।

है जन्म मृत्यु पर्याय, आत्म की ध्रुवता है।।169।।

ॐ ह्रीं सिद्धासंख्यातशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो सिद्ध रूप उत्पाद, होता निश्चय से।

संकल्प शुद्ध भगवान, शरणा मंगल से।।170।।

ॐ ह्रीं सिद्धधौव्यगुणशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धि को करते सिद्ध, सिद्ध पुरी वासी।

हो देव महान जी आप, हम भी विश्वासी।।171।।

ॐ ह्रीं सिद्धोत्पादगुणशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना राग करे ना द्वेष, समता भावी हो।

उत्कृष्ट भाव है देव, आप प्रभावी हो।।172।।

ॐ ह्रीं सिद्ध साम्य गुणशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कर्म कलंक विहीन, स्वच्छ करे आतम।

विज्ञान ज्ञान के भेद, तपसी है आतम।173।

ॐ ह्रीं सिद्ध स्वच्छ गुणशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भावो से स्थिर योग, स्वस्थित गुण पाया।

मन चरणों में रम जाए, मन यह हरषाया।।174।।

ॐ ह्रीं सिद्ध स्वस्थित गुणशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो अंत समय भगवान, तुझको ही ध्याऊँ।

प्रभु मम समाधि भी होए, भावों में भाऊँ।।175।।

ॐ ह्रीं सिद्ध समाधि गुणशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

प्रभु मैं गुणों की याचना कर, तव चरण में आया हूँ।
अव्यक्त मम गुण व्यक्त कर दो, व्यक्त गुण तब ध्याया हूँ।।176।।

ॐ ह्रीं सिद्ध व्यक्त गुणशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्यक्ष गुण दिख जाए पर, कुछ तो हमें दिखते नहीं।
अव्यक्त गुण की पूजा करता, हम जिसे लिखते नहीं।।177।।

ॐ ह्रीं सिद्ध अव्यक्त गुणशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु साधना में हो सुमेरू, साध्य आतम पा लिया।
हो सर्वगुण धारी प्रभु, आनन्द पूरा आ लिया।।178।।

ॐ ह्रीं सिद्ध गुणस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊँचे हिमालय सम हुए, गहराई सागर कम पड़ा।
हितकारी भक्ति सिद्ध भगवन, भक्त चरणों में खड़ा।।179।।

ॐ ह्रीं सिद्ध परमात्म स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम अखंडित रूप है, कोई न खंडित कर सके।
शाश्वत निजातम स्वयं सुख ले, सुख कोई न हर सके।।180।।

ॐ ह्रीं सिद्धाखण्ड स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकुल नहीं व्याकुल नहीं, परिणाम बिल्कुल शांत हैं।
आधि नहीं व्याधि नहीं, जग में न होते भ्रांत हैं।।181।।

ॐ ह्रीं सिद्ध चिदानन्द स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाऊँ सहज सुख मैं भी भगवन, दर पे प्रतीक्षित मैं खड़ा।
तुम मेघ बन बरसो प्रभो, मैं तव चरण में आ पड़ा।।182।।

ॐ ह्रीं सिद्ध सहजानंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब बंध तोड़े, द्वंद छोड़े, राग मन से ही हटा।
हो भव्य भगवन पाई सिद्धि, मेघ कर्मों का छटा।।183।।

ॐ ह्रीं सिद्धाच्छेदरूपाय नमः अअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब कर्म थे तब कष्ट थे, अब सौख्य शिव में जा बसे।
भव भेद का विज्ञान जानूँ, कर्म सारे हम नशे।।184।।

ॐ ह्रीं सिद्धाभेदगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो आप अनुपम कोई उपमा, आपसे मिलती नहीं।
श्री दर्श करता आपका, हृदय कली खिलती रही।।185।।

ॐ ह्रीं सिद्धानुपमगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृत पिया है ज्ञान का, अमृत बनाया आत्मा।
अमृत मिले मुझको भी भगवन, पाऊँगा परमात्मा।।186।।

ॐ ह्रीं सिद्ध अमृततत्त्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध श्रुत सिद्धांत ज्ञाता, पथ चले सिद्धान्त का।
सिद्धान्त सिद्धी के प्रदाता, तम हरे मिथ्यात्व का।।187।।

ॐ ह्रीं सिद्धश्रुत प्राप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय हुए हैं क्षय न होता, सत्य में प्रभु मग्न हैं।
केवल धनी केवल को पाया, स्वयमेव में संलग्न हैं।।188।।

ॐ ह्रीं सिद्ध केवल प्राप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साकार चेतन जग रहे, उपदेश है जड़ त्यागा है।
प्रकृति पा विकृति तज, श्री सिद्ध आतम जागा है।।189।।

ॐ ह्रीं सिद्ध साकार निराकाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह आत्मा बलवान है, यह आपने ही जाना है।
अवलंब न लेते किसी का, बात यह बस ध्याना है।।190।।

ॐ ह्रीं निरालम्बाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयोग है न वियोग ही, नाही प्रभो कोई काम है।
न कलंक न अकलंक है, निज आत्म में विश्राम है।।191।।

ॐ ह्रीं सिद्ध निष्कलंकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेजस्वी आतम ओजमय है, जग प्रकाशित होता है।
तुम सिद्धों के सम सौख्य पाऊँ, आतम प्रभावित होता है।।192।।

ॐ ह्रीं सिद्ध तेजः संपन्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आराधना वे नित्य करते, आत्म तुष्टि पाई है।
पल-पल विचरते ध्यान में, तब मुक्ति लेने आई है।।193।।

ॐ ह्रीं सिद्ध सिद्धात्म संपन्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मुक्ति में ही गर्भ है औ, मुक्ति में ही जन्म है।
अविरल करे वे साधना तो, मुक्ति में निर्वाण है।।194।।

ॐ ह्रीं सिद्ध गर्भवासाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीमान लक्ष्मी साथ है, अब द्रव्य लक्ष्मी क्या करे।
तज पुण्य को औ पाप को, अब कर्म सारे वे हरे।।195।।
ॐ ह्रीं सिद्ध लक्ष्मी संतर्पकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ज्योर्तिमयी है आत्मा, सिद्धांत का वह ज्ञान है।
प्रभु है अमल निर्मल दिवाकर, तव चरण में प्रणाम है।।196।।
ॐ ह्रीं सिद्धान्तराकाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
इंद्रिय रसों का स्वाद तो, क्षण भर में ही हट जायेगा।
पर आत्म रस को जो चखे, बस स्वाद लेता जाएगा।।197।।
ॐ ह्रीं सिद्धसार रसाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु आप चिन्तामणी रत्न, लोकाग्र में ही राजते।
ज्यों शिविर पर कलशा चढ़े, त्यों मोक्ष में ही साजते।।198।।
ॐ ह्रीं सिद्ध शिखर मण्डनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्त्ता करम हर्त्ता करम, तुम तज सभी मुक्ति गये।
लोकाग्र में जाकर बसे, धनवान तुम ही तो भये।।199।।
ॐ ह्रीं सिद्धत्रिलोकाग्रनिवासिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
गुप्तियां पालन करी, सब गुप्त गुण को पा गये।
बन शुद्ध सिद्ध विशुद्ध आतम, अचल गिरि सम हो गये।।200।।
ॐ ह्रीं सिद्धस्वरूपगुप्तेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

दोहा

प्रतिभासित आगम करे, करें सिद्ध का ध्यान।
नयनों में विचरण करो, सिद्ध प्रभु भगवान।।
ॐ ह्रीं सिद्ध परमेष्ठिने नमः द्विसहस्र अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्धरि

साहस के कार्य न कोई करे, पर साहस वाले आगे बढ़े।
हैं प्रथम आदि दीक्षा धारी, कर्मों की तोड़ी सब क्यारी।।201।।
ॐ ह्रीं सूरिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है आत्मशक्ति जब प्रगटाई, सामर्थ्य शक्ति गुण हर्षाई।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।202।।

ॐ ह्रीं सूरि गुणोभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधन स्वरूप को अपनाया, तब भेद अगोचर को पाया।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।203।।

ॐ ह्रीं सूरि स्वरूप गुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन को स्वीकारा, कर्मों का राजा ही हारा।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।204।।

ॐ ह्रीं सूरि सम्यक्त्व गुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ज्ञान पाए सर्वज्ञ हुए, आतम से आतम सौख्य लिए।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।205।।

ॐ ह्रीं सूरि ज्ञान गुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनहर दर्शन को पाया है, वस्तु स्वभाव दर्शाया है।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।206।।

ॐ ह्रीं सूरि दर्शन गुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप से शक्ति का उजियारा, शक्ति का पाया भंडारा।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।207।।

ॐ ह्रीं सूरि वीर्य गुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्तीस गुणों को धारण कर, चिंतन से कर्म निवारण कर।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।208।।

ॐ ह्रीं सूरिषट्त्रिंशत् गुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार पांच पालन करते, शिष्यों से करवा सुख वरते।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।209।।

ॐ ह्रीं सूरि पंचाचार गुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु गुण समूह के पिण्ड हुए, वे स्वयं असीम अखंड हुए।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।210।।

ॐ ह्रीं सूरि द्रव्य गुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिपल पर्याय बदलते हो, पर स्वयं स्वभाव न तजते हो।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।211।।

ॐ ह्रीं सूरि पर्याय गुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमय दर्शन आप कहा, दर्शन कर धन और सौख्य लहा।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।212।।

ॐ ह्रीं सूरि मंगलेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम को ना हम जाना है, सूरी का दर्शन पाना है।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।213।।

ॐ ह्रीं सूरि ज्ञान मंगलेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो शुद्ध सिद्ध अविनाशी वर, तुम उत्तम द्रव्य, हुए सुखकर।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।214।।

ॐ ह्रीं सूरि लोकोत्तमेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाहे क्रोधी हो या मानी, यह ज्ञान ही सुख का है दानी।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।215।।

ॐ ह्रीं सूरि ज्ञान लोकोत्तमेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब मुक्ति पथ ना मिलता तो, तव दर्श हृदय ही खिलता हो।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।216।।

ॐ ह्रीं सूरि दर्शन लोकोत्तमेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ति से मोह भगाया है, आचार्य नमो सर छाया है।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।217।।

ॐ ह्रीं सूरिवीर्य लोकोत्तमेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब केवल रूप दिखाया है, सारा आगम बतलाया है।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।218।।

ॐ ह्रीं सूरिकेवल धर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत समिति शील तप धारी हो, तप से सब कर्म निवारी हो।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।219।।

ॐ ह्रीं सूरितपेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन का श्रृंगार भी त्यागा है, तप आभूषण मन जागा है।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।220।।

ॐ ह्रीं सूरिपरमतपेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जंगल पर्वत जा तप करते, आतम में रह आतम जपते।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।221।।

ॐ ह्रीं सूरितपोघोर गुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जंगल में सिंहादि रहते, वन तप करने फिर भी जाते।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।222।।
ॐ ह्रीं सूरि घोर गुण पराक्रमेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शाश्वत गुण पाकर वृद्ध हुए, ऋद्धि सिद्धि पा वे सिद्ध हुए।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।223।।
ॐ ह्रीं सूरि ऋद्धि ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
योगों को बल से रोका है, मुक्ति जाने का मौका है।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।224।।
ॐ ह्रीं सूरिसुयोगिनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पशु आदि गरजे भय न हो, आतम ध्याते दुर्ध्यान न हो।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।225।।
ॐ ह्रीं सूरिध्यानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आधार लिया आधेय बने, किन्तु कर्मों में नहीं सने।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।226।।
ॐ ह्रीं सूरिधात्रिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
उपसर्ग सहे शुभ पात्र बने, तब ध्यान तेज शुद्धात्म बने।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।227।।
ॐ ह्रीं सूरिपात्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हम और कहीं ना जाएंगे, सूरी गुण शरणा पाएंगे।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।228।।
ॐ ह्रीं सूरिगुणशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
धर्मों के ये भंडारा हैं, इन्हें जैन धर्म ही प्यारा है।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।229।।
ॐ ह्रीं सूरिधर्मगुणशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शरणा सूरी जो रह जाए, भव जग में नाहीं दुख पाए।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।230।।
ॐ ह्रीं सूरि शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्मों की कालिमा धोई है, उज्जवल व्रत खेती बोई है।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।231।।
ॐ ह्रीं सूरिस्वरूप शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम में शान्ति निराली है, मुक्ति पथ की उजियाली है।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करे, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।232।।

ॐ ह्रीं सूरिधर्मस्वरूप शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिवार चलाने ज्ञान होए, पर धर्म ज्ञान सूरी बताए।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।233।।

ॐ ह्रीं सूरिज्ञान स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लालच इन्द्रिय सुख पाने का, उसको तज मुक्ति पाने का।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।234।।

ॐ ह्रीं सूरि सुख स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार महादुख सागर है, सूरी दर्शन सुख सागर है।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।235।।

ॐ ह्रीं सूरि दर्शन स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वाणी काया वश करके, आत्मिक शक्ति पा मुश्किल से।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।236।।

ॐ ह्रीं सूरिवीर्य स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आस्रव द्वारों को बंद किया, सुख पाने मंगल शरण लिया।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।237।।

ॐ ह्रीं सूरिमंगल शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल सम्यक्त्व का झरना है, इसका जल पीकर तरना है।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।238।।

ॐ ह्रीं सूरिधर्म शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप की अग्नि प्रगटाई है, कर्मों की धूप उड़ाई है।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।239।।

ॐ ह्रीं सूरितपशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धात्म ध्यान के साधक हैं, अपनी आतम आराधक हैं।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।240।।

ॐ ह्रीं सूरिध्यानशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपत्ति केवल ज्ञान पाऐं, सूरज सम पथ सबको दिखाऐं।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।241।।

ॐ ह्रीं सूरिसिद्ध शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके को पाथ दिखाते हो, ले शरण ज्ञान सिखलाते हो।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।242।।
ॐ ह्रीं सूरि त्रिलोक शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तीनों कालों की आप शरण, भक्ति करने मिल जाएं चरण।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।243।।
ॐ ह्रीं सूरि त्रिकाल शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मंगलमय मंगलकारी हो, भव्यों को प्रभु सुखकारी हो।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।244।।
ॐ ह्रीं सूरि त्रिजग-मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
भक्ति-शक्ति के केन्द्र बने, शिष्यों के आपहि इन्द्र बने।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।245।।
ॐ ह्रीं सूरि त्रिलोक मंगल शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
उत्तम मंगल ही शरण आप, मैं कर्म नशूं करते हैं जाप।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।246।।
ॐ ह्रीं सूरि त्रिजगन्मंगलोत्तम शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सर्वात्म निजात्म समर्पित है, मंगल की शरण में अर्पित है।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।247।।
ॐ ह्रीं सूरि त्रिजगन्मंगलशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दुर्लभ बोधि को प्राप्त किया, शरणागत को भी आप्त किया।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।248।।
ॐ ह्रीं सूरि त्रिलोक मंगल शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तिहुँ लोक की सिद्धि पाई है, ऋद्धि पा जग हर्षाई है।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।49।।
ॐ ह्रीं सूरि ऋद्धि मंगल शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आचार्य का नाम ही पावन है, और मंत्र बने ही जीवन है।
आचार्य सिद्ध का ध्यान करें, अपने कर्मों को शीघ्र हरें।।250।।
ॐ ह्रीं सूरि मंत्र स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर चाल

आचार्य नाम मंत्र, पाप को सदा हरता।
ध्याता है सच्ची श्रद्धा से, झोली सदा भरता।।

चरणों में आए हैं गुरु, कुछ ध्यान दीजिए।
भक्तों को लेके शरण में, कल्याण कीजिए।।251।।

ॐ ह्रीं सूरि मंत्र गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहित रहे जगत के जीव, दु:ख को पाऐं।
पाने को धर्म, आत्मा की ज्योति जलाऐं।।
चरणों में आए हैं...।।252।।

ॐ ह्रीं सूरि धर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिद्रूप हो शुद्धात्मा, परमात्मा तुम्हीं।
एकाग्र चित्त ध्यान है, ध्याता भी हो तुम्हीं।।
चरणों में आए हैं...।।253।।

ॐ ह्रीं सूरि चैतन्य स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविकार भावना से, आत्म धर्म को किया।
चैतन्य चिदानन्द भाव, ध्यान कर लिया।।
चरणों में आए हैं...।।254।।

ॐ ह्रीं सूरि चिदानंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है स्याद्वाद मयी तेरी, वाणी है बुलाए।
बन करके शिष्य आए हैं, गुरू ज्ञान सिखाए।।
चरणों में आए हैं...।।255।।

ॐ ह्रीं सूरि ज्ञानानन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिकूलता मिले तो क्रोध, आप न करते।
रागों के कांटे को हटा औ पाप को हरते।।
चरणों में आए हैं...।।256।।

ॐ ह्रीं सूरिसमभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पथ में पड़े हैं शूल, इन्हें कैसे हटाऐं।
तप धार के ही आत्म में, आनन्द बढ़ाऐं।।
चरणों में आए हैं...।।257।।

ॐ ह्रीं सूरि तपो गुणानन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माणिक मिले मोती मिले, पर आपने छोड़ा।
तप ऋद्धि सिद्धि पाये, निज कर्म मरोड़ा।।
चरणों में आए हैं...।।258।।

ॐ ह्रीं सूरि तपो गुण स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह हंस जग में जिस तरह मोती को हैं चुनते।
वैसे ही हमारे गुरू ना पाप को बुनते।।
चरणों में आए हैं गुरू, कुछ ध्यान दीजिए।
भक्तों को लेके शरण में, कल्याण कीजिए।।259।।

ॐ ह्रीं सूरि हंसाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टि है सूक्ष्म आपकी, निज धर्म को पाया।
पाने को धर्म मैं भी गुरू, चरण में आया।।
चरणों में आए हैं...।।260।।

ॐ ह्रीं सूरि हंस गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनन्द पाये मंत्र की, जो जाप कराता।
पाकर के सौख्य संपत्ति, निज धर्म बढ़ाता।।
चरणों में आए हैं...।।261।।

ॐ ह्रीं सूरि मंत्र गुणानन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो धर्म बाँटते हैं, उन्हें सौख्य ही मिलता।
वो धर्म पथ के राही, ध्यान कमल भी खिलता।।
चरणों में आए हैं...।।262।।

ॐ ह्रीं सूरि सिद्धानन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संताप ताप दूर करे, चन्द्र से शीतल।
अमृत भरा है ज्ञान में, करते हैं वे हरपल।।
चरणों में आए हैं...।।263।।

ॐ ह्रीं सूरि - अमृत चन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्यों चन्द्र की कलाऐं, पूर्ण रूप को पाते।
त्यों चन्द्र सम आचार्य, ज्ञान सुधा पिलाते।।
चरणों में आए हैं...।।264।।

ॐ ह्रीं सूरि सुधा चन्द्र स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी भी गुरू दानी भी, अज्ञान मिटाते।
अमृत की धार शिष्यों को ही आके पिलाते।।
चरणों में आए हैं...।।265।।

ॐ ह्रीं सूरि सुधा गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्यासे हैं लोग ज्ञान का ही नीर पिलाओ।
भक्तों का सौख्य भी बढ़े, शुभ मेघ गिराओ।।
चरणों में आए हैं...।।266।।
ॐ ह्रीं सूरि सुधाध्वनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अपने ही द्रव्यों औ गुणों का नाश न होता।
मनहर है छवि दर्श से अज्ञान है नशता।।
चरणों में आए हैं...।।267।।
ॐ ह्रीं सूरि अमृतध्वनि सुरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ज्यों सूर्य अपने ताप से तम को है हटाता।
ज्यों चन्द्र चांदनी से शांति सबको दिलाता।।
चरणों में आए हैं...।।268।।
ॐ ह्रीं सूरि द्रव्याय सुरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आचार्य ज्यों ही शिष्यों का अज्ञान हटाते।
आचार्यों के चरणों में आके शीश झुकाते।।
चरणों में आए हैं...।।269।।
ॐ ह्रीं सूरिगुणद्रव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सागर के साथ जैसे लहर का है वास्ता।
है जीव के ही साथ में पर्याय रास्ता।।
चरणों में आए हैं...।।270।।
ॐ ह्रीं सूरि पर्यायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कुछ द्रव्य के जो गुण हुए, उपदेश में सुना।
है एक द्रव्य दूसरे से ना मिले गुना।।
चरणों में आए हैं...।।271।।
ॐ ह्रीं सूरि द्रव्य स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सारे गुणों को कोई भी ऐसा नहीं मिला।
वो उनके पास रह सके ऐसी नहीं कला।।
चरणों में आए हैं...।।272।।
ॐ ह्रीं सूरि गुण स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पर्याय के स्वरूप ही प्रतिक्षण सभी दिखे।
इसके बिना ना द्रव्य है, गणधर भी है लिखे।।

चरणों में आए हैं, गुरू, कुछ ध्यान दीजिए।
भक्तों को लेके शरण में, कल्याण कीजिए।।273।।

ॐ ह्रीं सूरि पर्याय स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्पाद है गुणों का, ये भगवान ने कहा।
संपूर्ण ज्ञान आत्मा में ध्यान में रहा।।
चरणों में आए हैं...।।274।।

ॐ ह्रीं सूरि गुणोत्पादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाहे किसी गति में रहो आत्मा वही।
पर्याय बदलती रहे है द्रव्य तो वही।।
चरणों में आए हैं...।।275।।

ॐ ह्रीं सूरिध्रुव गुणोत्पादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज-सोलहकारण

सर्व विभाव करे आभाव, व्यय उत्पाद जीव ही नाव।
नमों आचार्य, शत्-शत् बार नमों आचार्य।।
दीक्षा शिक्षा दे उपदेश, तारण तरण दिगम्बर वेश।
नमों आचार्य, शत्-शत् बार नमों आचार्य।।276।।

ॐ ह्रीं सूरिव्यय गुणोत्पादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव द्रव्य अनुपम अविकार, सुर नर नाग नयन मनहार।
नमों आचार्य, शत्-शत् बार नमों आचार्य।।
दीक्षा शिक्षा दे...।।277।।

ॐ ह्रीं सूरि जीव तत्त्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव तत्व जब कर्म समेत, धर्म बने सिन्धु में सेत।
नमों आचार्य, शत्-शत् बार नमों आचार्य।।
दीक्षा शिक्षा दे...।।278।।

ॐ ह्रीं सूरि जीव तत्त्व गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव आतम का शांत, मुक्ति पुरी पावे प्रशांत।
नमों आचार्य, शत्-शत् बार नमों आचार्य।।
दीक्षा शिक्षा दे...।।279।।

ॐ ह्रीं सूरि निज स्वभावधारकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मास्त्रव होवे दिन रैन, कर्म जीव को न दे चैन।

नमों आचार्य, शत् - शत् बार नमों आचार्य॥
दीक्षा शिक्षा दे...॥280॥

ॐ ह्रीं सूरि-आश्रव विनाशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म बंध के नाशन हार, प्रभु पूजा को दे उपहार।
नमों आचार्य, शत् - शत् बार नमों आचार्य॥
दीक्षा शिक्षा दे...॥281॥

ॐ ह्रीं सूरि बंध तत्त्व विनाशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवर तत्व महा सुखदाय, इससे करम न आने पाए।
नमों आचार्य, शत् - शत् बार नमों आचार्य॥
दीक्षा शिक्षा दे...॥282॥

ॐ ह्रीं सूरि संवर तत्त्व सहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म ध्यान में होवे लीन, संवर तत्व बजाये बीन।
नमों आचार्य, शत् - शत् बार नमों आचार्य॥
दीक्षा शिक्षा दे...॥283॥

ॐ ह्रीं सूरि संवर तत्त्व स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध रूप शाश्वत मुनिधार, संवर तत्व में करत विहार।
नमों आचार्य, शत् - शत् बार नमों आचार्य॥
दीक्षा शिक्षा दे...॥284॥

ॐ ह्रीं सूरि संवर गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवर हो तो धर्म भी होय, संवर धर्म मुनि के होए।
नमों आचार्य, शत् - शत् बार नमों आचार्य॥
दीक्षा शिक्षा दे...॥285॥

ॐ ह्रीं सूरि संवर धर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म झरे निर्जरा जो होए, एक देश सब देश बताए।
नमों आचार्य, शत् - शत् बार नमों आचार्य॥
दीक्षा शिक्षा दे...॥286॥

ॐ ह्रीं सूरि निर्जरा तत्त्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव दो रूप बताए, धीरे-धीरे कर्म नशाए।
नमों आचार्य, शत् - शत् बार नमों आचार्य॥
दीक्षा शिक्षा दे...॥287॥

ॐ ह्रीं सूरि निर्जरा तत्त्व स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि तप कर्मों को दहे, पानी सम सब कर्म है बहे।
नमों आचार्य, शत् - शत् बार नमों आचार्य।।
दीक्षा शिक्षा दे उपदेश, तारण तरण दिगम्बर वेश।
नमों आचार्य, शत् - शत् बार नमों आचार्य।।288।।

ॐ ह्रीं सूरि निर्जरा गुण स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समय पूर्ण हो तब ही जाए, कर्म भी अपना रूप दिखाए।
नमों आचार्य, शत् - शत् बार नमों आचार्य।।
दीक्षा शिक्षा दे...।।289।।

ॐ ह्रीं सूरि निर्जरा धर्म स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान धरें कर्मों को तजे, गुण श्रेणि सब कर्म है करे।
नमों आचार्य, शत् - शत् बार नमों आचार्य।।
दीक्षा शिक्षा दे...।।290।।

ॐ ह्रीं सूरि निर्जरा नुबंधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म अतुल स्थिरता करें, तभी कर्म निर्जरा करें।
नमों आचार्य, शत् - शत् बार नमों आचार्य।।
दीक्षा शिक्षा दे...।।291।।

ॐ ह्रीं सूरि निर्जरा स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व कर्म जब होंगे नाश, तब ही पावे पूर्ण प्रकाश।
नमों आचार्य, शत् - शत् बार नमों आचार्य।।
दीक्षा शिक्षा दे...।।292।।

ॐ ह्रीं सूरि निर्जरा प्रतीताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल कर्म नाशे जिनदेव, तभी करी हमने है सेव।
नमों आचार्य, शत् - शत् बार नमों आचार्य।।
दीक्षा शिक्षा दे...।।293।।

ॐ ह्रीं सूरि मोक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव का बंधन तजा, आतम ने आतम को भजा।
नमों आचार्य, शत् - शत् बार नमों आचार्य।।
दीक्षा शिक्षा दे...।।294।।

ॐ ह्रीं सूरि बन्ध मोक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्ता दुख सब क्लेश को छोड़, मोक्ष स्वरूपी हुए विभोर।
नमों आचार्य, शत् - शत् बार नमों आचार्य।।

दीक्षा शिक्षा दे...॥295॥

ॐ ह्रीं सूरि मोक्ष स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्य निरंजन हो भगवान, पाया आपने सौख्य निधान।
नमों आचार्य, शत्-शत् बार नमों आचार्य॥
दीक्षा शिक्षा दे...॥296॥

ॐ ह्रीं सूरि मोक्ष गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य तप करे महान, शुद्ध स्वभावी हे गुणवान।
नमों आचार्य, शत्-शत् बार नमों आचार्य॥
दीक्षा शिक्षा दे...॥297॥

ॐ ह्रीं मोक्षानुबंधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से निकला दिव्य प्रकाश, मुक्ति गए पाए शिव वास।
नमों आचार्य, शत्-शत् बार नमों आचार्य॥
दीक्षा शिक्षा दे...॥298॥

ॐ ह्रीं सूरि मोक्षानु प्रकाशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिपक्षी है कर्म स्वरूप, गुप्त ध्यान करते हैं भूप।
नमों आचार्य, शत्-शत् बार नमों आचार्य॥
दीक्षा शिक्षा दे...॥299॥

ॐ ह्रीं सूरि स्वरूप गुप्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकुल व्याकुल न परिणाम, हो परमात्म आत्म का ध्यान।
नमों आचार्य, शत्-शत् बार नमों आचार्य॥
दीक्षा शिक्षा दे...॥300॥

ॐ ह्रीं सूरि परमात्म-स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्यं

दोहा

पूर्ण समर्पण भावना, अब दो आतम ज्ञान।
सिद्ध प्रभु के चरण में, बारंबार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं सिद्ध परमेष्ठिने नमः महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(त्रिभंगी छंद)

श्रुत के हैं ज्ञानी, पा जिनवाणी, उपाध्याय जिन ज्ञान करें।
निज अनुभव पाया, ज्ञान समाया, सबका ही अज्ञान हरें॥
रवि ज्यों परकाशे, कमल विकासे, त्यों शिष्यों को ज्ञान दिया।
है नमन हमारा, ज्ञान उजारा, मुक्ति में जा बसे जिया॥301॥

ॐ ह्रीं पाठकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञान को पाना, आत्म को ध्याना, गुरू की शरण में जा करके।
कर्मों का नाशा, सौख्य का वासा, भव से तरण को पा करके॥
रवि ज्यों परकाशे...॥302॥

ॐ ह्रीं पाठक मोक्ष मण्डनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवसागर सारा, ज्ञान संवारा, दुख मेटो अंतर्यामी।
आतम यह महके, कर्म ना चहके, नमन करूँ पाठक स्वामी॥
रवि ज्यों परकाशे...॥303॥

ॐ ह्रीं पाठक गुणेभ्यों नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञान अनूपा, ध्यान स्वरूपा, मम वैराग्य जगा देवे।
यह कम ना होवे, अचल ही रहवे, मन की पीड़ा हर लेवे॥
रवि ज्यों परकाशे...॥304॥

ॐ ह्रीं पाठक गुण स्वरूपेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ भाव ही धारे, अन्य बिहारे, गुण पच्चीस के धारी हैं।
निज में निज पाऊँ, कर्म भगाऊँ, निर्भय औ अविकारी हैं॥
रवि ज्यों परकाशे...॥305॥

ॐ ह्रीं पाठक द्रव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये श्रुत दर्शाऐं, दशों दिशाऐं, आगम गुण को गाती हैं।
सत्पथ दिखलाऐं, सौख्य दिलाऐं, ना जग में भरमाती हैं॥
रवि ज्यों परकाशे...॥306॥

ॐ ह्रीं पाठक गुण पर्यायेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण का समुदाय, सुख हर्षाय, रतत्रय कर देता है।
द्रव्यों की शक्ति, हो अभिव्यक्ति, आनंद निज में लेता है॥
रवि ज्यों परकाशे...॥307॥

ॐ ह्रीं पाठक गुण द्रव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति पथ गामी, सुख अभिरामी, आप स्वयं ही पाते हैं।
सत् द्रव्य स्वरूपी, आत्म अरूपी, पाठक मन हर्षाते हैं॥
सम्यकदर्शन हो, ज्ञान किरण हो, नित्य निरंजन रूप लखा।
यह ज्ञान की महिमा, जीव की गरिमा, निज आतम का स्वाद चखा॥308॥

ॐ ह्रीं पाठक द्रव्य स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सागर में लहरे, स्वर्ण सुनहरे, त्यों पर्याय में द्रव्य रहे।
है शुद्ध परिणामी, सुख अभिरामी, स्वयं शुद्ध स्वाधीन रहें॥
सम्यकदर्शन हो...॥309॥

ॐ ह्रीं पाठक द्रव्य पर्यायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पापों का नाशा, सुख अविनाशा, मंगलकारी कार्य करें।
मंगलमय पाठक, ज्ञान प्रकाशक, सभी कष्ट परिहार्य करें॥
सम्यकदर्शन हो...॥310॥

ॐ ह्रीं पाठक पर्याय स्वरूपाय नमः अर्घ्य।

मंगल गुणधारी, हो अविकारी, ताप जीव का हर लेवे।
मुनि मुद्राधारी, ज्योति प्रजारी, पुण्य से झोली भर लेवे॥
सम्यकदर्शन हो...॥311॥

ॐ ह्रीं पाठक मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम का चिंतन, ज्ञान का मंथन, करके सफल बने जीवन।
दुख रंच न पाऊँ, कर्म भगाऊँ, गुणों के पुष्प से भरता मन॥
सम्यकदर्शन हो...॥312॥

ॐ ह्रीं पाठक मंगल गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की माला, कर्म की ज्वाला, ज्ञानामृत ही शांत करें।
दर्शन सुखकारी, बलि-बलि हारी, धर्म देय प्राशांत करे॥
सम्यकदर्शन हो...॥313॥

ॐ ह्रीं पाठक मंगल गुण स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनों कालों में, जंजालों में, जिन श्रुत ही कल्याण करे।
है चाह समर्पित, भाव है अर्पित, ध्याकर सारे कर्म हरे॥
सम्यकदर्शन हो...॥314॥

ॐ ह्रीं पाठक द्रव्य मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञान अवस्थित, होवे स्थित, समिति गुप्ति चारित्र धार।
मंगलमय घड़िया, ज्ञान की मणिया, करते हैं हम नमस्कार।।
सम्यकदर्शन हो, ज्ञान किरण हो, नित्य निरंजन रूप लखा।
यह ज्ञान की महिमा, जीव की गरिमा, निज आतम का स्वाद चखा।।315।।

ॐ ह्रीं पाठक मंगल पर्यायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निश्चय व्यवहारी, क्रियाये सारी, पाठक ने बतलाई है।
हे विघन विनाशी, धर्म प्रकाशी, ज्ञान की ज्योति जलाई है।।
सम्यकदर्शन हो...।।316।।

ॐ ह्रीं पाठक द्रव्य पर्याय मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञान बढ़ाता, पथ दिखलाता, वचन अगोचर से ध्याया।
हे सिद्ध अनंता, हे भगवंता, ध्याकर तुमको है पाया।।
सम्यकदर्शन हो...।।317।।

ॐ ह्रीं पाठक द्रव्य गुण पर्याय मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञान धवल है, धर्म विमल है, उज्जवल आतम को करते।
पर गीत सुहाए, आत्म ना ध्याय, प्रभु उपचार को हैं करते।।
सम्यकदर्शन हो...।।318।।

ॐ ह्रीं पाठक स्वरूप मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो आप निराश्रय, देते आश्रय, जग में भटके जीवों को।
अगणित दुख पाए, शरण में आए, दो वरदान ये जीवों को।।
सम्यकदर्शन हो...।।319।।

ॐ ह्रीं पाठक मंगलोत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षड् द्रव्य जगत में, धर्म भगत में, ही स्थिर रह पाता है।
चैतन्य शक्ति हैं, ध्यान भक्ति है, दर्शन ही मन भाता है।।
सम्यकदर्शन हो...।।320।।

ॐ ह्रीं पाठक गुण लोकोत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म निहारा, रूप संभारा, जीव द्रव्य सबसे उत्तम।
यह ज्ञान विशेषा, सौख्य अशेषा, शुद्ध करेगा अंतरतम।।
सम्यकदर्शन हो...।।321।।

ॐ ह्रीं पाठक द्रव्य लोकोत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक है ज्ञानी, करे नमामी, ज्ञान रूप धन हम पाऐं।

मम ज्ञान की शुद्धि, आवे बुद्धी, भवसागर से तर जाऐं।।
सम्यकदर्शन हो...।।322।।

ॐ ह्रीं पाठक ज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान भ्रमाऐं, गति घुमाऐं, थककर चरणों में आया।
अज्ञान हटा दो, कर्म मिटा दो, मुक्ति का पथ अब पाया।।
सम्यकदर्शन हो...।।323।।

ॐ ह्रीं पाठक ज्ञान लोकोत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिलता ना मौका, तरे ना नौका, भवसागर में डोल रही।
कहीं डूब न जाए, दुःख उठाए, आतम शक्ति बोल रही।।
सम्यकदर्शन हो...।।324।।

ॐ ह्रीं पाठक दर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह आतम प्यारा, सुख भंडारा, पर ना स्वयं को जाना है।
पर में ही रमते, सिद्ध ना बनते, इसीलिए भटकाया है।।
सम्यकदर्शन हो...।।325।।

ॐ ह्रीं पाठक दर्शन लोकोत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

दर्शन करे उपाध्याय के, ये ज्ञान के भंडार है।
ज्ञानी बना कर शिष्यों को, करते महा सुखकार हैं।।326।।

ॐ ह्रीं पाठक दर्शन स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंका नहीं कोई है मन में, शुद्ध सम्यक के धनी।
मैं जाऊँ ना कहीं और फिर भी, है गुरू तुमसे बनी।।327।।

ॐ ह्रीं पाठक सम्यक्त्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् रतन को प्राप्त कर, जग में किया परकाश है।
हम शीश चरणों में झुकाते, ना मुझे कोई आश है।।328।।

ॐ ह्रीं पाठक सम्यक्त्व गुण स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ति अचिन्तय धारकर के, तप करें घनघोर वे।
न क्लेश है, न द्वेष है, धरते सदा संतोष वे।।329।।

ॐ ह्रीं पाठक वीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब जगत के जीव जग में, निज मगन हो जाते हैं।
तब आप वन में, तत्व चिंतन, चित्त में रम जाते हैं।।330।।
ॐ ह्रीं पाठक वीर्य गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वीर्यान्तराय का कर क्षयोपशम, ज्ञान शक्ति पाई है।
जग जीव मोहित हो रहे, अध्यात्म शक्ति आई है।।331।।
ॐ ह्रीं पाठक वीर्य पर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
निर्मल विमल शुभ ज्ञान धारी, तव चरण वंदन करें।
हम पाए तुमको बन के ज्ञानी, तव चरण चंदन करें।।332।।
ॐ ह्रीं पाठक वीर्य द्रव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ज्ञानामृतः रस पीवते, आतम की पुष्टि हो रही।
संतुष्ट हो मम आत्मा, भावों में भक्ति बढ़ रही।।333।।
ॐ ह्रीं पाठक वीर्य गुण पर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पर्याय लखकर जीव की, औ तत्वों को भी जाना है।
यह कर्म बंधन टूट आए, तज तुम्हें ही पाना है।।334।।
ॐ ह्रीं पाठक दर्शन पर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अब तक न समझा मैं कभी- अपने स्वरूप से भिन्न था।
लख तेरी मुद्रा ज्ञान आया, वरना मैं तो शून्य था।।335।।
ॐ ह्रीं पाठक दर्शन पर्याय स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो द्रव्य है जो भाव है, वह सभी के गुण रूप है।
कुछ ज्ञान हमको भी मिले, चैतन्य शुद्ध स्वरूप है।।336।।
ॐ ह्रीं पाठक ज्ञान द्रव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
करूणा के सागर हो दयाला, कुछ कृपा तो कीजिए।
हम आए हैं शरणा में तेरी, ज्ञान झोली भर दीजिए।।337।।
ॐ ह्रीं पाठक शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मैं स्वार्थ वश अपने गुणों को ही बढ़ाने आया हूँ।
उद्धार कर दो आज गुरूवर, तुमसा होने आया हूँ।।338।।
ॐ ह्रीं पाठक गुण शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ज्ञान अनुभव आपसे ज्यादा किसी को है नहीं।
बस ज्ञान करना, औ कराना, और कार्य भी है नहीं।।339।।
ॐ ह्रीं पाठक ज्ञान गुण शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुरझाई कलियाँ ज्ञान की हैं, आप ही विकसित करो।
आत्म अंतर बल को गुरूवर, आप ही रक्षित करो।।340।।

ॐ ह्रीं पाठक दर्शन शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति वधु की आश तुमको, इसीलिए है तप किया।
हो ब्याह मम मेरा भी उससे, इसीलिए है जप किया।।341।।

ॐ ह्रीं पाठक दर्शन स्वरूप शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है दानी तुमसा कोई ना, जो ज्ञान कोष लुटाएगा।
यह सुजश सुनकर के प्रभुवर, भक्त तुमको ध्याऐगा।।342।।

ॐ ह्रीं पाठक सम्यक्त्व शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति का साधन रतनत्रय, आपने उसको रखा।
निज आत्मा में लीन हो, अध्यात्म का अमृत चखा।।343।।

ॐ ह्रीं पाठक सम्यक्त्व स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुषार्थ ऐसा हम करें, जिन धर्म ना छूटे कभी।
आशीष दो वरदान दो, शरणा में आया भक्त भी।।344।।

ॐ ह्रीं पाठक वीर्य शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिट्टी की काया में भ्रमे, तज अमरता ही बेल है।
शक्ति यदि मैं पाऊँ तुमसे, छूटे सारी जेल है।।345।।

ॐ ह्रीं पाठक वीर्य स्वरूप शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झूठे जगत के सपने सारे, झूठे ये रिश्ते सभी।
पाठक शरण में ले लो हमको, भटक न जाए कहीं।।346।।

ॐ ह्रीं पाठक वीर्य परमात्म शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान शाश्वत ही रहे, ना दान इससे है बड़ा।
यह भक्त द्वारे आया है, यह ज्ञान पाने है खड़ा।।347।।

ॐ ह्रीं पाठक द्वादशांग शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी मां के लाल हो, जिनवाणी का रस पान है।
अमृत हमें भी तुम पिलाओ, हम करे सम्मान हैं।।348।।

ॐ ह्रीं पाठक दशपूर्वंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक चतुर्दश पूर्व लखकर, ज्ञान की शुद्धि करी।
हो शुद्ध शिव आतम धनी, शिव सौख्य की वृद्धि करी।।349।।

ॐ ह्रीं पाठक चर्तुदशपूर्वांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार का आचार कर, आचार का प्राचार है।
है शुद्ध संयम शांति सम, सुन्दर सुबोध विचार है।।350।।

ॐ ह्रीं पाठकाचारांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छंद

गुरू धर्म ज्ञान उपजाया, औ ज्ञानाचार को पाया।
गुरू सद् उपदेश सुनाए, अमृत आशीष लुटाऐ।।351।।

ॐ ह्रीं पाठक ज्ञानाचाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम की शक्ति जागी, अवगुण के गुरूवर त्यागी।
पर आश्रय भाव को छोड़ा, तप से ही नाता जोड़ा।।352।।

ॐ ह्रीं पाठक तपसाचाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन का श्रृंगार है त्यागा, आतम में मन को पागा।
रत्नत्रय भूषण पहने, ये ही तो सच्चे गहने।।353।।

ॐ ह्रीं पाठक रत्नत्रयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुचि है यह तो काया, पर आतम हीरा पाया।
रत्नत्रय नीर बहाया, शुद्धि इससे करवाया।।354।।

ॐ ह्रीं पाठक रत्नत्रय सहायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतु गति का द्वारा छोड़ा, पंचम से नाता जोड़ा।
ध्रुव स्वर्णमयी यह काया, इससे ही तप करवाया।।355।।

ॐ ह्रीं पाठक ध्रुव-असंसाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जीव अकेला आया, आकर जग में भरमाया।
पाठक एकत्व को ध्याये, आतम में रम सुख पाऐं।।356।।

ॐ ह्रीं पाठक एकत्व स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन धन को अपना माने, रिश्तों में सुख को जाने।
पर कोई साथ न जाए, बस आतम गुण संग पाऐं।।357।।

ॐ ह्रीं पाठक एकत्व गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकत्व हुआ परमातम, एकत्व ही है ये आतम।
आतम का रूप ही जानो, सच्चा ही इसको मानो।।358।।

ॐ ह्रीं पाठक एकत्व परमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम को जो ध्यायेगा, मुक्ति पद को पाएगा।
आतम अखंड अविनाशी, आतम है मुक्ति वासी।।359।।

ॐ ह्रीं पाठक एकत्व धर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन ही सर्वगुणी है, चेतन ही बने मुनी है।
अतिशय चेतन ही करता, चेतन ही अतिशय धरता।।360।।

ॐ ह्रीं पाठक एकत्व चेतनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा है रूपा, सुखकारी ज्ञान अनूपा।
साधन का आशीष पाये, फिर जग में ना भरमाये।।361।।

ॐ ह्रीं पाठक एकत्व चेतन स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी बन पथ दिखलाये, मुक्ति का मार्ग बताये।
आतम स्वरूप के ज्ञाता, यह भक्त झुकाता माथा।।362।।

ॐ ह्रीं पाठक एकत्वद्रव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ज्ञान स्वयं ये बसता, सुख का भी है यह रस्ता।
बाहर में न तुम खोजो, बस जग से दृष्टि मोड़ो।।363।।

ॐ ह्रीं पाठक चिदानन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है पापमयी जग ज्वाला, औ आपने इसको टाला।
पुरूषार्थ मोक्ष का करते, पुण्यों से झोली भरते।।364।।

ॐ ह्रीं पाठक सिद्ध साधकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप से ऋद्धि सब आई, जग जीव सभी सुखदाई।
हम भी ऋद्धि को पाऐं दीक्षा धर वन को जाऐं।।365।।

ॐ ह्रीं पाठक ऋद्धि पूर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्ग्रंथ ग्रंथि को खोला, आतम पाया अनमोला।
हम शुभ भावों को पाऐं, भावों की शुद्धि बढ़ाऐं।।366।।

ॐ ह्रीं पाठक निर्ग्रन्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बस निज को ही पहिचानों, ना और किसी को जानो।
इससे कल्याण किया है, आतम का रूप लिया है।।367।।

ॐ ह्रीं पाठकार्थ विधानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरब का बंध छुड़ाया, कल्याणमयी पद पाया।
आतम के सारे ज्ञानी, सुनने आए हम वाणी।।368।।

ॐ ह्रीं पाठकासंसारानुबन्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम कल्याण कराओ, मुक्ति में मुझे बुलाओ।
कल्याण स्वपर उपकारी, कल्याण की मेरी बारी।।369।।

ॐ ह्रीं पाठक कल्याणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित मार्ग का द्वारा पाया, सत्पथ पर उन्हें चलाया।
समकित कल्याण कराये, मुक्ति की सेज दिलाये।।370।।

ॐ ह्रीं पाठक कल्याण गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की बेड़ी तोड़ी, दृष्टि आतम से जोड़ी।
कल्याण की राहे जायें, कल्याण पथिक हर्षायें।।371।।

ॐ ह्रीं पाठक कल्याण स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व द्रव्य ही सुख को देवे, आतम गुण वृद्धि लेवे।
तब और निमित्त ना पावे, निज आतम में रम जावे।।372।।

ॐ ह्रीं पाठक कल्याण द्रव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक तत्वों को जानें, श्रद्धान करे गुण ठाने।
निश्चय से आतम दर्शन, होगा पापों का घर्षण।।373।।

ॐ ह्रीं पाठक तत्त्व गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य ज्ञान परिणामी, यह ज्ञान ही सबका स्वामी।
यह ज्ञान जीव ही पाए, नैया को पार लगाए।।374।।

ॐ ह्रीं पाठक चिद्रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह शुद्ध निराकुल चेतन, भोजन तो कर्म का वेतन।
चेतन गुण को प्रगटाना, प्रभु चरणों शीश झुकाना।।375।।

ॐ ह्रीं पाठक चेतनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभू छंद)

तन चेतन को पहिचाना है, तन से तप को करवाना है।
तन की शुद्धि इससे होती, तप से ही कर्म खपाना है।।376।।

ॐ ह्रीं पाठक चेतन गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिभाषित आगम ज्ञान में है, सब वस्तु तत्व को दर्शाता।
जो भी साधे साधक बनकर, आतम को पा वह हर्षाता।।377।।

ॐ ह्रीं पाठक ज्योति प्रकाशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सामान्य ज्ञान अवलोका है, अब चाह विशेष की मन में है।
केवल दर्शन पाऊँ मैं तो, तन तप इच्छा जीवन में है।।378।।

ॐ ह्रीं पाठक दर्शन चेतनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी आतम सुख उपजावे, अज्ञानी दुख ही पाता है।

ज्ञानी चेतन मुक्ति जावे, आनंद अमृत बरसाता है।।379।।

ॐ ह्रीं पाठक ज्ञान चेतनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चिदानन्द आनन्द कंद, सुख वृंद भरो इस जीवन में।
हो मुक्ति वधू सहचर मेरी, मुक्ति का आनन्द हो मन में।।380।।

ॐ ह्रीं पाठक चिदानन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर काया शक्ति देवे, आतम जब तप को करता है।
नश्वर काया से हे भगवन, आतम मुक्ति को वरता है।।381।।

ॐ ह्रीं पाठक वीर्य चेतनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख के कारण है पाठक गण, तम दूर करे उजियारा दे।
जग के प्राणी शरणा आये, दुख हर करके सुख सारा दे।।382।।

ॐ ह्रीं पाठक सकल शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुपम शरणा भव्यों ने पा, सुख पाने का साधन पाया।
पाठक की शरण ही सच्ची है, सुख पाने चरणों में आया।।383।।

ॐ ह्रीं पाठक त्रैलोक्य शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है भूत भविष्यत काल वर्त, तीनों में शरणा दायक है।
हम चले आपके पद चिन्हों, जग जीवों के प्रभु नायक हैं।।384।।

ॐ ह्रीं पाठक त्रिकाल शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोही जग से ही मोह करे, परिवार की शरणा रहता है।
इससे ही जग में दुख पाये, ना धर्म की शरणा आता है।।385।।

ॐ ह्रीं पाठक त्रिमंगल शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन शुभ ज्ञान के धारी हैं, समकित किरणें फैले जग में।
शरणा में जो भी आता है, अनुपम सुख पावे शिवमग में।।386।।

ॐ ह्रीं पाठक लोक शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्रत दाता आश्रय देवे, पाठक का आश्रय पाना है।
आश्रय सौभाग्य से मिलता, आश्रय पा मुक्ति जाना है।।387।।

ॐ ह्रीं पाठकआस्रववेदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानस वाणी और काया से, भगवान तुम्हारा जाप करें।
संताप ताप सब नष्ट होए, पाठक जग का सब ताप हरे।।388।।

ॐ ह्रीं पाठक आस्त्रव विनाशनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपदेश सुने मन शुद्ध होए, पापों का खंडन होता है।

निज अंतर तम में दीप जले, पुण्यों का मंडन होता है।।389।।

ॐ ह्रीं पाठक आस्रवोपदेश छेदकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया की छाया दुख देती, कर्मों का यह फल होता है।
पाठक पुरूषार्थ जगा करके, सौभाग्य सदा सुख बोता है।।390।।

ॐ ह्रीं पाठक बन्ध अन्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ चेतन जग में बंध करे, भावों से मुक्ति पाना है।
जब ज्ञान होय तब भाव उठे, पाठक की शरण में जाना है।।391।।

ॐ ह्रीं पाठक बंध मुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप ध्यान कर्म को रोकेगा, संवर का संबल पाऊँगा।
तृष्णा की भूख मिटा करके, चरणों में तेरे आऊँगा।।392।।

ॐ ह्रीं पाठक संवराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिकूल परिस्थितियों में रह, चिंता में जीवन बीत रहा।
तप ध्यान करूँ निशदिन भगवन, वरना जीवन यह रीत रहा।।393।।

ॐ ह्रीं पाठक संवर स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचेन्द्रिय विषयों में यह मन, आतम को जग में भटकाता।
पाठक अपनी शरणा ले लो, तब यह आतम मुक्ति जाता।।394।।

ॐ ह्रीं पाठक संवर कारणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन से शीतल चरणा है, शीतल आतम का रूप कहा।
आगम में जैसा वर्णित है, वैसा ही पाठक गुरू ने कहा।।395।।

ॐ ह्रीं पाठक निर्जरा स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों की इच्छाएं जग में, जीवों को नाच नचाती है।
निज पर का यदि हो जाए ज्ञान, आतम दुर्गति बच जाती है।।396।।

ॐ ह्रीं पाठक कंदर्पच्छेदकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विध्वंश किया है कर्मों का, वह तेज पुंज मुझमें भर दो।
आऊँ मैं शरणा गुरूवर के, आशीष सरस मुझको कर दो।।397।।

ॐ ह्रीं पाठक कर्म विस्फोटकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अशुभ कर्म दोनों तजकर, मुक्ति को वास बनाऊँगा।
यह पुण्य की गठरी तज करके, सिद्धो की शरण में जाऊँगा।।398।।

ॐ ह्रीं पाठक मोक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम स्वभाव ले शुद्ध रूप, कर्मों के बादल छाए हैं।

कर्मों के मेघ हटाओं जिन, मुक्ति पाने को आए है।।399।।
ॐ ह्रीं पाठक मोक्ष स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार रति अरति तजकर, आतम से प्रीति जोड़ी है।
समभाव स्वयं के हो जाए, दृष्टि जग से अब मोड़ी है।।400।।
ॐ ह्रीं पाठक आत्मरतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य (दोहा)

भक्त खड़ा है सामने, खींचों मेरी डोर।
चित्त हरण करके मेरा, जाते हो किस ओर।।
ॐ ह्रीं सिद्ध परमेष्ठिने नमः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुजंग प्रयात

प्रभु सर्व साधू की पूजा रचाऐं, साधन से मुक्ति को जाकर के पाऐं।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।401।।
ॐ ह्रीं पाठक सर्व साधुभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पालन करे गुण, गुणों को बढ़ाते, महाव्रत के धारी ही, मुक्ति को जाते।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।402।।
ॐ ह्रीं सर्व साधु गुणभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा को ले करके, आतम को ध्याया, जगत संकटों को है, क्षण में भगाया।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।403।।
ॐ ह्रीं सर्व साधु गुणस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरी शांत मुद्रा, सदा ज्ञान देवे, सभी द्रव्य तत्वों को, नित ही सिखावे।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।404।।
ॐ ह्रीं सर्व साधु द्रव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणों के हो भंडार, गुरूवर हमारे, स्वपर भेद ज्ञानी, निजातम निहारे।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।405।।
ॐ ह्रीं सर्व साधु गुण द्रव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई काम नाही, सदा ज्ञान करते, आगम का आलोक, अज्ञान हरते।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।406।।
ॐ ह्रीं सर्व साधु ज्ञानगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करे दर्श जो भी, उन्हें मोह लेते, आशीष देकर, सदा सौख्य देते।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।407।।
ॐ ह्रीं साधु दर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
भावों की शुद्धि से आनन्द पाते, नहि कोई साधन कभी साथ लाते।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।408।।
ॐ ह्रीं सर्व साधु द्रव्य भावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
इन्द्रिय विषय ने तुम्हे ना लुभाया, तजा मोह उनका उन्हीं को भगाया।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।409।।
ॐ ह्रीं साधु द्रव्य स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शक्ति से पथ पर, धरम रथ चलाया, धरम रथ पे चढ़कर के, मुक्ति को पाया।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।410।।
ॐ ह्रीं साधु वीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
निर्लिप्त चिद्रूप आतम है प्यारा, सदा ध्यान में निज का देखे नजारा।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।411।।
ॐ ह्रीं साधु द्रव्य पर्यायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ध्याता तुम्ही ध्यान आतम को ध्यावे, तुम्हे ध्याये हम भी औ मस्तक नवावे।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी पर आकर निवारे।।412।।
ॐ ह्रीं साधु द्रव्य गुण पर्यायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सभी मंगलों के तुम्ही सर्वज्ञाता, आवे जो शरणा में पाएगा साता।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।413।।
ॐ ह्रीं साधु मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जंगल में मंगल मुनिराज करते, मंगलमयी ज्ञान अज्ञान हरते।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।414।।
ॐ ह्रीं साधु मंगल स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जहां हो मुनिराज शुभ ध्यान ध्याते, वहां भक्त भक्ति से पूजा रचाते।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारें।।415।।
ॐ ह्रीं साधु मंगल शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अक्षय अविनाशी पद के हितैशी, जहां दर्श होवे बने मुक्तिवासी।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।416।।
ॐ ह्रीं साधु मंगल दर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल करे ज्ञान मंगल है ज्ञानी, मंगल से सुख हो बने मुक्ति दानी।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।417।।
ॐ ह्रीं साधु मंगल ज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मंगल मयी ज्ञान ज्योति प्रकाशी, आनन्द दानी हो मुक्ति प्रवासी।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।418।।
ॐ ह्रीं साधु ज्ञान गुण मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आशीष मंगल हो शक्ति को देवे, जगत का हो मंगल यही भाव भावे।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।419।।
ॐ ह्रीं साधु वीर्य मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाप बिना मुनि ध्यान को ध्याते, शिष्यों को संग में है पथ पे चलाते।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।420।।
ॐ ह्रीं साधु वीर्य मंगल स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पुष्पों से गुण को संचित है करते, गुणों की सुगंधी को हृदय में भरते।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।421।।
ॐ ह्रीं साधु वीर्य परम मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांति हो तन में तपस्या भी करते, औ तप से कर्मों के बादल को हरते।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।422।।
ॐ ह्रीं साधु वीर्य द्रव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
विविध रोग प्राणी को नित्य सताये, तुम्ही सर्व उत्तम शरण तेरी आये।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।423।।
ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अज्ञानी ज्ञानी की सेवा ना करता, इसी से जगत में ही दुःखों को भरता।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।424।।
ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तमगुणाया नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
क्रोधी बने और करते कलेशा, समता के धारी नहि आप जैसा।
जगत में सदा पूज्य साधु हमारे, हमारे सभी कष्ट आकर निवारे।।425।।
ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम गुण स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

लोक अलोक द्रव्य है उत्तम, आप जगत में हुए नरोत्तम।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।426।।

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम द्रव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर वैभव की कलियाँ, यह भरमाती जग की गलियाँ।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।427।।

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम द्रव्य स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुकम्पा हो गुरूवर तेरी, ज्ञान कली खिल जाये मेरी।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।428।।

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम ज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है पुनीत तेरे चरणाम्बुज, तेरे चरण का बनूँ मैं अंबुज।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।429।।

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम ज्ञान स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन से हो सम्यक दर्शन, मुक्ति का यह है आकर्षण।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमें बचाना।।430।।

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम दर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शज्ञान चारित्र को पाऊँ, और कहीं फिर मैं ना जाऊँ।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।431।।

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम ज्ञान दर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाके मुक्ति आप पधारे, उत्तम धर्म के मिले सहारे।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।432।।

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम धर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति भाव मय धर्म स्वरूपा, अक्षय पद को पायें अनूपा।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।433।।

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम धर्म स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सेवा करके बने सहारे, आत्म सेवा निज रूप निहारे।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।434।।

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम वीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युग-युग से भव भ्रमण किया है, साधु शरणा आन लिया है।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।435।।

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम वीर्य स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म ध्यान का अतिशय कीना, भक्त भक्ति सुख पाए नवीना।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।436।।

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तमातिशयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्म शक्ति निज से प्रगटायी, आत्म सौख्य बदली बरसाई।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।437।।

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम ब्रह्मज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप अखंड ज्ञान अविनाशी, दूर करो दुख शिवपुरवासी।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।438।।

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम ब्रह्मज्ञान स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करूणा कर करूणा बरसाओं, भक्तों को संग में बैठाओ।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।439।।

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान धर्म के अधिनायक हो, भक्तों के ध्याने लायक हो।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।440।।

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम गुण सम्पन्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुष शक्ति उत्तम बतलाई, इससे मुक्ति है सुखदाई।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।441।।

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम पुरूषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल सुखमय शान्ति दे दो, भक्तों को शरणा में ले लो।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।442।।

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फूलों सम गुण खुशबू लाते, तीन लोक को ये महकाते।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।443।।

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम गुण शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुकम्पा से झोली भर दो, अवगुण सारे मेरे हर दो।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।444।।

ॐ ह्रीं साधु गुण द्रव्य शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद पंकज को मन में धारे, गुरू दर्श कर छवि निहारे।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।445।।

ॐ ह्रीं साधु दर्शन शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निश्चय ज्ञान शरण आतम है, अज्ञानी का मिटता गम है।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।446।।

ॐ ह्रीं साधु ज्ञान शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग को तज निज शरण में आना, साधु बनकर मुक्ति जाना।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।447।।

ॐ ह्रीं साधु आत्म शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज सुख में ही तन्मय रहते, नाही किसी से रिश्ता रखते।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।448।।

ॐ ह्रीं साधु दर्श स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु बन परमातम ध्याया, परमातम से आतम पाया।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।449।।

ॐ ह्रीं साधु परमात्म शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्याता ध्यान ध्येय अपनाते, सोये आतम नित्य जगाते।
चरणों की छाया हमें देना, माया से प्रभु हमे बचाना।।450।।

ॐ ह्रीं साधु निजात्म शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल

भवन में जो जीव सहे दुख वे घने।
उनको पकड़ निकाल, पाये सुख के तने।।451।।

ॐ ह्रीं साधु वीर्य शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिमय है आत्म शान्ति ही चाहिए।
साधु वीर्य की शरण मिले सब पाईये।।452।।

ॐ ह्रीं साधु वीर्यात्म शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान लक्ष्मी पाये कभी ना जायेगी।
भौतिक धन तो पाप में ही भरमायेगी।।453।।

ॐ ह्रीं साधु लक्ष्मी अलंकृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञान को पाये ज्ञान पूरा हुआ।
साधु तीर्थ बस जाये, प्रकाशित जग हुआ।।454।।

ॐ ह्रीं साधु लक्ष्मी प्रणीताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईश्वर के चरणों में सारा जग पड़ा।
भक्ति करके भक्त आज चरणों खड़ा।।455।।

ॐ ह्रीं साधु लक्ष्मी रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनंतानंत रहोगे मुक्ति में।
पा स्वाधीन महासुख कहते भक्ति में।।456।।

ॐ ह्रीं साधु ध्रुवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन पातक हरो अरज कर जोड़ है।
सुर नर पूजे तुमको कर्म सब छोड़ है।।457।।

ॐ ह्रीं साधु गुण ध्रुवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देकर जग को दान तुम्ही वन में गये।
आतम को ध्रुव जान मुक्ति में बस गये।।458।।

ॐ ह्रीं साधु द्रव्य गुण ध्रुवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म मरण को छोड़ा नाता आत्म से।
ज्ञानानंदी देव ध्याय परमात्म से।।459।।

ॐ ह्रीं साधु द्रव्योत्पादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार विलक्षण हुआ आपके त्याग से।
भक्त भक्ति नित करे आप अनुराग से।।460।।

ॐ ह्रीं साधु द्रव्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर निमित्त को छोड़ स्वयं में लीन हैं।
क्रोध कषायें तजकर वे स्वाधीन हैं।।461।।

ॐ ह्रीं साधु जीवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवात्मा है गुण के ये भंडार जी।
तप संयम जो करे होयेगा पार जी।।462।।

ॐ ह्रीं साधु जीव गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा रहे जीव जग में सदा।
यही शुद्ध है भाव अशुभ को ना कहा।।463।।

ॐ ह्रीं साधु चेतन गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन तन को संयम से यदि बाँधना।
मुक्ति पुरी को जाये जीव जब साधना।।464।।

ॐ ह्रीं साधु चेतन स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविनाशी है मुक्ती का पद धारते।
सारा जीवन मुक्ति पाने वारते।।465।।

ॐ ह्रीं साधु चेतनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमातम की आश करे परकाश है।
भववासी को तज मुक्ति आवास है।।466।।

ॐ ह्रीं साधु परमात्म प्रकाशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल दीप जगा जगमग है ये जहाँ।

गुण पर्यय है जीव संग में ये जहाँ।।467।।

ॐ ह्रीं साधु ज्योति स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबको शरण में लेय पंथ दर्शावते।

ज्ञान-ज्योति नित जगा शरण में आवते।।468।।

ॐ ह्रीं साधु ज्योति प्रदीपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान तिमिर को निश दिन ही तुम नाशते।

अंधियारा कर दूर आत्म परकाशते।।469।।

ॐ ह्रीं साधु दर्शन ज्योति प्रदीपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस आत्म ज्योति का तेज जगत का तम हरे।

देखे लोका लोक जगत का भ्रम हरे।।470।।

ॐ ह्रीं साधु ज्ञान ज्योति प्रदीपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म ज्योति को जगा ज्योतिषी है बने।

सकल चराचर लोक दिखे सुख है घने।।471।।

ॐ ह्रीं साधु आत्म ज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव सागर कर पार लक्ष्य को पा लिया।

साधु तारण हार मुक्ति अपना लिया।।472।।

ॐ ह्रीं साधु शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व साधु के चरणा शीश झुकावते।

है सौभाग्य हमारा चरणों आवते।।473।।

ॐ ह्रीं साधु सर्व शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमते सतत ज्ञान में निशदिन साधु जी।

नीरस ले आहार बनेना स्वाद जी।।474।।

ॐ ह्रीं साधु लोक शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव देवियाँ आये चरण सेवा करे।

सब त्रिलोक के शरणा आ भक्ति करें।।475।।

ॐ ह्रीं साधु त्रिलोक शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छंद

गहरा संसार का सागर, धर्मो से खाली गागर।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।476।।

ॐ ह्रीं साधु संसार छेदकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक क्षेत्र असंख्य है रहते, पर अपने सुख में रमते।
पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।477।।

ॐ ह्रीं साधु एकत्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरण ज्ञानी बन आये, आकर के हमें जगाये।
पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।478।।

ॐ ह्रीं साधु एकत्वगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकत्व द्रव्य को जाना, तन मन तज कर रम जाना।
पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।479।।

ॐ ह्रीं साधु एकत्व द्रव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समभाव से शरणा देते, एकत्व स्वरूप में रहते।
पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।480।।

ॐ ह्रीं साधु एकत्व स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो परम ब्रह्म शुभ ज्ञानी, आतम पाया अभिरामी।
पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।481।।

ॐ ह्रीं साधु परम ब्रह्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्याद्वाद कथन को करते, ना झगड़ा कोई करते।
पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।482।।

ॐ ह्रीं साधु परम स्याद्वादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विकृत विकल्प को त्यागा, हो शुद्ध ब्रह्म जिनराजा।
पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।483।।

ॐ ह्रीं साधु शुद्ध ब्रह्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगम घर हो परमागम, मिट जाये आगम से गम।
पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।484।।

ॐ ह्रीं साधु परमागमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर जो भी बोले, जिनवाणी बनकर तौले।
पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।485।।

ॐ ह्रीं साधु जिनागमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तु का तत्व है जाना, फिर स्याद्वाद व्याख्याना।
पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।486।।

ॐ ह्रीं साधु अनेकार्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु लोभ क्षोभ हटाया, शुभ शौच धर्म प्रगटाया।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।487।।

ॐ ह्रीं साधु शौचाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या मोही मल छोड़ा, पावनता से मन जोड़ा।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।488।।

ॐ ह्रीं साधु शुचित्व गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुछ अंश करम कर हीना, जीवन पवित्र कर लीना।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।489।।

ॐ ह्रीं साधु पवित्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बंधन विमुक्त हो रहते, बंधन नाही वे सहते।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।490।।

ॐ ह्रीं साधु विमुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है शुद्ध द्रव्य अविकारी, दर्शन की मेरी बारी।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।491।।

ॐ ह्रीं साधुबन्धमुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

बदली से सूरज निकले, त्यों कर्म से आतम हट ले।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।492।।

ॐ ह्रीं साधुबन्धप्रतिबन्धकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

साधु का ध्यान लगाओ, संवर पा धर्म बढ़ाओ।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।493।।

ॐ ह्रीं साधुसंवरकारणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

तप से सब कर्म खिपाओ, आतम के गुण प्रकटाओ।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।494।।

ॐ ह्रीं साधुनिर्जराद्रव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

क्षण भर को ध्यान लगावे, निर्जर निमित्त बन जावे।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।495।।

ॐ ह्रीं साधुनिर्जरानिमित्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

तप घोर किया दिन रैना, भागे हैं करम सुख चैना।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।496।।

ॐ ह्रीं साधुनिर्जरागुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

संसार निमित्त दुख देवे, साधु दर्शन सुख देवे।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।497।।

ॐ ह्रीं साधुनिमित्तमुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

मिथ्या कारण को नाशे, सम्यक पा आत्म विकासे।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।498।।

ॐ ह्रीं साधुबोधधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

है अति विशुद्ध परिणाम, तप ध्यान से पाये विराम।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।499।।

ॐ ह्रीं साधुबोधगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सुगति में मुनि को जाना, फिर मोक्ष परम पद पाना।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।500।।

ॐ ह्रीं साधुसुगतिभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

महार्घ्य

दोहा

छिपा आत्म प्रगटाय कर, पाया केवल ज्ञान।

ऐसे ही भगवान को, सदा करूँ प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छन्द

उत्कृष्ट भावना भाई, उत्कृष्ट गति को पाई।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।501।।

ॐ ह्रीं साधुकरमगतिभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

गुरु निज स्वभाव को पाया, औ पर विभाव विघटाया।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।502।।

ॐ ह्रीं साधुविभावरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

आनंदमयी भव पाया, शुभ आतम रूप सुहाया।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।503।।

ॐ ह्रीं साधुस्वभाव सहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ध्यानी वो ध्यान में ध्यावे, जो मुक्ति को ही चाहे।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।504।।

ॐ ह्रीं साधुमोक्षस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

विकृत विकल्प हटाये, परमानन्द को वे पाये।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।505।।

ॐ ह्रीं साधुपरमानन्दानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वे पूज्य परम पद पावे, अर्हं पद ज्योति जगावे।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।506।।

ॐ ह्रीं साधु-अर्हत्स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शिवधाम सिद्ध ही जावे, आनन्द धाम को पावे।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।507।।

ॐ ह्रीं साधुसिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वे स्वयं चले चलवावे, सबको ही मार्ग दिखावे।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।508।।

ॐ ह्रीं साधुसूरिप्रकाशिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वे ज्ञान ध्यान को करते, आगम को ध्या सुख भरते।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।509।।

ॐ ह्रीं साधु-उपाध्यायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

है पंच परम सुख देवा, वे नाव हमारी खेवा।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।510।।

ॐ ह्रीं साधु-अर्हतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

विघ्नों का ताप नशावे, निज आतम में रम जावे।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।511।।

ॐ ह्रीं साधुआत्मरतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

रत्नत्रयधारी भगवन, मैं पड़ूँ तुम्हारे चरणन।

पूजा कल्याण का कारण, पूजा दुख करे निवारण।।512।।

ॐ ह्रीं साधु-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुरत्नत्रयात्मकानंतगुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

पूर्णार्घ्य-गीता छंद

पांचों परम पद धारी जिनवर, आप जग के वीर हैं।
गुणगान उनका कर लिया, भव्यों के वे महावीर है॥
अनुभूति मम आतम की होवे, ध्यान में नित ध्याउँगा।
होवे समाधि मरण मेरा, भावना नित भाउँगा॥

ॐ ह्रीं द्वादशाधिक पंचाशतदलौपरि स्थित सिद्धेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

परमेष्ठी सुखकार है, आतम हित में लीन।
गुणमाला वर्णन करूँ, पावे मोक्ष प्रवीण॥

शेरचाल (हे दीन बंधु)

कर्मों को काट आपने उद्धार कर लिया।
वरदान देके भक्तों का उपकार कर दिया॥
हे वीतरागी देव तुम्हें शीश झुकाऊँ।
निर्दोष हो परमात्म तुम्हें शीश नवाऊँ॥1॥
चऊ कर्म को नाशा तो वे अरिहंत बन गए।
उपदेश दे सत्पथ दिखा भगवंत बन गए॥
वाणी जो खिरी आपकी जिनवाणी बन गई।
भक्तों ने उसे ध्याया तो कल्याणी बन गई॥2॥
हो अष्ट कर्म नाश तो मुक्ति में जा बसे।
पाकर के कष्ट गुण सभी, कर्मों को हैं कसे॥
हे सिद्ध शिला वासी तुम्हें नमस्कार है।
हो आत्म के प्रकाशी तुम्हें नमस्कार है॥3॥
आचार्य पथ पे चलते हैं, शिष्यों को चलाते।
हैं कर्म विजेता बड़े, शिष्यों को बनाते॥
वे वाणी ऐसी बोलते, अमृत सदा बरसे।
सब वाणी सुनने के लिए, फिर से जिसे तरसे॥4॥
अज्ञान का अंधेरा तीनों लोक में छाया।
भटकाये जगत प्राणियों को भौतिकी माया॥

अज्ञान हटा ज्ञान का परकाश कर दिया।
पाठक है ज्ञानधारी सबको ज्ञान दे दिया॥5॥
वे साधना में लीन हो, तप त्याग ही करें।
है मुक्ति की चाह सदा, नाहीं कुछ करें॥
उज्ज्वल है आत्मा, सदा उसको निखारते।
है पूर्व के जो कर्म, साथ में निवारते॥6॥
जब दर्श को जाओ तो वो बस ध्यान में मिलें।
कर्मों की बेड़ियों को काट ज्ञान में खिलें॥
मैं सर्व साधुओं की नित्य बंद ना करूँ।
मैं दर्श ज्ञान करता रहूँ वंद ना करूँ॥7॥
होते हैं भूतकाल में, औ वर्त में हुए।
होंगे भविष्य काल में, हम चरण को छुएं॥
हम तन के मैल धोए, किन्तु मन रहा मैला।
इस मन को धोने को, चरण में आया है चेला॥8॥
कितने ही जन्म हमने, भोगों में खो दिये।
पुण्यों का फल था नरतन, विषयों में खो दिये॥
पंछी बनी है आत्मा, पिंजरा किया है बंद।
कर्मों के जाल तोड़ोंगे, मिल जाएगा आनन्द॥9॥
सौभाग्य से कल्याणकारी देव हैं मिलें।
कर्मों को नाशने को, गुरुदेव हैं मिलें॥
बस जाओ प्रभु मन में, मेरे ध्यान मैं करूँ।
हृदय में नहीं आप तो, बताओ क्या करूँ॥10॥
जब ज्ञान का दीपक जले, तब मार्ग मिलेगा।
काटेंगे कर्म डोरी, आना जाना मिटेगा॥
अमृतमयी है नाम प्रभु सुधा पिलाओ।
मुझको भी शीघ्र जगत छुड़ा मुक्ति दिलाओ॥11॥
संसार की माया ने प्रभो मुझको भ्रमाया।
तव नाम भी जपूँ मैं किन्तु ज्ञान ना आया॥
विषयों में बार-बार ये मन दौड़ के जाता।
मैं पास बुलाता हूँ किन्तु पास न आता॥12॥

इच्छायें सारी पूरी की पुरुषार्थ किया है।
इच्छाओं ने ही हे प्रभु बरबाद किया है।।
ना फूल मिले कांटे ही बस जग ये चुभाये।
हम चोट खाके बार-बार सम्भल ना पाये।।13।।
ये दर तेरा भक्तों को मुक्ति राह दिखाता।
ये दर तेरा भक्तों को नित्य सौख्य दिलाता।।
ये दर तेरा भक्तों को ही परमात्म बनाता।
ये दर तेरा भक्तों को ही सत्पथ पे चलाता।।14।।
इच्छायें मेरी दूर हो संतोष दीजिये।
फूलों की खुशबुओं से मेरा मन भरीजिये।।
कर्मों की बेड़ियों को प्रभु काट दीजिये।
है कर्म के सतायें प्रभो ध्यान दीजिये।।15।।
क्या लाया हूँ ले जाऊँगा ये साथ में प्रभो।
शुभ कर्म ही साथी बनेंगे मार्ग में प्रभो।।
अपने समान ही बना मुक्ति में भेजिए।
'स्वस्ति' को पास में बुला वरदान दीजिये।।16।।

दोहा

तप अग्नि में कर्म को, नित्य ही खूब तपाएं।
अष्ट कर्म सब नष्ट हो, शत् शत् शीश नवाएँ।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिक पंचशतदलोपरिस्थित सिद्धेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन है अर्पण किया, किया समर्पण आज।
पुष्पांजलि से पूजते, पूजे सकल समाज।।

इत्याशीर्वादः

जाप्य मंत्र

(यहाँ 108 बार 'ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा नमः' मंत्र का जाप करें)

अष्टम् पूजा

गीता छंद

स्थापना

त्रैलोक्य में जिनराज सम, ना कोई है जग में बड़ा।
सब इन्द्र नर चरणों में आकर, हाथ जोड़े है खड़ा।।
उत्कृष्ट भावों को बना, भक्ति चरण ही हम करें।
आओ प्रभो हृदय विराजो, पुष्प अर्पित हम करें।।

दोहा

भाव शुद्ध लेकर प्रभो, पूजा को हम आये।
सिद्धचक्र पूजा करें, शत्-शत् शीश झुकाये।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिन्! चतुर्विंशत्यधिकैकसहस्रगुणसहितविराजमान अत्रावतरावत संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

शंभू छंद

जल

जल से अब तक तन धोता था, पर मन को मैला छोड़ दिया।
मन से चिन्ता और पाप किये, भक्ति और ध्यान को छोड़ दिया।।
ज्ञानामृत जल को लेकर के, आतम मल धोने आये हैं।
हम शुद्ध होये औ सिद्ध बने, चरणों में शीश झुकाये हैं।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशत्यधिकैकसहस्रगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

चंदन

शीतल है चन्दन से ज्यादा, यह ज्ञानमयी आतम मेरा।
ईर्ष्या अग्नि संताप देय, निशदिन करता तेरा मेरा।।
भावों का चन्दन लेकर के, भवताप नशाने आये हैं।
हम शुद्ध होंय औ सिद्ध बनें, चरणों में शीश झुकाये हैं।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशत्यधिकैकसहस्रगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

अक्षत

अक्षयवत पद को पाकर के मैं, पग-पग अभिमान किया करता।
उज्जवल अक्षय पद अविनाशी, उस पर ना ध्यान किया करता॥
मोती से अक्षत लेकर के, अक्षय पद पाने आये हैं।
हे सिद्ध प्रभु हम सिद्ध बने, वरदान की आश लगाये हैं॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशत्यधिकैकसहस्रगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

पुष्प

बागों में पुष्पों पर भंवरे, खूशबू पाने को आते हैं।
मन्दिर में शुद्धातम भगवन, आतम की खुशबू पाते हैं॥
मम आतम की खुशबू फैले, यह पुष्प चढ़ाने आये हैं।
हे सिद्ध प्रभु! हम सिद्ध बने, वरदान की आश लगाये हैं॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशत्यधिकैकसहस्रगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने काम बाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

नैवेद्य

जग में भोजन का अवलंबन, जीने का साधन माना है।
इन्द्रिय सुख को पा भ्रमित हुआ, आतम को ना पहिचाना है॥
आतम की तृप्ति पाने को, चरणों नैवेद्य चढ़ाते हैं।
हे सिद्ध प्रभु! हम सिद्ध बने, चरणों में शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशत्यधिकैकसहस्रगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

दीप

भौतिक उजियाला फैल गया, कुछ सत्य समझ ना आता है।
जग में ही बस उलझा रहता, प्रभु आतम ध्यान ही भाता है॥
मुक्ति पथ पर उजियाला हो, यह दीप चढ़ाने आये हैं।
हे सिद्ध प्रभु! हम सिद्ध बने, वरदान की आश लगाये हैं॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशत्यधिकैकसहस्रगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोह अन्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

धूप

आठों कर्मों से रिश्तों ने, भोगी बन हमें भुलाया है।
कर्मों की गठरी को लेकर, संसार में नित्य घुमाया है॥
आठों कर्मों का धुँआ उड़े, यह धूप चढ़ाने आये हैं।
हे सिद्ध प्रभु हम सिद्ध बनें, वरदान की आश लगाये हैं॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशत्यधिकैकसहस्रगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

फल

पूजा तो फल के कारण की, आतम हित न पहचाना है।
संसार सुखों की इच्छा में, मुक्ति पथ को ना जाना है॥
सर्वोत्कृष्ट फल तीर्थंकर, इसको पाने हम आये हैं।
हे सिद्ध प्रभु! हम सिद्ध बने, वरदान की आश लगाये हैं॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशत्यधिकैकसहस्रगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

अर्घ्य

झूठी काया झूठी माया, झूठा है जग का ये मेला।
पल-पल में पल यह बीतेगा, अंतिम पल में दुःख है झेला॥
तज राग द्वेष मद मोह सभी, ये अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।
हे सिद्ध प्रभु! हम सिद्ध बने, वरदान की आश लगाये हैं॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशत्यधिकैकसहस्रगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अनर्ध पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

प्रत्येक अर्घ्य

गीता छन्द

चारों चतुष्टय धारकर, लक्ष्मी चरण में आई है।
शुभ दिव्य ध्वनि होती वहाँ, जहाँ भक्ति मन को भायी है॥
निर्लिप्त निश्छल हो प्रभु, होकर प्रभावित आया हूँ।
मैं वंदना नित ही करूँ, आनन्द अनुभव पाया हूँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीमते नमः अर्घ्यं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सामर्थ्य ऐसा पाया है, शिष्यत्व को नाहीं लिया।
होकर 'स्वयंभू' आप भगवन, स्वयं शरणा पा लिया।।
निर्लिप्त निश्छल हो...।।2।।

ॐ ह्रीं स्वयंभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धर्म के धारी हुये, औ वृषभ नामी हो गये।
संसार तज तप-त्याग कर, तुम मुक्तिधामी हो गये।।
निर्लिप्त निश्छल हो...।।3।।

ॐ ह्रीं वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंभव' बने सम भव किया, समता के धारी हो प्रभु।
पथ मुक्ति का सबको दिखाकर, मुक्तिगामी हो विभो।।
निर्लिप्त निश्छल हो...।।4।।

ॐ ह्रीं शम्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रिय विषय को छोड़कर, निज आत्म रस को पा लिया।
शंभु बने परमात्मा, निज आत्म का अमृत पिया।।
निर्लिप्त निश्छल हो...।।5।।

ॐ ह्रीं शम्भवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धात्मा है ज्ञानमय, वह 'आत्मभू' कहलायेगी।
इस आत्म का दर्शन करे, वह मुक्ति सुख को पायेगी।।
निर्लिप्त निश्छल हो...।।6।।

ॐ ह्रीं आत्मभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आलोक करते ज्ञान से, अज्ञान करते दूर हो।
त्रैलोक्य भी फिर जगमगे, आनंद से भरपूर हो।।
निर्लिप्त निश्छल हो...।।7।।

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सामर्थ्य से जब तप किया, 'प्रभु' शक्तिधारी बन गये।
मन शुद्धि कर ली भ्रान्ति हर, भगवान जिनवर बन गये।।
निर्लिप्त निश्छल हो...।।8।।

ॐ ह्रीं प्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर है जग के भोग सब, जो भोग आतम नित करे।
'भोक्ता' शुभी आनन्द पाकर, नित्य आतम हित करे॥
निर्लिप्त निश्छल हो प्रभु, होकर प्रभावित आया हूँ।
मैं वंदना नित ही करूँ, आनन्द अनुभव पाया हूँ॥9॥

ॐ ह्रीं भोक्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस विश्व का मंगल करो, मंगलमयी शुभ भावना।
हो 'विश्व भू' भगवान मेरे, बस यही है कामना॥
निर्लिप्त निश्छल हो...॥10॥

ॐ ह्रीं विश्वभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लेकर जनम जग में दुबारा, आप ना फिर आयेंगे।
'अपुर्नभवः' हो आप जिनवर, मुक्ति सुख को पायेंगे॥
निर्लिप्त निश्छल हो...॥11॥

ॐ ह्रीं अपुनर्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब एक सी है आत्मा, अनुभव सभी इकसा करें।
उपलब्धि है 'विश्वात्मा' जो धर्म का अमृत भरें॥
निर्लिप्त निश्छल हो...॥12॥

ॐ ह्रीं विश्वात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीव के ईश्वर हुये, उत्कृष्ट पद को पा लिया।
हो 'विश्व के लोकेश' जिनवर, श्रमण पद अपना लिया॥
निर्लिप्त निश्छल हो...॥13॥

ॐ ह्रीं विश्वलोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतज्ञानी हैं वे ज्ञान से, त्रिलोक का दर्शन करे।
हो 'विश्वतश्चक्षु' तुम्ही, सब कर्म का घर्षण करे॥
निर्लिप्त निश्छल हो...॥14॥

ॐ ह्रीं विश्वतश्चक्षुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अक्षर' हुये क्षय नाहीं होते, आप अक्षय धन्य हो।
मन इंद्रियों को वश में करते, आत्म दर्शन गम्य हो॥
निर्लिप्त निश्छल हो...॥15॥

ॐ ह्रीं अक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान केवल ये सभी को, आप सब कुछ देखते।
हो 'विश्ववित' भगवान मेरे, आप सबकुछ लेखते॥
निर्लिप्त निश्छल हो...॥16॥

ॐ ह्रीं विश्वविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यायें सारी आयकर, जिनदेव के दर्शन करें।
हो 'विश्व के विद्येश' जिनवर, हम चरण वंदन करें॥
निर्लिप्त निश्छल हो...॥17॥

ॐ ह्रीं विश्वविद्येशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपदेश तत्वों का करो, उत्पत्ति के कारण तुम्हीं।
हो 'विश्वयोनि' विश्वजन्मा, रश्मि के कारण तुम्हीं॥
निर्लिप्त निश्छल हो...॥18॥

ॐ ह्रीं विश्वयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर नहीं आतम अखंडित, क्षय कभी ना होयेगा।
हो 'अनश्वर' आप जिनवर, बीज मुक्ति के बोयेगा॥
निर्लिप्त निश्छल हो...॥19॥

ॐ ह्रीं अनश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु नहीं पर आत्मा से, लोक सारा जानते।
हो 'विश्व दृष्टा' आप ही, जिन श्रेष्ठ तुमको मानते॥
निर्लिप्त निश्छल हो...॥20॥

ॐ ह्रीं विश्वदृश्वने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तारण-तरण बन नाव खेते, पार भव्यों को किया।
सामर्थ्य रख बनकर 'विभु', है कष्ट सबका हर लिया॥
निर्लिप्त निश्छल हो...॥21॥

ॐ ह्रीं विभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ भाग्य सबके हैं संवारे, और तारनहार हो।
'धाता' बने साता है पाई, और पालन हार हो॥
निर्लिप्त निश्छल हो...॥22॥

ॐ ह्रीं धात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोक के ईश्वर तुम्ही, हृदय कमल में तुम बसो।
'विश्वेश' बन आओ प्रभो, ना कर्म मेरे अब कसो।।
निर्लिप्त निश्छल हो प्रभु, होकर प्रभावित आया हूँ।
मैं वंदना नित ही करूँ, आनन्द अनुभव पाया हूँ।।23।।

ॐ ह्रीं विश्वेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करुणामयी है 'विश्वलोचन', नाथ करुणा कीजिये।
संसार सागर में भटकते, प्राणी शरणा लीजिये।।
निर्लिप्त निश्छल हो...।।24।।

ॐ ह्रीं विश्वलोचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कण-कण में प्रभुवर हो समाये, 'विश्व व्यापी' नाम है।
है सूक्ष्म दृष्टि आपकी, मुक्तिपुरी शिव धाम है।।
निर्लिप्त निश्छल हो...।।25।।

ॐ ह्रीं विश्वव्यापिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छंद

'विधु' धरती पर जब आये, रत्नों मय दीप जलाये।
हम नाम आपका ध्यायें, कर्मों को दूर भगाये।।26।।

ॐ ह्रीं विधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फिर ज्ञान ज्योति परकाशी, हो 'वेधा' नाम के 'वासी'।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी।।27।।

ॐ ह्रीं वेधसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत अक्षय पद धारा, छोड़ा था पर अविकारा।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी।।28।।

ॐ ह्रीं शाश्वताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंर्तमुख आतम कीना, औ 'विश्वतो मुख' को लीना।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी।।29।।

ॐ ह्रीं विश्वतोमुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समझायी कर्म व्यवस्था, 'विश्वकर्मा' की अवस्था।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी।।30।।

ॐ ह्रीं विश्वकर्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो जगत श्रेष्ठ जिनराजा, हो 'जगत् ज्येष्ठ' महाराजा।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी।।31।।

ॐ ह्रीं जगज्जेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण-गण के हो भंडारी, हो 'विश्वमूर्ति' छवि प्यारी।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी।।32।।

ॐ ह्रीं विश्वमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन-जन के हो प्रभु ईश्वर, इससे ही कहा 'जिनेश्वर'।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी।।33।।

ॐ ह्रीं जिनेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवलोकन जग करते हो, 'विश्वदृक'बन तम हरते हो।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी।।34।।

ॐ ह्रीं विश्वदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी के ईश कहाए, 'विश्वभूतेशा' नाम को पाए।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी।।35।।

ॐ ह्रीं विश्वभूतेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में करते उजियारा, हो 'विश्वज्योति' जग प्यारा।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी।।36।।

ॐ ह्रीं विश्वज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बस निज आतम को ध्याते, अरु नाम 'अनीश्वर' पाते।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी।।37।।

ॐ ह्रीं अनीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जिन' ने सब कर्म भगाए, हम इसी प्रयोजन आए।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी।।38।।

ॐ ह्रीं जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों पर शासन कीना, 'जिष्णु' है नाम नवीना।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी।।39।।

ॐ ह्रीं जिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इतने ज्यादा गुण पाये, 'अमेयात्मा' तुम कहलाये।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी।।40।।

ॐ ह्रीं अमेयात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईश्वर सबके कहलाये, हो 'विश्व रीश' बन आये।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी॥41॥

ॐ ह्रीं विश्वरीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस जग के हो प्रभु स्वामी, हो 'जगतपति' शिवगामी।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी॥42॥

ॐ ह्रीं जगत्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सुमति को आप बुलाया, है 'अनंतजित' की माया।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी॥43॥

ॐ ह्रीं अनंतजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्तन भी ना कर सकते, प्रभु 'अचिन्तय' नाम को धरते।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी॥44॥

ॐ ह्रीं अचिन्त्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'विश्वबंधु' जिनदेवा, मम जीवन के हो खेवा।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी॥45॥

ॐ ह्रीं भव्यबांधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमको ना बांध सके है, औ 'अबंधन' नाम रखे है।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी॥46॥

ॐ ह्रीं अबंधनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युग के आदि में आये, प्रभु आप 'युगादि' कहाये।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी॥47॥

ॐ ह्रीं युगादिपुरूषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म ब्रह्म के ज्ञानी, 'ब्रह्मा' हो आतम ध्यानी।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी॥48॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तव पंच ज्ञान के धारी, हो 'पंच ब्रह्ममय' न्यारी।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी॥49॥

ॐ ह्रीं पंचब्रह्ममयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोषों का हरण किया है, 'शिव' में जा वास किया है।
हो अजर अमर अविनाशी, शाश्वत नामी सन्यासी॥50॥

ॐ ह्रीं शिवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभु छंद

रक्षा सब जीवों की करके, 'पर' नाम सार्थक कर दीना।
स्वीकार करो भगवान मुझे, चरणों में शरणा ले लीना।।51।।

ॐ ह्रीं पराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परतर' बन करके तारा है, उपदेश दिया है भक्तों को।
हम भूले ना भगवन तुमको, करुणाकर तारो हम सबको।।52।।

ॐ ह्रीं परतराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु से ना दिख पाते हो, आगम चक्षु से देखा है।
हो 'सूक्ष्म' हुए इतने जिनवर, आतम से तुमको लेखा है।।53।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाया है परम पद को तुमने, 'परमेष्ठी' नाथ कहाये हो।
संग भव्यों को लेकर के ही, भव सागर पार लगाये हो।।54।।

ॐ ह्रीं परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मद मोह राग को नाशा है, अंतर विकार सब दूर हुए।
हो आप 'सनातन' हे जिनवर, भव्यों ने शिवपथ खोज लिये।।55।।

ॐ ह्रीं सनातनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम में दीप जलाया है, आतम का तम विसराया है।
हो 'स्वयं ज्योति' धारी जिनवर, ज्योति पाने यह आया है।।56।।

ॐ ह्रीं स्वयंज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस जग में दुबारा ना आयें, उत्पत्ति ना जग में होगी।
'अज' देव नाम की ख्याति से, भव्यों की बुद्धि शुभ होगी।।57।।

ॐ ह्रीं अजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में आकर न जन्मोगे, दर्शन करने मुक्ति जाना।
'अजन्मा' नाम तुम्हारा है, भक्ति से ही शीश झुकाना।।58।।

ॐ ह्रीं अजन्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वेदातीत हुये हो तुम, यह 'ब्रह्मयोनि' पायी सुखकर।
वाणी में अमृत मिलता है, दर्शन करने आये दुखहर।।59।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योनि में जन्म ना लेना है, ना जन्म के कष्ट को सहते हो।
है 'अयोनिज' नाम तुम्हारा ही, तुम तो मुक्ती में रहते हो।।60।।

ॐ ह्रीं अयोनिजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मोहारि विजय' बन मोह बली, झूठे जग का तुम मोहतजा।
आतम से प्रीति करते हो, आतम में आतम राम भजा।।61।।

ॐ ह्रीं मोहारिविजयिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीता है मृत्यु को तुमने, तब इन्द्र ने शीश झुकाया है।
शत्रु पर विजय को पाकर के, 'जेता' शुभ नाम को पाया है।।62।।

ॐ ह्रीं जेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब आप चलें सुख चलता है, औ 'धर्म चक्र' भी चलता है।
यह नाम तुम्हारा जो जपता, इससे ही जीवन पलता है।।63।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो दीन बंधु करुणा सागर, तुम 'दया ध्वजा' को फहराया।
सुनकर के सुजश तुम्हारा प्रभु, चरणों में भक्त भी है आया।।64।।

ॐ ह्रीं दयाध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब पाप शांत औ कर्म शांत, तुम नाम 'प्रशान्त अरि' पाया है।
संपूर्ण जीव शांति पावें, शांति पाने जग आया है।।65।।

ॐ ह्रीं प्रशांतारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविनाशी शिवगामी जिनका, संबंध ना जग से होता है।
हो आप 'अनंत आत्मा' भगवन, कर्मों को अपने खोता है।।66।।

ॐ ह्रीं अनन्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से योगी मन से योगी, 'योगी' बन ध्यान लगाया है।
योगों में योग परायण हो, बस योग ही तुमको भाया है।।67।।

ॐ ह्रीं योगिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगीश्वर अर्चित' है जिनवर, अर्चित है तीनों लोकों से।
गणधर मुनीवर पूजा करते, पूजित हैं सारे भक्तों से।।68।।

ॐ ह्रीं योगीश्वरार्चिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज का जब ध्यान किया तुमने, निज ब्रह्म को पहचाना है।
शुभम् 'ब्रह्मविद्' पाकर के, आतम स्वरूप को जाना है।।69।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम वेत्ता आतम ज्ञानी, औ 'ब्रह्मतत्व' के ज्ञाता हैं।
तत्वातत्व को जाना है, ध्याते ही मिलती साता है।।70।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मतत्वज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्या धन जग में उत्तम है, पर भौतिक धन की चाह करे।
'ब्रम्होद्याविद्' शुभ विज्ञानी, मुक्ति पथ के सब शूल हरे।।71।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मोद्याविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यतियों ने ईश्वर माना है, यति की सब पूजा करते हैं।
हो आप 'यतीश्वर' हे जिनवर, सबके कर्मों को हरते हैं।।72।।

ॐ ह्रीं यतीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कर्मों को ही धोया है, आतम की शुद्धि कर लीनी।
हो आप 'शुद्ध' गुणगण विशुद्ध, दृष्टि चरणन में धर दीनी।।73।।

ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्वों के ज्ञाता हो भगवन, औ 'बुद्ध' नाम के धारी हो।
बुद्धि की शुद्धि कर देते, सद्गुण के आप सम्हारी हो।।74।।

ॐ ह्रीं बुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम गुण आभूषण से जिन, आतम को श्रृंगारित कीना।
हो 'प्रबुद्धात्मा' जिनवर जी, आतम भी पावन कर दीना।।75।।

ॐ ह्रीं प्रबुद्धात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुजंग प्रयात (तर्जः नरेन्द्रं फणीन्द्रं...)

सिद्धी करी नाम 'सिद्धार्थ' पाया, ऋद्धि ने आकर के शीश झुकाया।
श्रद्धा करें आस्था को बढ़ाये, मिले सौख्य शांति चरण सिर नवाये।।76।।

ॐ ह्रीं सिद्धार्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं 'सिद्ध शासन' तुम्हीं शांतिदाता।
तुम्हारे चरण में ही मिलती है साता।।
श्रद्धा करें आस्था....।।77।।

ॐ ह्रीं सिद्धशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुये कार्य कारण तो, तप को बढ़ाया।
बने 'सिद्ध' आत्मा, सुखों की है छाया।।
श्रद्धा करें आस्था....।।78।।

ॐ ह्रीं सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धांत ज्ञाता, जगत के हो स्वामी।
'सिद्धांत विद्' बन हुये मुक्ति दानी।।
श्रद्धा करें आस्था का बढ़ाय।
मिले सौख्य शांति चरण सिर नवायें।।79।।

ॐ ह्रीं सिद्धांतविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बना 'ध्येय' तुमको, सदा ध्यान कीना।
ध्याता तुम्हीं हो, सदा सौख्य लीना।।
श्रद्धा करें आस्था....।।80।।

ॐ ह्रीं ध्येयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बना 'साध्य' मुक्ति को, साधन मिलाते।
औ भव्यों के हृदय को आकर खिलाते।।
श्रद्धा करें आस्था....।।81।।

ॐ ह्रीं सिद्धसाध्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों का हित ही सदां चाहते हो।
'जगद्धित' स्वामी, सदा ध्यावते हो।।
श्रद्धा करें आस्था....।।82।।

ॐ ह्रीं जगद्धिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमा गुण के धारी, 'सहिष्णु' बने हो।
हुये आप ज्ञाता, ओ ज्ञानी बने हो।।
श्रद्धा करें आस्था....।।83।।

ॐ ह्रीं सहिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अच्युत' बने, ना ही भावों को छोड़े।
ना च्युत होके मुक्ति से, मुक्ति को दौड़े।।
श्रद्धा करें आस्था....।।84।।

ॐ ह्रीं अच्युताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतों गुणों को समाहित किया है।
औ नामा 'अनंत' को सार्थक किया है।।
श्रद्धा करें आस्था....।।85।।

ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समरथ के धारी हो, 'प्रभविष्णु' छाया।
हुये है प्रभावित, जगत की ही माया।।

श्रद्धा करें आस्था....॥86॥

ॐ ह्रीं प्रभविष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत श्रेष्ठ जन्मे, 'भवोद्भव' हुये हो।
परम ज्ञान धारी, हो आतम हुये हो॥
श्रद्धा करें आस्था....॥87॥

ॐ ह्रीं भवोद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतुल शक्ति पाई, अतुल शक्ति धारी।
'प्रभुष्णू' हो जिनवर, सदा सौख्य कारी॥
श्रद्धा करें आस्था....॥88॥

ॐ ह्रीं प्रभुष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुढ़ापे के कष्टों को, ना आप पाये।
हुये हो 'अजर' देव, दुख ना सताये॥
श्रद्धा करें आस्था....॥89॥

ॐ ह्रीं अजराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीरण जरा आप, जग में ना होते।
होकर 'अजर्रा' नहीं रोग लेते॥
श्रद्धा करें आस्था....॥90॥

ॐ ह्रीं अजर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजातम में ज्योति, सदा ज्ञान जागे।
'भ्राजिष्णु' से तम, सदा दूर भागे॥
श्रद्धा करें आस्था....॥91॥

ॐ ह्रीं भ्राजिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्तों ने माना है ईश्वर तुम्हीं को।
हो 'धीश्वर' बने जिन, अदीश्वर तुम्हीं हो॥
श्रद्धा करें आस्था....॥92॥

ॐ ह्रीं धीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा ध्रौव्य रहते, नहीं व्यय भी होता।
'अव्यय' बने सौख्य, आतम में रहता॥
श्रद्धा करें आस्था....॥93॥

ॐ ह्रीं अव्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों को छोड़ा, बने मुक्ति वासी।

तप अग्नि में तप, 'विभावसु' साथी॥
श्रद्धा करें आस्था का बढ़ाय।
मिले सौख्य शांति चरण सिर नवायें॥94॥

ॐ ह्रीं विभाववसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत में दुबारा नहीं आप आये।
'असंभूष्णू' धारा, सदा ही बहाये॥
श्रद्धा करें आस्था....॥95॥

ॐ ह्रीं असम्भूष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण आतम का वैभव समाया।
'स्वयम्भूष्णु' सा शुद्ध, जो नाम पाया॥
श्रद्धा करें आस्था....॥96॥

ॐ ह्रीं स्वयंभूष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राचीन होने 'पुरातन' कहाये।
सदा द्रव्य दृष्टि, को आतम सुहाये॥
श्रद्धा करें आस्था....॥97॥

ॐ ह्रीं पुरातनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम ध्यान कीना, परम पद को पाया।
बने परम 'आत्मा', है आनंद छाया॥
श्रद्धा करें आस्था....॥98॥

ॐ ह्रीं परमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्कृष्ट ज्योति से तम को भगाया।
'परम ज्योति' पायी, सदा ध्यान ध्याया॥
श्रद्धा करें आस्था....॥99॥

ॐ ह्रीं परंज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्रम् फणीन्द्रम् तुम्हें सिर झुकाये।
हुये 'परमेश्वर', करम को खिपाये॥
श्रद्धा करें आस्था....॥100॥

ॐ ह्रीं त्रिजगत्परमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाअर्घ

शंभू छन्द

हम क्रोध कलह में व्यस्त रहे, आतम का धर्म ना समझा है।
आतम अपकारी कार्य किये, स्वःधर्म का मर्म ना समझा है।।
चिन्तन करते हो सहनशील, यह भाव चरण में लाया हूँ।
इक सहस अर्घ्य लेकर प्रभुवर, मैं इसे चढ़ाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

दिव्य ध्वनि में प्रवचन होता, दिव्य भाव सुन आनंद होता।
'दिव्य भाषा पति' बन कर आये, चरणों में हम शीश झुकाये।।101।।

ॐ ह्रीं दिव्यभाषापतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दिव्य' तनु जिनवर का होता, सुर नर लख हर्षित मन होता।
दिव्य रूप दिव्यात्मा ध्याये, चरणों में हम शीश झुकाये।।102।।

ॐ ह्रीं दिव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूतवाक्' वाणी को पाकर, वाणी अमृत मय बरसाकर।
हित-मित वाणी पावन करती, जीवन में यह सावन भरती।।103।।

ॐ ह्रीं पूतवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शासन है सबसे उत्तम, पुण्योदय में मिले समागम।
जिन 'पूत शासन' नाम धराया, भक्त चरण ध्याने को आया।।104।।

ॐ ह्रीं पूतशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन अपना आतम कीना, पावन तन मन भी कर लीना।
'पूतात्मा' शुभ फूल खिलाये, खुशबू से सबको महकाये।।105।।

ॐ ह्रीं पूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में फैला है उजियाला, जग मग ज्योति ज्ञान का प्याला।
'परम ज्योति' है नाम तुम्हारा, भक्तों को मिल जाये सहारा।।106।।

ॐ ह्रीं परम ज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो अध्यक्ष कार्य जब करते, कर्म सभी भक्तों के हरते।
'धर्माध्यक्ष' दया को करना, भक्तों की झोली को भरना।।107।।

ॐ ह्रीं धर्माध्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रिय दमन महासुखकारी, इच्छाओं पर हुआ प्रहारी।
आप 'दमीश्वर' हो जिनदेवा, करुँ चरण की मैं नित सेवा।।108।।

ॐ ह्रीं दमीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग लक्ष्मी ने पीछा कीना, पर आतम श्री को पा लीना।
'श्री पति' हो प्रभु करुणायतनम्, चरणों में नित करता वंदन।।109।।

ॐ ह्रीं श्रीपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रातिहार्य शोभा को करते, समवशरण में देव विचरते।
करुणा सागर हो 'भगवान', करते बारंबार प्रणाम।।110।।

ॐ ह्रीं भगवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ कर्मों को दूर किया है, शाश्वत सुख भरपूर लिया है।
'अर्हंत' पूजा करे तुम्हारी, भक्त शरण में आये तिहारी।।111।।

ॐ ह्रीं अर्हते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म धूल को आप उड़ाया, 'अरज' नाम शुभ आपने पाया।
'अरि रज' ना आतम में रहती, कर्म की नदियाँ अब ना बहती।।112।।

ॐ ह्रीं अरजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दोष ना टिक पाते हैं, क्रोध मान ना रुक पाते हैं।
आप "विरज" जग में रह होते, हम होने को शीश झुकाते।।113।।

ॐ ह्रीं विरजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्याग नदी स्नान किया था, आत्म 'शुद्धि' नित ध्यान किया था।
भक्ति में स्नान है करते, सर्व कर्म को आप हैं हरते।।114।।

ॐ ह्रीं शुचये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं तरे और सबको तारे, तीर्थ बना कर आप निहारे।
'तीरथकृत' तीर्थंकर जिनवर, रूप आपका मनहर-मनहर।।115।।

ॐ ह्रीं तीर्थकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान के बल पर केवल पाया, 'केवल' नाम को आप धराया।
केवल ज्ञानी केवल धारक, कर्मरूप के आप निवारक।।116।।

ॐ ह्रीं केवलिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहमिन्द्रों से पूजित तुम हो, सुर इन्द्रों से अर्चित तुम हो।
आप 'ईशान' नाम को धारा, नाम जपे तो पाये किनारा।।117।।

ॐ ह्रीं ईशानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा करने के लायक हो, प्राणीजन को सुखदायक हो।
नाम 'पूजहि' को है पाया, भक्त चरण में शीश झुकाया।।118।।

ॐ ह्रीं पूजार्हाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान पूर्ण था पूरनमासी, आप बने सिद्धालय वासी।
'स्नातक' प्रभु सिद्ध हुये हैं, जग में आप प्रसिद्ध हुये हैं।।119।।

ॐ ह्रीं स्नातकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल जल सम निर्मल ज्ञानी, कर्म धूल तज निर्मल प्राणी।
'अमल' हुये हो जग मल धोया, भक्तों ने शुभ बीज को बोया।।120।।

ॐ ह्रीं अमलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किरण बनी आभा तन निकले, दिव्य तेज लख नयन में रखलें।
'अनंत दीप्ति' हो गुण मणि आगर, जग में आप हो ज्ञान दिवाकर।।121।।

ॐ ह्रीं अनंतदीप्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानमयी है आतम तेरा, भेद तजा था मेरा तेरा।
'ज्ञानात्मा' बन केवल पाया, सुख पाने को शीश झुकाया।।122।।

ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्ध सुबुद्धि स्वयं ही पाई, 'स्वयं बुद्ध' की उपमा गाई।
स्वयं बने गुरू ज्ञान को पाया, सुख पाने को शीश झुकाया।।123।।

ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्यार प्रजा को हर पल देते, आप प्रजा से कुछ ना लेते।
'प्रजापति' तुम बन कर आये, भक्तों ने गुण तुमरे गाये।।124।।

ॐ ह्रीं प्रजापतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म बंध को नाशा स्वामी, आप हुये हो अंतर्यामी।
'मुक्ति' में विश्राम है करना, भक्तों को भवसागर तरना।।125।।

ॐ ह्रीं मुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छंद

भक्त भक्ति करें शक्ति उपजायेगा।
'शक्त' लिया है, शक्ति को पायेगा।।126।।

ॐ ह्रीं शक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाधा सारी दूर, कार्य सब होते हैं।

'निराबाध' है नाम, शुभम सब होते हैं।।127।।

ॐ ह्रीं निराबाधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्याकुलता को छोड़, निराकुल हो गये।

'कवलाहार' तज हार शक्ति को पा गये।।128।।

ॐ ह्रीं निष्कलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीनबंधु हो आप, सुरक्षा कीजिये।

'भुवनेश्वर' है नाम, सु आनंद दीजिये।।129।।

ॐ ह्रीं भुवनेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म रूप अंजन, को आकर धो दिया।

आप 'निरंजन' देव, मुक्ति पथ पा लिया।।130।।

ॐ ह्रीं निरंजनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योति निज की जगी, आत्म तम मिट गया।

'जगज्ज्योति' जिनराज, अंधेरा घट गया।।131।।

ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों का सदुपयोग, किया है आपने।

'निरुक्तोक्ति' शुभ नाम, लिया है आपने।।132।।

ॐ ह्रीं निरूक्तोक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्याधि से हो रहित, पाप से दूर है।

होय 'निरामय' नाम, जाप भरपूर है।।133।।

ॐ ह्रीं निरामयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन भुवन में रहे, किन्तु स्थिर रहे।

'अचल स्थिति' नाम, कर्म सब हैं बहे।।134।।

ॐ ह्रीं अचलस्थितये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सागर सम चित शांत, किन्चित क्षोभित नहीं।

नाम 'अक्षोभ्य' पाय, हुए हो मोहित नहीं।।135।।

ॐ ह्रीं अक्षोभ्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कूट-कूट में हो बने, नाम है लोकशिखर

'कूटस्थ' नाम को धार, बने हो तुम ईश्वर।।136।।

ॐ ह्रीं कूटस्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकशिखर में रहे, नहीं कुछ काम है।

'स्थाणु' है नाम, लिया विश्राम है॥137॥

ॐ ह्रीं स्थाणवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय का क्षय तो, कभी ना होता है।
'अक्षय' पुर का वास, कहीं ना जाता है॥138॥

ॐ ह्रीं अक्षयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगे-आगे तुम, पीछे संसार है।
नाम 'अग्रणी' पाय, किया विस्तार है॥139॥

ॐ ह्रीं अग्रण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों को पथ दिखलाया है आप ने।
नाम 'ग्रामणी' हुआ, बताया है इन्द्र ने॥140॥

ॐ ह्रीं ग्रामण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति पथ पर स्वयं, चलें उपदेश दे।
'नेता' नाम को पाये, दिगम्बर वेश में॥141॥

ॐ ह्रीं नेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगम की रचना भी करते आप है।
नाम 'प्रणेता' हुआ, किया परताप है॥142॥

ॐ ह्रीं प्रणेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करे न्याय, अन्याय, कभी ना करते हैं।
'न्याय शास्त्रवित' नाम कभी ना डरते हैं॥143॥

ॐ ह्रीं न्यायशास्त्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मधुर हुई वाणी, हैं देते उपदेश वे।
'शास्ता' अनुपम नाम, मुक्ति के वेश में॥144॥

ॐ ह्रीं शास्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईश्वर संज्ञा पाये, 'धर्मपति' हो गये।
दश धर्मों को धार, उसी में खो गये॥145॥

ॐ ह्रीं धर्मपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म धर्म को धार, 'धार्म्य' कहलाये हैं।
भक्त भक्ति से ध्याय, मुक्ति को पाये हैं॥146॥

ॐ ह्रीं धर्म्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म रंग में रंगे, आत्म दर्शन किया।

'धर्मात्मा' है नाम, पाप को तज दिया।।147।।

ॐ ह्रीं धर्मात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म तीर्थ निर्माण, किया है आपने।
'धर्मतीर्थकृत' नाम लिया है आपने।।148।।

ॐ ह्रीं धर्मतीर्थकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृषभ चिन्ह को पाय, ध्वजा लहरायेगी।
'वृषभध्वज' है नाम, मुक्ति में जायेगी।।149।।

ॐ ह्रीं वृषध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म अहिंसा पाल, धर्म धारण किया।
'वृषाधीश' शुभनाम, आप कारण लिया।।150।।

ॐ ह्रीं वृषाधीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

'वृषकेतु' ही जगत में, धर्म ध्वजा लहराए।
भक्तिवश भक्ति करे, पाप तत्व नश जाए।।151।।

ॐ ह्रीं वृषकेतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के शत्रु नशे, भव के ताप नशाऐं।
नाम 'वृषायुध' को लिया, धर्म शास्त्र बन जाए।।152।।

ॐ ह्रीं वृषायुधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृत नित्य ही पीवते, आनंदित दिन रैन।
'वृष' धारी दिनकर तुम्ही, पावे आतम चैन।।153।।

ॐ ह्रीं वृषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वृषपति' हो जिन धर्म के, देवे शांति अपार।
ध्यान धरें मन में सभी, पावें मुक्ति द्वार।।154।।

ॐ ह्रीं वृषपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों का पोषण करे, 'भर्तृ' नाम को धार।
कष्ट दूर कर दो मेरे, मिले ज्ञान का सार।।155।।

ॐ ह्रीं भर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बैल चिन्ह चिन्हित करे, 'वृषभांक' शुभ नाम।
जन्म मरण मेटो मेरा, बारंबार प्रणाम।।156।।

ॐ ह्रीं वृषभांकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म जन्म को दे दिया, नाम 'वृषोद्भव' पाये।
धर्म तीर्थ नायक तुम्हीं, शत-शत शीश नवाये॥157॥

ॐ ह्रीं वृषोद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण नाभि को पायकर, 'हिरण्यनाभि' कहलाये।
रत्न झरे दिन रैन ही, चरण शरण को पाये॥158॥

ॐ ह्रीं हिरण्यनाभये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म सत्य को पा लिया, 'भूतात्मा' कहलाये।
अंतर तम हर दो मेरा, हम तरने को आए॥159॥

ॐ ह्रीं भूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्षा जीवों की करे, 'भृभृत' हो जिनराज।
रक्षक बनकर आओ तुम, रक्षा करो समाज॥160॥

ॐ ह्रीं भूभृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ भावों की ज्योति से, आतम सत्य दिखाये।
'भूत भावन' शुभ नाम है, जग से मुझे बचाये॥161॥

ॐ ह्रीं भूतभावनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म समय पीड़ा नहीं, नाम 'प्रभव' सुखदाय।
जन्मों के बन्धन हटे, शत्-शत् शीश नवाये॥162॥

ॐ ह्रीं प्रभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म खजाने के धनी, अतिशय नित्य दिखाये।
नाम 'विभव' सार्थक हुआ, शत्-शत् शीश नवाये॥163॥

ॐ ह्रीं विभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरज सम दमके प्रभु, रहें प्रकाशक आप।
'भास्वान' शुभ शुभ है, करते तेरा जाप॥164॥

ॐ ह्रीं भास्वते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्पाद व्यय अरु ध्रौव्य से, आप अगम्य हैं जान।
नाम 'शुभाभव' को रखा, बारंबार प्रणाम॥165॥

ॐ ह्रीं भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भाव' सभी शुभ पायकर, मुक्ति पथ दर्शाय।
कृपा आपकी नित मिले, शत्-शत् शीश झुकाये॥166॥

ॐ ह्रीं भावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गति अंत करके प्रभो, नाम 'भवांतक' पाये।
कर्म नशाओ भव्यों के, मुक्ति सौख्य को पाये।।167।।

ॐ ह्रीं भवान्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ रहे जिनदेव जब, रत्न मेघ बरसाये।
'हिरण्यगर्भ' शुभनाम है, हम भी रत्न को पाये।।168।।

ॐ ह्रीं हिरण्यगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीगर्भ' में आय कर, अंतर लक्ष्मी पाये।
माता मन हर्षित हुई, यह सुख भी हम पाये।।169।।

ॐ ह्रीं श्रीगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण छाया मिले, 'प्रभूत विभव' है नाम।
ज्ञानी की संगत मिले, होवे मम कल्याण।।170।।

ॐ ह्रीं प्रभूतविभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म दुबारा हो नहीं, अंतिम में निर्वाण।
नाम 'अभव' धारी प्रभु, बारंबार प्रणाम।।171।।

ॐ ह्रीं अभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ति तन की पायकर, करी तपस्या घोर।
नाम 'स्वयंभू' के धनी, अमृत हो चहुं ओर।।172।।

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधन सुविधा को तजा, प्रभू सभी से दूर।
'प्रभूतात्मा' आप ही, सौख्य मिले भरपूर।।173।।

ॐ ह्रीं प्रभूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी के तुम नाथ हो, संकट हारी देव।
'भूतनाथ' अनमोल है, करुं तुम्हारी सेव।।174।।

ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के स्वामी तुम, 'जगत् प्रभु' जग नाथ।
मेरे भी संकट हरो, तुम्हें नवाऊँ माथ।।175।।

ॐ ह्रीं जगतप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज चौबीसी पूजा

'सर्वादि' जग में आये, गीत सदा गाते।
पूजा को तेरी पाये, हम नित हर्षाते।।

प्रभु पूजा कर्म का नाश, करके सौख्य भरे।
आनंद फूल बरसाये, सूखे वृक्ष हरे।।176।।

ॐ ह्रीं सर्वादये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो सर्वद्रक' भगवान, भक्त तुम्हें ध्यायें।
बन जाओ सहारा नाथ, हम नित सिर नायें।।
प्रभु पूजा...।177।।

ॐ ह्रीं सर्वदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पालें भक्तों को आप, 'सार्व' हो जग में।
भवसागर पार करो, करुणानिधि भव में।।
प्रभु पूजा...।178।।

ॐ ह्रीं सार्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनों जग को भगवान, संग में ही जानें।
'सर्वज्ञ' नाम को पाये, बात सभी मानें।।
प्रभु पूजा...।179।।

ॐ ह्रीं सर्वज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन तेरे भगवान, हम नित करते हैं।
हो 'सर्वदर्शन' तुम नाथ, करम को हरते हैं।।
प्रभु पूजा...।180।।

ॐ ह्रीं सर्वदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम में झलके लोक, 'सर्वात्मा' बन के।
झपकें ना पलके आप, नहि निद्रा धरके।।
प्रभु पूजा...।181।।

ॐ ह्रीं सर्वात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब वेश जगत के छोड़, वेश दिगम्बर हो।
हो 'सर्वलोकेश' भगवान, रहते अम्बर हो।।
प्रभु पूजा...।182।।

ॐ ह्रीं सर्वलोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक क्षण में जाना लोक, दर्पणवत देखा।
हो 'सर्वविद्' शुभ नाम, अमृतमय लेखा।।
प्रभु पूजा...।183।।

ॐ ह्रीं सर्वविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीता है सारा लोक, आनंद छाय गया।
हो आप 'लोकजित' नाम, मन हर्षाय गया।।

प्रभु पूजा कर्म का नाश, करके सौख्य भरे।
आनंद फूल बरसाये, सूखे वृक्ष हरे॥184॥

ॐ ह्रीं सर्वलोकजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गति 'सुगति' को पाये, गति बंधन तोड़ा।
पूजन को तेरी आये, सारा जग छोड़ा॥
प्रभु पूजा...॥185॥

ॐ ह्रीं सुगतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्तों के भाव सुनो, 'सुश्रुत्' कहलाते।
भावों से पूजें नाथ, चरणों में आते॥
प्रभु पूजा...॥186॥

ॐ ह्रीं सुश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुनने का अतिशय नाथ, संग सभी सुनते।
'सुश्रुत' भी होकर आप, निजातम में रहते॥
प्रभु पूजा...॥187॥

ॐ ह्रीं सुश्रुते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम वचनों की धार, आप बहाते हो।
निर्भय 'सुवाक्' भगवान, आप ना डरते हो॥
प्रभु पूजा...॥188॥

ॐ ह्रीं सुवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु जन भी शीश झुकाये, 'सूरी' आप हुये।
गुरुदेव तुम्ही भगवान, आकर चरण छुये॥
प्रभु पूजा...॥189॥

ॐ ह्रीं सूरये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी की बहती धार, जिनवाणी बनती।
'बहुश्रुत' के धारण हार, विपदायें टलती॥
प्रभु पूजा...॥190॥

ॐ ह्रीं बहुश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पणवत देखे लोक, 'विश्रुत' के ज्ञानी।
विख्यात हुये हैं आप, आतम के ध्यानी॥
प्रभु पूजा...॥191॥

ॐ ह्रीं विश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल की किरणें फैल, भक्त बनाती हैं।
है 'विश्वतःपाद' भगवान, शुद्ध कराती हैं॥
प्रभु पूजा...॥192॥

ॐ ह्रीं विश्वतःपादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'विश्वशीर्ष' जिनदेव, गुण के हो आगर।
प्रभु दया के हैं भंडार, भरदो ये गागर॥
प्रभु पूजा...॥193॥

ॐ ह्रीं विश्वशीर्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों की शुद्धि आप, मंत्र से करते हो।
है 'शुचिश्रवा' शुभ नाम, अमृत भरते हो॥
प्रभु पूजा...॥194॥

ॐ ह्रीं शुचिश्रवसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो अनंत सौख्य भंडार, सुख की कमी नहीं।
है 'सहस्त्र शीर्षा' शुभ नाम, धरती जमी नहीं॥
प्रभु पूजा...॥195॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रशीर्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम शुद्धि का ध्यान, निशदिन करते हो।
'क्षेत्रज्ञ' नाम को धार, झोली भरते हो॥
प्रभु पूजा...॥196॥

ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक सहस वस्तु को आप, इक क्षण में देखे।
'सहस्त्रादा' को धार, आतम को लेखे॥
प्रभु पूजा...॥197॥

ॐ ह्रीं सहस्त्राक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ति के हैं भंडार, सबको सुख देवा।
है 'सहस्त्रपात' शुभ नाम, करते हम सेवा॥
प्रभु पूजा...॥198॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रपदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भूत भव्यः भवद् भर्त्ता', आनंदित होते।
कर्मों के सेवन हार, कर्मों को खोते॥
प्रभु पूजा...॥199॥

ॐ ह्रीं भूतभव्यभवद् नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्याधारी के ईश, प्रभु जी कहलाते।

'विश्व विद्या महेश्वर' देव, जग को बहलाते॥
प्रभु पूजा कर्म का नाश, करके सौख्य भरे।
आनंद फूल बरसाये, सूखे वृक्ष हरे॥200॥

ॐ ह्रीं विश्वविद्यामहेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाअर्घ

शंभु छंद

ज्यों चंदा गगन में शेभित हो, ज्यों सूर्य प्रकाशित होता है।
त्यों जिन भगवन जी भक्तों के, जिन भक्त हृदय में बहता है॥
ज्योर्तिमय महा रतन जैसे, चम-चम उजियाला करता है।
वैसे आतम का दीप जगे, त्यों आतम का तम हरता है॥
हम सहस नाम की पूजा कर, भक्ति के भाव बढ़ाते हैं।
भावों का अर्घ्य संजो करके, चरणों मे अर्घ्य चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः सहस्र नामभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मुक्तिपुर के नाथ हो, भक्तों के भगवान।
'भगवत' हो जिनवर तुम्हीं, बारंबार प्रणाम॥201॥

ॐ ह्रीं अर्हं भगवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्त तुम्हें नित पूजता, निशदिन करता सेव।
कर्मों का नित क्षय करो, मिले सौख्य का मेव॥202॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव से पूजते, सुर नर और नरेन्द्र।
'महाअर्घ' के नाम को, पूजे सब देवेन्द्र॥203॥

ॐ ह्रीं अर्हं महार्घ्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर इन्द्रन हैं संग में, अहमिन्द्रन भी आये।
मन तन से पूजा करी, शत्-शत् शीश नवाये॥204॥

ॐ ह्रीं अर्हं मधवार्चिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्यों की पर्याय को, और गुणों को जान।
एक समय में देखते, 'महापुरुष' भगवान॥205॥

ॐ ह्रीं अर्हं भूतार्थयज्ञपुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पण सम तुम ज्ञान में, झलके सारा लोक।
बचा नहीं कुछ भी प्रभो, नमूँ हरे सब शोक॥206॥

ॐ ह्रीं अर्हं भूतार्थयज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुष बने पुरूषार्थ से, 'पुरुषोत्तम' है नाम।
सबके स्वामी आप हो, बारंबार प्रणाम॥207॥

ॐ ह्रीं अर्हं भूतार्थकृतपुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं-स्वयं दीक्षा धरी, स्वयं-स्वयं के नाथ।
गणधर मुनिवर पूजते, नित्य नमावे माथ॥208॥

ॐ ह्रीं अर्हं पूज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव देवियाँ नित प्रति, पूजे अर्घ्य चढ़ाय।
मिथ्या अंधियारा भगा, शत्-शत् शीश नवाये॥209॥

ॐ ह्रीं अर्हं भट्टारकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति गामी पूजते, पूजे सकल समाज।
सर्वश्रेष्ठ जग में तुम्हीं, प्रभु हैं सबके ताज॥210॥

ॐ ह्रीं अर्हं तत्रभवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर महान माने तुम्हें, इन्द्र भी शीश झुकाय।
योग तीन से पूजते, शत्-शत् शीश झुकाय॥211॥

ॐ ह्रीं अर्हं अत्रभवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञानी हो प्रभो, केवल दो वरदान।
'महा' नाम को पूजते, मिले सौख्य का दान॥212॥

ॐ ह्रीं अर्हं महते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महापूज्य पूजा करे, जाये ना कहिं और।
'महा अर्ह' को पूजते, मिले मुक्ति का ठौर॥213॥

ॐ ह्रीं अर्हं महार्हाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मुक्ति का वास है, काल अनंताजान।
चिरजीवी गुणवान हो, बारंबार प्रणाम॥214॥

ॐ ह्रीं अर्हं तत्रायुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म मृत्यु तज मुक्ति ले, काल अनंता जान।
'दीर्घायु' शुभ नाम को, बारंबार प्रणाम॥215॥

ॐ ह्रीं अर्हं दीर्घायुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्व अर्थ उपदेश में, सारा आगम ज्ञान।

धर्म मार्ग बतलावते, हो आतम का भान॥216॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्थवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्त तुम्हें नित ध्यावते, भक्तों के आराध्य।

हृदय में तुमको बसा, सिद्ध होय सब काज॥217॥

ॐ ह्रीं अर्हं सज्जनवल्लभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति सौख्य को पायकर, आतम आनंद आये।

'परमाध्याय' को ध्यावते, हम भी मुक्ति जाये॥218॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमाराध्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ जन्म तप ज्ञान औ, कल्याणक निर्वाण।

इन्द्र देव हर्षित मना, बारंबार प्रणाम॥219॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणपूजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हस्त रेख सम जानते, सारा लोकालोक।

दर्शन शुद्धि कर तुम्हीं, गये हो मुक्ति लोक॥220॥

ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविशुद्धिगुणोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म को नष्ट कर, अष्टम वसुधा पाये।

अष्ट गुणों सुर पूजते, हम भी आस लगाये॥221॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुरार्चिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्विकार निष्काम हो, वीतरागता धार।

सुख सागर में वास कर, मिला आत्म का सार॥222॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुखदात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग मोक्ष पथ आपने, अनुपम दिया दिखाय।

दीप्त तेज इतना बढ़ा, शिष्य मुक्ति में जाये॥223॥

ॐ ह्रीं अर्हं दिवौजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शची मात सेवा करे, जब तुम गर्भ में आये।

षट्कुमारी संग साथ में, कर मन में हर्षाय॥224॥

ॐ ह्रीं अर्हं शचीसेवितमातृकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम प्रभु उत्तम गरभ, उत्तम है स्थान।
रत्नराशि बरसी महा, शत्-शत् बार प्रणाम।।225।।

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज सोलह कारण

पावन गर्भ में जिनवर आय, सेवा कर सुर नर हर्षाय।
पावन नाम, जिनवर जी का पावन नाम।।
एक सहस नामों के अर्घ्य, चरण चढ़ा पाऊँ अपवर्ग।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम।।226।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूतगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ पूर्व उत्सव हैं हुये, सुर नर आकर चरणन छुये।
पावन नाम मेरे प्रभु का पावन नाम।।
एक सहस...।।227।।

ॐ ह्रीं अर्हं गर्भोत्सवसहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलकारी गीत सुनाय, मंगलमय पृथ्वी हर्षाय।
पावन नाम मेरे प्रभु का पावन नाम।।
एक सहस...।।228।।

ॐ ह्रीं अर्हं नित्योपचारोपचरिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि किरणों से कमल खिलाय, त्यों केवल की लक्ष्मी पाये।
पावन नाम मेरे प्रभु का पावन नाम।।
एक सहस...।।229।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म रहित, आतम मल धोय, शुद्ध सिद्ध आतम अविलोय।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम।।
एक सहस...।।230।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व संग पर 'स्वयं स्वभाव', रमते न दूजे के भाव।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम।।
एक सहस...।।231।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंस्वभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा, मंत्र, अर्चना सार, इन सबके प्रभु जी आधार।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम।।
एक सहस नामों के अर्घ्य, चरण चढ़ा पाऊँ अपवर्ग।।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम।।232।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वीयजन्मेन नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष मन वांछित दाय, त्यों जिनवर जग पुण्य बढ़ाय।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम।।
एक सहस...।।233।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि ज्यों जग का तम हर लेय, त्यों प्रभु ज्ञानी कर्म हरेय।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम।।
एक सहस...।।234।।

ॐ ह्रीं अर्हं भास्वते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव करे चरणन की सेव, जग में आपहि हो महादेव।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम।।
एक सहस...।।235।।

ॐ ह्रीं अर्हं अद्भुतदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पण सम निर्मल तुम ज्ञान, सर्व विश्व दिखता भगवान।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम।
एक सहस...।।236।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वज्ञातृसम्भृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्चे ज्ञानी हैं भगवान, 'विश्व देव' माने इंसान।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम।।
एक सहस...।।237।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म जरा मृत्यु को नाश, सृष्टि को सुख दे अविनाश।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम।।
एक सहस...।।238।।

ॐ ह्रीं अर्हं सृष्टिनिर्वृत्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर रूप महासुखकार, 'सहस नेत्र' देखे मनहार।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम।।

एक सहस...॥239॥

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्राक्षदृगुत्सवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पा संपूर्ण शक्ति को आप, पाने प्रभु हम करते जाप।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम॥
एक सहस...॥240॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वशक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐरावत पर हो आसीन, इन्द्र नृत्य करता प्राचीन।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम॥
एक सहस...॥241॥

ॐ ह्रीं अर्हं देवैरावतासीनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नील गगन आकाश से आये, सुर नर चारण दर्शन पाये।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम॥
एक सहस...॥242॥

ॐ ह्रीं अर्हं हर्षाकुलामरखगचारणर्षिमतोत्सवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् काय के रक्षण आये, शरणागत संकट नश जाये।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम॥
एक सहस...॥243॥

ॐ ह्रीं अर्हं विष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जा सुमेर अभिषेक कराय, सुर इन्द्रों से नृत्य कराय।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम॥
एक सहस...॥244॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्नानपीठैतादृसराजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर जी जहाँ रूक जायें, तीर्थ वहाँ निश्चित बन जाये।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम॥
एक सहस...॥245॥

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थसामान्यदुग्दाब्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र देव स्नान कराय,पर जिन आतम को धुलवाये।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम॥
एक सहस...॥246॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्नानाम्बूस्वावासवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तारण तरण जिनवर हो आप, तीन लोक में हो विख्यात।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम॥

एक सहस नामों के अर्घ्य, चरण चढ़ा पाऊँ अपवर्ग।।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम।।247।।

ॐ ह्रीं अर्हं गन्धपवित्रितत्रिलोकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म वस्तु हो या स्थूल, देखे सब ना करते भूल।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम।।
एक सहस...।।248।।

ॐ ह्रीं अर्हं वज्रसूचये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म धूल रज हो अविकार, 'शुचिश्रवा' हो आतम सार।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम।।
एक सहस...।।249।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुचिश्रवसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म तजे हो कर्मनहार कृत कृतार्थ बंदूं सुखकार।
पावन नाम, मेरे प्रभु का पावन नाम।।
एक सहस...।।250।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृतार्थकृतहस्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्धरि

हम जिनवर जी की करें सेव, हो कर्म नाश का मिले मेव।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।251।।

ॐ ह्रीं अर्हं शक्रेष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब इन्द्र मगन हो नृत्य करे, कर्मों की कड़ियाँ शीघ्र हरे।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।252।।

ॐ ह्रीं अर्हं इन्द्रनृत्यतृप्तिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शची इन्द्र ध्यान में हुए लीन, नहिं काम दास जग में प्रवीण।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।253।।

ॐ ह्रीं अर्हं शचीविस्मापिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लख कर प्रभु को हर्षित होता, आनंदित हो संकट खोता।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।254।।

ॐ ह्रीं अर्हं शक्ररब्धानंदनृत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनवांछित दाता है महान, मैं करता हूँ शत्-शत् प्रणाम।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।255।।

ॐ ह्रीं अर्हं रैदपूर्णमनोरथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आज्ञा हेतु है इन्द्र खड़ा, सेवक बन चरणों आन पड़ा।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।256।।

ॐ ह्रीं अर्हं आज्ञार्थीन्द्रकृतसेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों में हो प्रभु महादेव, सब देव करें तुम चरण सेव।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।257।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवश्रेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊँचे इतने ना नाप सके, आतम का ही नित स्वाद चखे।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।258।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिवौद्यमानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'जगत्पूज्य शिवनाथ' प्रभो, हो उपदेशक शिवनाथ विभो।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।259।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पूज्यशिवनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब चार घातिया घात दिये, तब केवल ज्ञान को आप लिये।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।260।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपदेश होय जिनवर महान, है समवशरण सुंदर सुजान।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।261।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुवेररचितस्थानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भौतिक धन तो नश जाता है, शुभ ज्ञान हृदय बस जाता है।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।262।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तश्रीजुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर आदि पूजा करते, औ परम हृदय में है धरते।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।263।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगीश्वरार्चिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमको मन मे जो ध्याता हैं, वह ब्रह्म ज्ञान को पाता है।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।264।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सर्व तत्व को जाना है, इससे ही जगत 'प्रधाना' है।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।265।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मतत्त्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो यज्ञ होय तो स्वामी आप, कटते संकट हर जाये पाप।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।266।।

ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति को वर शिवनाथ बने, आठों कर्मों को आप हने।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।267।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिवनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर कार्य पूर्ण भगवान बने, हो 'कृतकृत्या' सब सिद्ध घने।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।268।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृतकृत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर बिन कभी न यज्ञ होय, 'यज्ञांग' नाम को आप पाये।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।269।।

ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यु को नश अमृत सुपाये, शरणागत पाल अमर बनाये।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।270।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये भक्त भक्ति से करे 'यज्ञ', मिथ्या तजकर हो जाये प्रज्ञ।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।271।।

ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तु विशेष सामान्य होय, सबको जाने जिनवर विलोय।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।272।।

ॐ ह्रीं अर्हं वस्तुत्पादकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब इन्द्र स्तुति नित करेय, काले कर्मों को सब हरेय।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।273।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्तुतीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपने भावों में लीन रहो, शुभ 'भाव' में तुम आसीन रहो।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।274।।

ॐ ह्रीं अर्हं भावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम तीन लोक के नाथ बने, त्रिलोक के ही सिरताज बने।
भक्तों के संकट तुम नशाओ, हृदय में आ जिनवर समाओ।।275।।

ॐ ह्रीं अर्हं महपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभंगी

त्रिभुवन के स्वामी, अंतर्यामी, इन्द्र देव सेवा करते।
सब पाप नशायें, यज्ञ करायें, इन्द्र देव रक्षा करते॥276॥
ॐ ह्रीं अर्हं महायज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपदेश दिया था, ज्ञान लिया था, परमेश्वर जिनवर स्वामी।
सत्पथ को पाया, ज्ञान समाया, भक्तों के अंतर्यामी॥277॥
ॐ ह्रीं अर्हं अग्रयाजकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोक में पूजित, भक्त से गुंजित, भक्त शरण में आये हैं
पुरुषार्थ किया था, ध्यान लिया था, इससे मुक्ति पाये हैं॥278॥
ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पूज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो दया के सागर, गुणमणि आगर, पाप मैल को धोते हो।
हो ब्रह्म के ज्ञानी, आत्म के ध्यानी, आतम में नित रहते हो॥279॥
ॐ ह्रीं अर्हं दयापराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा सब करते, कर्म को हरते, प्रभु पूजा के योग्य हुए।
साधु भी ध्यावे, ध्यान लगावे, आकर के नित चरण हुए॥280॥
ॐ ह्रीं अर्हं पूज्यार्हाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वांछित दाता, मेट असाता, भक्त तुम्हारे आये हैं।
अर्चित हो जग से, चलके पग से, तुम्हें मनाने आये हैं॥281॥
ॐ ह्रीं अर्हं जगदार्चिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों के देवा, करुं मैं सेवा, गद्-गद् हृदय हमारा है।
हो सुख के हेतु, ध्यान के सेतु, पावन रूप तुम्हारा है॥282॥
ॐ ह्रीं अर्हं देवाधिदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह इन्द्र भक्त है, भक्त शक्त है, इसके सम ना पूजा है।
हर आज्ञा पालें, मुकुटों वाले, करें आपकी पूजा है॥283॥
ॐ ह्रीं अर्हं शक्रार्चिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर क्षण नित ध्याते, शीश झुकाते, देव सभी सेवा करते।
सुख सारे पाये, शीश झुकाये, दुष्ट कर्म सब ही हरते॥284॥
ॐ ह्रीं अर्हं देवदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोक के गुरुवर, हैं ये जिनवर, दुविधा ना मन में कोई।
सुर पशु नित ध्यावे, चरण में आवे, तन में ना व्याधि कोई॥285॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगद्गुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य पधारे, आत्म निहारे, नमस्कार नित करते हैं।
जिनवर की वाणी, है कल्याणी, दुष्ट अरि को नशते हैं।।286।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवसंघाचार्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह ज्ञान की लक्ष्मी, सुख की रश्मि, कमल के जैसे खिलती है।
शुभ आत्म सुगंधित, सुर नर वंदित, भाग्य से ही तो मिलती है।।287।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मनन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय ध्वज फहराते, विजय को पाते, तीन लोक में यश फैला।
मैं चरण को वंदूँ, नित अभिनंदूँ, टूटे कर्मों का जाला।।288।।

ॐ ह्रीं अर्हं जयध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का भामंडल, होवे मंगल, जगमग ज्योति फैल रही।
पूरण का चंदा, चरणन बंदा, किरणें चम-चम खेल रही।।289।।

ॐ ह्रीं अर्हं भामण्डलिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर चमर ढुराते, भक्ति बढ़ाते, सेवा में नित लीन रहे।
प्रभु आप विभूति, आत्मानुभूति, हरदम आप प्रवीण रहे।।290।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुःषष्टीचामराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुदुंभी के बाजे, संग में साजे, जय-जय कार भी गूंज रही।
जग आप प्रसिद्धि, आपकी सिद्धि, खुशबू के सम फैल रही।।291।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवदुदुंभिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी जिनवाणी, है कल्याणी, सबको राह दिखाती है।
भ्रम तम को नाशा, आत्म प्रकाशा, सत्पथ पर ले जाती है।।292।।

ॐ ह्रीं अर्हं वाड्स्पष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धनपति की रचना, सौख्य संरचना, समवशरण शुभ शोभ रहा।
स्व आसन राजे, अचल विराजे, जिन का रूप भी मोह रहा।।293।।

ॐ ह्रीं अर्हं लब्धासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्रों की छाया, छूटी माया, भव्य जीव नित सेव करें।
छाया में बैठे, आपको देखे, अपने-अपने कर्म हरें।।294।।

ॐ ह्रीं अर्हं छत्रत्रयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की वृष्टि, आपकी दृष्टि, तीन बार निश दिन होती।
शुभ खूशबू फैले, पास में रहले, सर्व दुखों को यह खोती।।295।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पवृष्टये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह वृक्ष अशोका, हरता शोका, सुन्दर हो लहराय रहा।
सब शोक निवारण, जिनवर कारण, पूजा में मम चित्त बहा।।296।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्याशोकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानी जब जाता, मान गलाता, मान स्तंभ शोभा पाये।
कुमति को हरता, सुमति भरता, चरणों में भक्ति गाये।।297।।

ॐ ह्रीं अर्हं मानस्थम्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संगीत के द्वारा, गान तुम्हारा, सुर नर स्वर से गाते हैं।
गुण गण बढ़ जाते, पुण्य बढ़ाते, चरणों शीश झुकाते हैं।।298।।

ॐ ह्रीं अर्हं संगीतार्हाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमय मंगल, है ये मंगल, आठ रूप में शोभ रहा।
प्रभु हरो अमंगल, कर्म का जंगल, धीरे-धीरे छूट रहा।।299।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टमंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संग धर्म चक्र है, साथ शक्र है, तीर्थंकर जिनदेव महान।
भविजन को तारे, कर्म निवारे, चरणन में नित करे प्रणाम।।300।।

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थचक्रवर्तिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

शंभू छन्द

इस जिंदगानी में जीवों से, मृत्यु का भी इक नाता है।
जो समझदार हैं ज्ञान रूप, उसको ही मिलती साता है।।
मृत्यु को प्रभु निर्वाण बना, औ मोक्षपुरी जा वास करें।
अर्घ्यों से हम पूजा करते, मुक्ति की हम भी आश करें।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः त्रि सहस नामावलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर चाल

सम्यक्त्व परम गाढ़ जो पाया है आपने।
शंका मिटी संशय मिटे जो किया जाप ने।।301।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्त्ता तुम्हीं हों जगत को भी मोक्ष दिखाया।

ब्रम्हा तुम्हीं, भक्तों को आत्म ज्ञान सिखाया।।302।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम के सत्य सूर्य को ही आप उगाया।
श्रावक औ साधु पाथ का शुभ ज्ञान कराया।।303।।

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थभर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराज धर्म तीर्थ बन के, राह पे चले।
उनके हो स्वामी आप धर्म तीर्थ बना ले।।304।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्म तीर्थेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है तीर्थ जग में और भी पर आप हो प्रधान।
भक्तों को तारते हो करें आपको प्रणाम।।305।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश भेद हैं धर्मों के इसे आप पालते।
उत्तम विधि से पालके सत्पथ पे चालते।।306।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थयुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सागार औ अनगार का उपदेश दे दिया।
हो तीर्थ जग के आप ही वरदान दे दिया।।307

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये धर्म आपसे ही प्रभु जगत में फैला।
वाणी को आपकी प्रभु गणधर ने है झेला।।308।।

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थप्रवर्त्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तारण-तरण हो आप भक्त सिंधु पार हो।
नायक हो तीन लोक के, बस आत्म प्यार हो।।309।।

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थवेधसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज धर्म के सारे विधान आप बनाये।
आगम को पढ़ के भव्य जीव मुक्ति में जाये।।310।।

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थविधायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म धार जो भी भव्य ध्यान लगाते।
जाकर के स्वर्ग मोक्ष को वे सौख्य बढ़ाते।।311।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यतीर्थकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बस आपका ये धर्म पालने के योग्य है।

बस आपका ये धर्म धारणे के योग्य है॥312॥

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थसेव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार के सागर में नाव पार लगाते।
बनकर के तीर्थ भव्य जीव मुक्ति में जाते॥313॥

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थतारकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह सत्य के प्रकाश ने, हर आत्म जगाया।
रस्ता दिखाये मोक्ष का, औ पार लगाया॥314॥

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यवाक्याधिपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य धारी हो के 'सत्य शासन' कीना।
संकेत दिया भव्यों को, शुभ भाव नवीना॥315॥

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आपके शासन में रहें कर्म खिपायें।
अतिशय करें भव्यों को नित्य दर्श दिखायें॥316॥

ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप अपेक्षा कथन का सार बताते।
'स्याद्वाद' है जिनधर्म का ही रूप दिखाते॥317॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्याद्वादिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो करके नित्य ओंकार वाणी खिरे है।
सुर नर सभी समझे ही नित्य जगत तिरे है॥318॥

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यध्वनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम नय प्रमाण की कली को फूल बनाते।
दुर्नय को हत सुनय के साथ खूशबू उड़ाते॥319॥

ॐ ह्रीं अर्हं अव्याहतार्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते पवित्र आत्मा औ सबकी कराते।
भव्यों के पुण्य के भंडार आप भराते॥320॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तत्व अर्थ का ही ज्ञान आप कराया।
सम्यक्त्व से अमरता मिले ज्ञान बढ़ाया॥321॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्थवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दिव्य वाणी आपकी अमृतमयी खिरती।

निश्चय से भव्य जीव के सब कर्म को हरती।।322।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्द्धमागधीयुक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यात्मा को इष्ट हो के मुक्ति दिलावे।
शिव पथ की राह को दिखा के सौख्य बढ़ावे।।323।।

ॐ ह्रीं अर्हं इष्टवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकान्त नहीं करते कोई वस्तु का कथन।
हैं आप 'अनेकान्त' से ही बोलते प्रथम।।324।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनेकांतदर्शिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्नय का पंथ जीव को संसार भ्रमावे।
दुर्नय का पंथ छोड़ सुनय सौख्य दिलावे।।325।।

ॐ ह्रीं अर्हं दुर्नयांतकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छन्द

एकांत मिथ्यातम निविड़, संसार पथ का शूल है।
स्याद्वाद का दीपक जला, मुक्ति ही सुख का मूल है।।326।।

ॐ ह्रीं अर्हं एकांतध्वांतभिदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो तत्व मुक्ति को बता, शिवराह पथ में सहज है।
उपदेश तत्वों का दिया, जो फूल की ही सेज है।।327।।

ॐ ह्रीं अर्हं तत्त्ववाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जीव पुद्गल भिन्न है, संग में कभी न होयेंगे।
यह जान कर के ही प्रभु, जग में कभी ना आयेंगे।।328।।

ॐ ह्रीं अर्हं पथक्कृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्याद्वाद धर्मों की ध्वजा,लेकर जगत फहरायी है।
निर्विघ्न शांति दान दो, भक्तों की टोली आयी है।।329।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्यात्कारध्वजावाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार सागर पार हो, जिनवाणी का उपदेश है।
सम्यक्त्व पा करके सभी, पाये दिगम्बर वेश है।।330।।

ॐ ह्रीं अर्हं वाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप पुरुषाकार हो, पर द्रव्य दृष्टि है नहीं।
पर्याय की कथनी कहे, पर आत्म धन पावे सही।।331।।

ॐ ह्रीं अर्हं अपौरुषेयवाचेनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वाणी ऐसी बोलते है, ओंठ तव हिलते नहीं।
उद्योत मुक्ति पथ करे, कहीं और वे जाते नहीं।।332।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचलोष्ठवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शाश्वत' हुये अविनाशी हो, प्रभु परम पद को पावते।
'शाश्वत' दिला दो मुक्ति मुझको, चरण शीश झुकावते।।333।।

ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न कम हुए ज्यादा नहीं, 'अविरूद्ध' रूप स्वभाव है।
बस एक सुन्दर रूप पाया, बस एक सुन्दर भाव है।।334।।

ॐ ह्रीं अर्हं अविरुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सप्त भंगो से कथन, हर तत्व वस्तु का करें।
आतम स्वरुपी ज्ञान रुपी, आत्म में अमृत भरें।।335।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तभंगीवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न वर्णमाला ना ही अक्षर, पूर्ण आगम को कहे।
श्रद्धान कर भक्ति सुनाकर, भव्य सब परीषह सहे।।336।।

ॐ ह्रीं अर्हं अवर्णगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाषा महा लघु रूप होती, दिव्य ध्वनि अंदर रहे।
होकर समाहित ॐ में, आगम सहित इसमें बहे।।337।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वभाषामयगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छूटे ना कोई भी विषय, सब दिव्य ध्वनि में दे दिया।
श्रद्धान भक्तों ने किया, निज आत्म का अमृत पिया।।338।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तिगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होवे कहीं ना भंग, तव वाणी बड़ी अनमोल है।
सब एक धारा में बहे, ना टूटती यह बेल है।।339।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमोघवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब वस्तु तत्व के भेद कहते, औ अनंत पर्याय भी।
मतिमान बनकर ज्ञान ले लो, और गुण पर्याय भी।।340।।

ॐ ह्रीं अर्हं अवाच्यानन्तवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्णन प्रभु जी आपका, वचनों के द्वारा है नहीं।
गणधर मुनिवर मिल के गाये, तो भी पूरा हो नहीं।।341।।

ॐ ह्रीं अर्हं अवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप जैसा ज्ञान, अज्ञानी का हो सकता नहीं।
मेटो कुमति दे दो सुमति, यह भक्त चरणा है सही।।342।।

ॐ ह्रीं अर्हं अद्वैतगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है सत्य मन औ सत्य वच, काया भी सत्य प्रमाण है।
भक्ति में सारे भक्त ध्याते, करते तुम्हें प्रणाम हैं।।343।।

ॐ ह्रीं अर्हं सूनृतगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना सत्य है न असत्य है, अनुभव वचन भगवान है।
है दिव्य ध्वनि ये दिव्य वाणी, को करे प्रणाम है।।344।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यानुभयगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या हटा सम्यक् बताते, मिथ्यात्व गिरि को है गिरा।
सत्यार्थ वाणी पाके भविजन, जग में आ फिर नहिं फिरा।।345।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ एक योजन क्षेत्र में, वाणी प्रभु की जाती है।
सुर नर पशु हर्षाय पीते, गीत सखियाँ गाती हैं।।346।।

ॐ ह्रीं अर्हं योजनव्यापिगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में बहे शुभ क्षीर सम, वह रुधिर श्वेत समान है।
वात्सल्य भावों को बताता, प्रेम का परिणाम है।।347।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षीरगौरगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उन्नत सकल शुभ भाव पाकर, आप तीर्थंकर भये।
शुभ तत्व ना तजते कभी, इससे ही तुम मुक्ति गये।।348।।

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंतत्त्वगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मिली पर्याय जब तो, कार्य 'परमारथ' किये।
तज के सकल संसार को, निज आत्म रथ में चढ़ गये।।349।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमार्थगवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों ने जब वाणी सुनी तो, सुखद अनुभव पाया है।
मैं वन्दना जिन की करुँ, भक्तों का मन हर्षाया है।।350।।

ॐ ह्रीं अर्हं भव्यैकश्रवणगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छन्द

संशय और विभ्रम त्यागे, आतम से आतम जागे।
मुक्ति पथ शूल हटाये, मुक्ति के फूल खिलाये।।351।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्‌गवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी से तुमको जाने, श्रद्धा से तुमको माने।
मुक्ति पथ शूल हटाये, मुक्ति के फूल खिलाये।।352।।

ॐ ह्रीं अर्हं चित्रगवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमारथ को समझावें, गंभीर वाणी से गावें।
मुक्ति पथ शूल हटाये, मुक्ति के फूल खिलाये।।353।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमार्थगवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी में अमृत बहता, भक्तों के खेद को हरता।
मुक्ति पथ शूल हटाये, मुक्ति के फूल खिलाये।।354।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशांतगवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रश्नों के उत्तर देते, उत्तर में सबकुछ कहते।
मुक्ति पथ शूल हटाये, मुक्ति के फूल खिलाये।।354।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्राश्निकगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक का दीप जगाया, मिथ्यात्व रंग हरवाया।मुक्ति...।।356।।

ॐ ह्रीं अर्हं याज्युश्रुतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञानी सुश्रुत होते, वाणी में अमृत देते। मुक्ति.....।।357।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाश्रुत महाज्ञानी होते, वाणी से फूल हैं झरते। मुक्ति...।।358।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाश्रुतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो धर्मश्रुति श्रुतज्ञानी, पावन है आपकी वाणी। मुक्ति...।।359।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मश्रुतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन शासन के अधिकारी, संतुष्ट भव्यजन क्यारी।मुक्ति..।।360।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कहते वह ही करते, उपदेश आचरण वरते। मुक्ति...।।361।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतधृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस धर्म को आपने पाया, दृढ़ होकर उसे निभाया।मुक्ति...।।362।।

ॐ ह्रीं अर्हं ध्रुवश्रुतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यु निर्वाण बनाया, उपदेश देय समझाया। मुक्ति....।363।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाणमार्गोपदेशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पथ स्वर्ग मोक्ष दिखलाते, मुनि श्रावक धर्म बताते। मुक्ति..॥364॥

ॐ ह्रीं अर्हं यतिश्रावकमार्गदेशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्यक्ष है ज्ञान प्रमाणो, संतुष्ट आत्माजानो। मुक्ति.....॥365॥

ॐ ह्रीं अर्हं तत्वमार्गदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बस सार तत्व ही जानो, यह ज्ञान प्रकाशक मानो। मुक्ति..॥366॥

ॐ ह्रीं अर्हं सारतत्त्व-यथार्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम परम तीर्थ बनवाया, आतम निज धर्म समाया। मुक्ति..॥367॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमोत्तमतीर्थकृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जानो सब लोक चराचर, मानो सब ज्ञान बराबर। मुक्ति...॥368॥

ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी रस को पीते, आतम में तृप्ति पाते। मुक्ति.....॥369॥

ॐ ह्रीं अर्हं वाग्मीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों पर शासन करते, शासित मुक्ति को वरते। मुक्ति..॥370॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी सार बताया, उपदेशी वाणी पाया। मुक्ति.....॥371॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मदेशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यायें ईश्वर मानें, आज्ञा पाकर श्रद्धा ने। मुक्ति....॥372॥

ॐ ह्रीं अर्हं वागीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति को वर सुख पाया, कान्ता है उसे बनाया। मुक्ति...॥373॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयीनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह धर्म अर्थ अरु युक्ति, दाता हो दे दो मुक्ति। मुक्ति...॥374॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभंगीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन वच को हृदय में झेले, नाशे मिथ्या के मेले। मुक्ति...॥375॥

ॐ ह्रीं अर्हं गिरांपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभू छन्द

इस लोक की सीमा होती है 'सिद्धि' पाने को आये हैं।
शरणागत को शरणा ले लो, चरणों में शीश झुकाए हैं।॥376॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव परीक्षा कोई करे, वे नव प्रमाण से सिद्ध हुए।
मिथ्या अंधियारी छाई रही, उजियाला पाने चरण छुए।॥377॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धवांगमयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधन अपना साधक बनकर, सिद्धों ने सिद्धी पाई है।
जो सिद्धालय में पहुँच गई, वह निर्मलता फैलाई है।।378।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंजिल पर पहुँचे हैं जिनवर, सिद्धी पा शासन करते हैं।
मन वच काया से हम उनके, चरणों में भक्ति धरते हैं।।379।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धांत शास्त्र की कर्म रेख, जीवों को नाच नचाती है।
पुरुषार्थ निरंतर जो करता, तज कर्म मुक्ति पहुँचाती है।।380।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगद्प्रसिद्धसिद्धांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धों का जाप करेंगे तो, सिद्धों सम ही बन जायेंगे।
सिद्धों सम आनन्द पा करके, मुक्ति सौख्य को पायेंगे।।381।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धमंत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपसर्ग सहे संघर्ष किये, तप ध्यान में हरदम लीन रहे।
मुक्ति की बेड़ी को काट, तब जाकर सिद्धी पाय लहे।।382।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोही का मोह जो छूटे तो, मल तज निर्मल हो जाता है।
तन-मन पावन वाणी पावन, वह स्वच्छ सिद्ध बन जाता है।।383।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुचिवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वाणी जल का कार्य करे, मन के मैलों को धोती है।
इच्छा यदि हो कल्याण करें, भक्तों को मुक्ति देती है।।384।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुचिश्रवसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा वचनों से है अगम्य, वाणी ने शक्ति ना पाई।
उक्ति को सूक्ति बना दिया, स्वस्ति' महिमा गाने आई।।385।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरुक्तोक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आज्ञा सिर माथे धारण कर, जैसे हो तंत्र विधान कोई।
भूखे को जैसे भोजन हो, भूले को जैसे राह कोई।।386।।

ॐ ह्रीं अर्हं तंत्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी जो भी बोले भगवन, वह शास्त्र धरा पर है बनता।
है न्याय शास्त्र का नाम मिले, है न्याय पाये सारी जनता।।387।।

ॐ ह्रीं अर्हं न्यायशास्त्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो सर्वश्रेष्ठ प्रभु जगती में, हो श्रेष्ठ तुम्ही भू अंबर में।
है 'महाज्येष्ठ' तुम नाम प्रभो, पायेंगे नाम चराचर में।।388।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसको मिलता है मुक्ति सुख, उसके जैसा सुख और नहीं।
बाकी तो बालक बहलाना, मिलती है सच्ची ठौर नहीं।।389।।

ॐ ह्रीं अर्हं महानन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु रविवर हो औ कविवर हो, कविता करते गणधर स्वामी।
प्रभु शब्द अर्थ में ना सीमित, आकाश गगन अंतर्यामी।।390।।

ॐ ह्रीं अर्हं कवीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों का कोई भला करे, पर तुम जैसा न कर सकता।
षट्काय जीव रक्षा करते, तुम जैसा भक्त ही बन सकता।।391।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दानी जब दान करे जग में, तो अभिमान भी करता है।
हो आप मोक्ष दाता भगवन, जो महानंद से भरता है।।392।।

ॐ ह्रीं अर्हं महानंददात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है द्वादशांगश्रुत में कविता, गणधर जैसे कविवर पाये।
गुणगान करें बस तेरा ही, भक्ति करने हम भी आये।।393।।

ॐ ह्रीं अर्हं कवीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय की धारा बहती है, देवों द्वारा अतिशय होता।
भगवन के गुण को जो गाये, दुंदुभि का ही वह स्वर होता।।394।।

ॐ ह्रीं अर्हं दुंदुभीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन ज्ञाता त्रिभुवन ज्ञानी, इंद्रादिक देवों ने पूजा।
ना हम अनाथ तुम नाथ मेरे, बस भक्ति है ना कुछ दूजा।।395।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभुवननाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर मुनिवर तुम शरणा में, आकर संतोष को पाते हैं।
यह जग अनाथ हैं नाथ मिले, नाथों के नाथ कहाते हैं।।396।।

ॐ ह्रीं अर्हं महानाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टि जब सम्यक आप हुई, हर जीव में बल आतम देखा।

अपने आतम सम माना है, रक्षा करते ना कुछ लेखा॥397॥

ॐ ह्रीं अर्हं परदृष्टे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन-जन रक्षा मालिक करता, त्यों रक्षक देव हमारे हैं।
हो जगत्पति हो जगदीश्वर, भक्तों के आप सहारे हैं॥398॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावक मुनि स्वामी को पाकर, आतम की शांति पाते हैं।
यदि करते हैं पुरुषार्थ सभी, तो वे सिद्धि को पाते हैं॥399॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वामिनेनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धर्म कार्य वे करते हैं, भक्तों को साथ कराते हैं।
है ब्रह्मा वे औ विष्णु वे, हम आकर शीश झुकाते हैं॥400॥

ॐ ह्रीं अर्हं कर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

महिमा ने प्रभुवर की महिमा, भक्ति में आकर गाई है।
दर्शन दे दो आकर भगवान, दर्शन की आश लगाई है॥
कब आकर के दर्शन दोगे, चातक बन राह निहार रहे।
आओ-आओ मेरे भगवन, भक्ति से आज पुकार रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः चतुसहस नामावलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदर्श आपका हे भगवन, भक्तों ने ही अपनाया है।
चतु विध संघ के संग रहकर, जिनवर शरणा को पाया है॥401॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्विधसंघाधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैभव ना जग में तुम सम है, तुम ही सबसे धनवान प्रभो।
उद्धार भक्त का करते हो, ऐसे हो तुम भगवान विभो॥402॥

ॐ ह्रीं अर्हं अद्वितीयविभवधारकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्नों का करते हो विनाश, ऐसे हो श्रेष्ठ तुम्ही भगवन।
अपना पुरुषार्थ जगाया है, तब पूजा करते हैं चरणन॥403॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाकर अनंत बल तप कीना, शक्ति का पार न पाया है।
भक्ति करते शक्ति दे दो, स्वाधीन भाव जग आया है॥404॥

ॐ ह्रीं अर्हं अद्वितीयशक्तिधारकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबसे ज्यादा पुरुषारथ तो, मुक्ति पाने को करना है।
बनकर अधीश प्रभु जीवों के, भव सागर भक्त को तरना है।।405।।
ॐ ह्रीं अर्हं अधीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आगे-आगे चलकर भगवन, मुक्ति का पथ दिखलाया है।
चऊ संघ को लेकर साथ चले, सबको मुक्ति भिजवाया है।।406।।
ॐ ह्रीं अर्हं अधीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बिन पुरुषारथ ही शरणा में, भक्तों का आना होता है।
प्रभु सर्वाधीश हो आप गुरु, मुक्ति जाने मन होता है।।407।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वाधीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जैसे बीजों में वृक्ष छुपा, वैसे तन में आतम रहता।
यह बीज बुद्धि ऋद्धि पाते, प्रभु शरणा आता रहता।।408।।
ॐ ह्रीं अर्हं अधीशित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हो स्वयं बुद्ध, औ स्वयं सिद्ध, शुभ तीर्थों का निर्णय किया।
जहां चरण आपके पड़ जाये, तन-मन से नित हर्षाय जिया।।409।।
ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थकर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पूरण ज्ञानी पूरण ध्यानी, पूरण चेतन का भाव भरा।
पूरण पद को जब पाया है, आतम स्वभाव हो जाये हरा।।410।।
ॐ ह्रीं अर्हं पूर्णपद प्राप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तीनों लोकों में सुख जितना, वह एक मात्र सब तुम पाओ।
वर ऐसा दो भगवन मुझको, बस हिरदय आन समा जाओ।।411।।
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकाधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
देवों से चरणा पूजित है, ईश्वर तुमको ही मान रहे।
भक्ति भावों से हम पूजे, बस चरणों का ही ध्यान करे।।412।।
ॐ ह्रीं अर्हं ईशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरज तम को हर लेता है, त्यों तुम अज्ञान को हरते हो।
भव्यों के हृदय खिलाकर के, सिद्धों सम मुक्ति वरते हो।।413।।
ॐ ह्रीं अर्हं ईशानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
क्रीड़ा भी ध्यान में करते हो, इससे आनंद बढ़ जाता है।
ऐसा पुरुषार्थ करें हम भी, उजियारा मन जग जाता है।।414।।
ॐ ह्रीं अर्हं इन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनों लोको में उत्तम हो, उत्तम हो सारे जीवों में।
बंधन से मुक्त करो स्वामी, यह भक्त आया है शरणा में।।415।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकोत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्गों की संपत्ति फीकी, इतना वैभव तुमने पाया।
उत्तम फल पाने को भगवन, उत्तम आशा मन में लाया।।416।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधिभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सेना नष्ट करी, केवल ज्योति को प्रगटाया।
सब देव आप पूजा करते, यह भक्त शरण में है आया।।417।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब राज्य मिले तो राजा हो, तुम राज्य तजा महाराजा हो।
हो महाप्रतापी महादेव, पूरे हो मम सब काजा हो।।418।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करूणा सागर जग में जिनवर, बन तीर्थ जगत उत्कृष्ट हुये।
हे परम पिता हे परमेश्वर, हम सब आकर आकृष्ट हुये।।419।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरा मेरा झगड़ा छोड़ा, बस आतम को ही ध्याते हैं।
इससे सुख औ ऐश्वर्य मिला, हम सब मिल शीश झुकाते हैं।।420।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेशित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है चतुर्णिकाय के देव सभी, तुम पद पाने ललचाते हैं।
हो देवों में ही तुम्ही श्रेष्ठ, भक्ति के शीश झुकाते हैं।।421।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधिदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्योदय प्रबल हुआ भगवन, 'महादेव' की पूजा करते हैं।
तुम सम महान पदवी पाये, तो अर्घ्य समर्पण करते हैं।।422।।

ॐ ह्रीं अर्हं महादेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वित्तेषण औ लोकेषणा ही, जीवों को भटका देती है।
पर आप बचे इनसे भगवन, इससे मुक्ति वर लेती है।।423।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यदि यथा शक्ति शुभ दान करे, 'त्रिभुवन ईश्वर' का ध्यान करे।
आज्ञा पाले उपदेश सुने, तब ही अपना कल्याण करें।।424।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभुवनेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिदिन लक्ष्मी पूजा करते, फिर भी निर्धन रह जाते हैं।
तुम आत्म ध्यान करके भगवन, शुभ मोक्ष लक्ष्मी पाते हैं।।425।।
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुजंग प्रयात

जगत जीव कल्याण आकर करावे, जगत जीव भगवान तुमसा जो पावे।
करें वंदना और भक्ति बढ़ावे, हृदय में समता की ज्योति जगावे।।426।।
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभूतेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
करे विश्व पूजा मिले शांति मेवा, श्री विश्व ईशा की मैं सेवा।
करें वंदना और भक्ति बढ़ावे, हृदय में समता की ज्योति जगावे।।427।।
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सदा साध्य पाने को साधन बनावे।
तेरी शरण आकर के मुक्ति को पावे।।428।।
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शिव पथ दिखाकर के सबको चलाते।
तिहुँ काल की नीति आकर बताते।।429।।
ॐ ह्रीं अर्हं अधिराजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तिहुँ लोक में तेरी ख्याति उपाई।
जगत के हो ईश्वर तुम्हें शीश नाई।।430।।
ॐ ह्रीं अर्हं लोकेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
करके वरण नाथ तुमको मनावे।
भक्ति में आकर के पूजा सुनावे।।431।।
ॐ ह्रीं अर्हं लोकपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आतम की शक्ति धरम को बढ़ावे।
संसार सागर से पार लगावे।।432।।
ॐ ह्रीं अर्हं लोकनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मेरी भक्ति का सूर्य तुमने उगाया।
जगत पूज्य हमको है आनंद आया।।433।।
ॐ ह्रीं अर्हं जगपूज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
करी जब तपस्या तो नवनीत आया।
उत्कृष्ट देवों ने गुण आके गाया।।434।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

हो समर्थ नहीं आसरा, लेते है नहीं आप।
ईश लोक के आप हैं, करते हैं हम जाप।।435।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुजंग प्रयात

स्वर्णों के पुष्पों से पूजा रचाऊँ, जगन्नाथ' जग में, तुम्हें शीश नाऊँ।।436।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगन्नाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत की विभूति, जगत दान दीना, अंतर विभूति स्वयं स्वाद लीना।।437।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्प्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन धरा आपने शुद्ध कीना, होकर पवित्र, सभी जग को कीना।।438।।

ॐ ह्रीं अर्हं पवित्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया है 'पराक्रम' तभी सिद्धि पाई, निजातम में ज्ञान की ज्योति जगाई।।439।।

ॐ ह्रीं अर्हं पराक्रमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम मृत्यु जीवन कड़ी तोड़ता है, आतम धरम से भी मुख मोड़ता है।।440।।

ॐ ह्रीं अर्हं परत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीता जगत तो ही 'जेत्रे' बने हो, विजयवन्त जिनवर जी, अमृत बने हो।।441।।

ॐ ह्रीं अर्हं जैत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा निर्बलों को है बल दान दीना, तभी तो भगवन धरम सौख्य लीना।।442।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरे पाप पुण्य के कर्ता तुम्ही हो, खिलाया चमन को वो माली तुम्ही हो।।443।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर है सारे जगत का झमेला, 'अविनाश' जिनवर नहीं कोई मेला।।444।।

ॐ ह्रीं अर्हं अविनश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रादि आकर के पूजा रचाये, संपत्ति पाई हम आकर मनाये।।445।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभाविष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणों ने है आकर के डेरा जमाया, बना भार उनका मधुर गीत गाया।।446।।

ॐ ह्रीं अर्हं भारजिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी जीव से मित्रता आप कीनी, करके परम प्रेम, संपत्ति लीनी।।447।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं की प्रभा से स्वयं को जगाया, नम्र भाव से मैं, मैं पूजा को आया।।448।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्बन्ध जग के प्रभु आप तोड़े, हो शिवपुर निवासी, हम नाता जोड़े।।449।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी विश्व के ही विजेता कहाये, स्वयं वीर बनकर के मुक्ति को जाये।।450।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

राग निवारा द्वेष निवारा, मोह से तुम पाया छुटकारा।
जनम-मरण की नाशी पीड़ा, भक्त भक्ति में करता क्रीड़ा।।451।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वजेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप जगत को छोड़ दिया है, मुक्ति का संग जोड़ लिया है।
विश्व तुम्हारी पूजा करता, दुष्ट कर्म को आकर हरता।।452।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्व तुम्हारा है उपकारी, मनहर-मनहर छवि है प्यारी।
आनंद के नित झरने बहते, भक्त चरण में नित ही रहते।।453।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविजत्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम त्रिलोक की लक्ष्मी पाई, चरणों में है आन समाई।
इसीलिए जगजेष्ठ बने हो, पर अवलंबन नहीं बने हो।।454।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगज्जेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रीत रीत के आप विरोधी, आतम रस के हो तुम शोधी।
तज ममत्व वैराग्य लिया है, भक्तों का कल्याण किया।।455।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगज्जिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यावादी वाद बताये, सच्चा पथ आपहि दर्शाये।
जगन्नेत्र बन हुये हो ज्ञानी, सुनने आये हैं हम वाणी।।456।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगन्नेत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोही ने घर द्वार बसाया, मोही ने घर द्वार सजाया।
आप मोह तज हुये दिगम्बर, चरणों में झुकता है अंबर।।457।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगज्जयिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्लभ मानुष तन को पाना, दुर्लभ है तीर्थंकर बनना।
उनमें भी है पहला नंबर, प्रथम हुये थे आप दिगंबर।।458।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्रण्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्बल को बलवान सताये, कष्ट दिया दुख घोर उठाये।
आप प्रभु करूणा के सागर, दयामूर्ति हो ज्ञान उजागर।।459।।

ॐ ह्रीं अर्हं दयामूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य रूप है प्रभु का मनहर, दिव्य वाणी है सारे दुख हर।
'दिव्य नेत्र' ले सबको देखा, भक्तों ने गुणगान से लेखा।।460।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यनेत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम बल पाया है तुमने, आतम धन पाया है तुमने।
हो 'अधीन' पाने हम आये, ईश्वर चरणों में झुक जायें।।461।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य मार्ग प्रभु ही बतलाते, सत्य ज्ञान प्रभु ही सिखलाते हैं।
'धर्म के नायक' हो जिनज्ञानी, धर्म मांगने आये प्राणी।।462।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप से शक्ती संचय करते, तप से ही ऋद्धि को बरते।
फिर ऋद्धि के ईश बने हो, आप जगत में श्रेष्ठ बने हो।।463।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऋद्धिशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम प्रकाश की किरण भी देते, तुम अनाथ को शरण भी देते।
'भूत नाथ' जिन शरणा ले लो, जग दुःखों से हमें निकालो।।464।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूतनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरतारी बन रखा करते, दुख हर प्रभुजी सुख में धरते।
आश्रय दाता आश्रय देवे, चिंता हर चिंतन भर देवे।।465।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूतभर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य पात्र जग दाता तुम हो, कर्म नाश सुख वासा तुम हो।
दुखियों को आश्रय प्रभु देना, हम भक्तों को शरण में लेना।।466।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाबली आतम का बल है, प्रश्न करो हर प्रश्न का हल है।
कर्म मल्ल को इसी से जीता, बने आप मुक्ति परिणीता।।467।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतुलबलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म आत्म को संबल देता, धर्म आत्म को मल-मल धोता।
'धर्ममूर्ति' हो आप जिनेश्वर, हम भक्तों के हैं प्रभु ईश्वर।।468।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह सारे ग्रह बुलवाये, ग्रह से आतम को भटकाये।
तजा परिग्रह छोड़ी माया, हमने पाई आपकी छाया।।469।।

ॐ ह्रीं अर्हं परिग्रहत्यागीजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्रों द्वारा तुम्हें बुलायें, मंत्रों द्वारा तुम्हें मनायें।
मंत्र है साधन साध्य तुम्ही हो, भक्तों के आराध्य तुम्ही हो।।470।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्हों से भी चिन्हित तुम हो, शुभ लक्षण से लक्षित तुम हो।
लक्षण पाकर हुये विलक्षण, सार्थक कीना जीवन का क्षण।।471।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुभलक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम अध्यक्ष काम न करते, तीन लोक पूरा ही वरते।
भक्तों को सद् मार्ग चलाते, भक्त चरण में शीश झुकाते।।472।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकाध्यक्ष नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वश में कोई कर ना सकता, शीश आपका झुक ना सकता।
कठिन रीत का पालन करते, ईश्वर बन कष्टों को हरते।।473।।

ॐ ह्रीं अर्हं दुरोध्रष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों ने तुमको है माना, तुम ही भव्यों को अपनाना।
'भव्य बन्धु' शरणागत आया, सुख पाने को शीश झुकाया।।474।।

ॐ ह्रीं अर्हं भव्यबन्धवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनासक्त परिग्रह तज दीना, जागृत कीना भाव नवीना।
तब ही मुक्ति का सुख पाया, सुख पाने को शीश झुकाया।।475।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरस्तकर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम ध्येय ले जिनवर स्वामी, परम ध्यानमय अंर्तयामी।
निकट भव्य कल्याण करेंगे, जो जिनवर का ध्यान धरेंगे।।476।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमध्येयजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन से शीतल हो स्वामी, जग संताप हरो जिननामी।
हम भी शीघ्र मोक्ष में जावें, इस हेतु हम पूजा गावें।।477।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्तापहराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भावों से सब रिश्ते नाते, पलक मुंदे सब ही नाश जाते।
संसारी ही मोह बढ़ाता, विजयी भव्य बन करके जाता।।478।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोहारिजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सारी दुनिया धूप औ छाया, कर्मों की है सारी माया।
कर्म नाश तुम हुए हो ईश्वर, शीश झुकाता मैं परमेश्वर।।479।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्परमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्च भाव से ऊँचा बनते, उच्च भाव कर्मों को हनते।
बैठे हो प्रभु लोक शिखर पर, शिरोमणि भक्तों के मन पर।।480।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वासिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ममता से प्रभु दूर ही रहते, समता में प्रभु सदा ही रहते।
'विश्व भूत ईशा' हो जिनवर निरखे हम छवि प्रभु की मनहर।।481।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभूतेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्गों की संपत्ति ना चाही, मुक्ति पथ के बने थे राही।
अक्षय संपत्ति आपने पायी, जग संपत्ति न आपको भायी।।482।।

ॐ ह्रीं अर्हं विभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकुलता-व्याकुलता त्यागी, नहीं हुये हैं आप सरागी।
त्याग तपस्या मुक्ति दिलाये, त्रिभुवन ईश्वर आप कहाये।।483।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभुवनेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म ज्ञान है जग में दुर्लभ, धर्म ध्यान है जग में दुर्लभ।
दुर्लभ को तुम सुलभ बनाया, हमने आपको दुर्लभ पाया।।484।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगदुर्लभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिणामों में शुद्धि आई, शुद्धि और विशुद्धि आई।
अभ्युदय शुभ कर्म का आया, कर्म तजा मुक्ति को पाया।।485।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभ्युदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मचक्र आगे चलता है, आयुध भी संग में पलता है।
कोई शत्रु नहीं आपका, मिट जाता संसार ताप का।।486।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रायुधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल नाम है जिनवर तेरा, मंगल कार्य करे सब मेरा।
मंगल जग में नित करवाओ, मुझको अपने पास बुलाओ।।487।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगन्मंगलोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य के ज्ञाता सत्य के ज्ञानी, सत्य धर्म के हो विज्ञानी।
'सद्योजात' आप कहलाये, भक्त चरण मे शीश झुकायें।।488।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्योजाताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप अमंगल जग में करता, प्रभु नाम पापों को हरता।
आप त्रिलोक के मंगलकारी, अर्ज सुनो अब मेरी बारी।।489।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकमंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव में शुद्धि आई, इच्छा तज निर इच्छुक भाई।
कर्म तजा तो वेद भी भागा, प्रभुजी का शुभ आतम जागा।।490।।

ॐ ह्रीं अर्हं अवेदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप किसी से बात न करते, आप किसी का घात न करते।
'अप्रतिघात' हुये हो स्वामी, आप जगत में अंर्तयामी।।491।।

ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिघाताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खंड-खंड ना खंडित होते, आप अखंडित रूप को पाते।
अविनाशी पद के हो वासी, आप जगत में आत्म विकासी।।492।।

ॐ ह्रीं अर्हं अच्छेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संचित कर्मों को नश दीना, आप गुणों को संचित कीना।
दृढ़ता से पथ पर ये चलते, श्रद्धा छाया में हम पलते।।493।।

ॐ ह्रीं अर्हं दृढ़ीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम मरण से जगत दुखी है, सबसे ज्यादा आप सुखी हैं।
महा भयंकर कर्म को नाशा, करूं नमन मैं सुख की आशा।।494।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभयंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर भोगों को छोड़ा, आत्म ध्यान से नाता जोड़ा।
'ज्ञानानंदी' भोग के भोगी, आप जगत के अनुपम योगी।।495।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाभोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर से भिन्न सदा ही रहते, साधारण ही भाव ना रखते।
पद उत्कृष्ट के आप हो धारी, झुकती है ये दुनिया सारी।।496।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरौपम्याम नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने प्रभु जी तुमको माना, चरण आपके हमको पाना।
धर्म राज्य के हो प्रभु नायक, भक्तों के हो ध्याने लायक।।497।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मसामाज्यनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रति अरति को आप नशाया, वेद रहित निर्वेद को पाया।
तजी प्रवृत्ति निवृत्ति पायी, आप जगत में हुये सहायी।।498।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वेदप्रवृत्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वच काया को समझाया, फिर आतम को आप तपाया।
महायोग योगीश्वर तुम हो, योगाचार्य और ईश्वर तुम हो।।499।।

ॐ ह्रीं अर्हं संपूर्णयोगिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान में रह आरोहण करते, कर्म नाश में तत्पर रहते।
उच्च श्रेणी में चढ़कर जिनवर, पाया रूप आपने मनहर।।500।।

ॐ ह्रीं अर्हं समारोहणतत्पराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

अतिशय कारी तो जिनवर है, अतिशय कारी शुभ नाम हुआ।
भक्तों के संकट रोग नशे, जिसने भी आकर चरण छुआ।।
सिद्धो ने सिद्धी पाई है, जग में प्रसिद्ध प्रभु आप हुए।
चरणों में अर्घ्य चढ़ाएं हम, शुभ आज हमारे भाव हुए।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः पंचसहसनामावलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

स्वयं सिद्ध शिवरूप को, पाया था जिनदेव।
मुक्तिपुर में राजते, करूं आपकी सेव।।501।।

ॐ ह्रीं अर्हं सहजसिद्धरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विकल्प से दूर हो, करते थे प्रभु ध्यान।
'सामायिक' शुभ नाम को बारंबार प्रणाम।।502।।

ॐ ह्रीं अर्हं सामायिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ध्यान में लीन है, करते नहीं प्रमाद।
इससे आनंद प्राप्त हो, होता नहीं विवाद।।503।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्प्रमादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत कार्य सब ही तजे, तजा राग औ द्वेष।
'अकृत' जग में हो तुम्ही, धरा दिगम्बर वेश।।504।।

ॐ ह्रीं अर्हं अकृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परम भाव' से आपने जग में फूल खिलाये।
कांटे कर्मों के हरे, शत्-शत् शीश नवाये।।505।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुकरण प्रभु का करे, जग प्रधान निर्दोष।
सम्यक साधन से किया, किया आत्म संतोष।।506।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रधानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम ज्योति अंतर जगी, फैला दिव्य प्रकाश।
विघ्न हरण मंगलकरण, किया आत्म विश्वास।।507।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वभासपरभासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ज्योति अंतर जगी, फैला दिव्य प्रकाश।
विघ्न हरण मंगलकरण, मुक्ति में है वास।।508।।

ॐ ह्रीं दिव्यप्रकाशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्थिरता निश्चल हुए, निश्चय ज्ञान सिखाये।
आत्म ध्यान धन के धनी, शत्-शत् शीश झुकाये।।509।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्राणायामचरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रति समय शुद्धि रहे शुद्ध आपके भाव।
सिद्ध प्रभु शुभ नाम से, पार लगेगी नाव।।510।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धप्रत्याहाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना का रस छोड़कर, आत्म स्वाद को पाये।
इंद्रिय वश में ही रहे, शीश चरण झुक जाये।।
मन न मांगे आपका, इंद्रिय सुख के भोग।
आप जितेन्द्रिय हो प्रभु, लगे न कोई रोग।।511।।

ॐ ह्रीं अर्हं जितेन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यु समय शुभ भाव हो, होगा पुण्य संयोग।
'समाधिराज' हो गये, लेते तेरा नाम।।512।।

ॐ ह्रीं अर्हं समाधिराजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदर माला त्याग की, पहनी थी नित आप।
धर्म ध्यान में निष्ठ हो, कट जायेंगे पाप।।513।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मध्याननिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यानी आतम सिद्ध है, सिद्ध होयेगा ध्यान।
धारणाधीश्वर हो गये, करते पाप वियोग।।514।।

ॐ ह्रीं अर्हं धारणाधीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता रस को पीवते, निजानंद में लीन।
आप सुखी बस जगत में, स्वयं सिद्ध स्वाधीन।।515।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्फुरितसमरसीभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना रूप को छोड़कर, एक रूप बस पाय।

रूप अतिशय आपके, वचन अगोचर पायें॥516॥

ॐ ह्रीं अर्हं एकीभावनयरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रंथि छोड़ निर्ग्रंथ हो, ज्ञान ध्यान परिणाम।

इससे ही मुक्ति मिली, किया आत्म का ध्यान॥517॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्ग्रंथनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम योगों पर किया, 'योगी' हो गये आप।

इंद्र आय पूजा करें, करते हैं जब जाप॥518॥

ॐ ह्रीं अर्हं योगीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि सिद्धियां चरण में, आकर शीश झुकाये।

परम पदों की आश कर, हम सब शीश झुकाये॥519॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋषये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग द्वेष तज आत्म से, 'साधु' भये महान।

तारण तरण जिनदेव तुम, उत्तम आपहि ज्ञान॥520॥

ॐ ह्रीं अर्हं साधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निश्चय अरु व्यवहार का, किया समागम आप।

किया स्वपर उपकार है, मिटता सब संताप॥521॥

ॐ ह्रीं अर्हं यतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन को साधा आपने, और रखा था मौन।

'मुनि' नाम शोभित किया, आपके जैसा कौन॥522॥

ॐ ह्रीं अर्हं मुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाराज महाश्रेष्ठ हो, महिमा आप महान।

आप 'महर्षि' हो प्रभु, शत्-शत् बार प्रणाम॥523॥

ॐ ह्रीं अर्हं महर्षिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधुपद तो है कठिन, इसका बहुत है भार।

घोर तपस्या नित करी, मुक्ति को तैयार॥524॥

ॐ ह्रीं अर्हं साधुधौरेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यती नित्य इंद्रिय विजय, करते हैं वे ध्यान।

'यति' नाथ बन कर प्रभु, करें आत्म का ज्ञान॥525॥

ॐ ह्रीं अर्हं यतीनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्विधी का संघ है, मुनिवर संग ही पाये।
इनके नायक आप हैं, शत्-शत् शीश झुकाये।।526।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुनीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज-सोलहकारण

महामुनि मुनियों के ईश, तुम्हें झुकाऊँ आकर शीश।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल।।
तप संयम के बाग लगा, अपने आतम को नित जगा।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल।।527।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामौनिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगन रहे करते नित ध्यान, आत्म शुद्धि के हेतु ज्ञान।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल।।
तप संयम....।528।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाध्याननिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाव्रतों को धारा आप, मिटे सकल जग के संताप।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल।।
तप संयम....।।529।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रतिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध तजा समता को धार, 'क्षमा' धर्ममय समरस प्यार।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल।।
तप संयम....।।530।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाक्षमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह ताप जैसे ही नसा, 'शीतल' भाव भी आकर बसा।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल।।
तप संयम....।531।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाशीतलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रिय इच्छा मन से जाये, इसीलिए 'शांति' को पाये।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल।।
तप संयम....।।532।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाशांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रिय वश कर हुये महान, हुये 'महोदय' श्री भगवान।

धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल॥
तप संयम....॥533॥

ॐ ह्रीं अर्हं महोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल जल सम हो तुम स्वच्छ, भाव विकारी हो गये गच्छ।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल॥
तप संयम....॥534॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्लेपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंका संशय तुमसे दूर, ज्ञान हुआ तुमको भरपूर।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल॥
तप संयम....॥535॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्भ्रांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वच्छ स्फटिक शांति रूप, हो 'प्रशांत' जय पाय अनूप।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल॥
तप संयम....॥536॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि श्रावक के हो 'अध्यक्ष', अक्ष पक्ष तज हुए विपक्ष।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल॥
तप संयम....॥537॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्माध्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दया करे और जग करवाये, दया ध्वजा ही नाम धराये।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल॥
तप संयम....॥538॥

ॐ ह्रीं अर्हं दयाध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ब्रह्म में हो लवलीन, आत्म ध्यान में हुए प्रवीण।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल॥
तप संयम....॥539॥

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वयं बुद्ध' हो जिन भगवान, बार-बार हम करें प्रणाम।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल॥
तप संयम....॥540॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंबुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन बन सावन सम झरे, 'पूतात्मा' जग में उच्चरे।

धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल।।
तप संयम के बाग लगा, अपने आतम को नित जगा।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल।।541।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वेष छोड़कर शुभ गुण पाये, वीतरागता शीश नवाये।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल।।
तप संयम....।।542।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्नातकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान मान को करता दूर, शुद्ध हुये निर्मल भरपूर।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल।।
तप संयम....।।543।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमदभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्व ऐश्वर्य' में करे विलास, हो आनंद का पूर्ण प्रकाश।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल।।
तप संयम....।।544।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमैश्वर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मत्सर ईर्ष्या दूषण दूजा, आतम में आतम को भजा।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल।।
तप संयम....।।545।।

ॐ ह्रीं अर्हं वीतमत्सराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म धरे से हो सौभाग्य, खुल जायेंगे उसके भाग्य।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल।।
तप संयम....।।546।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मवृषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षोभ रहित पाया है ज्ञान, ज्ञानी ध्यानी है भगवान।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल।।
तप संयम....।।547।।

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षोभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैसे विद्युत मेघ के खंड, कर्म खंड कर हुये अखंड।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल।।
तप संयम....।।548।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाविधिखंडाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृतमय जीवन सुखकार, बहे ज्ञान में रस की धार।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल।।
तप संयम....।।549।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमृतोद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम मंत्र से बाधा टार, 'मंत्र मूर्ति' से आये बहार।
धर्म के फूल, ना जाना तुम आतम भूल।।
तप संयम....।।550।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्धरि

है द्रव्य सौम्य है 'सौम्य भाव', करते हैं सबकी पार नाव।
सब क्रोध बैर को तज दीना, झट से मुक्ति को वर लीना।।551।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वैरसौम्यभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग बंधन में इंद्रिय बांधे, त्याग तपों से इसको साधे।
होकर 'स्वतंत्र' मुक्ति पाता, जग में फिर वापिस ना आता।।552।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वतंत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम ब्रह्मा को पा लीना, बाहर के तन को नश दीना।
चेतन में प्रकटा है प्रकाश, मुक्ति में जा करते निवास।।553।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मसम्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप स्वयं ही हैं प्रसन्न, दूजे को जानें आप भिन्न।
आश्रित न किसी के रहते हो, नहिं आप कभी कुछ कहते हो।।554।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रसन्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण ने आकर शरणा लीना, गुण ने ही स्वयं धन्य कीना।
गुणधर गुण के हो भंडारी, भक्तों के तरने की बारी।।555।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणांबुधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अशुभ तजा औ पुण्य-पाप, बस आतम की करते हैं जाप।
आश्रित न किसी के रहते हो, नहिं आप कभी कुछ कहते हो।।556।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यपापनिरोधकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रिय से भी ना जान सके, गणधर भी ना पहचान सके।
हो महा सूक्ष्म तुम ही जिनवर, हम दर्श करें मूरत मनहर।।557।।

ॐ ह्रीं अर्हं महगम्यसूक्ष्मरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतर में आतम लीन होय, परमातम का ही बीज बोय।
पर द्रव्यों से प्रभु दूर रहे, निज द्रव्य आत्म में गमन करे।।558।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति को पाने ध्यान किया, झूठे सपनों को छोड़ दिया।
है सिद्ध शुद्ध चंदन जीवन, तव चरणन में जीवन अप्रण।।559।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु उदय अस्त न होते हैं, बादल भी कभी ना ढकते हैं।
राहू न आपको ढक पाये, हम भक्ति में है सिर नाये।।560।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरुपल्लवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्यों का अतिशय फल पाया, शुभ समवशरण भी रचवाया।
अक्षय पद को है प्राप्त किया, भक्तों ने चरण विश्राम किया।।561।।

ॐ ह्रीं अर्हं महोदर्काय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप प्रशंसा योग्य हुए, भक्तों ने आकर चरण छुये।
तीनों लोकों का राज्य पाय, भक्तों को तुम होते सहाय।।562।।

ॐ ह्रीं अर्हं महोपायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं पिता आप हम पुत्र समान, भक्तों के रक्षक हो महान।
हे 'जगतपिता' हे परमेश्वर, हम सब तेरे आश्रित ईश्वर।।563।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पितामहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन प्रभु को जो भूल जाये, जग में ना वो विश्राम पाये।
करूणा सागर करूणा कर दो, भक्तों की झोली को भर दो।।564।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाकारुणिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में अशुद्ध जो वस्तु होय, नहिं पास आपके कर्म बोय।
हो गुण गण के भंडार आप, हो 'शुद्धगुणी' करते हैं जाप।।565।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो परम सुखी वह सौख्य देय, प्रभु जन्म मरण को दुख हरेय।
ऐसे प्रभु की पूजा जो पाय, जन-जन के मन को शांति पाये।।566।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाक्लेशनिवारणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप के जल से मल दूर करे, कर्मों के पर्वत शीघ्र गिरे।
तन-मन में शुचिता आई थी, आतम को शुद्धि भायी थी।।567।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाशुचये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आधि व्याधि नहि आती है, आकुलता नहीं सताती है।
होकर प्रसन्न शुभ शांति पायी, भक्तों को तुम्ही सौख्यदायी।।568।।
ॐ ह्रीं अर्हं अरुजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
स्थिरता निज में ला करके, शुभ भावों को स्थिर करके।
पीड़ित जन हैं चंचलता से, हम आये भक्ति भावों से।।569।।
ॐ ह्रीं अर्हं सदायोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
स्वातम रस को नित पीते हो, बिन भोजन के ही जीते हो।
आतम रस की ही इच्छा है, भक्तों को पाना दीक्षा है।।570।।
ॐ ह्रीं अर्हं सदाभोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
रत्नात्रय आभूषण पहने, दश धर्मों के पहने गहने।
अब सरल भाव मेरा कर दो, दशलक्षण गहनों से भर दो।।571।।
ॐ ह्रीं अर्हं सदाघृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जग से मध्यस्थ ही रहते हो, पर से ना प्रभु कुछ कहते हो।
ज्यों कीचड़ में ही कमल रहे, त्यों आप जगत के बीच रहे।।572।।
ॐ ह्रीं अर्हं परमौदासीनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ना आते हो ना जाते हो, ना खाते हो ना पीते हो।
'शाश्वत' सुख पाकर लीन हुये, हम भी पाये तो चरण छुये।।573।।
ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अंतिम आकार को पाया है, आतम साकार को पाया है।
'सत्याशन' आसन में रहते, भक्ति में भक्त सभी कहते।।574।।
ॐ ह्रीं अर्हं सत्याशने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शीतल छाया में रहते हो, शीतल आतम को करते हो।
शांति नायक शीतलता दो, मेरा आतम शीतल कर दो।।575।।
ॐ ह्रीं अर्हं शांतिनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभंगी छंद

ये काल अनंता, हो भगवंता, विद्यायें सब आती हैं।
जग जीव ये भटके, जग में अटके, विद्या पार लगाती है।।576।।
ॐ ह्रीं अर्हं अपूर्वविद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चारित्र लिया था, तप भी किया था, 'योग ज्ञायक' हो जिनवर।
आतम की शुद्धि, पाई ऋद्धि, छवि प्यारी है हे मनहर।।577।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगज्ञायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धर्म की मूरत, ध्यान की सूरत, जीवों को शिक्षा देती।
मैं शीश नवाऊँ, भक्ति बढ़ाऊँ, शुभ धर्म की वो शिक्षा देती।।578।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्ममूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम परदेशी, मोक्ष प्रवेशी, वहीं पे हमको जाना है।
ना देह हमारी, आत्म निहारी, बस मुक्ति को पाना है।।579।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मदेहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके प्रभु स्वामी, अंर्तयामी, ब्रह्मा ईश कहाते हो।
शुभ ध्यान लगाया, आतम पाया, भव्यों को नित्य जगाते हो।।580।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो लक्ष्य बनाया, उसको पाया, शेष नहिं कुछ बाकी है।
'कृत-कृत्य' हुये हो, सत्य हुये हो, कोई नहीं अब साथी है।।581।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृतकृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम गुणधर, कहते गणधर, जिनवर में आन समाये हैं।
पाना मैं चाहूँ, कहीं ना जाऊँ, चरणों शीश झुकाते हैं।।582।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणात्मकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण प्रकाशम, अद्भुत भासम, तीन लोक ख्याति पाई।
जिनराज प्रतापी, निजगुण भासी, निवारण ज्योति पाई।।583।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरावरणगुणप्रकाशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें नयन निहारे, भक्त पुकारे, सुन आवाज को आ जाओ।
भक्ति की धारा, ज्ञान है प्यारा, आकर दर्श दिखा जाओ।।584।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्निमेषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वच तन चंचल, होना अंचल, कर्म समूह बुलाता है।
ज्यों छिद्र नाव में आत्म भाव में, नीर सरासर आता है।।585।।

ॐ ह्रीं अर्हं निराश्रवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम ब्रह्मपति हो, आत्म गति हो, पूजा भावों से करते।
हम आये शरणा, आपके चरणा, झोली भक्तों की भरते।।586।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाब्रह्मपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगम का सार, करते निहार, तुम तत्वज्ञान को पाया है।
सबको समझाते, ज्ञान सिखाते, भक्त चरण में आया है।।587।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुनयतत्त्वज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरज सम चमके, दम-दम-दमके, पथ उजियारा कर दीना।
आतम दिखलाओ, ध्यान सिखाओ, चरणों में शरणा लीना॥588॥
ॐ ह्रीं अर्हं सूरये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हो सम्यकज्ञानी, मां कल्याणी, सत्पथ पर चलवाती है।
यह ज्ञान है हितकर, नाम शुभंकर, आतम रूप दिखाती है॥589॥
ॐ ह्रीं अर्हं तत्त्वज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
भव्यों से मित्रता, आत्म चित्रता, प्रभु तुम हो करूणा सागर।
आनंद बढ़ाओ, कष्ट घटाओ, प्रभु तुम हो गुणगण आगर॥590॥
ॐ ह्रीं अर्हं महामित्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु समताधारी, ममता हारी, क्लेश क्रोध सब दूर रहे।
सबके दुख नाशो, ज्ञान प्रकाशो, साम्य सुधा रस धार बहे॥591॥
ॐ ह्रीं अर्हं साम्यभावधारकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
निष्काम भक्ति हो, आत्म शक्ति हो, कर्मों के बंधन खोले।
अतिशय बरसाया, पुण्य कमाया, भक्ति में हम सब डोले॥592॥
ॐ ह्रीं अर्हं प्रक्षीणबन्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम द्वन्द न करते, पाप को हरते, निर्गुण को गुणवान करे।
चंदा सम शीतल, हरे कर्म मल, झोली में वरदान भरे॥593॥
ॐ ह्रीं अर्हं निर्द्वन्द्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु है स्नातक, हटेगा पातक, परमेश्वर जिनदेव मेरे।
शुभ 'ज्ञान' विशेषा, कार्य अशेषा, पाऊँ शरणा आन तेरे॥594॥
ॐ ह्रीं अर्हं स्नातकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिन पंच प्रकारा, जिन तन प्यारा, तेजरूप शुभ कांति महा।
मुनि पूजा करते, कर्म को हरते, रूपानंग है दिव्य अहा॥595॥
ॐ ह्रीं अर्हं अनंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्म कालिमा, छूटी लालिमा, फिर निर्वाण को पाया है।
शुभ पुण्य की रश्मि, कर्म को भस्मी, करके आनंद पाया है॥596॥
ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
गुण के हो सागर, ज्ञान की गागर, आशा पूरी कर देना।
तुमसे अनुरक्ति, कहती 'स्वस्ति', अपने पास बुला लेना॥597॥
ॐ ह्रीं अर्हं सागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दिन रात हो ध्यानी, तभी हो ज्ञानी, महासाधु उपमा पाई।

सब साधु ध्यावें, शीश नवायें, ऋद्धि सिद्धि मंगल आई।।598।।

ॐ ह्रीं अर्हं महासाधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल है आतम, विमल है आतम, निर्मलता हमको देना।
सब दोष निवारो, हमें सम्हारो, चरणों में हमें रख लेना।।599।।

ॐ ह्रीं अर्हं विमलाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतर की शुद्धि, बाह्य की बुद्धि, पावन सावन कर दीना।
आश्रय के दानी, है जिनवाणी, जग का धन जग को दीना।।600।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

शंभू छन्द (दे दी हमें आजादी)

जग के सागर में नाव फंसी, हे भगवन पार लगा देना।
देकर के संयम त्याग धरम, मुझे अपने पास बुला लेना।।
नयनाभिराम तेरी मुद्रा, दर्शन से शांति मिलती है।
जो भाव सहित पूजा करता, हृदय की कलियाँ खिलती हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः षट्सहस नामावलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शेर चाल

आतम विशुद्ध करके, मोक्ष लक्ष्मी मिली।
'श्री धर' है नाम आप, ज्ञान की कली खिली।।
मन का करूँ स्पर्श, ज्ञान शुद्ध कराऊँ।
भावों से करे ध्यान, आत्म शुद्ध बनाऊँ।।601।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में है जो जन्मा, उसे मरना ही पड़ेगा।
भय मौत का मिटाये, मुक्ति वरना पड़ेगा।।
मन का...।।602।।

ॐ ह्रीं अर्हं मरणभयनिवारणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये राग द्वेष जीव को, संसार भ्रमाये।
निर्मल हो ज्ञानधारी, नहिं तुमको सताये।।
मन का...।।603।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमलभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार के सागर से, नाव पार लगा दो।
उद्धार हो जिनदेव मुझे, मुक्ति दिला दो।।
मन का...।604।।

ॐ ह्रीं अर्हं उद्धरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि के देव शांत हो, नित भाव बनाते।
चरणों में आके आपके, नित पूज रचाते।।
मन का...।।605।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्निदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन पे वचन पे काय पे, संयम को है धरा।
इंद्रिय को करे वश में, आत्म वृक्ष है हरा।।
मन का...।।606।।

ॐ ह्रीं अर्हं संयमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज संस्कृति के पथ पे, चले ज्ञान ले लिया।
निज आत्म के कल्याण से, शिव रूप पा लिया।।
मन का...।।607।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णों के पुष्प लायके, सुर पूज रचाये।
कमलापति हृदय कमल, को आके खिलाये।।
मन का...।।608।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पांजलये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वस्व त्यागी आपने, सब त्याग कर दिया।
भक्तों ने आके आपका, धन स्वयं ले लिया।।
मन का...।।609।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिवगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन में नहि रोग है, उत्साह है बना।
ये खेद रहित भेद रहित, ज्ञान है घना।।
मन का...।।610।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमोत्साहजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी ही ज्ञान करके, ध्यान में ही लीन हो।
बिन ज्ञान के अज्ञान, पाप में प्रवीन हो।।
मन का...।।611।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन हो प्रभु आप, जगत पूज्य हो गये।
'परमेश' हो जिन ज्ञान, पाके मुक्ति में गये॥
मन का करूँ स्पर्श, ज्ञान शुद्ध कराऊँ।
भावों से करे ध्यान, आत्म शुद्ध बनाऊँ॥612॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोषों को छोड़ आप, कभी रोष ना करते।
'विमलेश' हो निर्मल कभी, भी क्लेश ना करते॥
मन का...॥613॥

ॐ ह्रीं अर्हं विमलेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्याण पंच इंद्र, सभी देव मनाये।
इस धरती पे यशगान, प्रभु नित्य कराये॥
मन का...॥614॥

ॐ ह्रीं अर्हं यशोधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम नहीं है कृष्ण, फिर भी नाम है रखा।
आतम को करके श्वेत, स्वाद सौख्य का चखा॥
मन का...॥615॥

ॐ ह्रीं अर्हं कृष्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब ज्ञान दीप आत्म, में करता है उजेरा।
तब चित्त में शुभ ज्ञान, का करेंगे सबेरा॥
मन का...॥616॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानमतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो वीतरागी देव, तुम्हें नमस्कार है।
हो 'शुद्ध मति' देव, तुम्हें नमस्कार है॥
मन का...॥617॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धमतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्यार्थ वाणी धारते, हे देव नमस्कार।
'भद्राय' हो शिवदाय, तुम्हें देव नमस्कार॥
मन का...॥618॥

ॐ ह्रीं अर्हं भद्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनंद ज्ञान के धनी, हे देव नमस्कार।
हो 'शांति' धाम धारी, तुम्हें देव नमस्कार॥
मन का...॥619॥

ॐ ह्रीं अर्हं शांतिजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो धर्म के ही सारथी, हे देव नमस्कार।
हम मिल उतारे आरती, हे देव नमस्कार।।
मन का...।।620।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो क्रोध मान माया, और लोभ को तजे।
वे कर्म शत्रु जीत, 'अजित नाथ' को भजे।।
मन का...।।621।।

ॐ ह्रीं अर्हं अजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर कार्य को 'संभव' करे, संभव हुये हैं आप।
भव नाशने को मैं करूं, भगवान तेरी जाप।।
मन का...।।622।।

ॐ ह्रीं अर्हं संभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो शुद्ध चेतना के पुंज, ज्ञान में मगन।
प्रभु जन्म-मरण मुक्त हो, आनंद में मगन।।
मन का...।।623।

ॐ ह्रीं अर्हं अभिनन्दनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संशय हरो अज्ञान का, भी हरण कीजिये।
मिथ्यात्व को हटा के कुमति 'सुमति' दीजिये।।
मन का...।।624।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुमतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरवर में कमल भांति, आप जगत में रहो।
खुशबू की बहे धार आप, कष्ट ना सहो।।
मन का...।।625।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पारस समान लोह को, भी स्वर्ण बनाते।
सोना बने ये भक्त लोह, हम ही कहाते।।
मन का...।।626।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुपार्श्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संताप हर 'चंदा प्रभु', वंदन में समाये।
चंदन से चेतना को पूज, आत्म को ध्याये।।

लहरें हैं राग द्वेष की, प्रभु शांत कीजिये।
निज गुण का पिंड आत्मा, प्रशांत कीजिए॥627॥

ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से पूज 'पुष्प दंत' देव हमारे।
आनंद की खुशबू मिले, ये जग में बहारे॥
लहरें हैं राग...॥628॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पदंताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव की दाह आत्मा, को नित्य जलाये।
होवे जिया ये शांत नित्य, अर्घ्य चढ़ाये॥
लहरें हैं राग...॥629॥

ॐ ह्रीं अर्हं शीतलनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनों ही लोक में प्रभु, जी श्रेष्ठ हो तुम्हीं।
तीनों ही लोक में प्रभुजी ज्येष्ठ हो तुम्हीं॥
लहरें हैं राग...॥630॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयांसनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुधा में पूज्य हो गये, हैं 'वासूपूज्य' जी।
जल की तरह निर्मल हुए हैं जगत पूज्य जी॥
लहरें हैं राग...॥631॥

ॐ ह्रीं अर्हं वासुपूज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भावों के मैल को हटा, शुभ ज्ञान ले लिये।
विभाव का अभाव भी, फिर ध्यान में जिये॥
लहरें हैं राग...॥632॥

ॐ ह्रीं अर्हं विमलनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाकर अनंत सौख्य को, 'अनंत' हो गये।
है अंत नहीं मुक्ति का, वहीं के हो गये॥
लहरें हैं राग...॥633॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह धर्म है खुशबू की, भांति हर्ष बढ़ावे।
हे 'धर्मनाथ' धर्म बढ़े, ज्ञान को पावे॥
लहरें हैं राग...॥634॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन शांत है तन शांत है, है शांत आत्मा।
हे 'शांतिनाथ' त्याग करे परम आत्मा।।
लहरें हैं राग...।।635।।

ॐ ह्रीं अर्हं शांतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मा पे दया सर्वप्रथम कीजिये।
भावों की शुद्धि करके आत्म, ध्यान दीजिये।।
लहरें हैं राग...।।636।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुन्थुनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाही जनम मेरा कभी, नाही देहांत है।
हे 'अरहनाथ' आत्मा जग में अशांत है।।
लहरें हैं राग...।।637।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकृष्ट करे मोह मोही, के ही बांधता।
हे 'मल्लिनाथ' आपको ना कर्म सताता।।
लहरें हैं राग...।।638।।

ॐ ह्रीं अर्हं मल्लिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिधान आत्मा पे दुष्ट, कर्म के पड़े।
लेकर महाव्रतों की ढाल, देव हैं खड़े।।
लहरें हैं राग...।।639।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुनिसुव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विचलित करे ये भोग, हमें नित्य लुभाये।
'नमिनाथ' जी इनको तजे, ना तुमको सताये।।
लहरें हैं राग...।।640।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राजुल को तजा जाके, गिरि ध्यान लगाये।
मुक्ति से करी शादी तो, अभिराम को पाये।।
लहरें हैं राग...।।641।।

ॐ ह्रीं अर्हं नेमिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पारस' के रस में स्वाद, बड़ा मीठा है आता।
जो भी चखेगा आत्मा, का रूप सुहाता।।

लहरें हैं राग द्वेष की, प्रभु शांत कीजिये।
निज गुण का पिंड आत्मा, प्रशांत कीजिए।।642।।

ॐ ह्रीं अर्हं पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम शुक्ल पक्ष की तरह, बढ़ते सदा रहो।
हो 'वर्द्धमान' बढ़ेमान, ना गुमान हो।।
लहरें हैं राग...।।643।।

ॐ ह्रीं अर्हं वर्द्धमानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाकर के शक्ति आप, शुद्ध कर्म है कीना।
बस करके 'महावीर' ध्यान, आत्म में लीना।।
लहरें हैं राग...।।644।।

ॐ ह्रीं अर्हं महावीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोही जगत की वस्तुओं, को अपना मानता।
निर्मोही बने वीर को भी, नाही जानता।।
लहरें हैं राग...।।645।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुवीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान का अंधेरा प्रभु, शीघ्र भगाओ।
हो 'सन्मति' प्रभु जी ज्ञान, दीप जलाओ।।
लहरें हैं राग...।।646।।

ॐ ह्रीं अर्हं सन्मतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल नहीं महा कमल, के नाथ हो बने।
है नाम 'महापद्म' प्रभु, अमृत में हो सने।।
लहरें हैं राग...।।647।।

ॐ ह्रीं अर्हं महापद्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों के देव आप हैं, हे नाथ नमस्कार।
'सुरदेव' की पदवी मिली, हे नाथ नमस्कार।।
लहरें हैं राग...।।648।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिनकर की प्रभा जीव की, नित शक्ति बढ़ाये।
'सुप्रभ' हो नाथ हे प्रभो, मम सौख्य बढ़ाये।।
लहरें हैं राग...।।649।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाहर की प्रभा आपका, कुछ काम ना करे।
होकर 'स्वयं प्रभा' प्रभु, वरदान से भरें।।
लहरें हैं राग...।।650।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

इस कर्म रूपी शत्रु को, नशने को आयुध पाया है।
फिर मोह राजा नाश दीना, आत्म गुण प्रगटाया है।।651।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वायुधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय-जय उचारे देवता, जय हो गई प्रभु आपकी।
'जयदेव' ही शुभ नाम पा, हम जाप करते आपकी।।652।।

ॐ ह्रीं अर्हं जयदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैसी प्रभा है आपकी, औरों में है दिखती नहीं।
तुम मोह तम को नाश करते, अब और शरण मिलती नहीं।।653।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभादेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाचार जग में जीव ये, करूणा की ये आशा करें।
करूणा के सागर आप उनको, जग सिन्धु से ही हैं हरें।।654।।

ॐ ह्रीं अर्हं उदंकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो प्रश्न करता आप उत्तर तो, सदा ही देते हो।
हो 'प्रश्न कीर्ति' नाम सुंदर तो सदा ही लेते हो।।655।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रश्नकीर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाधा नहीं है कोई भी, बाधायें सबकी तुम हरो।
जय पायकर जय देते हो, मुक्ति के पथ उन्नति करो।।656।।

ॐ ह्रीं अर्हं जयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो पूर्ण चंदा के समा, पूरण लिया शुभ ज्ञान है।
त्रैलोक्य दर्पण सम दिखाता, बार-बार प्रणाम है।।657।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्णबुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर से सुखों की नाही इच्छा, निज आत्म में आनंद है।

'संतुष्ट' धन को पायकर, कोई नहीं अब द्वंद है॥658॥

ॐ ह्रीं अर्हं निजानंदसंतुष्टजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस जग की वस्तु मोह लेती, मोह में फंसता रहा।
पर आप निर्मल ज्ञानधारी, का दरश करता रहा॥659॥

ॐ ह्रीं अर्हं विमलप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन हमारा अतुल बलशाली, कहा भगवान ने।
उसकी शक्ति को प्रगटाये तो, शक्ति बढ़े श्रद्धान से॥660॥

ॐ ह्रीं अर्हं महावलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन निरंजन होना है, कर्मों की काली छाया से।
ये नाश कर दो आप भगवन, दूर होना माया से॥661॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये चर्म चक्षु आपका, शुभ दर्श कर सकते नहीं।
गणधर मुनि भी आपको, आकृष्ट कर सकते नहीं॥662॥

ॐ ह्रीं अर्हं चित्रगुप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ आत्म दर्शन करते-करते, बस उसी में खो गये।
अंतिम समाधि प्राप्त करके, बस उसी के हो गये॥663॥

ॐ ह्रीं अर्हं समाधिगुप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम हमारा फूल है, खुशबू स्वयं ही चाहिये।
प्रभु हो 'स्वयं भू' आप भगवन, गतिमान शक्ति चाहिये॥664॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस जगत में कर तपस्या, शुद्ध चेतन हो गये।
'कंदर्प' भावों को तजा, आनंद अमृत पी गये॥665॥

ॐ ह्रीं अर्हं कंदर्पाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैसे मिले ना 'विजय' तुमको, आप शक्तिमान है।
सब नाथ कह चरणों में आये, बार-बार प्रणाम है॥666॥

ॐ ह्रीं अर्हं विजयनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में कुटिल परिणाम जीवों, को सदा भटकायेंगे।
पर आप हैं 'विमलेश' भगवन, मुक्तिपुर ले जायेंगे॥667॥

ॐ ह्रीं अर्हं विमलेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह दिव्य वाणी आपकी, अमृतमयी भोजन कहा।

सब भक्त आकर लेते हैं, आनंद आया है अहा॥668॥
ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यवादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
यह तन मिला मुझको जो भगवन, रोगी और बीमार है।
पर आप शक्तिवान हो, मुक्ति वरण तैयार है॥669॥
ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तवीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पुरुषों में उत्तम आप हैं, सारे जगत के फूल हैं।
जो जानता न आपको, यह ही जगत की भूल है॥670॥
ॐ ह्रीं अर्हं महापुरुषदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सद्बुद्धि ने सुविधि मिलाकर, आत्म शुद्धि को किया।
अतिश्रेष्ठ उत्तम हो प्रभु, बस दर्श हमने है किया॥671॥
ॐ ह्रीं अर्हं सुविधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
इस जगत में सबसे ज्यादा, मूल्य है शुभ ज्ञान का।
प्रज्ञा मिले परिणाम पाये, मूल्य है शुभ ध्यान का॥672॥
ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञापरिमाणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अविनाशी पद शोभित किया, मुक्ति भी लेने आई थी।
'अव्यय' हुये जाकर वहां, पा करके तो हर्षाई थी॥673॥
ॐ ह्रीं अर्हं अव्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्राचीन होकर आप रत्नों के, समान तम को हरे।
कल्याण प्रतिपल कर स्वयं, भक्तों के कर्मों को हरे॥674॥
ॐ ह्रीं अर्हं पुराणपुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो धर्म के हैं जगत में, आप उसके सारथी।
अब धर्म में पीछे न होंगे, हम सब उतारें आरती॥675॥
ॐ ह्रीं अर्हं धर्मसारथये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छन्द

हो मोक्ष मार्ग प्रकाशी, भव्यों के हो विश्वासी।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु॥676॥
ॐ ह्रीं अर्हं शिवकीर्तिजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मोही अंधा बन जाये, तुम मोह अंध नशवाये।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु॥677॥
ॐ ह्रीं अर्हं मोहांधकारविनाशकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन तन व्यापार नहीं है, आतम का ज्ञान सही है।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु।।678।।
ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रियज्ञानरूपजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम ज्येष्ठ ज्ञान को पाया, और श्रेष्ठ ध्यान अपनाया।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु।।679।।
ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कण-कण में हो प्रभु व्यापी, चरणों में आया पापी।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु।।680।।
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभूतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तीनों लोकों के 'नायक', जग में हो प्रभु सुखदायक।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु।।681।।
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तन पर ना है कोई अंबर, आपहिं हैं दिव्य 'दिगंबर'।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु।।682।।
ॐ ह्रीं अर्हं दिगम्बराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हो धर्म बीच के सेतु, आया हूँ इस ही हेतु।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु।।683।।
ॐ ह्रीं अर्हं निरन्तरजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हित मित प्रिय वाणी बोले, भक्ति में भक्त हैं डोले।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु।।684।।
ॐ ह्रीं अर्हं मिष्टदिव्यध्वनिजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
भव सागर का कर अंता, पाया है पद अरिहंता।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु।।685।।
ॐ ह्रीं अर्हं भवांतकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ना आप चलाचल होते, पर्वत सुमेरू सम रहते।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु।।686।।
ॐ ह्रीं अर्हं दृढ़व्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वाणी होती अमृतमय, झर-झर झरते-झरने नय।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु।।687।।
ॐ ह्रीं अर्हं नयाक्तंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कर्मकलंक को धोया, उज्जवल आतम को पाया।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु॥688॥

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सर्व कला के धारी, कर्मों को चोट प्रहारी।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु॥689॥

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्णकलाधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के क्लेश सब छोड़े, कर्मों से मुख को मोड़े।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु॥690॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वक्लेशहराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्रुव ज्ञान स्वभाव को पाया, पाकर के हर्ष बढ़ाया।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु॥691॥

ॐ ह्रीं अर्हं ध्रौव्यरूपजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अनंत शुभ भाव, मम पार करो अब नाव।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु॥692॥

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षयानंतस्वभावात्मकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं नयन झुकाकर मांगूँ, मुक्ति बस तुमसे चाहूँ।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु॥693॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवत्सलांछनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदि में ब्रह्मा आये, आ धर्म के फूल खिलाये।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु॥694॥

ॐ ह्रीं अर्हं आदिब्रह्ममणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुरानन बाहर दिखते, आतम बस एक ही लखते।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु॥695॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्मुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घिस-घिस के लाया चंदन, 'ब्रह्मा' को करता वंदन।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु॥696॥

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रम्हणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में हो आप 'विधाता', जीवों को देते साता।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु॥697॥

ॐ ह्रीं अर्हं विधात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरणों में है 'कमलासन', है कमल सरीखा शासन।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु॥698॥

ॐ ह्रीं अर्हं कमलासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो अमर जन्म ना पाओ, पंचम गति में बस जाओ।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु॥699॥

ॐ ह्रीं अर्हं अजन्मिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसारी आतम दोषी, पर आप हुए निर्दोषी।
मैं बिन्दू हूँ तुम सिन्धु, मोहे पार करो जगबंधु॥700॥

ॐ ह्रीं अर्हं आत्मभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य-दोहा

नाम सहस्त्र को धारते, तीर्थंकर भगवान।
जपकर मन पावन करे, बारंबार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं सिद्ध परमेष्ठिने नमः सप्त सहस नामेभ्योः अर्घ्यम् निर्वापामीति

चाल छंद

शुभ 'लोक शिखर विश्राम', आतम को पा अभिराम।
शुभ ज्ञान की है ये ज्योति, सागर के पाये मोती॥701॥

ॐ ह्रीं अर्हं लोकशिखरनिवासिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर गण को पथ बतलाया, 'सुर ज्येष्ठ' नाम को पाया॥702॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुरज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्तों का समझो आशय, भक्तों के आप महाशय॥703॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रजापतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब गर्भ में जिनवर आये, रत्नों के मेघ बरसाये।
सबने संचित कर लीना, पाया था धान्य नवीना॥704॥

ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुयोग चार के ज्ञाता, ज्ञानी के मन को भाता।
चिंतन आतम का करना, चिंता को सारी हरना॥705॥

ॐ ह्रीं अर्हं वेदांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम ध्यान की चोटी चढ़ना, मुक्ति पथ आगे बढ़ना।
फिर पूर्ण ज्ञान को पाना, शुभ ज्ञान की प्यास बुझाना॥706॥

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्णवेदज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति में जो भीगेगा, भव सिंधु पार करेगा।
बस ईश्वर से मिल जायें, चरणों में शीश झुकाये।।707।।

ॐ ह्रीं अर्हं भवसिंधुपारंगनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यानंद' को नित ध्याओ, फिर सत्य के फूल खिलाओ।
खुशबू आतम में फैले, हम भी आतम में रह लें।।708।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यानन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय से वंचित ना रहना, तुम ''अजय' की पूजा करना।
भावों से अर्घ्य चढ़ाऊँ, आकर के शीष झुकाऊँ।।709।।

ॐ ह्रीं अर्हं अजयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खोया है सब खोते हैं, भव सिन्धु में रोते हैं।
तुम सिद्धचक्र को ध्याओ, 'मनवांछित' फल को पाओ।।710।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनवांछितफलदायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देही में आतम रहता, पर बस विदेही ही रहता।
सौभाग्यशाली वह जिनवर, आनंदित है छवि लखकर।।711।।

ॐ ह्रीं अर्हं जीवनमुक्तजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु किसी से नाहीं डरते, दूजे का भय ही हरते।
आनंद उपाधि पाई, जिनवर कांति सुखदायी।।712।।

ॐ ह्रीं अर्हं शतानंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीष आपका पाऊँ, तुम सम मैं भी बन जाऊँ।
पथ के कांटे हट जायें, पथ में हम फूल बिछायें।।713।।

ॐ ह्रीं अर्हं विष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्मानित रत्न त्रय है, अपमानित मिथ्यात्रय है।
मिथ्यातज सम्यक पाऊँ, आतम की ज्योति जगाऊँ।।714।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिविक्रमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवपथ गामी के सूरज, चरणों की पाऊँ मैं रज।
है मुक्ति मार्ग परकाशी, चरणों में है विश्वासी।।715।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षमार्गप्रकाशकादित्यरूपजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चार चतुष्टय धारे, लक्ष्मी ने चरण पखारे।
लक्ष्मी की सेवा पाई, यह जीवन है सुखदाई।।716।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम कुल नरतन पाया, पाकर के प्रभु बनाया।
'पुरुषों में उत्तम' पाये, चरणों में शीश झुकाये।।717।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुरुषोत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वैकुण्ठ धाम' के वासी, रत्नत्रय पूर्ण विकासी।
आदर्श तुम्हारा जीवन, पावन होवे मेरा मन।।718।।

ॐ ह्रीं अर्हं बैकुण्ठाधिपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण परीक्षा दीनी, कर्मों ने आकर लीनी।
फिर हुये श्रेष्ठ जग दाता, हम नित्य झुकाते माथा।।719।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकश्रेयस्करजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केशो का लुंचन करते, बस पांच मुष्ठी ही धरते।
''हृषी केश'' हुये गुणवत्ता, आतम की पाई सत्ता।।720।।

ॐ ह्रीं अर्हं हृषीकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सतपथ को निर्मित कीना, शाश्वत सुख को पा लीना।
''हर'' श्रेष्ठ भक्ति को गाये, गा करके तुम्हे मनाये।।721।।

ॐ ह्रीं अर्हं हरये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुशासन निज पर करते, फिर दुष्ट कर्म भी डरते।
तुम स्वयं-स्वयं अधिकारी, हो केवल ज्ञान बिहारी।।722।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आलंबन जग को देते, बदले में कुछ ना लेते।
तुम ''विश्व'' धर्म समझाये, हम समझें चरख में आये।।723।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वम्भराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असुरो की माया छाई, प्रभु ने ही दूर कराई।
फिर ''असुर ध्वंश'' कहलाये, यह भक्त चरण सिर नाये।।724।।

ॐ ह्रीं अर्हं असुरध्वंसिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित मित प्रिय वाणी बोले, वे व्यर्थ कहीं ना डोलें।
''माधव'' उपमा के धारी, हम भक्ति के अधिकारी।।725।।

ॐ ह्रीं अर्हं माधवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की बलि हैं देते, बंधन सारे हर लेते।
''बलिबंधन'' नाम को धारा, प्रभु देना हमे सहारा।।726।।

ॐ ह्रीं अर्हं बलिबन्धनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदर्श उपस्थित करते, दृढ़ निष्ठा धरम को धरते।
इससे ही मुक्ति आई, तुमको पाकर हर्षाई।।727।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधीक्षजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभु छंद

हित मित प्रिय वाणी अमृत है, बाकी तो सब निःसार कहा।
इससे ही सत्पथ मिलता है, मुक्ति मंजिल का सार कहा।।728।।

ॐ ह्रीं अर्हं हितमितप्रियवचनजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लीला है कृष्ण समा भगवन, तुम कहां-कहां पर रहते हो।
हम ढूंढ-ढूंढकर हारे हैं, तुम पास नहीं क्यों आते हो।।729।।

ॐ ह्रीं अर्हं केशवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग को जाना सूखे तृण सम, निःसार जान जग छोड़ दिया।
झूठे हैं रिश्ते नाते सब, झूठा है जग मुख मोड़ लिया।।730।।

ॐ ह्रीं अर्हं विष्टरश्रवसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदर तन सुंदर मन है प्रभु, सुंदर हम भाव बनाते हैं।
सुंदर द्रव्यों से पूज रचा, सुंदर भगवन को ध्याते हैं।।731।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवत्सलांछनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मति को सन्मति तप से कीना, सन्मति ने मति सुधारी है।
'श्रीमत' शुभ नाम को पूजें हम, तरने की मेरी बारी है।।732।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अचल अडिग विश्वास उन्हें, च्युत होते न अपने पद से।
बन शक्तिमान आश्रय देते, रहते हैं स्वयं अपने मन में।।733।।

ॐ ह्रीं अर्हं अच्युताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक इच्छाओं ने प्रभुवर, संबंध आपसे तोड़ा है।
श्रृंगार करो ना तन का तुम, इंद्रिय सुख से मुख मोड़ा है।।734।।

ॐ ह्रीं अर्हं नरकान्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस विश्व में धर्म का संबल है, बिन धर्म के जीवन सच्चा ना।
हे 'विश्वसेन' सैनिक पद दो, तव चरणों बिन जग अच्छा ना।।735।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वसेनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या नशने को चक्र हाथ, लेकर के हरदम ठाड़े हैं।
मिथ्यामति को सुमति कर दो, चाहे कृष्ण पक्ष पखवाड़े हैं।।736।।

ॐ ह्रीं अर्हं चक्रपाणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नयनाभिराम प्रभु रूप तेरा, सब जग को मोहित करता है।
है 'पद्मनाभि' शुभ नाम तेरा, सब जग को शोभित करता है।।737।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मनाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदर करते सम्मान करे, सब जीवों से पूजित जिनवर।
शुभ नाम 'जर्नादन' आंनदित, छवि प्यारी है जिनकी मनहर।।738।।

ॐ ह्रीं अर्हं जनार्दनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कंठ तुम्हारा हे भगवन्, अमृत की वर्षा करता है।
जो भी भविजन आकर पीता, वो भवसागर से तरता है।।739।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकण्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनों लोकों के अवगुण को, क्षण भर में आप नशाया है।
तीनों लोकों के गुणगण से, हृदय में आप बसाया है।।740।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकाधिपशंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब आत्म साधना में डूबे, गहरे सागर से मोती मिले।
आतम दर्शन करके ही तुम, आनंदित हो बाहर निकले।।741।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जितने कदमों को आप रखो, उतने में कमल बिछ जाते हैं।
देवों के हो प्रभु महादेव, बस आप ही नाथ कहाते हैं।।742।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकपालाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनव अक्षय पद पाया तो, है धर्म ध्वजा भी लहरायी।
चंदा सूरज शरणा आते, देवों ने भक्ति भी गायी।।743।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषभकेतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में मृत्यु से दुख पाये, पर मृत्यु सम ना उपकारी।
'मृत्युंजय' आप कहाते हो, निर्वाण लिया मृत्यु हारी।।744।।

ॐ ह्रीं अर्हं मृत्युञ्जयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस मूरत की पूजा करते, वह तो भगवान कहाता है।
दृष्टि में यदि श्रद्धा हो तो, भगवन के दर्शन पाता है।।745।।

ॐ ह्रीं अर्हं विरूपाक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबसे ज्यादा सुंदर होते, वे 'कामदेव' कहलाते हैं।
पर मनवश कर संयम लेते, फिर मुक्ति सुख को पाते है।।746।।

ॐ ह्रीं अर्हं कामदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन अरू ज्ञान चरित, रत्नों सम पूर्ण प्रकाशित है।
इससे ही आगम दिखता है, इससे मुक्तिपथ भाषित है।।747।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धों को शिव, मुक्ति को उमा, कह करके भक्त बुलाते हैं।
शिव सुख को प्राप्त करे हर क्षण, भक्ति में शीश झुकाते हैं।।748।।

ॐ ह्रीं अर्हं उमापतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पशुओं को भी उपदेश दिया, कल्याण सभी का करते हो।
भव्यों के पालक हो जिनवर, तुम कर्म सभी के हरते हो।।749।।

ॐ ह्रीं अर्हं पशुपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकर्षित है जग रमण भाव, तुमने इन भावों को छोड़ा।
बंधन में आप नहीं बंधते, सारे बंधन को तुम तोड़ा।।750।।

ॐ ह्रीं अर्हं शम्बरारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना देश बड़ा ना मानव है, चारित्र बड़ा, सबसे जग में।
आतम में ध्यान लगाये तो, बाधा ना आती है मग में।।751।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिपुरान्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना अरि भी चरणों में आये, नारी जीवन भी ना पाया।
शुभ ज्ञान बसा कर आतम में, सबसे ज्यादा आनंद पाया।।752।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्द्धनारीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

डिगते ना हो पथ से भगवन, नाही चारित्र को छोड़ा है।
तप ध्यान साधना से भगवन, मुक्ति से नाता जोड़ा है।।753।।

ॐ ह्रीं अर्हं रुद्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तु अनंत है इस जग में, गुण भी अनंत होते उसमें।
पर्याय जान शुभ 'भाव' बने, तुम सत्य रूप देखा जग में।।754।।

ॐ ह्रीं अर्हं भावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मां गर्भ में जब जिन आये थे, देवों ने उत्सव खूब किया।
रत्नों की बारिस कर दीनी, आ करके आनंद खूब किया।।755।।

ॐ ह्रीं अर्हं गर्भकल्याणकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिव नारी पाकर लीन हुये, अविनाशी पद को पाये हैं।
समता का नीर बहा करके, जिन इसमें खूबे नहाये हैं।।756।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदाशिवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग फूल चुने कांटे छोड़े, उपहार है जग के दोनों ही।
अपनत्व दिया कर्ता बनकर, भक्तों ने शरणा आन गही।।757।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्कर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान अंधेरा फैल रहा, शुभ ज्ञान की दीपावली कर दो।
इस अंधकार का अंत होय, आतम से प्रेम घना भर दो।।758।।

ॐ ह्रीं अर्हं अंधकारांतकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदि है ना प्रभु अंत कहीं, तुम सतत् निरंतर रहते हो।
पावन प्रेरित शुभ कार्यों से, भक्तों के हृदय में बसते हो।।759।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनादिनिधनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख शांति पाने सारा जग, ना जाने क्या-क्या करता है।
चरणों मे तेरे जब आये, कष्टों को सारे हरता है।।760।।

ॐ ह्रीं अर्हं हराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बलवान हो इतने हे प्रभुवर, त्रिलोक की शक्ति पाई है।
पर आतम हित में मगन रहो, ना करते कभी बुराई है।।761।।

ॐ ह्रीं अर्हं महासेनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर नित वंदन करते हैं, मुनिवर भी ध्यान किया करते।
गणपति हो भविजन के प्रभुवर, भक्ति में कार्य सभी सरते।।762।।

ॐ ह्रीं अर्हं महागणपतिजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये चार संघ और चार ज्ञान, तुम आज्ञा को सिर धरते हैं।
पावन पूजा ये प्रेषित है, तव नाम हृदय में धरते हैं।।763।।

ॐ ह्रीं अर्हं गणनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गौरव पाया धरती पर जिन, तुम मोह तजा और मोक्ष भजा।
आदर पाते हो सबसे जिन, भक्तों को ना दो कर्म सजा।।764।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाविनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अल्पज्ञ मोह में रोष करे, प्रतिकूल विरोधी बनता है।
तुम धर्म शोध शोधी हो जिन, मनोकूल धर्म को नमता है।।765।।

ॐ ह्रीं अर्हं विरोधविनाशकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग दुःखों का सागर है, सागर में मगर मच्छ जैसे।
पल-पल हम दुख को भोग रहे, हे नाथ बचूँ मैं अब कैसे।।766।।

ॐ ह्रीं अर्हं विपद्विनाशकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश अंगों के धारक हो, धारक हो तुम निर्मल वाणी।
अज्ञान हमारा नाश करो, वाणी हे जिन तव कल्याणी।।767।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वादशात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैसे जल में हो शीतलता, वैसे ही जीव स्वभाव कहा।
आतम स्वभाव में रहते हो, आता है आनंद खूब अहा।।768।।

ॐ ह्रीं अर्हं विभावरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों दिश में शत्रू घूमे, ये प्रबल महा बलवान प्रभो।
नाशा है इन सबको तुमने, आपहि हो शक्तीमान विभो।।769।।

ॐ ह्रीं अर्हं दुर्जयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत गर्जन से डरते हैं, त्यों वाणी सुन मिथ्या भागे।
प्रभु भावों के तुम सागर हो, आतम मेरा भी जग जावे।।770।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृहद्भावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मम नमन में शक्ति दो जिनवर, अतिशय कुछ हम पर हो जावे।
भक्ति धारा को, नित्य बहा, भक्ति कर भगवन को पावे।।771।।

ॐ ह्रीं अर्हं चित्रभानवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिन कारण कार्य नहीं होता, मुक्ति पाने तुम तप कीना।
'अजरामर' जिन प्रतिभा पाकर, मंगल मुक्ति को वर लीना।।772।।

ॐ ह्रीं अर्हं अजरामरजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्कार बीज सम पाकर के, आतम वृक्षों पर फल लागे।
क्या कहूँ कहानी हे भगवन, हम भक्त भावना से जागे।।773।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्विजाराध्याध्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूचि और प्रतीति आतम में, आतम से ही नाता रखते।
पर को पर मान के छोड़ा है, आतम अमृत को नित चखते।।774।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुधाशोचिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी औषध कल्याणी है, मम जन्म मरण का रोग नशे।
तुम वाणी हम रसपान करें, आतम में ही सुख शांति बसे।।775।।

ॐ ह्रीं अर्हं औषधीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुजंग प्रयात (नरेन्द्रं फणीन्द्रं)

कमल वास कीना, कमल नेत्र धारी, कमल पे विराजे, कमल के बिहारी।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना।।776।।

ॐ ह्रीं अर्हं कमलानिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं सूर्य तुम हो, नक्षत्र भी नाही, धरम मार्ग दिखला, गये मुक्ति मांही।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना॥777॥

ॐ ह्रीं अर्हं नक्षत्रनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल करो, तुम नहीं चंद्रमा हो, सेवा करें हम, नहीं रत्न मां हो।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना॥778॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुभ्रांशवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरी सौम्य मुद्रा, जगत को लुभाये, सुसुंदर ही भावों, की माला बनाये।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना॥779॥

ॐ ह्रीं अर्हं सौम्यभावरताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिमान तज, आप सम्मान पाया, कि भक्तों ने अर्घ्यों का, थाल सजाया।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना॥780॥

ॐ ह्रीं अर्हं कुमुदबांधवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरम से रति करके, ध्यान किया है नहीं आंधियों से तुम्हें भय हुआ है।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना॥781॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मरतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकुल न व्याकुल निराकुल हुये हो, जगत जीव पूजे, महाकुल हुये हो।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना॥782॥

ॐ ह्रीं अर्हं आकुलतारहितजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो नाम तेरा, है पुण्य बढ़ाये, धरम ध्यान तेरा, जगत को नशाये।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना॥783॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन प्रभो नाम, पावन बनावे, जगत संकटों को है, क्षण में नशावे।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना॥784॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यजिनेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरम राज्य तेरा, है सारे जहां में, सभी मानते हैं, जो जीव यहां हैं।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना॥785॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मराजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं रस बनाकर, स्वयं से ही पीते, जगत के रसों में, नहीं आप जीते।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना॥786॥

ॐ ह्रीं अर्हं भोगराजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत कालिमा को, प्रभो धो दिया है, रतनत्रय के धारी, स्वयं सुख लिया है।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना।।787।।
ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनज्ञानचारित्रात्मजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
निजातम के चिंतन ने, भगवन बनाया, नशाकर कुमति को, है आनंद पाया।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना।।788।।
ॐ ह्रीं अर्हं भूतानन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जगत वस्तु जग में, सदा दुःख देती, देखे प्रभु को तो, वरदान लेती।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना।।789।।
ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धिकान्तजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अंतर प्रतिष्ठित, प्रभो तुमको करते, हो अक्षय निवासी, सदाकर्म हरते।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना।।790।।
ॐ ह्रीं अर्हं अक्षयानंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सानंद सार्थक किया आप जीवन, परम ज्ञानी ध्यानी, तजी भव की भटकन।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना।।791।।
ॐ ह्रीं अर्हं वृहतांपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्रोता सभी लाभ, लेते तुम्हारा, तेरी दिव्य वाणी का, पाये सहारा।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना।।792।।
ॐ ह्रीं अर्हं अपूर्वदेवापदेष्ट्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिद्धों के सम ही, हमें भी बना दो, नैया हमारी भी, पार लगा दो।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना।।793।।
ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसमूहेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
स्वयं शुद्ध, बुद्धा, महाबुद्ध धारी, करूँगा मैं सेवा, सदा ही तुम्हारी।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना।।794।।
ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धबुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अस्तित्व तम का, चहुँ ओर फैला, प्रभो भेद दीना, नहीं है झमेला।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना।।795।।
ॐ ह्रीं अर्हं तमोभेदने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।
कर्मों की आंधी, ही पथ से डिगाये, धरम मार्ग दर्शक, शरण तेरी आये।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना।।796।।
ॐ ह्रीं अर्हं धर्ममार्गदर्शकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाधैर्य धारी, तुम्हीं सर्व ज्ञाता, धरम पथ के निर्णय से, मिलती ही साता।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना॥797॥
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वशास्त्रनिर्णायकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
गति श्रेष्ठ जग में है, मुक्ति बताई, प्रभो कर्म नाशे, उसे आप पाई।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना॥798॥
ॐ ह्रीं अर्हं पंचमगतिजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम्हें ज्ञानधारी, सुमति ने बनाया, तुम्हीं श्रेष्ठ दाता, शरण तेरी आया।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना॥799॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्रेष्ठसुमतिदात्रिजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पृथक हो जगत से, हे मुक्ति निवासी, सुगति को ही पाया, हुये आत्मवासी।
अपनत्व देकर, प्रभो ज्ञान देना, ये चेतन दिया है तो चिंतन भी देना॥800॥
ॐ ह्रीं अर्हं सुगतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य-दोहा

व्यस्त रहूँ संसार में, अस्त करो सब कर्म।
खीचों मेरी डोर को, जाने धर्म का मर्म॥
ॐ ह्रीं अष्टसहस्रनामेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

चौपाई

श्रेष्ठ तुम्ही कल्याण किया है, भव सागर को पार किया है।
आप अलौकिक मंगल करते, भक्त भाव से पूजा करते॥801॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्रेष्ठकल्याणकारकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
परम धरम ऐश्वर्य के धारी, पूजा करते भक्त तिहारी।
पूजा से हम शुभ फल पाये, फल पाने हम शीश झुकाये॥802॥
ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वरीयसम्पन्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
परम ब्रह्म 'परमातम' तुम हो, परम शुद्ध शुद्धातम तुम हो।
सभी सृजन करते हैं बाहर, किन्तु आत्म के पाये जवाहर॥803॥
ॐ ह्रीं अर्हं परब्रह्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्म 'विजेता' कर्म को जीते, आतम अमृत को नित पीते।
नमन करो स्वीकार हमारा, भक्त चरण में पाये सहारा॥804॥
ॐ ह्रीं अर्हं कर्मारिजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वज्ञान के ज्ञाता तुम हो, 'सर्व शास्त्र' के भ्राता तुम हो।
करूँ आत्म चिंतन प्रभु तेरा, हरना है अज्ञान अंधेरा।।805।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वशास्त्रज्ञजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ लक्षण हैं आप विलक्षण, सार्थक कीना तुमने क्षण-क्षण।
कली फूल बनकर मुस्काई, आप चरण में ज्योति जगाई।।806।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुभलक्षणजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य ज्ञान का दीप जलाया, कर्म कालिमा को हरवाया।
सत्य धर्म का चमन खिलाया, भक्त धर्म की गंध को पाया।।807।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वबोधसत्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग द्वेष संकल्प न करते, ज्ञाता द्रष्टा भाव ही धरते।
जीवन को अनमोल बताया, सार्थक कर सुख चैन को पाया।।808।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्विकल्पाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अद्वितीय जग में भगवान, करते बारंबार प्रणाम।
लाभान्वित है जग के जीव, मुक्ति की मिलती है नींव।।809।।

ॐ ह्रीं अर्हं अद्वितीयबोधजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसारी जग में भरमाये, दुख में ही वह गोता खाये।
लोकपाल भी आप कहाये, भव दुख नाशो आप सहाय।।810।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकपालाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के रस नीरस हो जाये, आत्म रसी का स्वाद न जाये।
श्वांस-श्वांस में तुम्हें बसाये, सुख पाने को शीश झुकाये।।811।।

ॐ ह्रीं अर्हं आत्मसरसरतजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रांति भ्रांति को आप निवार, शांतिदान करते मनहार।
प्रेम दीप लेकर हम आये, शांति मिले हम शीश झुकाये।।812।।

ॐ ह्रीं अर्हं शांतिदात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं हो खंडित नहीं छेद है, आतम में ना होता भेद है।
नही कल्पना मुक्ति पाऊँ, वास्तव में मैं मुक्ति जाऊँ।।813।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभेद्योछेद्य-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच तत्व काया का भार, भेद दिया सब कर्म निवार।
प्रभु की करूणा है अनमोल, कर सकता ना इसकी तोल।।814।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचस्कंधमयात्मदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य देख सब झूठ को त्यागा, संयम में है फिर मन लागा।
जग में रह जग को है छोड़ा, फिर वैराग्य से नाता जोड़ा।।815।।
ॐ ह्रीं अर्हं भूतार्थभावनासिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चारों दिश दिखता चंद्रानन, घोर तपस्या का यह आनन।
दर्श तिहारा निश दिन पाऊँ, और कहीं ना अब मैं जाऊँ।।816।।
ॐ ह्रीं अर्हं चतुराननजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सत्य वाणी पा सत्य ही बोले, नहीं असत्य में भगवन डोले।
चिंतन मन से आग जलाई, सभी कर्म को आप नशाई।।817।।
ॐ ह्रीं अर्हं सत्यवक्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मन वच काया स्थिर करते, आस्त्रव नहीं आन के वरते।
संयम के आंगन में तप है, स्थिरता में होता जप है।।818।।
ॐ ह्रीं अर्हं निराश्रवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चतु अनुयोगों को समझाये, भव्य जीव सुनकर हर्षाये।
सागर के मोती को पाया, हृदय कमल में उसे बिठाया।।819।।
ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्भूमिकशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।।819।।
दूजा पद ना सिद्ध समान, ढूंढो चाहे सर्व जहान।
खुद पैरों से चलकर जाओ, सौख्य मयी मुक्ति को पाओ।।820।।
ॐ ह्रीं अर्हं अन्वयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अंदर में ही सौख्य भरा है, आप 'समाधि निमग्न' वरा है।
आतम प्रेम बिना ना मिलता, स्वयं फूल सच में ना खिलता।।821।।
ॐ ह्रीं अर्हं समाधि-निमग्नजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
माथ तिलक सम आप अनूपा, दर्श ज्ञान औ सिद्ध स्वरूपा।
सारा उपवन आप से महका, एक प्रभु में मन है सबका।।822।।
ॐ ह्रीं अर्हं लोकभालतिलकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
भावुकता कामुकता त्यागी, आपने स्वच्छ भावना भायी।
सदा सत्य का फूल खिलाया, भक्ती से भगवान मिलाया।।823।।
ॐ ह्रीं अर्हं तुच्छभावभिदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
द्रव्यों को सच रूप ही जानो, कीचड़ कमल समा सम मानो।
सत्य से सारे सुख को पाये, सुख पाने को शीश झुकाये।।824।।
ॐ ह्रीं अर्हं षड्द्रव्यदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल तत्व के हो तुम ज्ञाता, देख ज्ञान निज में रम जाता।
यही भाव भगवान बनाये, शिवपुर में फिर लेकर जाये।।825।।

ॐ ह्रीं अर्हं सकलवस्तुविज्ञात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब पदार्थ का ज्ञान कराते, इस बिन संशय ना मिट पाते।
कदम-कदम जब कदम बढ़ाया, ज्ञान स्वरूपी आतम पाया।।826।।

ॐ ह्रीं अर्हं षोडशपदार्थवादिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच अस्ति की महिमा बोली, सभी शास्त्र की गरिमा खोली।
महाशान्ति साम्राज्य के नायक, भक्तों के हो ध्याने लायक।।827।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचास्तिकायबोधकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण 'ज्ञान अध्यक्ष' बने हो, अज्ञानी अज्ञान हने हो।
क्रोध मान पर ठोकर मारी, सभी तजे जो भाव विकारी।।828।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानाध्यक्षजिनायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंतन सृष्टि का वरदान, चिंतन कर बनते भगवान।
चिंता तज चिंतन में आये, प्रभु चरणों में शीश झुकाये।।829।।

ॐ ह्रीं अर्हं समवायसार्थकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साध्य तुम्ही साधन दो दान, पाये हम भी मोक्ष महान।
हम वंचित हैं धर्म से आज, तुमको नमता सकल समाज।।830।।

ॐ ह्रीं अर्हं भक्तैकसाधनधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अशेष है आपके पास, नहीं इसी से है संताप।
फूलों पर ज्यों भौंरे आये, त्यों ही भक्त चरण को पाये।।831।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरवशेषगुणामृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्य पक्ष का खंडन करो, जैन धर्म का मंडन करो।
सार्थक हो फिर ज्ञान विशेष, अंधकार ना रहा अशेष।।832।।

ॐ ह्रीं अर्हं सांख्यादिपक्षविध्वंसकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यकदर्शन मुक्ति दिलाये, जीव आत्म दर्शन करवाये।
किन्तु कर्म आंधी जब आये, पुरुषारथ सब निष्फल जाये।।833।।

ॐ ह्रीं अर्हं समीक्षकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदि पुरुष आदि भगवान, बारंबार मैं करूँ प्रणाम।
आदि समय में आदि आये, आकर सबको धर्म सिखाये।।834।।

ॐ ह्रीं अर्हं आदिपुरुषजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो सौभाग्य तत्व का ज्ञान, ज्ञान बिना सूना जग जान।
क्षमता शक्ति भी बेकार, ज्ञान पाने को है तैयार।।835।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचविंशतितत्त्ववेदकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यक्ताव्यक्त लिया सब जान, जग में हो गये आप महान।
शान्ति समर्थक शान्ति दान, दाता मम कर दो कल्याण।।836।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्ताव्यक्तज्ञानविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद ज्ञान निज में प्रगटाया, जड़ चेतन का भेद दिखाया।
सुविधा-दुविधा सबको छोड़ा, बस मुक्ति से नाता जोड़ा।।837।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानचैतन्यभेददृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवेदन आतम का कीना, सौख्य स्वानुभव निज में लीना।
आप अलौकिक तप को करते, अर्घ्य समर्पण चरण में करते।।838।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वसंवेदनज्ञानवादिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश सभा के मध्य विराजे, समवशरण में शोभा साजे।
शीश झुका हम वंदन करते, चरणों का अभिनंदन करते।।839।।

ॐ ह्रीं अर्हं समवसरण-द्वादशसभापतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री प्रमाण आगम बतलाया, भक्तों को प्रभु ज्ञान सिखाया।
प्यासी अखियाँ तृप्त होयेंगी, प्रभु दर्शन के बिना रोयेंगी।।840।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिप्रमाणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'अध्यक्ष' पदों के लायक, तुमही हो प्रभु सबके नायक।
धरती अंबर पर शासन है, स्वर्णमयी शुभ सिंहासन है।।841।।

ॐ ह्रीं अर्हं अध्यक्षप्रमाणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कथन अपेक्षा कृत बतलाया, जिसने वाद विवाद मिटाया।
सब कलेश मेरे मिट जायें, स्याद्वाद जिन धरम को पाएं।।842।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्याद्वादवादिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देखो प्रभु तुम सारे क्षेत्र, है उत्कृष्ट आपके नेत्र।
कृपा दृष्टि तेरी मिल जायें, तो हम भव सागर तर जायें।।843।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेत्रज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतर बाहर शुद्धि पाई, कर्म अशुद्धि आप भगाई।
आतम बस आतम था केवल, और नहीं था कुछ भी संबल।।844।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धात्मजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुषारथ बस एक दिशा में, पुरुषारथ बस एक दशा में।
लक्ष्य बनाकर मुक्ति पहुंचे, बैठ वहां पे आँखे मींचे।।845।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुरुषात्मजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरभव धारी के तुम मीत, नरभव धारी गये ये जीत।
आत्म ध्यान की बजा बांसुरी, पहुँचे प्रभुवर भायी सुंदरी।।846।।

ॐ ह्रीं अर्हं नराधिपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन पर आवरण नहीं है, शुद्ध चेतना वरण यही है।
आतम में हुआ ज्ञान सबेरा, आकर के प्रभु करो बसेरा।।847।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरावरणचेतनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तिपुर की शीतल छाया, तप बल धारी ने ही पाया।
मोक्षरुप जिन हो जाते हैं, हम पूजा करने आते हैं।।848।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षरूपजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुए अकृत्रिम शुद्ध जिनालय, देव बसे उसमें देवालय।
भाव भक्ति से वंदन जाऊँ, पूजन करके हर्ष बढ़ाऊँ।।849।।

ॐ ह्रीं अर्हं अकृत्रिम जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण संसारी जन पावे, वो गुण सिद्धों में ना आवे।
'निर्गुण' कहते आपको भाई, भक्तों ने मिल महिमा गाई।।850।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

आप अमूरत हो गये, पुद्गल से ना काम।
सिद्ध देव के चरण में, बारंबार प्रणाम।।851।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक आनंद मय, सबसे ज्यादा आप।
अभिवादन करते सभी, करें तुम्हारा जाप।।852।।

ॐ ह्रीं अर्हं उमापतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में व्याप्त है, देखें सारा लोक।
सिद्धालय में राजते, भक्त करेंगे धोक।।853।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पंदन अब ना करो, सदा रहो निष्कंप।
आत्म रूप सम देह है, सिद्ध अनंत अनंत।।854।।

ॐ ह्रीं अर्हं अक्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इष्ट मान पूजा करे, करे तुम्हारा ध्यान।
अचल ज्ञान संपत्ति मिले, बारंबार प्रणाम।।855।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवेष्टजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सागर के तट पर गये, अब न लौटो आप।
पूर्ण सौख्य वर ले लिया, करें तुम्हारा जाप।।856।।

ॐ ह्रीं अर्हं तटस्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविचल हो निष्काम हो, स्वात्म सुधारस लीन।
मन मेरे में आ बसो, स्वयं सिद्ध स्वाधीन।।857।।

ॐ ह्रीं अर्हं कूटस्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान मेघ बरसाओगे, बैठे चातक आज।
आगम ज्ञाता ज्ञान दो, नमता सकल समाज।।858।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर निमित्त कुछ ना करे, चाहे हो तूफान।
निज आतम में लीन हो, भक्त करे प्रणाम।।859।।

ॐ ह्रीं अर्हं निराबाधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पण के सम स्वच्छ हो, नहीं है कोई भाव।
भाव रहित जिन देव जी, पार लगाओ नाव।।860।।

ॐ ह्रीं अर्हं निराभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सागर में नौका पड़ी, डोल रही मझधार।
मांझी बन तारो इसे, वरना होगी हार।।861।।

ॐ ह्रीं अर्हं भववारिधिपारकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निश्चय में अब तुम रहो, रहा नहीं व्यवहार।
बंध मोक्ष के भाव से, हो गये हैं प्रभु पार।।862।।

ॐ ह्रीं अर्हं बंधमोक्षरहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिन प्रधान न जग चले, नहीं मोक्ष का मार्ग।
साधन बन साधक बने, तजे सभी उन्मार्ग।।863।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षसाधनप्रधानजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आधिव्याधि नित जीव को, खूब करे परेशान।
इसका कारण कर्म है, नाश किये भगवान।।864।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मव्याधिविनाशकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपना पराया जानकर, पाया निज का स्वाद।
स्थित उसमें हो गये, देवें आशीर्वाद॥865॥

ॐ ह्रीं अर्हं निजस्वभावस्थितजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बादल बिन सूरज हुये, है प्रकाश चहुंओर।
वैसे जिनवर हैं मेरे, होये ज्ञान की भोर॥866॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरावरणसूर्यजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव ही जीव को, मुक्ति में ले जाये।
शुद्धातम की प्रीति ही, मुक्ति से मिलवाये॥867॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वरूपारूढ़जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध विशुद्धि आत्म है, सन्मति है जिन नाम।
श्रेष्ठ पदों पर आप है, बारंबार प्रणाम॥868॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रकृतिप्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध ज्ञान सन्मति जगा, दिया ज्ञान का दान।
शुद्धातम शिवलोक में, जाने का वरदान॥869॥

ॐ ह्रीं अर्हं विशुद्धसन्मतिजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंश रूप पर में नहीं, नहीं किसी से काम।
हो निरोग शुभ साजते, खांसी नहीं जुकाम॥870॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धरूपजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदि नाथ आदि प्रभो, आदि दीक्षा पाये।
आदि गये हो मोक्ष को, शत-शत शीश नवाये॥871॥

ॐ ह्रीं अर्हं आद्यवेदसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विकृति तज प्रकृति हुए, पाया सौख्य स्वरूप।
निर्दोषी हो जगत में, पाया रूप अनूप॥872॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्विकृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यातम को नाशने, ज्ञान दीप प्रजलाय।
दूर अंधेरा मम करो, शत-शत शीश झुकाय॥873॥

ॐ ह्रीं अर्हं मिथ्यातिमिरविनाशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरण नहीं आचरण कर, दो आशीष अनूप।
मंजिल मुझको भी मिले, पायें सौख्य स्वरूप॥874॥

ॐ ह्रीं अर्हं मीमांसकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य अस्ति के कथन को, आप कहो निरधार।
ज्ञान धार अमृत मिले, भक्तों के आधार।।875।।

ॐ ह्रीं अर्हं अस्तिसर्वज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज सोलह कारण

जिनवाणी के हो तुम लाल, पूजा करते भक्त विशाल।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय।।
मुक्ति पुर को दो साम्राज्य, कर प्रयत्न पाऊँ मैं राज।
सावन होय, ज्ञान की वर्षा सावन होय।।876।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतपूज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं स्वरूपी उत्सव होय, आतम नित ही विकसित होय।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय।।
मुक्ति पुर का...।।877।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदोत्सवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन प्रभुवर के होय अगम्य, तब केवल के आप हैं गम्य।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय।।
मुक्ति पुर का...।।878।।

ॐ ह्रीं अर्हं परोक्षज्ञानागम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतज्ञानी पाठक तुम ज्ञान, नित प्रति तुमको करे प्रणाम।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय।।
मुक्ति पुर का...।।879।।

ॐ ह्रीं अर्हं इष्टपाठकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम-जनम की गहरी प्यास, मुक्ति पुरी में करना वास।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय।।
मुक्ति पुर का...।।880।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धकर्मक्षयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यातम को किये निवार, आप हुए भव सागर पार।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय।।

मुक्ति पुर का...॥881॥

ॐ ह्रीं अर्हं मिथ्यामतनिवारकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी ज्ञान हुआ प्रत्यक्ष, सब प्रमाण है नहीं विपक्ष।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय॥
मुक्ति पुर का...॥882॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्यक्षैकप्रमाणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण पर्यय लहरें सब नशीं, अस्ति मुक्त मुक्ति में बसीं।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय॥
मुक्ति पुर का...॥883॥

ॐ ह्रीं अर्हं अस्तिमुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु मुख से जो वाणी मिली, जिनवाणी की कलियां खिली।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय॥
मुक्ति पुर का...॥884॥

ॐ ह्रीं अर्हं गुरुश्रुतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप त्रिलोकी हो जिन नाथ, भक्त झुकावे तुमको माथ।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय॥
मुक्ति पुर का...॥885॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर हुए आप परिणाम, चरणों में हम करें प्रणाम।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय॥
मुक्ति पुर का...॥886॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्वभावाविरुद्धजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मज्ञान पा धारा योग, जीवन भर कीना प्रयोग।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय॥
मुक्ति पुर का...॥887॥

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्दों को पहचानें आप, शब्द से पाये ज्ञान प्रताप।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय॥
मुक्ति पुर का...॥888॥

ॐ ह्रीं अर्हं शब्दाद्वैतब्रह्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म तत्व जाने जिनदेव, भक्त करे नित आपकी सेव।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय।।
मुक्ति पुर को दो साम्राज्य, कर प्रयत्न पाऊँ मैं राज।
सावन होय, ज्ञान की वर्षा सावन होय।।889।।

ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मतत्त्वप्रकाशजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खंड किया पाखंड का नाश, सत्य धर्म का किया प्रकाश।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय।।
मुक्ति पुर का...।।890।।

ॐ ह्रीं अर्हं पाखण्डखण्डकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नय के द्वारा करे विचार, नयाधीन करते प्रचार।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय।।
मुक्ति पुर का...।।891।।

ॐ ह्रीं अर्हं नयाधीनजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतःकृत में मुक्ति पाये, नहीं समय ज्यादा लग पाये।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय।।
मुक्ति पुर का...।।892।।

ॐ ह्रीं अर्हं अन्तकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार करो भव सागर नाव, मंजिल लंबी छोटे पांव।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय।।
मुक्ति पुर का...।।893।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार हुए भव सागर तीर, इसीलिए हो तुम महावीर।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय।।
मुक्ति पुर का...।।894।।

ॐ ह्रीं अर्हं तीरप्राप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक बार जो शरणा आये, उसको ही प्रभु पार लगाये।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय।।
मुक्ति पुर का...।।895।।

ॐ ह्रीं अर्हं परहितस्थिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्र रतनत्रय को तुम पाये, जग अवलोकें कही ना जाये।

पावन होय, तनमन मेरा पावन होय॥

मुक्ति पुर का...॥896॥

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नत्रयनेत्रजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध बुद्ध शक्ती भंडार, तजा आप जग का श्रृंगार।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय॥

मुक्ति पुर का...॥897॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धबुद्धजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान कर्म से शुद्धि पाये, इसीलिए हम शरण में आये।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय॥

मुक्ति पुर का...॥898॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानकर्मसमुच्चयिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन से तृप्ति हो जाये, मन मंदिर में तुम्हें बसाये।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय॥

मुक्ति पुर का...॥899॥

ॐ ह्रीं अर्हं नित्यतृप्तजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप मैल सारा धुल जाये, जो जिनवर की पूजा गाये।
पावन होय, तनमन मेरा पावन होय॥

मुक्ति पुर का...॥900॥

ॐ ह्रीं अर्हं पापमलनिवारकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

शंभु छंद

श्रद्धान समर्पण की भाषा, पहचानो हे मेरे भगवन।
मैं द्रव्य भाव से नमन करूं, स्वीकारों हे मेरे भगवन॥
यह अष्ट द्रव्य का थाल सजा, मैं तुम्हें मनाने आया हूँ।
आतम शुद्धि मेरी होवे, यह भाव साथ में लाया हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः नव सहस नामावलेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

पद्धरि छन्द

राहु केतु ना ग्रसते हैं, बादल भी नाही ढंकते हैं।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो।।901।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरावरणज्ञानघनजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संकल्प विकल्प न होते, योगों के नाही गोते।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो।।902।।

ॐ ह्रीं अर्हं उच्छिन्नयोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का आना रोका है, देते ना उनको मौका है।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो।।903।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगकृतनिर्लेपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम स्वस्थ आत्मा पायी है, रोगों की करी सफाई है।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो।।904।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्थलयोगरतजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम योगो को स्थिर करते, निर्भय हो आतम में रहते।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो।।905।।

ॐ ह्रीं अर्हं गिरिसयोगजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वचन काया भी ना जाने, सूक्ष्म हो इतने ना माने।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो।।906।।

ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मीकृतवपु:क्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम बचन हृदय आनंद करे, सबके मनका वह खेद हरे।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो।।907।।

ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मवाक्मितयोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्कर्म शुद्ध है आत्म जिया, कृतकृत्य हुये हो ज्ञान लिया।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो।।908।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कर्मशुद्धात्मजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्यक्ष सभी को दर्श देय, सब कर्म कालिमा को हरेय।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो।।909।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूताभिव्यक्तचेतनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धर्मरास तुमको आया, भव्यों के मन को यह भाया।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो।।910।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मरासजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे परम हंस तुम हो ज्ञानी, हे जगत वंश तुम हो ध्यानी।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो।।911।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमहंसाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवर से कर्म को रोक दिया, तुम निर्मल हो निर्लेप किया।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो।।912।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमसंवराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्णों आवरण से दूर हुए, तुम कर्म पटल को भेद दिये।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो।।913।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरावरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झर-झर कर सारे करम झरे, भर-भर कर सारे सौख्य भरे।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो।।914।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमनिर्जराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में प्रताप इतना फैला, मिथ्यात्व देश नाही झेला।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो।।915।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्वलितप्रभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वे कर्म पूर्णतः गये भाग, श्री जिनवर के ना रहे पास।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो।।916।।

ॐ ह्रीं अर्हं समस्तकर्मक्षयजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विस्फोटक तप से गिरि तोड़ा, कर्मों ने पिंडा तब छोड़ा।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो।।917।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मविस्फोटकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ति अनंत को पाया है, जा मुक्ति नगर बसाया है।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो।।918।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तवीर्यजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम से एकाकार किया, उसमें ही उत्तम स्वाद लिया।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो।।919।।

ॐ ह्रीं अर्हं एकाकारसास्वादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण विश्व में एक आप, मिट जाता है संसार ताप।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो।।920।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वाकाररसाकुलिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस प्राण बिना जीवित रहते, बस आतम-आतम ही कहते।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो॥921॥

ॐ ह्रीं अर्हं सदाजीविताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमृत' कर सागर पाया है, मल-मल कर खूब नहाया है।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो॥922॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आलस निद्रा ना आती है, 'जागृत' आतम ही भाती है।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो॥923॥

ॐ ह्रीं अर्हं जाग्रते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वप्नों में नाहीं खोते हो, बस आतम में ही रहते हो।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो॥924॥

ॐ ह्रीं अर्हं असुप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो निराबाध सुख के धारी, हो 'स्वप्रमाण' अघ के हारी।
तुम ज्ञान से ही दीवाली हो, मम जीवन के तुम माली हो॥925॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वप्रमाणस्थिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभंगी छन्द

आकुलता तजते, आतम भजते, स्वस्थ सदानिजरूप अहो।
नित शीश झुकाना, चरण में आना, दर्श तेरा शुभ रूप अहो॥926॥

ॐ ह्रीं अर्हं निराकुलितजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रिय व्यापारा, जान असारा, इसे आपने छोड़ा है।
अद्‌भुत हो योगी, धर्म के भोगी, जग से मुख को मोड़ा है॥927॥

ॐ ह्रीं अर्हं अयोगिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन के शुभ लक्षण, होय विलक्षण, सबसे सुन्दर रूप हुआ।
तुम्हें भक्त निहारे, रूप सम्हारे, आकर सबने दर्श किया॥928॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुरशीतिलक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रिय के गुण तज, आतम गुण भज, सब उपहार ये पाये हैं।
भक्तों की भक्ति, कर अभिव्यक्ति, गुण पाने हम आये हैं॥929॥

ॐ ह्रीं अगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन की भटकन, जग की अटकन, तुमको ना बाधा डाले।
गुण दोष निहारो, भक्त सम्हारो, पड़े करम के हैं जाले॥930॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतानन्तपर्यायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोही रखवाले, मोह सम्हाले, कर्मनि नित्य सताते हैं।
सब कर्म नशाया, ज्ञान बसाया, आपके पास न आते हैं।।931।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वसंस्कारनाशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय-जय हो कारा, देव तुम्हारा, आप चतुष्टय धारी है।
मम दोष को हरना, पार भी करना, आज तो मेरी बारी है।।932।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तचतुष्टयवृद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रिय वचन तुम्हारे, भक्त को प्यारे, सबसे ज्यादा लगते हैं।
मुझे वाणी वर दो, शीतल कर दो, दीप ज्ञान के जगते हैं।।933।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रियवचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है ज्ञान अपारा, नाहीं सहारा, स्वयं-स्वयं से पाया है।
प्रभु रूप है सच्चा, अच्छा-अच्छा सेवक तरने आया है।।934।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरवचनीयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहि ईश तुम्हारा, स्वयं संवारा, अपने ही इस जीवन को।
हम धैर्य को पाये, शक्ति जगाये, करे पार हम भव वन को।।935।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ज्योति प्रकाशी, आत्म विकाशी, छाया मुक्ति की पाई।
प्रभु भक्त बुलाये, आश लगाये, शरणा हम तेरी पाई।।936।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनणु पर्यायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्थित आतम में, परमातम में , नाहिं जगत में रमते हो।
तुम नहीं चला चल, नहीं निशाकर, आत्म जगत में रहते हो।।937।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थेयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि जन के प्यारे, जग से न्यारे, भक्तों के मन भावन हो।
अव्यय अविनाशी, शिवपुरवासी, भक्तों के तुम सावन हो।।938।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयममय समता, नाहीं ममता, राग द्वेष छल कपट नहीं।
बस निज से नाता, और न भाता, मोह मान औ क्रोध नहीं।।939।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थिरजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम के साथी, दिया औ बाती, जलकर जग परकाशा है।
आतम से प्रीति, जगत से भीति, किया मुक्ति में वासा है।।940।।

ॐ ह्रीं अर्हं निजात्मतत्त्वनिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम भव पाया, श्रेष्ठ बनाया, दीक्षा ले कल्याण किया।
हम तर जायें, पाप नशायें, शक्ति दो ना जाये जिया॥941॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रेष्ठभवधारकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम्हीं श्रेष्ठ हो, तुम्ही 'ज्येष्ठ' हो, और बड़ा ना कोई है।
सत्पथ दिखलाते, राह चलाते, तुमसा ना प्रभु कोई है॥942॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म प्रदेशा, हले न शेषा, हो निष्कंप विराज रहे।
स्थिर मन मेरा, करो बसेरा, हृदय में यदि साज रहे॥943॥

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कंपप्रदेशजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो गुणों के सागर, ज्ञान उजागर, वसुधा का श्रृंगार किया।
हो सबके स्वामी, अंतर्यामी, भक्त द्वार पर आय लिया॥944॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमक्षमादिगुणाब्धिजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के शुभ चरणा, भक्त ये शरणा, पूजन करने आया है।
हम भाव बनाने, मुक्ति पाने, भक्त हृदय हर्षाया है॥945॥

ॐ ह्रीं अर्हं पूज्यपादजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमार्थ को ध्याया,रूप सुहाया, सुख अक्षय को पालीना।
परमार्थ की सेवा, हे जिनदेवा, हमने यह सुख ले लीना॥946॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमार्थगुणनिधानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बस निश्चय नय में, आतम मय में, हर क्षण हर पल रहते हो।
व्यवहार है छूटा, कर्म है रूठा, आतम रस में बहते हो॥947॥

ॐ ह्रीं अर्हं व्यवहारसुप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आलस ना करते, कर्म को हरते, शक्ति अपरम्पार मिली।
तप शक्ति बढ़ाये, कर्म नशाये, कलिया अंतरतम की खिली॥948॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतिजागरूकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संकट सब नशते, गुण सब बसते, स्थिर योगों को कीना।
अति स्थित रहते, कुछ ना कहते, आनंद निज में पा लीना॥949॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतिसुस्थिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंचलता भागी, आतम जागी, जबसे निज को जाना है।
जिनवर की महिमा, गुरु की गरिमा, का आशीष भी पाना है॥950॥

ॐ ह्रीं अर्हं उदितोदितमाहात्म्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर चाल

अनुकूल तत्व शब्द, और विचार दे दिये।
भक्तों ने आके प्रेम, से रस पान को पिये।।
भक्तों को शुद्ध ज्ञान का, अमृत भी पिलाओ।
भक्तों के हृदय आके बसो, दर्श दिखाओ।।951।।

ॐ ह्रीं अर्हं तत्त्वज्ञानानुकूलजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।951।।

कृत्रिम नहीं हो स्वयं, सिद्ध आप ही बने।
नाही है जन्म मृत्यु ना, शिवधाम में बसे।।
भक्तों को...।।952।।

ॐ ह्रीं अर्हं अकृत्रिमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।952।।

पापों का फैला अंधकार, दूर कीजिए।
भक्तों को दिखा राह, हमें शरण दीजिए।।
भक्तों को...।।953।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमेयमहिम्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।953।।

तुम शुद्ध हो तुम बुद्ध हो, तुमही विशुद्ध हो।
रागादि नहीं द्वेष नही, ना ही क्रुद्ध हो।।
भक्तों को...।।954।।

ॐ ह्रीं अर्हं अत्यन्तशुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।954।।

प्रभु आप स्वयं वर बने, औ मुक्ति को पाओ।
संग मुक्ति का आनंद ले, फिर लौट ना आओ।।
भक्तों को...।।955।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धिस्वयंराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।955।।

प्रभु मन पवित्र तन पवित्र, मेरा कीजिए।
'सिद्धानुजाय' बने, हमें ज्ञान दीजिए।।
भक्तों को...।।956।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धानुजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।956।।

शिवपंथ गामी भक्त, तेरे पीछे आयेंगे।
बस मार्ग दिखाओ मुझे, तो मुक्ति जायेंगें।।
भक्तों को...।।957।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिवपुरीपंथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।957।।

सारे जगत के गुण समूह ठौर ना पाये।

आकर तुम्हारे पास, में आनंद बढ़ाये।।
भक्तों को शुद्ध ज्ञान का, अमृत भी पिलाओ।
भक्तों के हृदय आके बसो, दर्श दिखाओ।।958।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तगुणसमूहजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।।958।।

आधि नहीं व्याधि नहीं, उपाधि भी नहीं।
कोई ग्रह नहीं विग्रह, नही संताप भी नहीं।।
भक्तों को...।।959।।

ॐ ह्रीं अर्हं पर-उपाधिनिग्रहकारकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।।959।।

होकर के स्वयं सिद्ध, प्रभु मुक्ति पायी है।
भक्तों ने आके आपकी, पूजा रचायी है।।
भक्तों को...।।960।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंसिद्धजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये इन्द्रियाँ जगत के, प्राणियों को सताती।
पर आपने तप से इन्हें, ही दूर भगादी।।
भक्तों को...।।961।।

ॐ ह्रीं अर्हं इन्द्रियागम्यजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन पुष्ट है मन पुष्ट है, आतम भी पुष्ट है।
तन धन्य है मन धन्य है, आतम भी धन्य है।।
भक्तों को...।।962।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ब्रह्म को पा करके ब्रह्मचर्य धारते।
सब शील के दोषों से, दूर आत्म वारते।।
भक्तों को...।।963।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टादशसहस्रशीलेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कमल भांति भ्रमर, बन के हम आये।
लेकर के ज्ञान गंध, भक्त हर्ष बढ़ाये।।
भक्तों को...।।964।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यसंकुलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब ज्ञान हुआ, आत्मा, का त्याग ले लिया।
तप त्याग से संयम से, भाव शुद्ध कर लिया।।
भक्तों को...।।965।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्रताग्रयुग्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम शुक्ल ध्यान ध्याने से, अरिहंत बन गये।
फिर अष्टकर्म नाश के, भगवंत बन गये॥
भक्तों को...॥966॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमशुक्लध्यानिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार के सागर से, प्रभु पार उतारो।
ये डूब रही नाव मेरी, आप सम्हारो॥
भक्तों को...॥967॥

ॐ ह्रीं अर्हं संसारसमुद्रतारकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोक्ष में गये तो एक, क्षण भी न लगा।
स्वयमेव ही ऊपर उठे, तो बल नहीं लगा॥
भक्तों को...॥968॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेपिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बस पंच अक्षरों का जाप, समय ही लगा।
फिर मोक्ष को पाया कि, सारे कर्म को भगा॥
भक्तों को...॥969॥

ॐ ह्रीं अर्हं पञ्चलध्वक्षरस्थितये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कर्म नसे और उनकी, प्रकृति भी नशी।
उज्ज्वल हुई ये आत्मा, जा मुक्ति में बसी॥
भक्तों को...॥970॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशप्रकृतिस्थितिविनाशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित्र पूर्ण हो गया, जब मोक्ष पधारे।
पुरुषार्थ भक्त भी करे, हों आप सहारे॥
भक्तों को...॥971॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशचारित्रपूर्णताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम व्यस्त तुम ही स्वस्थ हो तुम्ही समस्त हो।
उत्कृष्ट हो आकृष्ट हो, नाही तटस्थ हो॥
भक्तों को...॥972॥

ॐ ह्रीं अर्हं अच्छेद्यजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भक्त नित्य पूजा, करे आपकी सदा।
शिववासी बनके सौख्य, मिले पाप ना कदा॥
भक्तों को...॥973॥

ॐ ह्रीं अर्हं शिवदात्रीजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह मोह मंच का प्रपंच ताप बढ़ाये।
जयवंत हो जिनदेव तुम्हें ये न सताये।।
भक्तों को शुद्ध ज्ञान का, अमृत भी पिलाओ।
भक्तों के हृदय आके बसो, दर्श दिखाओ।।974।।

ॐ ह्रीं अर्हं अजयजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह यज्ञ जीव को सदा, सुख शांति ही देता।
निज आत्म शांत पाके, सौख्य मुक्ति का लेता।।
भक्तों को...।।975।।

ॐ ह्रीं अर्हं याज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छंद

लोकोत्तर सम्पद पायी, मुक्ति लेने को आयी।
तुम सर्व परिग्रह त्यागा, मुक्ति से ही मन लागा।।
पूजा हम तेरी गाये, गाकर के तुझे मनाये।
जिनवर मुझको अपना लो, मुझे अपने पास बुला लो।।976।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनर्घ्यपरिग्रहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप अमोलक स्वामी, दुख मेटो अंतर्यामी।
हम शरणा तेरी पाये, आकर के पूज रचाये।।
पूजा हम...।।977।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनर्घ्यहेतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्पृह वृत्ति अपनायी, नहि मोह कालिमा भायी।
भव तन भोगों को छोड़ा, मुक्ति से नाता जोड़ा।।
पूजा हम...।।978।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमनिष्पृहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह कर्म को नाशा, क्षायिक सम्यक्त्व का वासा।
प्रभु दया दृष्टि दिखलाओ, आ करके कुछ समझाओ।।
पूजा हम...।।979।।

ॐ ह्रीं अर्हं अत्यन्तनिर्मोहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिष्यत्व ग्रहण ना कीना, बस गुरु पद को पा लीना।
फिर मोक्ष मार्ग बतलाया, भव्यों को संग लगाया।।
पूजा हम...।।980।।

ॐ ह्रीं अर्हं अशिष्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर से संबंध ना रखते, बस आतम रस को चखते।
इसलिए पाप ना होता, कर्मों को सारे खोता।।

पूजा हम...।।981।।

ॐ ह्रीं अर्हं परसंबंधविनाशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा को स्वयं ही धारा, नहिं गुरु का कोई सहारा।
हो स्वयंबुद्ध परमेशा, मिट जाये जगत कलेशा।।

पूजा हम...।।982।।

ॐ ह्रीं अर्हं अदीक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनों लोकों में पूजा, भक्तों को काम न दूजा।
ये भक्त भावना भाये, चरणों में शीश झुकाये।।

पूजा हम...।।983।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभुवनपूज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा अरिहंत ना होती, तप त्याग का यह है मोती।
मोही जग में भरमाये, वरना भवपार लगाये।।

पूजा हम...।।984।।

ॐ ह्रीं अर्हं अदीक्षकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद है अविनाशी, पाने आया अभिलाषी।
स्थिर मन मेरा कर दो, बस इतना सा ही वर दो।।

पूजा हम...।।985।।

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना इन्द्र ही जान सके है, अहमिन्द्र ना मान सके है।
प्रभु हो, 'अगम्य' जगदेवा, मैं करूं तुम्हारी सेवा।।

पूजा हम...।।986।।

ॐ ह्रीं अर्हं अगम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख में प्रभु लीन हैं रहते, बाधाओं को ना सहते।
भव भ्रमण मेरा मिट जाये, मुक्ति पाने हम आये।।

पूजा हम...।।987।।

ॐ ह्रीं अर्हं अगमकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना रमण किसी में करते, ना भ्रमण कहीं पर करते।
प्रभु पूर्ण शुद्धता पाई, जगती पाकर हर्षाई।।

पूजा हम तेरी गाये, गाकर के तुझे मनाये।
जिनवर मुझको अपना लो, मुझे अपने पास बुला लो।।988।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्थिरता में सुख होता, जो चंचलता को खोता।
वंदन करने हम आये, आकर के पूज रचाये।।
पूजा हम...।।989।।

ॐ ह्रीं अर्हं निजात्मसुस्थिराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी जग में सुख पाये, ज्ञानी ही आतम ध्याये।
बिन ज्ञान जगत भरमाता, बिन ज्ञान ना मिलती साता।।
पूजा हम...।।990।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञाननिर्भराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि जन आ शीश झुकाये, वंदन कर सुख को पाये।
योगीश्वर महा जिन देवा, नित करूँ चरण की सेवा।।
पूजा हम...।।991।।

ॐ ह्रीं अर्हं महायोगीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब द्रव्य भाव की शुद्धि, आतम की पाई सिद्धि।
ऋद्धि-सिद्धि को देना, पापों को सब हर लेना।।
पूजा हम...।।992।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्रव्यशुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब देह से काम नहीं है, अब कर्म का धाम नहीं है।
बस आतम शुद्ध स्वभावी, छूटे थे सर्व विभावी।।
पूजा हम...।।993।।

ॐ ह्रीं अर्हं अदेहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तज जन्म-मरण का फेरा, मुक्ति का हुआ बसेरा।
पंचम गति को अपनाया, मुक्ति को पास बुलाया।।
पूजा हम...।।994।।

ॐ ह्रीं अर्हं अपुनर्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञानी को ध्यावे, पाने को शीश झुकावे।
हम चार-ज्ञान ना चाहे, बस केवल ज्ञान को पाये।।
पूजा हम...।।995।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानैकविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम का धन गुण ज्ञान, मिलता जिससे सम्मान।

हम धन वैभव ना चाहे, बसआतम सुख को पाये।।

पूजा हम...।।996।।

ॐ ह्रीं अर्हं जीवधनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सिद्ध प्रसिद्ध हुए हो, आतम को धन्य किये हो।
चिन्मयता निज की पायी, पुरुषार्थ सिद्धि अपनायी।।

पूजा हम...।।997।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम लोक शिखर पर बैठे, हम यहीं से तुमको देखे।
संयम मय जीवन पाऊँ, मैं और कहीं ना जाऊँ।।

पूजा हम...।।998।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकाग्रस्थिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब द्वंद बंद कर दीना, निर्द्वंद नाम का लीना।
हम अपने दोष हटाये, तुमको पाने हम आये।।

पूजा हम...।।999।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्द्वन्द्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण का ना पाया अंता, गुण गण के हो भगवंता।
गुणगान भक्त सब गाये, तुम सम शक्ति को पाये।।

पूजा हम...।।1000।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतानंतगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर द्रव्य न संग में पाया, आतम को शुद्ध बनाया।
हो आत्मरूप परमेशा, मैं धरूं दिगम्बर वेशा।।

पूजा हम...।।1001।।

ॐ ह्रीं अर्हं आत्मरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु राक्षस क्रोध को नाशा, औ क्षमा धर्म परकाशा।
नाराज कभी ना होते, हरदम ही हो मुस्काते।।

पूजा हम...।।1002।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाक्षमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों का किया सफाया, शुभ शील का बाग लगाया।
खुशबू निशदिन ही लेते, भक्तों की नाव को खेते।।

पूजा हम...।।1003।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाशीलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति के हो तुम सागर, भर दो मेरी भी गागर।

हमें जग संताप सताये, अब तेरी शरण में आये॥
पूजा हम तेरी गाये, गाकर के तुझे मनाये।
जिनवर मुझको अपना लो, मुझे अपने पास बुला लो॥1004॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाशांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब मोह कर्म है भागा, शक्ति प्रकाश है जागा।
हो अनंत वीर्य के धारी, महिमा क्या कहे तुम्हारी॥
पूजा हम...॥1005॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतवीर्यात्मकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवलोकन लोक का करते, संग में आलोक भी लखते।
मुझको प्रभु क्यों ना देखो, कष्टों को मेरे मेटो॥
पूजा हम...॥1006॥

ॐ ह्रीं अर्हं लोकालोकज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का बंधन तोड़ा, आवरण को सारे छोड़ा।
हो अजय अमर अविनाशी, तुम हो सिद्धालय वासी॥
पूजा हम...॥1007॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरावरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमको ही ध्येय बनाया, तुमको ही ध्यान बनाया।
ध्याता बन सुख को पायें, हम और कहीं ना जायें॥
पूजा हम...॥1008॥

ॐ ह्रीं अर्हं ध्येयगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कवला आहार न करते, ना ही जल को तुम पीते।
तुम्हें भूख प्यास ना लगती, साता की ज्योति जगती॥
पूजा हम...॥1009॥

ॐ ह्रीं अर्हं अशनदग्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोक शिखर पर राजे, त्रैलोक्य मणि सम साजे।
मैं द्रव्य भाव ले आया, पूजा करके हर्षाया॥
पूजा हम...॥1010॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकमणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमने सबको समझाया, आतम का रूप दिखाया।
गुण के भंडारी स्वामी, दुख मेटो अंतर्यामी॥
पूजा हम...॥1011॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतगुणप्राप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों का ज्ञान संवारा, भव्यों का ध्यान सम्हारा।
परमातम रुप निहारा, देते हो आप सहारा॥
पूजा हम...॥1012॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि-सिद्धि संग आई, आश्रय जिनवर का पाई।
भक्तों के आप विशेषा, गुण धारी हो अवशेषा॥
पूजा हम...॥1013॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाऋषये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह भूतवर्त औ भावी, जितने भी शुद्ध स्वभावी।
उनके चरणों को बंदू, आतम को नित अभिनंदू॥
पूजा हम...॥1014॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना डरते और डराते, निर्भय जीवन बतलाते।
यह मोह क्षोभ सब भागा, शुद्धातम में मन लागा॥
पूजा हम...॥1015॥

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षोभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ चेतन का कर भेदा, पाया है रूप अभेदा।
श्रद्धा के सुमन चढ़ाऊँ, पूजा करने मैं आऊँ॥
पूजा हम...॥1016॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंबुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी जिनको नित ध्याये, आतम में तुम्हें बसाये।
नवनीत ज्ञान का पाया, भगवान हमें मन भाया॥
पूजा हम...॥1017॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरावरणज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईर्ष्या न मत्सर रखते, औ राग द्वेष न रखते।
दिया सत्य अहिंसा नारा, जीवों का ज्ञान सुधारा॥
पूजा हम...॥1018॥

ॐ ह्रीं अर्हं वीतमत्सराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रागी ना बात को जाने, वैरागी सुनकर माने।
वैराग्य मोक्ष ले जाये, सुख का भंडार दिलाये॥
पूजा हम...॥1019॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तानन्तज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सारी दुनिया जब देखे, पर आप स्वयं ही लेखे।
तब आतम दर्शन पाया, चक्षु का मोह हटाया।।
पूजा हम तेरी गाये, गाकर के तुझे मनाये।
जिनवर मुझको अपना लो, मुझे अपने पास बुला लो।।1020।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनतानंतदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मस्तक पर मणि सम सोहे, सिद्धों की महिमा मोहे।
गुणगान तेरा हम गाये, भक्ति में ध्यान लगाये।।
पूजा हम...।।1021।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकशिखरवसिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुप्ति का पालन कीना, औ गुप्त सुगुण को लीना।
प्रभु गुप्त साधना साधे, तब ही गुण को प्रगटावे।।
पूजा हम...।।1022।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम परम पूत जिनवाणी, तुम परमपूत कल्याणी।
भव्यों को पंथ दिखाये, अपना कल्याण कराये।।
पूजा हम...।।1023।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शक्तिहीन जग प्राणी, सुनने को आये वाणी।
शक्ति का पुंज जगाये, आ करके तुम्हें मनाये।।
पूजा हम...।।1024।।

ॐ ह्रीं अर्हं महोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमय हो जिन देवा, मंगलकारी तव सेवा।
मंगलमय जीवन पायें, मंगलमय ज्योति जगाये।।
पूजा हम...।।1025।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामंगलात्मकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभू छंद

हो दोष रहित अवशोष रहित, महिमा जिनवर की न्यारी है।
तुम क्रोध रहित तुम लोभ रहित, भगवन की छवि तो प्यारी है।।
नर सुर इन्द्रों से वंदित हो, हम वंदन करने आये हैं।
उनको को तो पार लगाया था, हम भी भव तरने आये हैं।।

उत्कृष्ट द्रव्य उत्कृष्ट भाव, उत्कृष्ट विधान रचाया है।
मैंना ने इसका फल पाया, हमने आ अर्घ्य चढ़ाया है।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्णस्वगुणजिनाय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।।

जयमाला

दोहा

सिद्धचक्र के पाठ में, श्रद्धा भक्ति बढ़ायें।
अब जयमाला को पढ़े, शत-शत शीश नवाये।।

पद्धरि छंद

जिनवर की शक्ति है महान, शत्-शत् हम करते नित प्रणाम।
आठों कर्मों का नाश किया,अष्टम वसुधा में वास किया।।
आठों गुण को तुम धारा है, अष्टम में करत बिहारा है।
कर्मों के बंधन तोड़े हैं, जग के सब क्रंदन छोड़े हैं।।
ये मोह तुम्हें ना बांध सका, जग लाभ तुम्हें ना लोभ सका।
माया की छाया भागी है, आतम की ज्योति जागी है।।
जग से तुमको बहुमान मिला, भक्तों से है सम्मान मिला।
भक्तों ने भक्ति गाई है, पूजा ही पुण्य कमाई है।।
ऋद्धि ने ऋषि बनाया है, सिद्धि ने सिद्ध बनाया है।
काले बादल को साफ किया, तुम स्वच्छ आत्म आकाश किया।।
संसार ताप संताप मिटा, प्रताप मिला जब कर्म हटा।
आतम को स्वच्छ बनाया है, कर्मों का जाल हटाया है।।
संकल्प से शक्ति पाई है, आतम शक्ति प्रगटाई है।
आतम में ध्यान लगाया है, आतम दर्शन को पाया है।।
आचार विचार प्रचार करे, मुक्ति को जाकर स्वयं वरे।
रागादि विकार निवारे हैं, आतम का रूप सम्हारे हैं।।
सब भाव विभाव विदारा है, बस आतम रूप ही प्यारा है।
बस और नहीं कुछ भाता है, आतम का रूप सुहाता है।।
भव्यों को प्राण से प्यारे हो, भव्यों के आप सहारे हो।
जहां कदम आपका पड़ जाता, वह महातीर्थ ही बन जाता।।

वह तीर्थ तीर ले जाता है, उद्धार जगत का करता है।
तुम नाम मंत्र औषध बनता, कर्मों के विष को है हरता॥
सौ इन्द्र चरण में आते हैं, आकर के शीश झुकाते हैं।
मंगलमय मंगलकारी हो, प्रभुआप अमंगल हारी हो॥
मंगल मय जीवन कर देना, कर्मों को सारे हर लेना।
महिमा तेरी हम गाते हैं, गाकर के नहि अघाते हैं॥
हम बिन्दू हैं तुम सिंधु हो, हम तारे हैं तुम इन्दु हो।
इन रिश्तों को सार्थक करना, चरणों में मुझको तुम रखना॥
मझधार में नैया डोल रही, अब आप बिना मम कोई नहीं।
पारस मणि पारस ही करते, सब कार्य सिद्ध खुद ही करते॥
मुक्ति का हम पुरुषार्थ करें, चरणों में आकर शीश धरें।
हर वर्ष विधान करायेंगे, तब ही तो पार लग पायेंगे॥
'स्वस्ति' भक्तिमय हो जाये, आकर चरणों में खो जाये॥

दोहा

सिद्धचक्र मंडल महा, भक्ति भावमय होय।
ऋद्धि सिद्धि मंगल करे, दुख दारिद्र को खोय॥
संकट भी हरते सभी, हरे सभी के शोक।
सिद्ध रूप पदवी मिले, चरणों में दें धोक॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणयुक्त सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

पूर्णार्घ्यं

महाधर्म उद्धार का, साधन जग में एक।
धारो भव्य विवेक से, मन में करो न भेद॥

संपूर्ण जयमाला

दोहा

सांसारिक पीड़ा हरो, सिद्ध प्रभु भगवान।
अध्यात्मिक आनंद दो, शत्-शत्- बार प्रणाम॥

शेर चाल

हे सिद्ध प्रभु आपको शत् बार नमस्कार।
हे मोक्ष के निवासी तुमको मेरा नमस्कार॥
आतम में हुये लीन प्रभु तुमको नमस्कार।
मुझको भी करो पार प्रभु तुमको नमस्कार॥1॥

साधन बना के साध्य को ही प्राप्त तुम किया।
निज चेतना में होके लीन आप्त तुम किया॥
चिद्रूप ध्यान ध्याते सदा सौख्य बढ़ाये।
आराधना हम भी करें निज रूप दिखाये॥2॥

कृतकृत्य हो उत्कृष्ट हो संपूर्ण सिद्ध हो।
आकृष्ट है प्राकृष्ट है निर्वाण सिद्ध हो॥
निष्काम हो निःस्वार्थ हो अविनाशी हो प्रभो।
सिद्धार्थ हो शुद्धार्थ हो शिववासी हो प्रभो॥3॥

श्रद्धान निरर्थक नहीं निज ध्यान कराये।
निर्दोष हैं ये जीव को मुक्ति में बिठाये॥
ज्ञाता बनूँ द्रष्टा बनूँ, द्रष्टव्य हूँ स्वयं।
सर्वज्ञ तुम्हीं प्रज्ञ हो, सिद्धत्व भी स्वयं॥4॥

संपूर्ण आत्मा जगत के है कष्ट उठाये।
जब तक रहे ये कर्म जीव जगत भ्रमाये॥
अरिहन्त सिद्ध आत्मा ने लक्ष्य पा लिया।
मुक्ति के बने लाल जाल को हटा दिया॥5॥

संकल्प औ विकल्प डोरियों में बंधे हैं।
एकाग्रता न ध्यान की हम कर्म सने हैं॥
कर्मों की धूल आत्मा में फूल ना खिले।
जब ध्यान करें आत्मा का सौख्य भी मिले॥6॥

प्रतिकूल औ अनुकूलता में रोये हंसे हैं।
उलझे हुये हैं कष्टों में आन फंसे हैं॥
आकर के प्रभु जगत से आत्मा को बचाओ।
हम डूबते हैं आके हमें पार लगाओ॥7॥

शुद्धात्म अनुभूति पाने आये हैं प्रभो।
हो वीतरागी भाव मेरे आये हैं विभो॥
तन्मय हो आत्मा में ध्यान आत्म का करूँ।
श्रद्धा के सुमन आपके चरणों में मैं धरूँ॥8॥

संसार में मैं व्यस्त रहूँ धर्म ना करता।
नित पाप में मगन रहूँ शुभ काम ना करता॥
मैं संकटों के बीच प्रभो तुमको पुकारूँ।
पर सुख में मगन होऊँ तो तुमको न निहारूँ॥9॥

मैं क्रोध करूँ मान करूँ माया भी करूँ।
मैं लोभ करूँ पाप करूँ कर्म ना हरूँ॥
पापों के बीच दलदलों से कैसे बचेंगे।
संसार में संसार तज के कैसे रहेंगे॥10॥

श्रावक व्रतों को पाल शुद्ध भाव बनाऊँ।
लेकर के प्रभो दीक्षा और मुक्ति में जाऊँ॥
चारित्र का पालन करूँ जिनदेव मैं सदा।
बुद्धि होवे शुद्ध, खोटे भाव ना कदा॥11॥

ये सिद्धचक्र का विधान भाव से किया।
भावों से करी पूजा औ शुभ ध्यान भी किया॥
आधि व्याधि भी हरे आनंद को पाऊँ।
'स्वस्ति' को करो पार तो शिव सौख्य बढ़ाऊँ॥12॥

दोहा

पावन हो मम आत्मा, पावन हो मम भाव।
पावन मेरे जिन प्रभु, पार लगाओ नाव॥

महाअर्घ्य

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः जयमाला संपूर्ण महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम तप मेरा बढ़े, बढ़े ज्ञान भंडार।
'स्वस्ति' को संसार से, शीघ्र लगाओ पार॥
मन पवित्र करके प्रभो, लिखा है यह शुभ पाठ।
गलती भी यदि हो कहीं, करना जिनवर माफ॥

परिपुष्पांजलि

जाप्य मंत्र : (यहाँ 108 बार 'ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा' मंत्र का जाप करें)